1 ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

सहज कथा

पोथी चौथी

संत निक्का सिंह जी महाराज 'विरक्त'

निर्मल आश्रम

ऋषिकेश

अनुक्रम

कथा नं0	हुक्मनामा
1.	माघि मजनु संगि साधूआ......
2.	सगल तिआगि गुर सरणी आइआ.....
3.	तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है......
4.	क्रिपा निधि बसहु रिदै......
5.	गई बहोड़ु बंदी छोड़ु......
6.	जह जह पेखउ तह हजूरि......
7.	रामदास सरोवरि नाते......
8.	गुरि पूरै पूरी कीनी......
9.	चोरु सलाहे चीतु न भीजै......
10.	अबिनासी जीअन को दाता......
11.	काहे रे बन खोजन जाई......
12.	कीता करणा सरब रजाई......
13.	मन रे कउनु कुमति तै लीनी......
14.	कोई जनु हरि सिउ देवै जोरि......
15.	अचरु चरै ता सिधि होई......
16.	गुर सेवा ते सुखु ऊपजै......
17.	मंघिरि माहि सोहंदीआ......
18.	माइआ ममता मोहणी......
19.	पोखि तुखारु न विआपई......
20.	कतिकि करम कमावणे......
21.	गुरि पूरै चरनी लाइआ......

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

1

माघि मजनु संगि साधुआ धूड़ी करि इसनानु ।।
हरि का नाम धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ।।
जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु ।।
कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु ।।
सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ।।
अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु ।।
जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ।।
जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु ।।
माघि सुचे से कांढीआहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु ।।१२।।

(पृ. १३५)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु ! सतिनामु श्री वाहिगुरु !!

आज मकर की राशि 'माघी' पंजाब में जिसे कहते हैं, है। मुक्तसर में आज बड़ा भारी पर्व है, मेला है। (इस संक्रान्ति का) बड़ा महत्त्व लिखा हुआ है, आज संक्रान्ति है 'मकर' की, जिसे 'माघी' कहते हैं। दुनिया में इन दो संक्रान्तियों की बहुत मान्यता है- 'माघी' और 'वैसाखी'। आज वह (माघी) है। गुरु गोबिंद सिंह जब चले, उस समय गुरु के पास सिक्ख बहुत थोड़े रह गए थे। दया सिंह, धर्म सिंह, मान सिंह, ये साथ थे। वे जो दो पठान साथ लेकर गए थे, वे दोनों पठान भी वापिस आ गए थे। दोनों पठानों को गुरु साहिब ने वापिस भेज दिया था, जिन्होंने मंजी साहिब उठाई थी, जब उन्होंने (गुरु गोबिंद सिंह ने) 'उच्च के पीर' (उच्च यानि पाकिस्तान के एक गाँव के प्रसिद्ध पीर) का वेश धारण किया था। अंत में शमीर, लखमीर और तख्त मल्ल ये तीन भाई थे, ये 'दीना' गाँव के थे, बराड़ (गोत्र के) थे। इन का दादा छेवें (छठे) पातशाह (श्री गुरु हरगोविंद साहिब) का सेवक

था। लड़ाई के समय उसने महाराज की बड़ी मदद की थी। वह थोड़े से इलाके का मालिक था। (उसने) बहुत लकड़ी, राशन का बंदोबस्त किया था। आज इन को पता चला कि हमारे जो परंपरा गुरु हैं, उन्होंने आना है। ये गए, इन्होंने गुरु गोबिंद सिंह महाराज को कहा, 'आप हमारे मकान में चलो।' उन्होंने कहा, ना! तुम्हें पता है दुनिया कैसी हो गई है? आजकल मुसलमानों का प्रभाव बहुत बढ़ चुका है और वे तुम्हें कष्ट देंगे। जैसे कष्ट नगाहीए को उन्होंने दिए, पर नगाहीए का मन डगमगाया नहीं। अंत में कपूरे (कोटकपूरे के राजा) को कहा- तू गढ़ी (छोटा किला) दे दे, वह वजीदा फौज लिये आ रहा है। वजीदा (वजीद खान) उसके साथ हमें लड़ाई करनी है, वह हमारे साथ लड़ाई के लिए आ रहा है। कपूरे ने ना कर दी। कपूरा असल में 'कौल' को मानता था। 'कौल' पिरथीए (गुरु अर्जुन देव के बड़े भाई) का पड़पोता था, यह गुरु अर्जुन देव का भी पड़पोता था। 'कौल' पिरथीए का पड़पोता था, परंतु 'कौल' के मन में इतनी श्रद्धा हो चुकी थी, भई आखिर की बात है यदि ये बख्श गए तो बख्श गए, नहीं तो बख्शने वाला और कोई नहीं और गुरु साहिब अंतर्यामी, उसके मन की जानते थे। कपूरे ने जवाब दे दिया- भई, आप तो मुसलमानों से लड़ाई करते हो और हमें भी मुसलमानों से ही मरवाना चाहते हो। गुरु साहिब ने सिक्ख भेजा कपूरे के पास, उसने उसको इंकार कर दिया। गुरु साहिब वहाँ से चले गए। असल में कपूरे का पड़दादा 'भल्लण' था। उसने पानीपत का युद्ध जितवाया था। अंत में जब वह अकबर के पास बैठा था। सभी लोग बैठे थे। 'ईसे खान' वालों की जो बहन थी, उसका विवाह अकबर के साथ हुआ था। उन सब ने इकट्ठे होकर, ये बात कही, भई आप अब भी हिंदुओं को ऊँचा उठा रहे हो। इस कपूरे को आपने चौधर दे दी। ये उस देश का 'भल्लण' चौधरी बन गया। कपूरा, उसकी संतान था। उसने (अकबर ने) वह पगड़ी लेकर अपने साले को दे दी ईसा खां वालों को। उस 'भल्लण' ने उठकर, उसे ज्यों उठाया नीचे पटक दिया, पगड़ी उतार कर अपने सिर पर बाँध ली। उसने कहा, पगड़ी मैंने मुफ्त तो नहीं ली, बहादुरी के साथ ली है, पानीपत का युद्ध जितवाया है। सारी सभा हँस पड़ी और अकबर भी हँस पड़ा। उसने कहा, भई तू नहीं ले सकता। वह आधी पगड़ी

फाड़ कर अपने साले को दे दी ईसा खां वाले को और आधी 'भल्लण' को दे दी। ये उन की चौधर चली आ रही थी। और गुरु साहिब ने कपूरे को मुख से ये वाक्य कह दिया- भई, तुझे मुसलमान मारेंगे और छोटी तोप में गोबर, मल आदि भर कर तुझे मारेंगे। गुरु साहिब ने ये श्राप दे दिया और 'कौल' को पता लगा। 'कौल' ने कपूरे को कहा- ये तो गुरु हैं। इन्होंने तो हमें बख्शना है। तुझे पता नहीं था, असली गुरु यही हैं, तूने बड़ी गलती की। कपूरा आया, फिर कपूरा एक पड़ाव (जगह) पर बैलगाड़ियाँ लाया, राशन लाया। खुद उसने, उसके पुत्र और पोते ने बड़ा लंगर लगाया और बड़ा काम किया। उन्होंने कहा गुरु साहिब ने- जाओ ऐसा हो जाएगा। जा, छोटी तोप चढ़ने से, तेरा शरीर अपने आप छूट जाएगा। ईसे खां वालों ने कपूरे को बुलाया- भई, अंदर आभूषण और कपड़े देखने हैं, लड़की का विवाह है, आप अंदर जा सकते हो। वह गया तो उसे अंदर पकड़ लिया। वही काम हुआ, उसके प्राण न निकलें। वह बोला 'ऐसा तो नहीं निकलेंगे।' और कैसे निकलेंगे? उसने कहा छोटी तोप लाओ। वह जब खाली तोप लाए तो कपूरे का शरीर छूट गया। कपूरा, कुदरती तौर पर बेमुख हो चुका था। जब गुरु साहिब वहाँ गए 'कौल' ने मिश्री, बादाम, सफेद पोशाक सारा सामान लाकर आगे रख कर, गुरु साहिब को, दंडवत प्रणाम करके, चरणों में गिर पड़ा। गुरु साहिब ने 'कौल' को बख्श दिया। उसने (कौल ने) कहा, जी पोशाक अब आप सफेद पोशाक पहन लो। उन्होंने जो माछीवाड़े पोशाक पहनी थी नीली, वही पहनी हुई थी। गुरु साहिब ने वह (नीली पोशाक) उतार दी, और ये (सफेद) डाल ली और उनको कहा एक धूनी (अग्नि की) लगाओ, उन्होंने लगाई। इस प्रकार उस नीली पोशाक का हवन कर दिया। एक कतरन (कपड़े का छोटा टुकड़ा) ऊपर से गिर पड़ी। वह मान सिंह ने उठा कर यहाँ (सिर पर) लगा ली, वही निहंगों की निशानी है। यहाँ से निहंग चले, ये निहंगों पर बख्शिश हुई। इसलिए, वहाँ से जाते हुए फिर कपूरे को पता चल गया। कपूरे ने सिक्ख भेजा भई, खिदराणे (गाँव) की ढाब (छप्पड़ी) पर गुरु साहिब को ले जाओ, वहाँ पानी है। वह 'मुक्तसर' जिसे आजकल कहते हैं। वह खिदराणा था गाँव और खिदराणे की छप्पड़ी थी। वहाँ जल था, वहाँ चले गए। उधर जब वह मझैल (माझे यानि ब्यास

और रावी नदी के बीच के इलाके के सिक्ख) बेमुख होकर पहुँच गए तो माता भागो ने कहा, तुम गुरु की मदद के लिए गए थे, गुरु के लिए (गए थे) और अपने ऊपर बख्शिश करवाने के लिए गए थे। गुरु ने तुम्हें बख्श दिया? वे बोले, हम तो बेदावा लिख कर दे आए हैं। उसने कहा, फिर तुम लोग ऐसे करो, ये हमारे कपड़े पहन लो और सोना (गहने) ले लो और गोबर पाथा करो और हमें ये राइफलें (बँदूकें) दे दो। और कई स्त्रियाँ भी उसके साथ चल पड़ीं, माई भागो के साथ। वह माई भागो की बातें जब उन्हें चुभीं तो सब ने कहा कि- हमने बहुत बुरा किया, बड़ी गलती कर बैठे हैं। फिर उसने कहा, और कोई उपाय नहीं, जा के गुरु की शरण पड़ जाओ। ये सब माई भागो को कहने लगे, तुम साथ चलो, माफी दिला दो। वे आए, उधर गुरु साहिब भी आ गए। सैना अभी थोड़ा पीछे थी। वह जो चालीस (४०) मुक्त थे। इतिहास में कुछ ज्यादा लिखा है, पर ये इतिहास का काम है। इसलिए उन्होंने जब फौज को आते देखा, वे कहने लगे, अब गुरु के पास क्या जाना है, गुरु जी तो 'टिब्बी साहिब' बैठे थे आगे। उन्होंने अपनी ओढ़ने वाली चादरें झाड़ियों पर, बेर के वृक्षों पर डाल दी, जोकि तंबू (टैंट) जैसे बन गए और (वे) राइफलें भर कर चलाने लगे, उन्होंने बड़ी लड़ाई की। अंत में महां सिंह और माई भागो, ये दोनों ही बचे। लिखा हुआ है, माई भागो को बावन (५२) जख्म थे और वह लेटी-लेटी उन्हें धो रही थी और महां सिंह गिरा पड़ा था। गुरु साहिब ने आना था। इतने में वजीदे ने (कपूरे को) पूछा, अब बता? पानी का कोई टिकाना नहीं, फौज मर रही है, आधी से ज्यादा फौज मर चुकी है, अब करें क्या? कपूरे को बोले- चौधरी! अब तू बता? उसने कहा- कोई उपाय नहीं। आगे तीस कोस पर पानी है, पीछे दस कोस पर पानी है। जालंधर वाले सूबेदार ने कहा, चौधरी बिल्कुल ठीक कहता है, यदि इन्हें बचाना है तो ले चलो नहीं तो खत्म कर दो। उसने कहा, गुरु गोबिंद सिंह तो मर चुके हैं। कपूरे ने कहा- बिल्कुल नहीं! गुरु गोबिंद सिंह मरने वाला नहीं है, वह ईश्वरीय शक्ति का मालिक है। ईश्वर की शक्ति जिसे कहते हैं, जिसे भगउती कहते हैं, जिसे दुनिया में महाशक्ति कहते हैं। वह परमेश्वर की जो शक्ति होती है, वह इन पुरुषों के साथ होती है। एक पठान कहता, यदि (गुरु साहिब) होते कहीं

तो बताते ना। कपूरे ने कहा- ये तो मैं नहीं कह सकता, ये वही जवाब देंगे। गुरु साहिब ने तीर चलाया, वह पठान के आकर लगा, वह मर गया। सभी हैरान हो गए। वह बोला, कपूरा, बता 'क्या नहीं हैं?' कहते, बोल तो। अब क्या करें? फिर उसने यही फैसला किया- भई, दफना ही देते हैं, जो मरे हुए हैं। उसने कहा- बचेगा एक भी नहीं। जालंधर का सूबेदार बोला, कोई नहीं बचेगा। यदि तूने इन्हें बचाना है, तो ले चल। वह वापिस मुड़ गए। वह जब गुरु साहिब आए, वह तीर उन्होंने वहीं से मारा था। उसी को मालवे के लड़के (किशोर) गाते हैं-

ऊचे टिब्बे तों गुरां ने तीर मारया रूड़ी जांदी हिंद रख ली ।

वहाँ गुरु साहिब के जो सिक्ख साथ थे, उनको गुरु साहिब ने कहा, हिंद रख लें? बोले- रख लो। फिर वह तीर चलाया, उसके साथ काफी (आदमी) मरे, फिर लोगों को निश्चय हुआ कि गुरु गोबिंद सिंह तो हैं। वजीदा फौज ले कर वापिस मुड़ आया। फिर गुरु साहिब आए, आ कर जितने (सिक्ख) थे, सभी के (मुँह पर) रूमाल फेरा और कह रहे थे- 'ये मेरा पाँच हज़ारी', 'ये मेरा दस हज़ारी'। अब आप यमुना किनारे जमींदारों के घर चले जाएँ तो वे अमृतसर जिले के ही आए हुए हैं सभी। उनका वंश भी चलता है। (गुरु साहिब) महां सिंह के पास आए, माता भागो के जब सामने आए, उस पर तो ऐसी दृष्टि डाली, माता भागो तो जीवन मुक्त हो गई। उसको (एक सिक्ख को) गुरु साहिब बोले- (इस पर) एक चोला डाल दो, अब इसे कुछ पता नहीं, राइफल (बंदूक) उसके (माता भागो के) कंधे पर वैसे की वैसे ही थी, वह कुछ नहीं बोल रही थी। वह हजूर साहिब तक गई। माता भागो और धरम सिंह उन दोनों की समाधि वहाँ है, हजूर साहिब में। और जब सभी को (गुरु साहिब) वरदान देते गए और महां सिंह के सामने गए, उन्होंने कहा- माँग, क्या माँगता है? त्रिलोकी का मालिक बना दें? वह बोला- नहीं जी, टूटी हुई जोड़ लो। वह जो बेदावे की चिट्ठी थी, वह गुरु साहिब की जेब में थी, वह निकाल कर उसे दिखाई, यही है? उसने कहा- यही है। उसके सामने फाड़ दी। बोले- अब तुझे रख लें? वह बोला- नहीं जी, आप सामने खड़े हों और मेरे प्राण निकल जाएँ। महां सिंह के प्राण निकल गए। वे जो वहाँ मुक्त हुए हैं, उस दिन से उस जगह

का नाम 'मुक्तसर' पड़ गया। आज उस तीर्थ पर बड़ा भारी मेला है। वहाँ लोग स्नान करते हैं, वहाँ लिखा है, जो ये (स्नान) करेगा, वह मुक्त हो जाएगा। उसका नाम मुक्तसर पड़ गया। वे (सिक्ख) सभी मुक्त कर दिए। उस (स्थान) का नाम 'मुक्तसर' हो गया। आज माघ की संक्रान्ति है-

चल बोल भाई-

माघि मजनु संगि साधूआ

माघ के महीने में जब संक्रान्ति आए, तो क्या कहती है? गुरु साहिब पंचम पातशाह कहते हैं-

माघि मजनु संगि साधूआ

जो परमेश्वर के प्यारे, परमेश्वर के साथ एक हो गए हैं, उनकी चरण धूलि में आज के दिन स्नान करना चाहिए। उसका आज महत्त्व है। आप उस परमेश्वर के प्यारों के दास बनकर, उन की सेवा करो, उन की चरण धूल अपने मस्तक को लगाओ-

धूड़ी करि इसनानु ॥

उन की चरण धूलि में, जैसे माघ के महीने में त्रिवेणी का स्नान होता है (वैसे स्नान करो)। वहाँ भी (एक) महीना मेला लगता है 'प्रयागराज' का। ऐसे महापुरुषों का सहारा लो, जो परमेश्वर के साथ जुड़े हुए हैं-

हरि का नामु धिआइ सुणि

हरि का नाम जपना और हरि का नाम ही सुनना। पहले नाम को सुनना फिर नाम को, (परमेश्वर को) ध्यान में लाकर, नाम का सिमरन करना-

सिमरि सिमरि नामु बारं बार ॥ नानक जीअ का इहै अधार ॥

(पृ.२६५)

सभना नो करि दानु ॥

तू (अपनी) पहुँच (सामर्थ्य) के अनुसार जितनी तेरी पहुँच है। सब को दान देना। किसी का संकेत नहीं भई, एक को देना, इसको देना। दान का हक, रोटी खाने का, भोजन का, सब का है। इसलिए भाई! जो भी तेरी निगाह में आए, सब को दान देना, अपनी पहुँच के अनुसार-

जनम करम मलु उतरै

जो जन्मों की मैल लगी हुई है, बुरे कर्मों की तुझे, वह उतर जाएगी, जब तू ये काम करेगा, नाम जपेगा, अपनी सामर्थ्य (धन-संपत्ति) अनुसार दान देगा-

गुरमुखि नामु दानु इसनान ।। (पृ. ६४२)

जब तीन बातें (नाम सुनना, नाम जपना, दान करना) तेरे में आ गई फिर तेरा भाई उद्धार (कल्याण) हो जाएगा, तेरे सारे पाप पिछले कट जाएँगे-

मन ते जाइ गुमानु ।।

ये जो तेरे अंदर अहंकार है जाति का, मज़हब का, इत्यादि का, परमेश्वर को छोड़कर, जिस कारण तू जीव बना हुआ है। इसके (अहंकार के) साथ जब ये मिला तो ये जीव बन गया। जब इसमें ईश्वरीय शक्ति आ गई तो ये ईश्वर बन गया। ये सभी ईश्वर कोटि के आदमी होते हैं। हम यहाँ पानीपत गए हुए थे, वहाँ एक संत रहता था बाहर। उन्होंने कहा, भई ऐसा है, यह बातचीत बहुत कम करता है, दूसरे प्रदेश का है। मैं भी चला गया, वे भी गए सारे। उसे (संत को) जब ये बात कही, वह कहता, ना ये ईश्वर कोटिआ, वह कोटि को कोटिआ कहता था। ये तो 'ईश्वर कोटि' है। ये जितने भी महापुरुष हैं ये सभी 'ईश्वर कोटि' के हैं और जो मोह आदि के साथ ममता में, अहंकार में फँसा हुआ जीव है, उसे 'जीव कोटि' कहते हैं। जीव का जब भी उद्धार (मोक्ष) होगा, नाम द्वारा, परमेश्वर की कृपा द्वारा ही होगा। इसलिए ये काम भाई! माघ के महीने गुरु साहिब कहते हैं- आप किया करो, तभी तुम्हारा जो पिछला कर्म है सारा, वह कट जाएगा। जो अहंकार, तुमने यह अभिमान कर लिया है, जिस कारण तुम जीव बने, ये भी तुम्हारा नाश हो जाएगा, तुम्हें परमेश्वर प्राप्त हो जाएगा-

कामि करोधि न मोहीऐ

ये काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार तुझे मोहित नहीं करेंगे। हे जीव! फिर तुझे ये मोहित नहीं करेंगे, जब तू ईश्वर का सहारा ले लेगा फिर तुझे मोहित नहीं करेंगे।-

बिनसै लोभु सुआनु ।।

ये लोभ रूपी कुत्ता जो हर समय भौंकता रहता है, ये भी नाश हो

जाएगा। ये भी तेरा पीछा छोड़ देगा–

सचै मारगि चलदिआ

गुरमुखि नामु दानु इसनानु (पृ. ६४२)

ये है सच्चा मार्ग, 'नाम मार्ग'। तो–

उसतति करे जहानु ॥

फिर सभी लोग तेरी 'स्तुति' किया करेंगे। नामदेव की, कबीर की, धन्ने की, जयदेव की, अब तक सभी जब भी कोई ग्रंथ लिखता है, उनकी स्तुति (प्रशंसा) में जरूर लिखता है, भक्तों की–

उसतति करे जहानु ॥

सारा संसार तेरी प्रशंसा करेगा, जब तू सीधे रास्ते पर चलेगा–

अठसठि तीरथ सगल पुंन

अठसठ (६८) तीर्थों का सारा पुण्य हो जाएगा–

जीअ दइआ परवानु ॥

यदि तू एक जीव के ऊपर भी दया कर देगा, अठसठ (६८) तीर्थों के स्नान का तुझे पुण्य प्राप्त हो जाएगा। जीव पर दया करना क्या है? जीव को सीधे रास्ते चला देना। जितने दुनिया के महापुरुष आए। उन्होंने जीवों को सीधे रास्ते चलाया, चाहे उन का (अपना) थोड़ा-बहुत अपमान हुआ, जो कि हुआ तो गलत, पर हो ही गया थोड़ा-बहुत, परंतु उन्होंने रास्ता तो ठीक ही बताया। नाम, दान, स्नान, ही बताया–

जिस नो देवै दइआ करि

जिस पर परमेश्वर पूरी दया करे। कृपा करके ये बात दे दे–

सोई पुरख सुजानु॥

वे पुरुष 'सूझवान' ज्ञाता (जानने वाले), ज्ञेय (जानने के लायक) हो जाएँगे। उन पुरुषों को ज्ञान प्राप्त हो जाएगा, ईश्वर की दया से–

जिना मिलिआ प्रभु आपणा

जिनको अपना परमेश्वर, आत्मा, परमात्मा, 'आत्मा' नाम है अपने आप का, परमात्मा नाम है परमात्मा व्यापक का–

जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई ॥

एको अंम्रित बिरखु है फलु अंम्रितु होई ॥ (पृ. ४२१)

वह तो अमर हो जाएगा, वह तो अमृत फल खाकर अमर हो जाएगा। उसे ज्ञान रूपी अमृत तत्व की प्राप्ति हो जाएगी-

नानक तिन कुरबानु ।।

उन पर से गुरु साहिब कहते हैं पंचम पातशाह, हम कुर्बान जाते हैं, उन पुरुषों पर से-

माघि सुचे से कांढीअहि

माघ के महीने द्‌वारा, वे शुद्‌ध कहे जाएँगे, पवित्र कहे जाएँगे-

जिन पूरा गुरु मिहरवानु ।।

जिसके ऊपर पूर्ण गुरु की कृपा हो गई है।-

चल जी पढ़ दे-

जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु ।।
माघि सुचे से कांढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु ।।
बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु !

❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।

2

सूही महला ५ ॥
सगल तिआगि गुर सरणी आइआ राखहु राखनहारे ॥
जितु तू लावहि तितु हम लागह किआ एहि जंत विचारे ॥१॥
मेरे राम जी तूं प्र□ अंतरजामी ॥
कर किरपा गुरदेव दइआला गुण गावा नित सुआमी ॥१॥रहाउ॥
आठ पहर प्र□ु अपना धिआइऐ गुर प्रसादि □उ तरीऐ ॥
आपु तिआगि होईऐ सब रेणा जीवतिआ इउ मरिऐ ॥२॥
सफल जनमु तिस का जग □ीतरि साधसंगि नाउ जापे ॥
सगल मनोरथ तिस के पूरन जिसु दइआ करे प्र□ आपे ॥३॥
दीन दइआल क्रिपाल प्र□ सुआमी तेरी सरणि दइआला ॥
करि किरपा अपना नामु दीजै नानक साध रवाला ॥४॥११॥५८॥

(पृ. ७५०)

सारी संगत किरपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु ! सतिनामु श्री वाहिगुरु !!

श्री गुरु अर्जुन देव, महापुरुषों, पूर्ण गुरुओं द्वारा ईश्वर की वाणी आई परंतु ये भी आप को पता है-

गुर जोति अरजुन माहि धरी ॥ (पृ. १४०६)

गुरु राम दास जी ने वह गुरु ज्योत, गुरु अर्जुन देव जी में रख दी, पिरथीये में नहीं रखी, महादेव में नहीं रखी, चाहे वे दोनों (भाई) बड़े थे। क्यों? ईश्वर का हुक्म नहीं था। गुरु घर, हुक्म के अनुसार चलता है। गुरु सिक्ख, जितने भी महापुरुष हुए हैं, वे सारे हुक्म के अनुसार ही चलते रहे हैं। आपको पता होगा इतिहास का। अकाली (फूला सिंह) ने महाराजा रणजीत सिंह को साफ-साफ कह दिया, ये ईश्वर का हुक्म नहीं है, तेरे

लड़कों को गद्‌दी देने का हुक्म नहीं है। यदि तेरा पोता नौ निहाल सिंह हमें लगा कि बख्शा हुआ है तो उसे हम गद्‌दी देंगे और तेरे साथ नहीं हमने चलना, हमने तो हुक्म में चलना है। अकाली में ईश्वरीय शक्ति थी। आखिर में महाराजा को अकाली के चरणों में गिरना पड़ा। बाबा साहिब सिंह (बेदी) को जब महाराजा ने कहा, वह कहने लगा, ना भाई! मैंने तुझे तिलक दिया, हुक्म के अनुसार दिया। तू हुक्म में नहीं चला, तूने खालसे के साथ पूरा काम नहीं किया, जैसा होना चाहिए था। जो अकाली (फूला सिंह) कहता है, कहता मैं भी यही हूँ, पर मैं इतनी बात कहता हूँ, अकाली! तू (इस बात को) छोड़ दे, यदि काम चलता रहे। इसलिए हुक्म नहीं है। अकाली कहता- हुक्म नहीं है। नलुआ (हरि सिंह), जोकि बड़ा वीर तो था, पर उसे हुक्म का पता नहीं था, अकाली को हुक्म का पता था। अकाली के ऊपर बख्शिश हुई थी, ये हुक्म-

गुर जोति अरजुन माहि धरी ।। (पृ. १४०६)

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ ।।

ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ ।। (पृ. १४०८)

वह ज्योति स्वरूप, आप, गुरु नानक कहलवा कर, दुनिया में आया, गुरु बन कर आया, दुनिया को उपदेश देने के लिये आया-

नानक अंगद को बपु धरा ।। धरम प्रचुरि इह जग मो करा ।।

(दसम ग्रन्थ)

उन्होंने अंगद का रूप धारण किया, शरीर-

जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ ।। (पृ. ९६६)

शरीर का फर्क पड़ा, जोकि कुदरती था परन्तु ज्योत और युक्ति (तरीका) वही था-

अमरदास पुनि नामु कहायो ।। जन दीपक ते दीप जगायो ।।

(दसम ग्रन्थ)

गुरु अंगद देव ने, अमरदास कहलवा कर, वह दीपक साफ वैसा ही था, पहले दूसरा था, (दीपक) जला दिया। वह ज्योत गुरु अमरदेव से, गुरु रामदास में गई। जब ये बख्शिश हुई-

जब बरदानि समै वहु आवा ।। रामदास तब गुरू कहावा ।।
तिह बरदानि पुरातनि दीआ ।। अमरदासि सुरपुरि मगु लीआ ।।

(दसम ग्रन्थ)

यह वरदान पुरातन (पहले का) था सोढियों को, वह (गुरु रामदास) गद्दी पर आ गए। वह ज्योत गुरु रामदास में आ गई–

गुर जोति अरजुन माहि धरी ।। (पृ. १४०६)

गुरु रामदास ने 'ज्योत' उस गुरु अर्जुन में रख दी। अब ये गुरु–गद्दी के मालिक हो गए और मालिक होने से इन को ईश्वरीय वाणी आई, जो ईश्वर की वाणी आई अब उस का विचार करते हैं। आपको इस बात का पता ही है, भई सब कुछ हुक्म में है, हुक्म से बाहर तो कुछ नहीं–

हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ।।
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ।। (पृ. १)

जितनी देर ये हुक्म को नहीं पहचान लेता, उतनी देर अहंकार नहीं दूर होता इसके मन में से, ये अहंकार बड़ा दुख है। जब इसको उस हुक्म की समझ आ गई, अहंकार चला जाएगा, इसके अंदर प्रकाश हो जाएगा, प्रकट हो जाएगा–

सूही महला ५ ।।

सूही राग में पाँचवें पातशाह श्री गुरु अर्जुन देव महाराज कथन करते हैं–

सगल तिआगि गुर सरणी आइआ

दुनिया के सारे ख्यालों को छोड़ कर, अच्छे–बुरे जो भी थे, सभी को छोड़ कर, श्री गुरु रामदास जी की शरण में मैं आया। ये गुरु अर्जुन देव अपने बारे में कहते हैं। मैंने कोई ख्याल दुनिया का नहीं रखा, इसको, सारी दुनिया को मिथ्या (झूठ) समझा–

द्रिसटिमान है सगल मिथेना ।। (पृ. १०८३)

मुझे पता लग गया कि जो देखने में आता है, वह मिथ्या (झूठ) होता है, जो देखने वाला होता है, वह सत्य होता है, यह नियम है। जो आपके अंदर आपके ख्यालों को देखेगा, वह सत्य होता है। आप अपनी वृत्तियों में देखो, अपने ख्यालों में देखो। जब ख्याल सामने आता है, ख्याल तो जड़ होते हैं। वह (ख्याल) तो रजो (राजसिक), तमो (तामसिक), सतो(सात्विक) तीनों गुणों

का होता है पर जब उसके साथ वह दृष्टा (देखने वाला), साक्षी मिलता है, जहाँ भी वृत्ति जाएगी, देखने वाला तो साक्षी है। बुद्धि तो जड़ है, वृत्ति तो जड़ है, मन भी जड़ है। यह (ख्याल आदि) तो सारा सामान, प्राण भी जड़ हैं, इन्द्रियाँ सब कुछ जड़ हैं, परंतु चेतन तो एक ही है। ये आपके अंदर जो, आपके साक्षी के रूप में बैठा है, वह परमेश्वर है, साक्षी है, अंतर-आत्मा है, उसकी समझ नहीं आई-

अंतर आतमै ब्रहमु न चीन्हिआ माइआ का मुहताजु भइआ ।।

(पृ. ४३५)

तुमने, अंदर अपने, गुरु साहिब जी कहते हैं, अंतर-आत्मा को व्यापक नहीं जाना। वह सभी ख्यालों का दृष्टा है, वह पारख (परखने वाला) है, तुमने नहीं जाना और इस कारण तू जीव हो कर माया के अधीन हो गया। तू भूल गया, तू वह रास्ता भूल गया गुरु का। इस कारण वे कहते हैं, मैं पहले ही, इन सभी ख्यालों को, मिथ्या को छोड़ कर, मैं गुरु रामदास-पूर्ण गुरु की शरण, मैं आया हूँ, मैं संत की शरण में आया हूँ, 'संत' गुरु रामदास का नाम है-

प्रेम भगति उधरहि से नानक करि किरपा संतु आपि करिओ है ।।

(पृ. १३४४)

कृपा करके परमेश्वर संत खुद बनाता है, कोई आदमी, पंचायत नहीं संत बनाती है। संत तो बख्शिश के द्वारा बनता है, जिस पर बख्शिश हो जाए वह संत बन जाता है। उस अकाली और दूसरों को क्या फायदा था, कोई जायदाद (की अहमियत) तो नहीं थी कुछ। वह (अकाली) महाराजा के अधीन था, परंतु महाराजा को यह पता था कि इसमें (अकाली में) रूहानी (ईश्वर की) ताकत है और महाराजा तो बड़ा समझदार था, वह अकाली की बात को मना नहीं करता था, दूसरे सभी लोगों की बात को मना कर देता था। इसलिए, जब तक यह रूहानियत को नहीं समझता, तब तक इससे (जीव से) उस परा माया की गुलामी नहीं छोड़ी जाएगी, यह माया के अधीन रहेगा। इसलिए, इसका अंतर-आत्मा असंग है, व्यापक है, परिपूर्ण है। इसका अपना आप वही है। यह (आत्मा) चेतन है, जड़ तो है नहीं। यदि जड़ हो तो इसे न अपना ज्ञान हो न दूसरों का ज्ञान हो। है तो चेतन, इस में कोई शक नहीं

पर ये उस को समझा नहीं। कबीर कहता है-

समझि परी तउ बिसरिओ गावन ॥ (पृ. ४७८)

जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई ॥ (पृ. ४२१)

जिसने अपने आप को पहचान लिया, गुरु साहिब कहते, वह परमात्मा है-

एको अंम्रित बिरखु है फलु अंम्रितु होई ॥ (पृ. ४२१)

वह अमृत का पेड़ हो जाएगा, उसके सभी फल अमृत ही होंगे। ज्ञान से मोक्ष जरूर होती है। इस करके, हम सारा, जितना तीन गुण, पाँच तत्व, जहाँ तक जड़ था, उसे त्याग के गुरु रामदास जी के चरणों में आए। ये गुरु अर्जुन देव जी कह रहे हैं, तुम भी भाई सारे ख्यालों को छोड़ कर उस परमेश्वर की शरण लो-

सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ।

(गीता १८/६६)

यही (शरण) आखिर में गीता के अंदर, अंत में श्री कृष्ण को कहना पड़ा- अर्जुन! सभी को छोड़कर शरण में पड़ जा, सच्चिदानंद (परमेश्वर) की शरण तुझे पार कर देगी। मैं तुझे अब एक ही बात कहता हूँ। इसलिए हम उस पूर्ण गुरु रामदास महाराज की शरण में आए, क्यों? उनके अंदर 'ज्योत' है। गुरु 'ज्योत' अब गुरु अर्जुन में है। वह कहाँ से आई? वह गुरु रामदास के पास से आई। वह अब 'ज्योत' आई तो गुरु अर्जुन देव, गुरु रामदास के चरणों में झुक गए, चरणों में पड़ गए, दास बन गए-

राखहु राखनहारे ॥

हे परमेश्वर! हे गुरु रामदास! आप रक्षा करने वाले हो-

गुरु परमेसरु एको जाणु ॥ जो तिसु भावै सो परवाणु ॥

(पृ. ८६४)

आप हो राखे (रक्षा करने वाले)-

राखा एकु हमारा सुआमी ॥ सगल घटा का अंतरजामी ॥

(पृ. ११३६)

जो सभी के हृदयों में अंतर्यामी, नियंता (कंट्रोल करने वाला) है, वह सब

का रक्षक है। आप! इस समय रक्षक हो, अब मुझे आप रख लो। जो आप हुक्म दोगे, वह मैं मानूँगा। आप को पता है? इतिहास में चार हुक्म गुरु रामदास ने (गुरु अर्जुन देव को) दिए।

१. अमृतसर तीर्थ को अच्छी तरह संपूर्ण (पूरा) करना।
२. 'तरन तारन' तीर्थ बनाना।
३. गुरु की जितनी भी वाणी है, भक्तों की, चाहे दूसरों की ईश्वर संबंधी वाणी, जितनी भी ईश्वरीय वाणी है, उसकी 'एक बीड़' बना देनी। ये (श्री गुरु ग्रन्थ साहिब) आपके सामने है।
४. 'करतारपुर' एक आपने करतार के नाम पर गाँव भी बनाना है, बसाना है।

चारों हुक्म, गुरु अर्जुन देव ने पूरे किए, उस हुक्म को उन्होंने अच्छी तरह से निभाया (पूरा किया)। इसलिए अब हम (गुरु अर्जुन देव जी) कहते हैं, अब हमारी रक्षा करने वाले आप हो। हमारा अब रक्षक आप के अलावा (बिना) कोई नहीं। क्यों?

गुरु परमेसरु एको जाणु ।। जो तिसु भावै सो परवाणु ।।

(पृ. ८६४)

गुरु और परमेश्वर एक होते हैं-

ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर ।।
नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर ।। (पृ.२७३)

आप खुद परमेश्वर हो। अब हम आपकी शरण में आ गए हैं, दूसरा हमारा कोई ख्याल (संकल्प) नहीं है, सभी ख्याल हम दुनिया के छोड़ कर, आपकी शरण में आए हैं-

जितु तू लावहि तितु हम लागह

अब जहाँ आप मुझे हुक्म दोगे, लगाओगे मैं वहीं लगूँगा। मैं सारी आयु अपना हुक्म, अपना अहंकार कभी नहीं आगे करूँगा। आपके हुक्म पर चलूँगा, आपके हुक्म, आप की आज्ञा पर चलूँगा। अब जो आप मुझे आज्ञा करोगे, मैं वही मानूँगा-

किआ एहि जंत विचारे ।।

ये जो जीव हैं, यदि ये अपनी-अपनी जैसी इनकी समझ है, जैसे इनकी

बोली है, ये कुछ बोले, कोई कुछ करे। ये क्या करेंगे? मैं तो आपके हुक्म में हूँ। जो आप हुक्म दोगे, आपकी शरण में हूँ, आपके हुक्म में हूँ। जहाँ आप मुझे लगाओगे वही लगूँगा। अब मेरा मन, मेरे वश में है, आपकी कृपा से। क्यों?

गुर जोति अरजुन माहि धरी ।। (पृ. १४०६)

अब गुरु 'ज्योत' तो अन्दर आ गई, गुरु ज्योत आने से मन की तो कोई बात चलनी नहीं, मन तो कुछ कर नहीं सकेगा। गुरु 'ज्योत' से पहले मन ने करना है, जब गुरु 'ज्योत' आ गई, फिर मन की क्या ताकत है? इसलिए, जहाँ आप लगाओगे, वहीं लगूँगा। अब आपका जो हुक्म है। मैं उसको निभाऊँगा, आपकी कृपा से-

मेरे राम जी तूं प्रभ अंतरजामी ।।

हे परमेश्वर! हे गुरु रामदास! तू मेरा राम है, तू मेरा प्रभु है, तू ही मेरा अंतर्यामी है, तू परमेश्वर है। मैं आपका दास हूँ, आपकी शरण में पड़ा हूँ। जो उनके अन्दर बात थी, उन्होंने साफ शब्दों में प्रकट कर दी, ईश्वर की बाणी में-

करि किरपा गुरदेव दइआला

हे दीनों पर दया करने वाले! हे गुरु! मेरे ऊपर अब कृपा करो, अब मैं कोई वस्तु, कृपा के अलावा और नहीं माँगता, मुझे तो कृपा चाहिए-

गुण गावा नित सुआमी ।।१।।

हे स्वामी! हे मालिक! सारी दुनिया के मालिक! हे परमेश्वर! आप के गुण गाता रहूँ। अब मैं परमेश्वर के सिवाय और किसी के गुण न गाऊँ। मैं आपका सिमरन करता रहूँ-

सिमरि सिमरि नामु बारं बार ।।
नानक जीअ का इहै अधार ।। (पृ.२९५)

जीव का उद्धार (मोक्ष) यहाँ जाकर होना है। अब मेरे ऊपर ये कृपा करो, मेरा मन, आपकी कृपा से, आपके सिमरन में जुड़ा रहे, नाम में जुड़ा रहे, नाम से अलग मेरा मन न जाए-

रहाउ ।।

'रहाउ' होता है रागियों के लिए, भई यह पंक्ति दो बार कहनी-

आठ पहर प्रभु अपना धिआईऐ

जो अपना प्रभु, परमेश्वर है, आठों पहर (हर समय) उसका ध्यान करें, अपने परमेश्वर को क्षण भर न भूलें–

सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ।। (पृ.२)

जो सारी दुनिया का दाता परमेश्वर है, वह मुझे भूले ना कभी। उसे (परमेश्वर को) भूलने से ही जीव भटक जाता है, जीव में और कोई गलती नहीं। जब यह (जीव) भूल में फँस जाता है तब यह अपने आप को भूल जाता है और अपने परमेश्वर, जो सब में 'आत्मा' रूप में बैठा है, अंतर–आत्मा, परमेश्वर, व्यापक, सोहं प्रकाश, स्वतःसिद्ध, उसे न मैं भूलूँ, उस परमेश्वर को। हे परमेश्वर! आप को मैं कभी भूलूँ ना–

गुर प्रसादि भउ तरीऐ ।।

यदि गुरु का 'प्रसादि' (कृपा) हो जाए, और पूर्ण 'भउ' प्रेम हो जाए। यदि जीव के हृदय में परमेश्वर का पूर्ण प्रेम हो जाए और फिर गुरु का हो जाए ऊपर 'प्रसादि' कृपा, तब जीव तरता (पार होता) है। यदि आपने तरना है तो गुरु के ऊपर–

गुरु परमेसरु एको जाणु ।। (पृ.८६४)

ऐसे पूरी तरह से वहाँ मन को खड़ा कर लो कि गुरु अंतर्यामी है, सब कुछ जानता है। वह कृपा कर देगा तो आप पार हो जाओगे, पार होने का उपाय यही है–

आपु तिआगि होईऐ सभ रेणा

अंहकार को हृदय से निकाल दो, सभी की चरण–धूल हो जाएँ। सभी के हृदयों में जो परमेश्वर बैठा है–

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ।।
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ।। (पृ.१४२७)

यदि तूने संसार से पार होना है, तो सभी के हृदय में अंतर्यामी, जो नियंता परमेश्वर है, उससे कभी बेमुख न होना। उस की चरण धूल होकर रहना और नम्रता पूरी तरह से रखना। नम्रता ऐसी हो कि अहंकार न आए, अंहकार के समाप्त होने से इसका उद्धार हो जाता है–

जीवतिआ इउ मरीऐ ।।२।।

कहते हैं, ऐसे जीते-जी मोक्ष (मुक्ति) हो जाती है। 'मरीऐ' का अर्थ मोक्ष। इस प्रकार जीव की जीते-जी, गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं, भाई! ऐसे मोक्ष हो जाती है। यदि यहाँ चला जाए तो इसकी जीते की ही मोक्ष हो जाती है। और फिर यदि मरने से मोक्ष हुई तो वह तो फिर उधार ली हुई मोक्ष है। न जाने क्या होगा? जीते हुए की ऐसे मोक्ष हो जाती है-

सफल जनमु तिस का जग भीतरि

जिसकी जीते-जी मोक्ष हो गई, जिसको 'आत्म-ज्ञान' के द्वारा, कृपा होकर स्वरूप की प्राप्ति हो गई। इस प्रकार कहते हैं।

अब फिर पढ़ ये पंक्ति-

सफल जनमु तिस का जग भीतरि

उसका संसार में जन्म लेना सफल हो गया, उसका मनुष्य शरीर सफल हो गया, उसका जन्म धारण करना सफल हो गया। इसलिए ये शब्द है भई, इस प्रकार भाई! आपका जन्म सफल होगा और जन्म सफल होने का दूसरा कोई तरीका नहीं है-

साधसंगि नाउ जापे ।।

साधुओं के साथ मिलकर नाम जपा करो। 'साध' उस पुरुष का नाम है, जो ईश्वर के साथ मिल गया। जिस पर बख्शिश हो गई, वह साधु हो जाता है। परमेश्वर की बख्शिश से साधु भी हो जाता है, संत भी बन जाता है-

कोटि मधे कोई संतु दिखाइआ ।।
नानक तिन कै संगि तराइआ ।। (पृ.१३४८)

करोड़ो में से भाई! कोई संत भी हो जाता है, बख्शा हुआ जो कोई हो, कहीं कोई बख्शा जाए। कोई जाति हो, धर्म हो, इसमें कोई किसी का हाथ नहीं, कोई हक नहीं। चाहे रविदास हो, चाहे वाल्मीकि हो, चाहे नामदेव छींबा हो, चाहे धन्ना जट्ट हो, चाहे जयदेव ब्राह्मण हो, शर्त इसमें कोई नहीं है। चाहे कबीर जुलाहा हो, इसमें कोई शर्त नहीं है, परन्तु जब वह बख्शा जाएगा, उसका जन्म सफल हो जाएगा। वह जीते जी मुक्त हो जाएगा-

सगल मनोरथ तिस के पूरन

सभी मनोरथ (इच्छाएँ), जितने भी उसके छोटे-बड़े कर्म थे वह सारे जल

गए, खत्म हो गए। उसके सभी जन्मों की जो आशा थी, परमेश्वर की प्राप्ति की, वह पूरी हो गई। वह (वस्तु) अब प्राप्त हो गई, जो वस्तु चाहता था–

जिसु दइआ करे प्रभु आपे ।।३।।

खुद यह (परमेश्वर) जिस पर दया करे, जीव थोड़ी बुद्धि वाला क्या करेगा? इसे (जीव को) क्या पता है? इसे तो पता ही नहीं कि भई, किस तरफ को चलना है, कैसे चलना है। उसकी (परमेश्वर की) दया के साथ सारा ही काम बन जाएगा–

जन नानक हरि भए दइआला तउ सभ बिधि बनि आई ।।

(पृ.२१६)

गुरु नौवें पातशाह कहते हैं, ओए! यदि हरि दयालु हो जाए, तेरी सारी विधियाँ सफल हो जाएँगी। तू यह बात मान, एक काम कर, तू हरि को अपने ऊपर दयालु कर। तू ऐसा काम कर, जिसके कारण तेरे ऊपर परमेश्वर दया करे, दयालु हो जाए, तेरी सारी विधियाँ सफल हो जाएँगी। तेरा जन्म सफल हो जाएगा। तू जीते हुए ही मुक्त हो जाएगा। अहंकार की समाप्ति हो जाएगी। आत्मा की प्राप्ति होने पर, तू बख्शा गया। ये अपने आप सारा काम तेरा सफल हो जाएगा परंतु परमेश्वर की दया से होगा, तू ऐसे काम कर, जिनके कारण परमेश्वर तुझ पर दया करे–

दीन दइआल क्रिपाल प्रभ सुआमी

दीनों के ऊपर दया करने वाले हे प्रभु! हे स्वामी! हे मालिक!

तेरी सरणि दइआला ।।

हे दयालु! मैं आपकी शरण आया हूँ। वहीं जहाँ से चला था शरण से, वहीं फिर आ गए। मैं अब आप, हे गुरु रामदास महाराज! परमेश्वर, अंतर्यामी! गुरु अर्जुन देव कहते हैं, मैं आपकी शरण आया हूँ। उनकी (गुरु रामदास महाराज जी की) शरण से मुझे ये सफलता प्राप्त हुई, जो आपको सुनाई–

करि किरपा अपना नाम दीजै

कृपा करके अपना नाम दे दो, हे परमेश्वर! जब माँगो तो नाम माँगो। एक (शब्द), वह मालवे (पंजाब के एक इलाके) के लड़के गाते हैं मिट्टी की छोटी-छोटी पहाड़ियों पर (बैठकर)। मैंने गाते सुना है, मैं लेटा हुआ था वहाँ।

वह बहुत ज्यादा यह गाएँ, (गुरवाणी की) और पंक्तियाँ लगाकर, 'नाम दान देना दाता जी, किते जाइए न जहां विचों खाली' (हे दाता जी! कहीं हम दुनिया से खाली हाथ न चले जाएँ, हमें नाम दान दे दो।) उनकी लय भी दूसरी होती है। वह बड़ा ही सुन्दर गाते थे 'नाम दान देना दाता जी, किते जाइए न जहां विचों खाली' बड़ा सुन्दर लय के साथ गाते थे। बाद में फिर ये शब्द लगाते थे, फिर यही बोलते थे, ये उनकी धारणा (मुख्य पंक्ति) थी। मैंने भी सुना, मैंने कहा-भई! दुनिया की माँगें (इच्छाएँ) जो हैं, उन्होंने आपके साथ नहीं जाना, न ही उन माँगों ने काम सँवारना है। यदि (दुनिया की) उन माँगों से कुछ मिल जाए, काम आपका मोक्ष प्राप्ति का तब भी नहीं निकलेगा, चाहे आप जोर लगा लो। सिकन्दर को अंत में कहना पड़ा, ओए! वह सामान मेरे सामने कर दो, मैं चला, मेरे सामने सामान कर दो। मैं और कुछ नहीं तो आँखों से देख तो लूँ, (मैंने) क्या किया था? वह (सामान) रख दिया। (सिकंदर) कहने लगा, आगे मेरी अर्थी जब निकालोगे, हाथ बाहर कर देना। लोगों को यह भूल न रहे कि भई, सिकन्दर भी कुछ ले गया जाते हुए। कहने लगा, मैं भी ऐसे ही फालतू लड़ा, बेमतलब लड़ा, बेमतलब मैंने किया, दुनिया को दुख दिया, गलत किया। पर लोगों को अब पता लग जाए, सिकन्दर कुछ लेकर नहीं गया, ये तो समझ जाएँगे। परन्तु उसके जैसे सिकन्दर तो और भी हो गए। इस करके परमेश्वर की दया के बिना काम नहीं बनेगा। परमेश्वर की कृपा के बिना भाई! नहीं काम बनेगा-

नानक साध रवाला ।।

श्री गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं, मैं गुरु रामदास के चरणों की धूल हूँ। मुझे गुरु रामदास के चरणों की धूल प्राप्त हो गई। ये सारी पदवी (उपाधि) मुझे इस कारण मिली है।

बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु !

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

3

धनासरी महला १ छंत १ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है ।।
तीरथु सबद बीचारु अंतरि गिआनु है ।।
गुर गिआनु साचा थानु तीरथु दस पुरब सदा दसाहरा ।।
हउ नामु हरि का सदा जाचउ देहु प्रभ धरणीधरा ।।
संसारु रोगी नाम दारू मैलु लागै सच बिना ।।
गुर वाकु निरमलु सदा चानणु नित साचु तीरथु मजना ।।१।।
साचि न लागै मैलु किआ मलु धोईऐ ।।
गुणहि हारु परोइ किस कउ रोईऐ ।।
वीचारि मारै तरै तारै उलटि जोनि न आवए ।।
आपि पारसु परम धिआनी साचु साचे भावए ।।
आनंदु अनदिनु हरखु साचा दूख किलविख परहरे ।।
सचु नामु पाइआ गुरि दिखाइआ मैलु नाही सच मने ।।२।।
संगति मीत मिलापु पूरा नावणो ।।
गावै गावणहारु सबदि सुहावणो ।।
सालाहि साचे मंनि सतिगुरु पुंन दान दइआ मते ।।
पिर संगि भावै सहजि नावै बेणी त संगमु सत सते ।।
आराधि एकंकारु साचा नित देइ चड़ै सवाइआ ।।
गति संगि मीता संतसंगति करि नदरि मेलि मिलाइआ ।।३।।
कहणु कहै सभु कोइ केवडु आखीऐ ।।
हउ मूरखु नीचु अजाणु समझा साखीऐ ।।
सचु गुर की साखी अंम्रित भाखी तितु मनु मानिआ मेरा ।।
कूचु करहि आवहि बिखु लादे सबदि सचै गुरु मेरा ।।
आखणि तोटि न भगति भंडारी भरिपुरि रहिआ सोई ।।
नानक साचु कहै बेनंती मनु मांजै सचु सोई ।।४।। (पृ. ६८७)

सारी संगत किरपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु ! सतिनामु श्री वाहिगुरु !!

धनासरी महला १ छंत

धनासरी राग में पहले पातशाह (श्री गुरु नानक देव जी) छंत (छंद) उच्चारण करते हैं। 'छंत' नाम होता है यश का। परमेश्वर का यश उच्चारण करते हैं, गुरु नानक देव महाराज-

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ॥

एक जो परमेश्वर है, वह पूर्ण सतगुरु की कृपा से प्राप्त होता है-

तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है ॥

आप तीर्थों पर स्नान करने जाते हो, ठीक है, ईश्वर में विश्वास होता है, श्रद्धा बढ़ती है। पर 'तीर्थ' तो गुरु साहिब कहते हैं भाई! 'नामु' है। गुरु का सिद्धांत एक ही है गुरुमुख। गुरुमुख उसे कहते हैं, जिसका नाम के साथ मन एक हो जाए, नाम उसे मिल जाए। मन, नाम में लीन हो जाए, उसे पूर्ण पवित्रता प्राप्त हो जाएगी, परमेश्वर प्राप्त हो जाएगा। लोग बाहरी साधन करते हैं, अंदर का साधन नाम का अभ्यास है। नाम के साथ जब तक मन एक नहीं होता, तब तक वह गुरुमुख नहीं बनेगा। क्यों? गुरु साहिब ने लिखा है-

तेरा कवण गुरू (पृ. ६४२)

तेरा गुरु कौन है?-

सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ॥ (पृ. ६४३)

'सबदु' (नाम) गुरु है? शब्द के अंदर परमेश्वर होता है। जब आपका मन शब्द के साथ एक हो जाएगा, परमेश्वर की आपको प्राप्ति हो जाएगी, ये (शब्द) सब से ऊँचा पवित्रता का स्थान है। वह 'नाम' तीर्थ है भाई! अपने मन को, नाम के साथ जोड़ो। पूरे गुरु से नाम लो, उस नाम के साथ मन को जोड़ो। नाम द्वारा आपको नामी (परमात्मा) प्राप्त हो जाएगा। इससे बड़ी पवित्रता और कोई नहीं है-

तीरथु सबद बीचारु

'तीरथु' (तीर्थ) में शब्द का विचार करो। उस शब्द द्वारा क्या विचार करना है? वह शब्द जिस को सत्, चित्त, आनंद, व्यापक, परिपूर्ण कहते हैं,

उसे अपने अंदर देखो-

सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ।। (पृ. २)

वह, सभी जीवों का दाता एक ही है, उसे कभी भूलना नहीं। उसे ना भूलना ही-

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिउ पुकारि ।।
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ।। (पृ.१४२७)

यदि तू उस पूरे तीर्थ पर नाम द्वारा नामी को मिल जाए, वह ईश्वर तेरे हृदय में बैठा है। गुरु साहिब ने लिखा है-

जो इहु जाणहु सो इहु नाहि ।। (पृ. ८८५)

जिसे तुम ईश्वर जानते हो, वह ईश्वर नहीं है। वह त्रिकुटी है ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय; ध्याता, ध्यान, ध्येय। ये ईश्वर तो नहीं है, ये तो रजो, तमो, सतो तीनों गुणों की त्रिकुटी है। ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय और ध्याता, ध्यान, ध्येय- इन में से ईश्वर तो कोई भी नहीं है-

जो इहु जाणहु सो इहु नाहि ।। जानणहारे कउ बलि जाउ ।।
(पृ. ८८५)

आपके अंदर कोई जानने वाली वस्तु भी तो है। जो आपके अंदर, सत्ता-स्फूर्ति, चेतन है, वह आपके हृदय में है, वह ज्ञान आपके हृदय में है। वह जो (ईश्वर) आप में है, उस पर से बलिहार (कुर्बान) जाओ।

जानणहारे कउ बलि जाउ ।। (पृ. ८८५)

जो सारी सृष्टि को बनाने वाला, पालने वाला, लय (समाप्त) करने वाला, जो सबको जानने वाला, जाननेहारा, दाना-बीना (देखने-जानने वाला) उस पर से कुर्बान जाओ। वह क्या है?-

जाननहार प्रभू परबीन ।। बाहरि भेख न काहू भीन ।।
(पृ.२६६)

यह सत्य वस्तु है। अन्य तो सभी तीन गुण (रजो, तमो, सतो), पांच तत्व (जल, अग्नि, वायु, आकाश, पृथ्वी), जड़ हैं। जड़ तो जानने वाला नहीं होता, जाननेवाला एक परमेश्वर है-

जानणहारे कउ बलि जाउ ।। (पृ. ८८५)

जाननहार प्रभू परबीन ।। बाहरि भेख न काहू भीन ।। (पृ. २६६)

बाहरी वेश (पहरावा, कपड़े आदि) से ईश्वर नहीं प्रसन्न होता। वेश बनाकर तो लोग, ठग्गी कर रहे है, वेश बनाकर तो बेईमानियाँ करते हैं, वेश बनाकर तो राग-द्वेष करते हैं। बाहरी वेशों से ईश्वर नहीं प्रसन्न होता। जो यह (समझते हैं) बाहरी वेशों के साथ कि ईश्वर प्रसन्न हो गया। कहते हैं, नहीं भई, वह (मनुष्य) तो धोखे में आ गया। वह तो गलत चला गया, वह तो यहीं रुक गया-

जानणहारे कउ बलि जाउ ।। (पृ. ८८५)

आपके अन्दर जाननेवाला, सत्ता-स्फूर्ति देने वाला परमेश्वर अन्दर बैठा है। वह चेतन सत्ता नहीं आपके अन्दर, जो सबको जानती है? चेतन को ज्ञान कहते हैं। उस ज्ञान पर कुर्बान हो जाओ आप, वह (ज्ञान) है परमेश्वर। गुरु के हुक्मनामे द्वारा उसे समझो, गुरु के द्वारा उसे समझो, अभ्यास द्वारा उसे समझो-

अंतरि गिआनु है ।।

वह 'अंतरि गिआनु' नहीं है आपके? हर घट (शरीर) में हरि जी बसता है, जो हरि (है), वह ज्ञान स्वरूप नहीं है? वह अंदर आपके ज्ञान है। आपने शब्द (नाम) द्वारा ज्ञान को पकड़ना है। आप पहुँच जाओगे, मंजिल तक पहुँच जाओगे। बाहरी जो साधन हैं। ये तो पुराणों इत्यादि में बाद में लिखे गए हैं, स्मृतियाँ इत्यादि में। वह जो वेद है, उसमें एक (परमेश्वर) लिखा है। परमेश्वर एक है, गुरु साहिब ने एका (१) लिखा-

एकम एकंकारु निराला ।।
अमरु अजोनी जाति न जाला ।।
अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ ।।
खोजत खोजत घटि घटि देखिआ ।। (पृ. ८३८)

वह तो सभी के हृदय में है-

ईश्वरः सर्वभूतानां हृददेशे अर्जुन तिष्ठति ।
भ्रामयन् सर्व भूतानि यंत्रा रूढानि मायया । (गीता १८/६१)

हे अर्जुन! वह तो सभी के हृदय देश में बैठा है, उस ईश्वर की तू उपासना कर, उस ईश्वर के साथ, तू मन को जोड़-

गुर गिआनु साचा थानु तीरथु

गुरु ने जो ज्ञान तुझे दिया है, असल में वह सच्चा है। ये बड़ा तीर्थ है, ये 'थानु तीरथु' है। असली तीर्थ ये है-

दस पुरब सदा दसाहरा ।।

फिर तेरा सदा दशहरा हो जाएगा। दस (१०) पर्व (महान दिन) है बड़े, उन सब की प्राप्ति हो जाएगी तुझे, एक तीर्थ की क्या? वह तेरा दशहरा बन जाएगा, वह खुशी का दिन बन जाएगा-

हउ नामु हरि का सदा जाचउ

मैं, गुरु साहिब कहते हैं, एक चीज माँगता हूँ, हरि का 'नामु'। मुझे नाम प्राप्त हो जाए नामी का, और कोई चिंता नहीं। बस! नाम प्राप्त हो जाए-

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा ।। नामु प्रभू का लागा मीठा ।।

(पृ.२६३)

जब 'नामु' मीठा लगा, नाम के साथ मन जुड़ गया, नामी (परमेश्वर) प्राप्त हो जाएगा। इसलिए, मैं एक चीज़ माँगता हूँ दुनिया में, परमेश्वर का नाम, जो मुझे नामी की प्राप्ति करवा दे और मेरा जन्म-मरण कट जाए-

देहु प्रभ धरणीधरा ।।

हे सारी पृथ्वी को धारण करने वाले! हे सारी सृष्टि को धारण करने वाले! पालन करने वाले! लय (समाप्त) करने वाले! हे परमेश्वर! ये बात मुझे एक दे दो, ये मेरी माँग (इच्छा) है। गुरु साहिब कहते हैं, मेरी और कोई माँग नहीं है-

संसारु रोगी नामु दारू

(हम) सारा संसार अहंकार करके माँगते है-

हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ।।

किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ।। (पृ. ४६६)

एक, मैं दवाई माँगता हूँ नाम (शब्द)। अहंकार जो सबको चिपका पड़ा है, किसी को किसी पंथ का, मज़हब का और कई तरह का, सभी को अहंकार चिपका हुआ है। जितनी देर अहंकार चिपका हुआ है, यह जीव है। अहंकार जो है, ये बड़ा भारी रोग है-

दारू भी इसु माहि ।।

इसी में, तुम्हारे अंतःकरण में, एक इसकी (अहंकार की) दवाई भी है, वह नाम है। वह नाम मैं माँगता हूँ, वह नाम प्राप्त हो जाए–

मैलु लागै सच बिना ।।

नाम है दवाई–

सरब रोग का अउखदु नामु ।।
कलिआण रूप मंगल गुण गाम ।। (पृ. २७४)

एक दवाई–

सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ ।।
नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ ।। (पृ. ४६८)

सच भी साथ चाहिए। जब इसके अन्दर सच आ जाएगा, 'सच' है परमेश्वर–

आदि सचु जुगादि सचु ।। है भी सचु नानक होसी भी सचु ।।१।।

(पृ. १)

जब इसके अन्दर सच आ गया और नाम के साथ सच आएगा। दो दवाइयाँ हैं गुरु ग्रन्थ साहिब में, एक नाम, एक सच। यदि वह सच ना आया तो 'मैं' आ जाएगी और माया आ जाएगी। माया के विचार आ जाएँगे, फिर तो मैल लग जाएगी मन को। वह संस्कार मन में रह जाएँगे, फिर तो मन अंधा-सा हो जाएगा, बहरा-सा हो जाएगा, एक सत्य ही चाहिए। नाम और सत्य परमेश्वर, ये दो चीजें इसको, जीव को चाहिएँ, फिर इसकी मोक्ष हो जाएगी–

गुर वाकु निरमलु सदा चानणु

अब, जो गुरु का सच्चा 'वाकु' (कथन) है, नाम-परमेश्वर संबंधी, वह सदा प्रकाश करने वाला है–

गुरबाणी इसु जग महि चानणु करमि वसै मनि आए ।।

(पृ. ६७)

गुरु की वाणी जो है, वह प्रकाश है। यह सारी वाणी प्रकाश है। चाहे रविदास की, चाहे नामदेव की, चाहे धन्ने की है, चाहे जयदेव की है, चाहे दस गुरुओं की है, ये सारी प्रकाश ही प्रकाश है–

गुरुबाणी इसु जग महि चानणु

गुरूबाणी 'प्रकाश' है-

करमि वसै मनि आए ।। (पृ. ६७)

जब परमेश्वर की कृपा हो तो ये मन में बस जाती है तो मन में प्रकाश होगा-

नित साचु तीरथु मजना ।।

'तीरथु' (तीर्थ) ये सच्चा है। इसमें रोज डुबकी लगाया करो। मजन, नाम है डुबकी (गोता) लगाने का। इसमें रोज गोते लगाया करो। इस वाणी को समझकर, अपने मन की डुबकी नाम के द्वारा, नामी (परमेश्वर) में लगाया करो-

साचि न लागै मैलु

उस सच को कभी मैल नहीं लगती। सच्चा जो है अन्दर, चेतन, परमेश्वर, साक्षी। आप जानते हो एक इसके (जीव के) अन्दर चेतन है, साक्षी है। वह सारी दुनिया की वस्तुओं को जानता है। जब आपका मन, कोई वस्तु जो आपकी है, कोई भी पदवी है, जब उसके साथ साक्षी जुड़ेगा, वहाँ से आपको (उस वस्तु और पदवी का) ज्ञान हो जाएगा। पहले तो वह (वस्तु) जड़ ही है, उस साक्षी के मिलने से ज्ञान हो जाएगा। साक्षी, चेतन है, परमेश्वर है। यह सारे जितने भी दुनिया के पदार्थ हैं, उन सबको जानने वाला-

दाना बीना साई मैडा (पृ. ५२०)

दाना बीना साई मैडा (मेरा) है। वह साईं (मालिक) है, उसको कभी मैल नहीं लगती-

साचि न लागै मैलु किआ मलु धोईऐ ।।

तो अब तीर्थों पर मल-मल कर क्या धोओगे? सच को तो मैल लगती नहीं। बात तो यही से चली है। सच को तो मैल लगती ही नहीं है। शरीर धोने से, वह जो अन्तःकरण की मैल, बुराइयाँ हैं, वह भी खत्म नहीं होंगी। जब नाम द्वारा नामी के साथ मन एक हो जाएगा, जुड़ जाएगा, तदाकार (नामी के आकार) हो जाएगा फिर आपको पता लग जाएगा-

असंगो ह्यम पुरुष । (बृहदारण्यक उपनिषद अः४, ब्राः३ मंत्र १५)

असंगो न हि सजयते । (बृहदारण्यक उपनिषद अः४, ब्राः२ मंत्र ४)

वह पुरुष असंग है, असंग कभी संबंध वाला नहीं हुआ, वह तो असंग है। और नाम उसको कहते हैं-

सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ।। (पृ. २)

उसे भूलना नहीं कभी, परमेश्वर को-

गुणहि हारु परोइ किस कउ रोईऔ ।।

जब सच, संतोष आदि गुणों का हार (माला) तूने पिरो लिया (मन में धारण कर लिया), जब तुझे उस नामी की प्राप्ति हो गई, वह सारे गुण तेरे अन्तःकरण में बस जाएँगे। फिर तू किसे धोएगा? अब तो कोई धोने लायक वस्तु ही न रही, अब तो तीर्थों (बाहरी तीर्थों) का कोई मतलब नहीं रहा, अब तो अन्दर के तीर्थ-

सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ।।
अंतरगति तीरथि मलि नाउ ।। (पृ. ४)

अब तो 'अंतरगति' जो तीर्थ है 'आत्मा', उसमें मन लीन हो गया, एक हो गया, अब तो वह तीर्थ प्राप्त हो गया। उसके अन्दर मन की डुबकी लगवानी है, उसमें मन को तदाकार करना है-

वीचारि मारै तरै तारै

यदि विचार द्वारा इस सारे अज्ञान को, अहंकार को (यह जीव) मार दे तो आप भी पार हो जाएगा और लोगों को भी पार लगाने वाला हो जाएगा-

उलटि जोनि न आवए ।

फिर तुझे जन्म में नहीं आना पड़ेगा उल्टा होकर, उल्टा होकर लटकना नहीं पड़ेगा। तेरा जन्म-मरण कट जाएगा। फिर जन्म-मरण नहीं होगा-

आपि पारसु परम धिआनी

कहते, परमेश्वर खुद 'पारसु' है। पारस के साथ लोहा (स्पर्श कर) जाए, पीतल स्पर्श कर जाए, ताँबा (स्पर्श कर) लग जाए, सोना बन जाता है। वह आप 'पारस' है। उसे तुम 'परम धिआनी' कहो, जिसका मन उस परमेश्वर के साथ जुड़ गया, उसे परम ध्यानी कहो। नेति-नेति (न इति अर्थात प्रभु की महिमा बेअंत है, इस बात) में वह सभी (बातों) को काट देगा। यह स्थूल (शरीर) परमेश्वर नहीं, सूक्ष्म (शरीर) परमेश्वर नहीं, कारण-अज्ञान (शरीर) परमेश्वर नहीं, इन से जो अलग है, वह एक परमेश्वर है। उसके साथ जब

तेरा मन मिल गया, तू खुद ही पार हो जाएगा और पार लगाने वाला भी हो जाएगा-

साचु साचे भावए ॥

तेरे सच के साथ, जब तुझे सच्चा (परमेश्वर) अच्छा लग जाए, जब सच के साथ तेरा मन मिल गया, तुझे सच्चा परमेश्वर प्राप्त हो गया-

आनंदु अनदिनु हरखु साचा

रात-दिन तुझे 'आनंदु' हो जाएगा। 'हरखु' कहें, अत्यंत खुशी हो जाएगी। वह तुझे 'आनंदु', तुझे परमेश्वर प्राप्त हो जाएगा। वह जो ब्रह्म आंनद-स्वरूप है, वह तुझे प्राप्त हो जाएगा-

दूख किलविख परहरे ॥

जितने भी दुख थे, छोटे-बड़े पाप, सारे तेरे कट जाएँगे, जन्म-मरण भी कट जाएगा-

सचु नामु पाइआ गुरि दिखाइआ

सच्चे 'नामु' द्वारा मैंने परमेश्वर पाया, पहले पातशाह कहते हैं। ये मेरे गुरु ने, मुझे यह परमेश्वर दिखाया और गुरु उनका (श्री गुरु नानक देव जी का) आपको मालूम है?-

अपरंपर पारब्रहमु प्रमेसरु नानक गुरु मिलिआ सोई जीउ ॥

(पृ.५६६)

ऐसा लिखा हुआ है, गुरु ग्रन्थ साहिब में। वह गुरु मुझे, अकाल पुरुष परमेश्वर मिला। शब्द, गुरु के पास से मिला और मुझे परमेश्वर की प्राप्ति इस रास्ते से हुई है। नाम द्वारा भाई! मुझे नामी (परमेश्वर) प्राप्त हुआ है। उस संत के संग से, उस महापुरुष परमेश्वर के संग से-

गुरु परमेसरु एको जाणु ॥ (पृ. ८६४)

मुझे परमेश्वर का नाम प्राप्त हुआ है, नाम के साथ, मुझे परमेश्वर प्राप्त हुआ है-

मैलु नाही सच मने ॥

कहते हैं, उसे कोई मैल नहीं लगती। वह, मन में जो सच है-

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥ (पृ. ४४१)

वह मन में 'जोति' है-

मन महि आपि मन अपुने माहि ।।

नानक कीमति कहनु न जाइ ।। (पृ. २७६)

मन में परमेश्वर बैठा है, जो मन को जानता और देखता है। ये वही परमेश्वर मन के अन्दर है और मन उसके आसरे है। वह जो परमेश्वर है, उसकी कीमत नहीं कही जा सकती। उसके बारे में पूरी ताकत से स्पष्ट रूप से मन-वाणी से कुछ कह नहीं सकते। वह (जीव) यदि प्रेम में आ जाए तो सच को प्राप्त हो जाता है-

संगति मीत मिलापु पूरा नावणो ।।

जो संगत का, प्यारे की संगत का मिलाप है, यही स्नान करना है। जो पूर्ण पुरूषों की संगत करनी है और उसके द्वारा मिलाप करना है (परमेश्वर से)। उस परमेश्वर के मिलाप के साथ, इसका (जीव का) पूरा स्नान हो जाएगा। इसको कोई मैल नहीं लगेगी, ये शुद्ध हो जाएगा, इसको 'आत्म-तीर्थ' प्राप्त हो जाएगा-

गावै गावणहारु सबदि सुहावणो ।।

कहते हैं, शब्द बड़ा सुन्दर है परन्तु गाने वाले ही इसे गाएँगे। नाम के साथ जब मन जोड़कर गाओगे, आपको भी रस आएगा और जो सुनेंगे उनको भी रस आएगा-

सालाहे साचे मंनि

पर मन को शुद्ध (पवित्र) करके उसकी सिफति-सालाह (स्तुति) करो। पहले मन को शुद्ध (पवित्र) करो। जब मन जुड़ जाएगा, वह मन शुद्ध हो जाएगा और मन पवित्र हो जाएगा। फिर भाई, उस (स्तुति) को गाने वाले होकर गाया करो, उस का अभ्यास किया करो, नाम का सिमरन किया करो-

सिमरि सिमरि नामु बारं बार ।।

नानक जीअ का इहै अधार ।। (पृ. २६५)

सतिगुरु पुंन दान दइआ मते ।।

जब सतिगुरु की दया हो जाए, वह मति (बुद्धि) प्राप्त हो जाए। वह महापुण्यों का फल है-

पिर संगि भावै सहजि नावै

जब स्वामी के 'संगि' के साथ मन मिल गया, फिर इसका स्नान हो जाएगा, ये पवित्र हो जाएगा–

बेणी त संगमु सत सते ।।

ये जो 'बेणी संगमु' है इड़ा, पिंगुला और सुष्मना (मस्तक की तीन नाड़ियाँ) उस के संग के साथ और उस जगह पर जब दशम् द्वार में ये (परमेश्वर के साथ) एक होगा, इसका स्नान हो जाएगा, फिर इसका नहाना हो जाएगा। वह मन, वाणी, शरीर से अलग जो परमेश्वर है, उस के साथ जब मिल गया–

नाम संगि जिस का मनु मानिआ ।।
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ।। (पृ. २८१)

जब नाम के साथ इसका मन मिल गया, तो वह (परमेश्वर) जो है, उन तीनों (इड़ा, पिंगुला और सुष्मना) से अलग है, जागरण, स्वप्न और सुषुप्ति से भी अलग है, तीनों अवस्थाओं (बचपन, जवानी, बुढ़ापा) से भी अलग है, तीनों शरीरों (स्थूल, सूक्ष्म, कारण) से भी अलग है। उस (नाम) के साथ जब इसका मिलाप हो गया, स्नान हो गया तब इसका नहाना हो गया पूरा, आगे के लिए पवित्र हो गया–

आराधि एकंकारु साचा

और कहते हैं एक जो है न सच्चा, उसका आराधन किया करो–

एकम एकंकारु निराला ।। अमरु अजोनी जाति न जाला ।।
अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ ।। खोजत खोजत घटि घटि देखिआ ।।
(पृ. ८३८)

वह एक जो है सभी में है, वह चारों प्रकार के जीवों (अंडज, जेरज, उतभुज और सेतज) के हृदयों में एक परमेश्वर है पर उसकी एकता में कभी फ़र्क नहीं पड़ा, अंतःकरण भिन्न-भिन्न (अलग-अलग) हैं। राजसिक, तामसिक, सात्विक द्वारा वृत्तियाँ भिन्न-भिन्न हैं। संसार पाँच तत्वों का बना हुआ है भिन्न-भिन्न है परंतु एक परमेश्वर में फर्क नहीं पड़ा। वह उत्पत्ति, पालना, लय करने वाला जो एक है, उस का आराधन किया कर, एक परमेश्वर का नाम जपा कर, अभ्यास किया कर–

नित देइ चड़ै सवाइआ ।।

तब नित्य (सदा) ही तुझे यह सवाया (सवा गुणा) होकर प्राप्त होगा। नित्य तेरा ऊँचे से ऊँचा, बड़े से बड़ा मन तेरा परमेश्वर के साथ मिल कर, ऊँचे के साथ मिल कर ऊँचा हो जाएगा–

वडा साहिबु ऊचा थाउ ।। ऊचे उपरि ऊचा नाउ ।।
एवडु ऊचा होवै कोइ ।। तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ।।

(पृ. ५)

उस ऊँचे के साथ, तू मिल जाएगा–

गति संगि मीता संतसंगति

संतों की संगति करने से, वह गति तुझे प्राप्त होगी, वे मित्र संत, तुझे पूर्ण मिलेंगे, उनके द्‌वारा तेरी भी गति (मुक्ति) हो जाएगी–

करि नदरि मेल मिलाइआ ।।

और मुझे कृपा करके उस परमेश्वर रूप गुरु ने, परमेश्वर के 'मेल' में, शब्द के द्‌वारा मिलाया है। मेल (मिलाप) इसका शब्द द्‌वारा ही होगा, जब शब्द के साथ यह एक हो जाएगा, इसे गुरुमुख कहते हैं। फिर इसका नाम गुरुमुख पड़ जाता है, गुरु घर में–

कहणु कहै सभु कोइ केवडु आखीऐ ।।

बातों के द्‌वारा सब (परमेश्वर को) बड़ा कहते हैं पर उसे (परमेश्वर को) कितना बड़ा कहें, कहने में वह आता नहीं है, मन वाणी का तो वह विषय नहीं। बड़े से बड़ा, आखिरी बड़ा कह सकते हैं सब से बड़ा, भाई! परमेश्वर है–

हउ मूरखु नीचु अजाणु समझा साखीऐ ।।

हम तो मूर्ख हैं, अनजान हैं परंतु वह उपदेश द्‌वारा ही समझ आई है। वह पूर्ण, जब परमेश्वर रूप गुरु मिला तो उसके उपदेश द्‌वारा हमें समझ आई। हम तो मूर्खों से भी मूर्ख थे और अनजान थे–

सचु गुर की साखी अंम्रित भाखी

उस सतगुरु का जो सीख (उपदेश) है, वह अमृत से भीगी हुई है। वह अमृत देने वाली है, जीव अमर हो जाता है। ये मनुष्य अमर हो जाए यदि वह गुरु की सीख के मुताबिक चले–

तितु मनु मानिआ मेरा ॥

इस पर श्री गुरु नानक देव जी कहते, मेरा मन भी मान गया–

कूचु करहि आवहि बिखु लादे

जो 'विष' का भरा हुआ था संसार मन में, वह 'कूचु' कर गया, चला गया, नाश हो गया। वह (संसार) मिथ्या निश्चय हो गया–

द्रिसटिमान है सगल मिथेना ॥ (पृ. १०८३)

मुई सुरति बादु अहंकारु ॥ ओहु न मूआ जो देखणहारु ॥

(पृ. १५२)

वह जो देखने वाला है, वह जन्म–मरण में नहीं आता। कहते, जी! जन्म–मरण में क्या आता है? कहते, मिथ्या, झूठ। जितना भी आकाश से लेकर संसार बनाया परमेश्वर ने, जो उपनिषद में लिखा हुआ है, वह सारा मिथ्या है परंतु इसे (संसार को) हम हटा भी नहीं सकते, ईश्वर के बनाए हुए को। यह परमेश्वर के संकल्प से बना है, उसका संकल्प इतना बलशाली (शक्तिशाली) है, हम उसे हटा नहीं सकते। पर क्या कर सकते हैं? मिथ्या समझ सकते हैं–

द्रिसटिमान है सगल मिथेना ॥ (पृ. १०८३)

वह, देखने में जो आता है, सारा मिथ्या है। हमारी गलती तो जीव बनने की एक ही है। हमने मोह के द्वारा दुनिया में ममता डाल ली, वह ममता डाल कर हम अधीन हो गए, माया के भी अधीन हो गए, इसलिए जीव हो गए–

माइआ मनहु न वीसरै मांगै दंमां दंम ॥

सो प्रभु चिति न आवई नानक नही करंमि ॥ (पृ. १४२६)

यहाँ आ गए। उपनिषद में यह प्रकरण आता है, यह जीव क्यों बना? ममता के साथ बना, मोह के साथ बना, उस (मोह, ममता) को चिपक गया–

सबदि सचै गुरु मेरा ॥

कहते, सच्चा 'सबदि' (शब्द) ही मेरे गुरु ने दिया है। वह, मेरे पास तो केवल गुरु का शब्द ही है–

आखणि तोटि न भगति भंडारी

कहते हैं, 'आखणि' (कहने) से कभी कमी नहीं आती, उसका (गुरु का) भंडार भरा पड़ा है भक्ति का, उसका नाम का भंडार भरा हुआ है, जितनी तेरी खुशी है जपता जा-

भरिपुरि रहिआ सोई ।।

उसका मालिक जो है 'शब्द' का 'शब्दी' परमेश्वर, वह 'भरिपुरि' वह पूरी तरह फैला हुआ है, परमेश्वर है-

नानक साचु कहै बेनंती

श्री गुरु नानक देव महाराज कहते हैं, आपको भाई! सच्ची विनती करते हैं-

मनु मांजै सचु सोई ।।

यदि आप अपने मन को माँज लो, यदि आप ज्ञान द्वारा, अपने मन में झाड़ू फेर कर, सारा कबाड़ बाहर निकाल लो। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और दूसरा जो आप के अंदर है मनोराज, बैठे-बैठे किए जाते हो, भई, यह करेंगे, वह करेंगे, यदि उस मन को आप ज्ञान के साथ माँज दो, फिर क्या होगा? पढ़ फिर से-

नानक साचु कहै बेनंती मनु मांजै सचु सोई ।।

यदि आप मन को साफ कर दोगे, वह जो सत्य है, आपको वहीं से मिलेगा, वह सच आपके मन में बैठा है-

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ।। (पृ. १४२७)

वह तुम्हारे हृदय में नहीं बैठा?

पूजन चाली ब्रहम ठाइ ।। सो ब्रहमु बताइओ गुर मन ही माहि ।।

(पृ. ११९५)

रामानंद जी (भक्त कबीर जी के गुरु साहिब) कहते, मैं 'ब्रहम' की पूजा करने जाता था, बाहर जो मंदिर है उसमें। गुरु ने बताया, वह तो तेरे मन में बैठा है, जिसकी तू पूजा करने जाता है। जब मुझे वह (ब्रह्म) प्राप्त हुआ, मेरा जन्म-मरण कट गया-

पूजन चाली ब्रहम ठाइ ।।
सो ब्रहमु बताइओ गुर मन ही माहि ।।
जहा जाईऐ तह जल पखान ।।
तू पूरि रहिओ है सभ समान ।। (पृ. ११९५)

अब जहाँ कहीं जाते हैं, या तो जल मिलता है या पत्थर मिलते हैं और अब तो वह परिपूर्ण मिल गया–

तू पूरि रहिओ है सभ समान ।। (पृ. ११९५)

तू तो एक रस सब के हृदयों में पूर्ण हो रहा है। यदि मन को साफ कर लो, आपको वह (सच्चा) परमेश्वर, अपने मन में से प्राप्त हो जाए। गुरु साहिब कहते हैं–

नानक साचु कहै बेनंती मनु मांजै सचु सोई ।।

बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु !

❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

4

टोडी महला ५ ।।
क्रिपा निधि बसहु रिदै हरि नीत ।।
तैसी बुधि करहु परगासा लागै प्रभ संगि प्रीति ।।रहाउ।।
दास तुमारे की पावउ धूरा मसतकि ले ले लावउ ।।
महा पतित ते होत पुनीता हरि कीरतन गुण गावउ ।।१।।
आगिआ तुमरी मीठी लागउ कीओ तुहारो भावउ ।।
जो तू देहि तही इहु त्रिपतै आन न कतहू धावउ ।।२।।
सद ही निकटि जानउ प्रभ सुआमी सगल रेण होइ रहीऐ ।।
साधू संगति होइ परापति ता प्रभु अपुना लहीऐ ।।३।।
सदा सदा हम छोहरे तुमरे तू प्रभ हमरो मीरा ।।
नानक बारिक तुम मात पिता मुखि नामु तुमारो खीरा ।।४।।३।।५।।

(पृ. ७१२)

सारी संगत किरपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु ! सतिनामु श्री वाहिगुरु !!

धरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरूपी रहिओ भरि ।।
भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख्य हरि ।। (पृ. १४०६)

पाँचवें गुरु (श्री गुरु अर्जुन देव जी) द्वारा, यह शब्द आया ईश्वर की वाणी का, इसे हुक्मनामा कहते हैं। यह हुक्मनामा परमेश्वर की तरफ से आया होता है। हुक्म देने वाला एक ही है, हुक्मी कभी दो नहीं हुए आज तक। एक का ही हुक्म सारी सृष्टि पर चलता है। इसलिए, वह जो एक है, वह परमेश्वर है, एका (१) है । यह वेद में लिखा है–

सदेव सोम्य इदम् अग्र आसीद एक मेवा द्वितीयम ।
तस्माद सतः सज्जायत । (छांदोग्य उपनिषद अध्याय ६ खण्ड २, मंत्र १)

गुरु साहिब ने एका (१) लिख दिया–

एकम एकंकारु निराला ।। अमरु अजोनी जाति न जाला ।।

अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ ।। खोजत खोजत घटि घटि देखिआ ।।

(पृ. ८३८)

वह सभी की बुद्धि का साक्षी, चेतन, दृष्टा (देखने वाला), पारख (सही–गलत को परखने वाला)–

नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ ।। (पृ. १४४)

जो अच्छे और बुरे ख्यालों को देखता है, जानता है, टाइप करता है, वह सब के हृदय में, परमेश्वर बैठा है। जगत बाद में बना है, वह परमेश्वर पहले था–

सदेव सोम्य इदम् अग्र आसीद एक मेवा द्विवितीयम ।

तस्माद सतः सज्जायत । (छांदोग्य उपनिषद अध्याय ६ खण्ड २, मंत्र १)

यह (परमेश्वर) पहले ही सच था, यह (अब) नया सच नहीं हुआ। यह सच ही तेरे हृदय में–

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिउ पुकारि ।।

कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ।।

(पृ. १४२७)

यही, तेरे हृदय में 'हरि जू' बैठा है, जो पहले ही सच था, वह सच तेरा अपना–आप है, वह तेरा अंतर–आत्मा है–

अंतर आतमै ब्रहमु न चीन्हिआ माइआ का मुहताजु भइआ ।।

(पृ. ४३५)

गुरु साहिब कहते, ओए! तेरा अंतर–आत्मा परमेश्वर है पर तूने पहचाना नहीं।

माइआ का मुहताजु भइआ ।।

तेरा मन, माया की मोहताजगी में चला गया, वह परमेश्वर के सन्मुख (सामने) नहीं हुआ। वह माया के लोभ में मन, सन्मुख नहीं हुआ। तुम देखते हो अपने अंदर, आठ पहरों (दिन–रात) में कितनी देर मन परमेश्वर के सन्मुख होता है और कितनी देर मन संसार का मनोराज (कल्पना) करता है, यह तो आपको पता है। इसलिए, वह तेरा अंतर–आत्मा, चेतन, परमेश्वर, परिपूर्ण, व्यापक था परंतु तूने ना पहचाना–

चीनत चीतु निरंजन लाइआ ।।
कहु कबीर तौ अनभउ पाइआ ।। (पृ. ३२८)

जब चित्त को पहचान कर, कबीर साहिब कहते हैं, निरंजन के साथ जोड़ा-

कहु कबीर तौ अनभउ पाइआ ।।

वह, जो अपना-आप था, वह मिल गया। अपना-आप अनुभव ही होता है, और कुछ नहीं होता। वह अनुभव ज्ञान जो था, वह अपना-आप, कबीर कहता है, मुझे मिल गया, मुझे प्राप्त हो गया-

जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई ।।
एको अंम्रित बिरखु है फलु अंम्रितु होई ।। (पृ. ४२१)

जिन्होंने आत्मा को पहचान लिया, वह परमात्मा ही हो जाता है-

एको अंम्रित बिरखु है

वह अमृत का पेड़ है और वह भी अमृत हो जाएगा जो उसके नीचे चला जाएगा। नाम के साथ जिसका मन मिल जाएगा, उसे नामी (परमेश्वर) मिल जाएगा, वह पहुँच जाएगा, उसकी मोक्ष हो जाएगी। वह सूफी फकीर आत्मा के बारे में कहते हैं और बहुत ज्यादा कहते हैं। एक बार मैं बैठा था होशियारपुर के जिले में, एक खेत में। वहाँ होशियारपुर से दो मुसलमान आ गए। बड़े अच्छे लायक थे, साफ-सुथरे कपड़ों वाले थे। वह मुझे कहते, संत! कुछ सुनाओ। मैंने उनको सुनाया-

काहे रे बन खोजन जाई ।।
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ।। (पृ. ६८४)

ये शब्द सुनाए। उनमें से एक, दूसरे को कहता, ठीक है? वह बोला, ठीक है। मैंने कहा, मुझे तो पता नहीं क्या ठीक है? वह कहता, 'खुद शनासी खुदा शनासी' है, ये उनका मत है सूफ़ियों का। 'खुद शनासी खुदा शनासी' है। जब तक खुद की 'शनासी',पहचान आप नहीं करोगे, तब तक आपको खुदा की पहचान भी नहीं होगी। आप खुद देखो, जब भी आपका ख्याल कोई उठता है, ख्याल कहो, वृत्ति कहो, संकल्प कहो, उसे देखने वाला एक चेतन ही होता है। दूसरा कोई नहीं-

दाना बीना साई मैडा नानक सार न जाणा तेरी ।। (पृ. ५२०)

दाना (जानने वाला) और बीना (देखने वाला) तो साईं है, और तो कोई है नहीं। भाई वीर सिंह ने एक जगह लिखा है, कहते वह साईं सबके अन्दर साक्षी रूप में बैठा है पर लोगों को पता नहीं लगता। सभी के अन्दर जो साक्षी है, वह साईं है। साक्षी और ब्रह्म दो नहीं होते-

साक्षी ब्रहमस्वरूप इक, नहीं भेद को गंध ।।
राग द्वेष मति के धरम, तामै मानत अंध ।।

(निश्चलदास, विचार सागर २/१२)

यह बुद्धि के जिन धर्मों से संसार के ये जितने काम करता है, भोग करता है, उन्हीं (बुद्धि के धर्मों) को ईश्वर के घर में ले जाता है। ना-ना! ये बिल्कुल गलत है। वह जब परमेश्वर आपको मिल जाएगा, तो आपका मन अपने-आप ही सारी चीजों से हट जाएगा, फिर तो आप मंजिल पर पहुँच गए। इसलिए, वह जो आपके अन्दर देखने वाला, जानने वाला, परमेश्वर है, वह आपके सारे ख्यालों को देखता है और ख्यालों के आने को भी देखता और न होने को भी देखता है, ख्यालों की संधियों (मेल) को भी देखता, वह आपका अपना आप, दृष्टा, साक्षी, निर्विकार (विकारों से रहित) परमेश्वर है। इसमें कोई शंका नहीं है। इसलिए जब तक उसके (परमेश्वर के) साथ आपका मन नहीं चलेगा, तब तक यह काम नहीं बनेगा। जितने भी दुनिया के दास आए, चाहे कबीर आया, चाहे दादू आया, श्री गुरुनानक देव आए, परमेश्वर की तरफ से जितने भी, ईसा मसीह, मुहम्मद जो भी आए, उन सब ने खुदा बताया। उन सब ने अकाल पुरूष बताया, उन सब ने परमेश्वर बताया। वह आए ही इसलिए परंतु जिज्ञासु आगे देखने वाला, जानने वाला हो तो उसके (जिज्ञासु के) लिए उन्होंने बताया, वह साफ कहते हैं।

चल भई पढ़-

टोडी महला ५ ।।

टोडी राग में पंचम पातशाह महाराज कथन करते हैं-

क्रिपा निधि बसहु रिदै हरि नीत ।।

हे कृपा के खजाने परमेश्वर! मैं आपका दास हूँ। मेरे हृदय में सदा बसो। नित्य (सदा) तो आप हो ही परंतु मेरे हृदय से कभी गैरहाज़िर ना होवो-

हाज़रा हजूर है कि ज़ाहरा ज़हूर है । (दसम ग्रंथ)

इसलिए, मेरे हृदय में हर वक्त बसो, यही मेरी माँग है, हे परमेश्वर! आपके आगे–

तैसी बुधि करहु परगासा

उस बुद्धि का प्रकाश करो। कौन-सी का? चलो आगे–

लागै प्रभ संगि प्रीति ।।

एक परमेश्वर के साथ प्रीति (प्रेम) लग जाए, वह बुद्धि मुझे बख्श दो और मेरी प्रीति परमेश्वर के साथ लग जाए–

साचि नामि मेरा मनु लागा ।। लोगन सिउ मेरा ठाठा बागा ।।

(पृ. ३८४)

ये पंचम पातशाह कहते हैं, मेरा मन परमेश्वर के साथ जुड़ा हो, दुनिया के साथ बाहरी व्यवहार (ऊपरी मन से) भी करूँ, इसमें कोई दुख नहीं है, पर परमेश्वर से गैरहाज़िर होकर न करूँ। इस प्रकार, जब रविदास ने बड़ी विनती की, उसे परमेश्वर प्राप्त हुआ। वह कहते (ईश्वर) अब बता? तू तो बड़ी चीख-पुकार करता था? उसने (रविदास ने) साफ-साफ कह दिया–

साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी ।। तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी ।।

(पृ. ६५६)

रविदास कहता, 'अब मेरी सच्ची प्रीति आप के साथ जुड़ गई। मैंने सारी दुनिया से (प्रीति) तोड़ कर, आप के साथ जोड़ी है। अब कहाँ जाना है? अब तो मैं आप का दास हूँ'।

दास तुमारे की पावउ धूरा

जो तेरे दास हैं, जितने भी दुनिया में, गुरु नानक साहिब, कबीर साहिब, दादू जी जितने भी दास हैं, उनके चरणों की धूल मैं चाहता हूँ। क्यों? उन्होंने मुझे परमेश्वर के साथ मिलाना है–

तैडी बंदसि मै कोइ न डिठा तू नानक मनि भाणा ।।
घोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले जै मिलि कंतु पछाणा ।।

(पृ. ६६४)

तेरे जितना, हे परमेश्वर और कोई नहीं है, तू एक ही है, तू सब से बड़ा है। सभी का पूज्य है और मैं एक आप ही के पास विनती करता हूँ–

तैडी बंदसि मै कोइ न डिठा तू नानक मनि भाणा ।। (पृ. ६६४)

तू मेरे मन को अच्छा लग गया। पाँचवें पातशाह कहते हैं, तू मेरे मन को अच्छा लग गया।

घोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले जै मिलि कंतु पछाणा ।।

मैं गुरु रामदास पर से कुर्बान जाता हूँ, जिसकी कृपा से आप मुझे प्राप्त हुए। इस प्रकार, उनकी कृपा से, उनकी ही बख्शिश से आप मुझे प्राप्त हुए। पंचम पातशाह ने साफ लिखा है-

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा ।। नाम प्रभू का लागा मीठा ।।

(पृ. २६३)

मैंने, संत गुरु रामदास की कृपा से, अपने अंदर ईश्वर देखा, अब मैं कभी उसे (परमेश्वर को) भूलता नहीं। दूसरी कोई तो दुनिया की ऐसी चीजें हैं नहीं, जो ईश्वर को मोह लें। कोई भी ब्रह्म ज्ञानी नहीं मोहा गया, कबीर को न किसी ने मोह लिया? इसलिए भाई! जिनको मिलकर मुझे परमेश्वर प्राप्त हो गया है, मैं उन पर से भी कुर्बान जाता हूँ। वह कौन थे? वह 'संत' हैं श्री गुरु रामदास महाराज-

प्रेम भगति उधरहि से नानक करि किरपा संतु आपि करिओ है ।।

(पृ. १३८८)

'संत' पंचायत नहीं बनाया करती। दुनिया के राजा, महाराजा 'संत' नहीं बनाया करते। 'संत' परमेश्वर आप बनाता है। जब वह बख्शिश कर देता है, ये संत बन जाता है-

जा कउ अपुनी करै बखसीस ।। ता का लेखा न गनै जगदीस ।।

(पृ. २७७)

वह अब लेखे (कर्मों के हिसाब) में नहीं रहता, इसलिए परमेश्वर संत भी आप बनाता है-

ब्रहम गिआनी से जन भए ।। नानक जिन प्रभु आपि करेइ ।।

(पृ. २७२)

ब्रह्म ज्ञानी भी तो वही होंगे, जिनको परमेश्वर आप करेगा। वह सब परमेश्वर की बख्शिश से काम होते हैं। मैं, एक दान माँगता हूँ, मेरे हृदय में बसो। मेरी प्रीति आप के साथ लगी रहे, कभी मेरी प्रीति न टूटे। कभी मैं आप से गैरहाज़िर न होऊँ-

दास तुमारे की पावउ धूरा

मैं आप के दासों की चरण-धूल पाऊँ। मैंने, गुरु रामदास! आपके दास के चरणों की धूल पाई, तभी यहाँ पहुँचा-

मसतकि ले ले लावउ ॥

मैं अपने 'मस्तक' को वह धूलि लगाता हूँ, मेरी सारी रेखा मिट जाएगी। मेरे सारे कर्म कट जाएँगे, जब संत का दर्शन हो जाए और संत की कृपा हो जाए। संत तो हाथों पैरों वाले (शरीरधारी) ईश्वर को ही कहते हैं। संत-साधु कोई केवल कपड़ों से, वेश से नहीं होता है, वह तो बख्शा हुआ होता है-

महा पतित ते होत पुनीता

हम, 'महा पतित' थे, 'पुनीता' पवित्र बन गए, आप संत की कृपा से, संत के उपदेश से महापवित्र हो गए-

हरि कीरतन गुण गावउ ॥

अब हरि का कीर्तन करेंगे, हरि के ही गुण गाएँगे-

गुन गावत तेरी उतरसि मैलु ॥
बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु ॥ (पृ. २८६)

अब मैं आप का ही कीर्तन करूँगा, आप के ही गुण गाऊँगा। आप के गुण गाने से, मेरे सारे रोग, जितने काम, क्रोध, लोभ, मोह और मनोराज (कल्पना) चले जाएँगे। मैं,

केवल आप का दास हो गया-

आगिआ तुमरी मीठी लागउ

जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥

(पृ. ३)

अब आप की आज्ञा मुझे मीठी लगती है। जो भी आज्ञा करते हो, वह आप की आज्ञा अब मुझे मीठी लगती है-

कीओ तुहारो भावउ ॥

अब 'हुक्मी', महाराज जो आप करते हो, मुझे वह अच्छा लगता है-

सरब भूत आपि वरतारा ॥ सरब नैन आपि पेखनहारा ॥
सगल समग्री जा का तना ॥ आपन जसु आप ही सुना ॥

आवन जानु इक खेलु बनाइआ ।। आगिआकारी कीनी माइआ ।।
सभ कै मधि अलिपतो रहै ।। जो किछु कहणा सो आपे कहै ।।

(पृ. २६४)

हुक्मी (परमेश्वर) का हुक्म चलेगा। हुक्म में जो ना-नुकर करेगा, वह रज़ा (ईश्वर के हुक्म) से दूर हो जाएगा। वह रज़ा से अलग हो जाएगा। ये (हुक्म में रहना) बड़ा कठिन काम है, ये प्रेमा भक्ति है। ये 'संत मत' है, 'संत मत' इसी को कहते हैं-

जो तू देहि तही इहु त्रिपतै

जो मुझे दोगे, मैं उस से ही तृप्त (खुश) हो जाऊँगा। माया शक्ति जो है, ये सारा काम करती है पर हुक्मी से अलग हो कर कभी नहीं करती, माया तो उसके हुक्म में है। ये तो वशिष्ठ (ऋषि) ने अचिंतनीय शक्ति पर ज़ोर लगाया। ये (माया) अचिंतनीय (समझ से बाहर की) शक्ति है। क्यों? इसका काम तो सारा दिखता है, ये दिखती नहीं है। बड़ (के पेड़) का एक (छोटा-सा) बीज होता है, उस से कितना बड़ा पेड़ बन जाता है, ये कितनी अजीब बात है। और आप, ये जितने भी हमारे शरीर बने हैं, ये जिस चीज से बने हैं, ये आपको पता ही है। क्यों? ये परमेश्वर की अचिंतनीय शक्ति काम करती है। परमेश्वर की आज्ञा से बाहर ये काम नहीं करती और हुक्मी के हुक्म में काम करती है। इसलिए हुक्मी से कभी बेमुख नहीं होना चाहिए-

जो तू देहि तही इहु त्रिपतै

जो आप मुझे कृपा करके बख्शिश करोगे, मैं उस में बड़ा खुश हूँ, बड़ा प्रसन्न हूँ। जो आप ने दिया, मैं उस में ही बड़ा प्रसन्न हूँ-

आन न कतहू धावउ ।।

मैं, आप को छोड़ कर, आप का दरवाज़ा छोड़ कर, दूसरे दरवाज़े पर नहीं जाऊँगा। मैं, हे परमेश्वर! आप का दरवाज़ा छोड़ कर, अन्य लोगों के दरवाज़े पर नहीं जाऊँगा-

सद ही निकटि जानउ प्रभ सुआमी

वह जो सदा रहने वाला, सत्य स्वरूप, वह सत्त, चित्त, आनंद, हर समय हाज़रा-हजूर, वह जो स्वामी है मालिक, उस को मैंने समझ लिया। वह सदा ही है, वह सृष्टि से पहले भी था, अब भी है । सृष्टि के आदि-अंत

में भी रहेगा, महाप्रलय के समय भी रहेगा। इसलिए, उस परमेश्वर को मैं 'सुआमी' मालिक जानता हूँ। वह मेरा मालिक है-

सगल रेण होइ रहीऐ ।।

सारे, जो परमेश्वर के पैदा किए हुए हैं जीव, उनके चरणों की धूलि हो कर रहें। सभी की सेवा करें, जैसे भाई कन्हैया ने सेवा की, जब दशम पातशाह ने बख्शिश की। वह कहता, जी! मैं कोई सेवा नहीं कर सकता? मैं क्या करूँ? उसे (श्री गुरु गोबिंद सिंह जी) कहते, तू मश्क (पानी भरने के लिए चमड़े की बनी थैली) उठा ले, गर्मी का महीना है, कितनी धूप है, जल पिला। वह हिंदू, मुसलमानों, सिक्खों सभी को (जल) पिलाता गया। जब वह पठान गया, रोपड़ वाला, पाँच सौ पठान लेकर, भई! मैं या तो दशम पातशाह को पकड़ कर लाऊँगा या मैं उनका सिर लाऊँगा। वह यह सोचकर चला और वह पठान (लड़ाई में) इतना ज़ख्मी हुआ, उसके हाथ भी न हिलें। वह बोला, पानी! जल! पानी! भाई कन्हैया भाग कर आया। उसने जब ऐसे (नीचे) मश्क की, वह बोला, मेरे तो सिक्ख जी हाथ उठते नहीं। (भाई कन्हैया जी ने) एक हाथ उसके मुँह को लगाया और एक हाथ मश्क के साथ लगा कर पानी डाला। उसे जल पिलाया और इतने में उन्होंने (सिक्खों ने) शिकायत कर दी थी, गुरु के पास। यह (भाई कन्हैया) जी, कोई गुप्तचर है। यह जी, कोई भेद लेने वाला है, इत्यादि। उन्होंने (गुरु साहिब ने) कहा, लाओ बुलाकर। जितनी देर उसे (पठान को) पानी नहीं पिलाया उतनी देर वहाँ से भाई कन्हैया हिला नहीं। जब वे गए, उन्होंने (गुरु गोबिंद सिंह साहिब जी ने) कहा- क्यों भाई! तुझे बुलाया था, तू आया नहीं? (सिक्ख कहते) कि देखो जी, हुक्म को मानता नहीं है। उसने (भाई कन्हैया ने) सारी हालत बताई कि ये हालत थी महाराज, मैं जल पिला रहा था, आप का हुक्म था और मैं उसे जल पिला रहा था, मेरा एक हाथ उसके मुँह को लगाया हुआ था और दूसरे के साथ (जल) डाल रहा था, वह (पठान) बहुत ही जख्मी हो गया था। गुरु साहिब कहने लगे- ये लो एक (मरहम की) डिब्बी और एक ले लो पट्टी जो बहुत जख्मी हो, उसको मरहम लगाकर, पट्टी भी बाँध दिया कर, कोई मना नहीं। इसलिए, भाई! सभी की धूल, सभी में परमेश्वर देखना,

यह एक बड़ी ऊँची बात है। यहाँ जाकर आदमी (ईश्वर को) कबूल (मंजूर) हो जाता है, सारा रस प्राप्त हो जाता है-

साधू संगति होइ परापति

ये चीज साधु के संग से प्राप्त होगी, जो बख्शा हुआ है। बख्शा हुआ ही बख्श सकता है। कबीर बख्शा हुआ था, उसने कितने बख्शे! गुरु नानक बख्शा हुआ था, कितने बख्शे! दादू बख्शा हुआ था, कितने बख्शे! ईसा मसीह बख्शा हुआ था, कितने बख्शे! उन
साधुओं की धूल से ही, ये तुझे प्राप्त होगी-

ता प्रभु अपुना लहीऐ ।।

तो भाई! अपने परमेश्वर को प्राप्त होगा। तो तुझे आत्मा-परमात्मा प्राप्त हो जाएगा, यहाँ जाकर-

सदा सदा हम छोहरे तुमरे

हम सदा ही आपके बच्चे हैं, ये बांगर (पंजाब, हरियाणा की सीमा के इलाके) की बोली है। आप के छोहरे हैं, आप के बच्चे हैं-

तू प्रभु हमरो मीरा ।।

हे प्रभु! हे परमेश्वर! तू मेरा मालिक है, और मेरा मालिक कोई नहीं। मालिक तू एक ही है सारी सृष्टि का। हिंदू, मुसलमान, सिक्ख जो भी हैं, मालिक (सब का) एक है, ये नियम है। यदि मालिक एक ना होता तो गुरु साहिब एक (१) नहीं लिखते-

एकम एकंकारु लिखि देखालिआ ।
ऊड़ा ओअंकार पासि बहालिआ । (भाई गुरुदास जी)

ये, भाई गुरुदास जी ने लिखा-

एका एकंकारु लिखि देखालिआ ।

मुझे एक आदमी धनौले (पंजाब के एक गाँव में) पूछता, जी! ये गुरुद्वारे के चारों ओर १ ओंकार (ੴ) क्यों लिखा है इन्होंने? वह (पूछने वाला) था कम्युनिस्ट। मैंने कहा, तुझे नहीं पता? वह कहता, मुझे नहीं पता। (वह कहता) मैं देखता हूँ, भई क्यों लिखा है इन्होंने। मैंने कहा, ये जो एक (१)

है, ये तो है 'ईश्वर' और ये जो (ੳ) ओम है, ये है नाम। गुरु साहिब ने कहा है, इस नाम को पकड़ कर एक के पास पहुँच जाना और तू पहुँच गया है? वह कहता, मैं तो दूसरी तरफ ही फँस गया। वह सीधा-सादा जट्ट था, फौजी। वह बोला, मुझे तो दूसरी तरफ ही इन्होंने लगा लिया, मुझ से बड़ी गलती हुई। तो मैंने कहा, तेरा पीछा तो एक के पास जाकर छूटेगा। बोला-हाँ जी, एक (१) के पास ही जाकर छूटेगा। मैंने कहा, अब? कहता, अब मैं एक के पास ही जाऊँगा, छोड़ दूँगा सभी को। इसलिए, नाम को लेकर नामी (परमात्मा) के पास पहुँचना है। यहाँ जाकर इस पर बख्शिश होनी है। इसने पहुँच जाना है ऐसे-वैसे नहीं पहुँचता-

नानक बारिक तुम मात पिता

गुरु अर्जुन देव जी में कितनी नम्रता! कहते हैं, हम बच्चे हैं, हे परमेश्वर! तू हमारा माता-पिता है-

मुखि नामु तुमारो खीरा ।।

जो आपने हमें नाम दे दिया, वह बड़ा ही मीठा है। खीर सब से अच्छी होती है, दूध सब से अच्छा होता है, प्यारा होता है। आप का नाम मुझे बहुत प्यारा लगा है, अब मैं नाम नहीं भूलता-

नाम संगि जिस का मनु मानिआ ।।
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ।। (पृ. २८१)
नामु संगी सो मनि न बसाइओ ।।
छोडि जाहि वाहू चितु लाइओ ।। (पृ. ७१५)

जो वस्तुएँ (दुनिया की) छोड़कर जानी हैं, 'मन' को आपने उसके साथ जोड़ लिया, जिसके पास जाना था, उसे भूल गए और मोह में आ गए। इसलिए, गुरु साहिब कहते हैं, भई! हमारा तो मालिक भी वही है। हमें नाम से ज्यादा मीठी चीज कोई नहीं लगती है। भक्त फरीद (के जीवन) का एक उदाहरण है। जब फरीद आया छत्तीस (३६) साल तप किया, आकर बैठा। उसकी माता ने बड़ा प्यार किया, दूध, चीनी सभी मीठी चीजें रख दीं। कहने लगी, जंगल में कभी मिली हैं ऐसी वस्तुएँ? और तू जंगल में जाता है। वह कहता-

फरीदा सकर खंडु निवात गुड़ु माखिउ मांझा दुधु ।।

सभे वसतू मिठीआं रब न पुजनि तुधु ।। (पृ. १३७६)

फरीद कहता, माता! तूने परमेश्वर का स्वाद नहीं देखा। मैं, ख्वाजे (अपने गुरु) के पास ईश्वर का स्वाद देख कर आया हूँ। ये सभी वस्तुएँ (चीजें) मीठी हैं पर ईश्वर जितनी मीठी कोई चीज़ नहीं, नाम जितनी प्यारी और कोई चीज़ नहीं है।

पिछली पंक्ति पढ़ दे भाई–

सदा सदा हम छोहरे तुमरे तू प्रभ हमरो मीरा ।।

नानक बारिक तुम मात पिता मुखि नामु तुमारो खीरा ।।

बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु !

❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

5

सोरठ महला ५ ।।
गई बहोड़ु बंदी छोड़ु निरंकारु दुखदारी ।।
करमु न जाणा धरमु न जाणा लोभी माइआधारी ।।
नामु परिओ भगतु गोविंद का इह राखहु पैज तुमारी ।।१।।
हरि जीउ निमाणिआ तू माणु ।।
निचीजिआ चीज करे मेरा गोविंदु तेरी कुदरति कउ कुरबाणु ।।रहाउ।।
जैसा बालकु भाइ सुभाई लख अपराध कमावै ।।
करि उपदेसु झिड़के बहु भाती बहुड़ि पिता गलि लावै ।।
पिछले अउगुण बखसि लए प्रभु आगै मारगि पावै ।।२।।
हरि अंतरजामी सभ बिधि जाणै ता किसु पहि आखि सुणाईऐ ।।
कहणै कथनि न भीजै गोबिंदु हरि भावै पैज रखाईऐ ।।
अवर ओट मै सगली देखी इक तेरी ओट रहाईऐ ।।३।।
होए दइआलु किरपालु प्रभु ठाकुरु आपे सुणै बेनंती ।।
पूरा सतगुरु मेलि मिलावै सभ चूकै मन की चिंती ।।
हरि हरि नामु अवखदु मुखि पाइआ जन नानक सुखि वसंती ।।४।।

(पृ. ६२४)

सारी संगत किरपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु ! सतिनामु श्री वाहिगुरु !!

चल जी–

सोरठ महला ५ ।।

पाँचवें पातशाह श्री गुरु अर्जुन देव महाराज को ईश्वर की वाणी जो उनको प्राप्त हुई है, उस का कथन करते हैं–

गई बहोड़ु बंदी छोड़ु निरंकारु दुखदारी ।।

धरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरूपी रहिओ भरि ।।
भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख्य हरि ।।

(पृ. १४०९)

वह (गुरु अर्जुन देव जी) प्रत्यक्ष 'हरि' का रूप हैं-

सोरठ महला ५ ।।

पंचम पातशाह श्री गुरु अर्जुन देव महाराज, रब्बी (ईश्वर की) वाणी का कथन करते हैं-

गई बहोड़ु बंदी छोड़ु

'बंदी छोड़ु' कबीर साहिब का नाम भी है। 'बंदी छोड़ु' श्री गुरु नानक साहिब का नाम भी है। 'बंदी छोड़ु' दादू का नाम भी है। जो 'बंदी छोड़ु' हो (कैदियों को छुड़ाए) उनको 'बंदी छोड़ु' (कैदियों को छुड़ाने वाले) कहते हैं। गुरु हरगोबिंद साहिब जब ग्वालियर के किले में गए। बादशाह ने तो कुछ और किया था, हो कुछ और गया। बादशाह का मतलब था भई, किले के अंदर महाराज, विधि से नाम का जाप करो, जिस से सारे संसार का भला हो, पर उसके अंदर धोखा था, कुछ और था, कि भई, किले में चले जाएँगे, सारे बाहरी उपद्रव (लड़ाई-झगड़े) खत्म हो जाएँगे। मुझे कोई कुछ नहीं कहेगा परंतु उल्टा हो गया। जब बादशाह को मुसीबत पड़ी, उस ने ज्योतिषियों को, मुनीमों को, अपने मंत्रियों को बताया, रात को मेरे साथ यह घटना हुई। उन्होंने कहा, ये सपना होता है। सपने कई तरह के होते हैं। पर दूसरे दिन जब जेठा (किले का एक सिक्ख सेवक) पुराणा गए, उसे पकड़ा तो उससे पूछा। उसने कहा, आज मुझे माफ कर दो, मैं भूल गया। फिर उन्होंने बुलाया, वो (मंत्री आदि) कहते, जी! वहम होता है। वह (बादशाह) कहता, वहम नहीं होता, बिल्कुल सच है। वहम नहीं है ये, मेरे साथ जो बीती है, मैं माफी माँग कर छूटा हूँ। उस समय फिर (बादशाह) गुरु साहिब के पास गया, आज्ञा ली कि आप महाराज जा सकते हो। बावन (५२) राजा कैद थे वहाँ। उनके लिए ही गुरु साहिब गए थे वहाँ, इस अंदर की बात को महापुरुष ही जानते हैं। उनकी (राजाओं की) बड़ी विनती थी, अरदास थी, ईश्वर के आगे। अब उस समय तो साक्षात ईश्वर दुनिया में वही (श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी) थे।

वह (गुरु साहिब) किले में गए परंतु बादशाह कुछ और समझा परंतु वे (गुरु साहिब) कुछ और मकसद से गए थे। वह (बादशाह) कहता, महाराज! आपके लिए एक हाथी आएगा सजा हुआ, एक समूह शाही फौज का आएगा। आप को आदर-सत्कार के साथ ले जाया जाएगा। उन (५२) राजाओं ने कहा, महाराज, हमारा अब क्या हाल होगा? जितना समय आप यहाँ रहे, बड़ा सत्संग हुआ, बड़े भोजन खाए, बड़ा सुख मिला, हमें सारे दुख भूल गए थे और अब हमारा हाल क्या होगा? वे (गुरु जी) बोले, तुम्हें हम साथ लेकर जाएँगे। जब फिर बादशाह की तरफ से दो मंत्री गए, उन्होंने कहा, महाराज आप कृपा करो। उन्होंने (गुरु जी ने) कहा, ये जितने राजा हैं, हमारे साथ जाएँगे। इनके बंधन हम काट कर (इनको) साथ ले जाएँगे। उसने (बादशाह ने) कहा 'सत्य वचन'। जितने आप का पल्ला पकड़कर, आप के साथ चले जाएँ, वे सब आप के साथ ही जाएँगे। बावन (५२) राजा थे तो बावन कलियों (लड़ियों) वाला ही चोला सिलवाया। अभी तक वह 'घुडाणी' गाँव (लुधियाना) में है, हमने भी देखा है, अब तो वह शीशे में दिखाते हैं। दरजी को ये कहा गया- भई, बावन कलियों वाला एक चोला सिल दे। दरजी से गलती हो गई, पचास (५०) कलियाँ लगी, दो (२) कम रह गई। जब गुरु साहिब चले, वे दो (राजा) रह गए। एक बिलासपुर का राजा था, जिसने कीरतपुर दिया गुरु साहिब को, एक दूसरा था। उन्होंने (गुरु साहिब ने) फिर दो कलियाँ खोलीं, उनको पकड़ाईं। सब को साथ लेकर बड़े सत्कार के साथ वे किले से बाहर आए। उस समय से छठे पातशाह का नाम 'बंदी छोड़ु' पड़ गया, क्योंकि उन्होंने बंधन से छुड़ाए। फिर उस (बिलासपुर के) राजा ने उनको यह विनती की- 'कीरतपुर आप को मैंने अर्पण कर दिया, मेरी रियासत में ठहरिए', छठे पातशाह को कहता। फिर छठे पातशाह, कीरतपुर ठहरे, 'बंदी छोड़ु' परमेश्वर है। वह कभी-कभी सर्गुण (शरीरधारी) होकर भी 'बंदी छोड़ु' हो जाता है। जैसे कबीर, गुरु नानक, दादू, ईसा, मोहम्मद वगैरा जो ईश्वर के बख्शे हुए हैं, वे आगे बख्श देते हैं। 'बंदी छोड़ु' उसे कहते हैं, जो बंदी छुड़वाए-

गई बहोड़ु बंदी छोड़ु

जब 'बंदी छोड़ु' की शरण में पड़ गए। जो गुज़र चुकी थी आयु, वह वापिस आ गई। सफल जो हो गई, ज्ञान जो हो गया, मुक्ति जो हो गई। जब हमारी उस जगह यानि उस आयु पर 'बंदी छोड़ु' के चरण पड़े, वह हमारी जो जा चुकी थी आयु, जो बेकार गई थी विषयों में, वह भी सफल हो गई। क्यों? बख्शे जो गए, बख्शिश हो गई। इसलिए, उस 'बंदी छोड़ु' परमेश्वर की बख्शिश के बिना, जीव छूट नहीं सकता। और कोई जीव के पास तरीका नहीं। चाहे कितना भी उपाय करे, वह गलत है। जब ये परमेश्वर की शरण में पड़ जाएगा-

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा ।।

(पृ. ५४४)

फिर इसकी सारी आयु सफल हो जाएगी-

निरंकारु दुखदारी ।।

कहते हैं, सारे दुखों को काटने वाला एक निरंकार है। जितने इसके दुख हैं, सभी दुखों को काटने वाला एक निराकार परमेश्वर है, जब इसकी वृत्ति निराकार के साथ एक हो जाएगी, जब इसको विवेक हो जाएगा, भई, वृत्ति से ले कर सारा संसार मिथ्या है और दृष्टा, साक्षी, चेतन, सच है, वह आप परमेश्वर है तो फिर इसके सारे दुख नाश हो जाएँगे-

करमु न जाणा धरमु न जाणा

मैं कर्म-धर्म को नहीं जानता था, ना मैं कर्मों-धर्मों के रास्ते पर गया। मैं तो एक परमेश्वर 'बंदी छोड़' की शरण पड़ गया। जैसे राजा छठे पातशाह की शरण पड़ गए थे सभी आकर, भई, आप चले जाओगे, अब हमें छुड़वाने वाला दुनिया में कोई नहीं। इसलिए, मैंने एक परमेश्वर निरंकार की शरण ली है-

लोभी माइआधारी ।।

और मैं लोभी भी था और मायाधारी भी था। मेरा मन पहले ऐसा था-

नामु परिओ भगतु गोविंद का

पर मेरा नाम पड़ गया था गोविंद का भक्त, गोविंद का भक्त मेरा नाम पड़ गया था। गोविंद ने मुझ पर बड़ी भारी कृपा की और मेरी जो बीत चुकी आयु थी, वह 'बहोड़ु' वापिस मुड़ कर आ गई, वह सफल हो गई-

इह राखहु पैज तुमारी ।।

आपने हमारी इज्जत रखनी है। ये मेरी इज्जत का सवाल नहीं। आप ही हमारे रक्षक हो। मैं आप की शरणागति हूँ। मैं आप का भक्त हूँ, आप का दास हूँ सच्चे मन से।

हरि जीउ निमाणिआ तू माण ।।

हे हरि जी! मुझे यह पता लग गया, जिसका कोई आदर-सत्कार करने वाला न हो, उसका आदर-सत्कार तू करा देता है, तुझ में यह ताकत है। जिसका आदर-सत्कार कोई नहीं करता था, आपके सामने इंदिरा गाँधी को क्या कहते थे, वही इंदिरा गाँधी को क्या कहने लग गए। ये सब परमेश्वर की कृपा है। जब परमेश्वर की कृपा जीव पर हो जाए, फिर वह जीव सफल हो जाता है-

निचीजिआ चीज करे मेरा गोविंदु

जिसे कोई पूछता ना हो दुनिया में, उसको वह खास चीज बना देता है, एक गिनती में ला देता है। उसे लोग मानने लग जाते हैं-

तेरी कुदरति कउ कुरबाणु ।।रहाउ।।

मैं तेरी कुदरत पर से कुर्बान जाता हूँ, तेरी कुदरत में इतनी ताकत है। यह आप की कृपा द्वारा ही सब कुछ पूरा होता है-

जैसा बालकु भाइ सुभाई

जैसे कि बालक छोटा-सा और कुदरती ही जैसे उसका स्वभाव होता है-

लख अपराध कमावै ।।

वह माता को थप्पड़ भी मारता है, उसके कपड़े भी फाड़ता है, जो भी, जितने वह अपराध करता है-

करि उपदेसु झिड़के बहु भाती

माता, उसे समझाती है, अनेक प्रकार से डाँटती है। इसी प्रकार परमेश्वर माफ करने वाला है, वह भक्त के सभी अवगुण माफ करके (उसे) अपने साथ मिला लेता है-

बहुड़ि पिता गलि लावै ।।

तो वह परमेश्वर अपने साथ मिला लेता है। फिर उसे परमेश्वर अपने साथ मिला लेता है-

पिछले अउगुण बखसि लए प्रभु

प्रभु ने सारे अवगुण (दोष) पिछले बख्श दिए। किसके नहीं बख्शे? सधने कसाई के, सज्जन ठग के, गनका (वैश्या) के, अजामल के बख्शे-

अजामलु पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा ॥ (पृ. ६३२)

कहते हैं, एक क्षण में उसका (अजामल का) कल्याण कर दिया। सब लोग उसे पापी जानते थे। इसलिए, जब परमेश्वर की कृपा हो जाए तो सभी अवगुण बख्शे जाते हैं, वह गले से लगा लेता है, साथ मिला लेता है। आपको पता नहीं? बिधि चंद एक बड़ा भारी चोर था, डाकू भी था। वहाँ एक सिक्ख गुरु का बख्शा हुआ 'अदली' था, 'झबाल' उस (गाँव) का नाम है। वहाँ एक बड़ा पानी का छप्पड़ था, अब तो तालाब बन गया। वहाँ (अदली) बैठ कर भजन करने लग गया और लोगों को बहुत सुधारा। कथा करता था, दुनिया आती थी। वह बिधि चंद सब को कहता था, लोग सभी पागल हैं, क्यों साधु के पास कथा सुनने जाते हैं। मैं नहीं जाता, मैं एक दिन भी नहीं गया। वह मौका ऐसा बना, वह (अदली) कथा कर रहा था, लोग बैठ कर सुन रहे थे। उसने (बिधि चंद) ने भैंसें चुरा ली और जब चुरा कर ले गया तो पीछे से (भैंसों के मालिक) जट्ट आ गए। उन जट्टों ने नजदीक आकर जब बिधि चंद को देखा, वह भैंसें छोड़ कर सभा में जा बैठा। वह भैंसें तालाब में चली गईं। जब वे जट्ट (अदली) संत के पास गए, उन्होंने कहा, जी! आपकी सभा में हमारा चोर है, भैंसें चुरा कर लाया है। उसने (अदली ने) कहा- 'अच्छा भाई!'। वह बड़ा महापुरुष था भाई 'अदली'। उस ने ध्यान लगा कर देखा। उसने कहा, इस वक्त भई चोर कोई नहीं। उस समय वह (बिधि चंद) ज्यादा 'सतिनामु' जपता था जल्दी-जल्दी, बहुत जप रहा था। उसने कहा, इस वक्त कोई चोर नहीं। वे (जट्ट) बोले, आप की ही सभा में है। (संत कहते) तुम्हारा क्या काम है? (जट्ट) कहने लगे, जी! भैंसें चुरा कर लाया है हमारी। (संत कहते) कहाँ हैं? वे कहते, सामने तालाब में हैं। उसने (संत ने) कहा, भैंसें ले जाओ, मेरी बात मान लो। वे कहते, भई, 'संत कहते हैं', इसलिए वह (भैंसे) ले गए। सारी दुनिया (सत्संग से) उठ कर चली गई, वह (बिधि चंद) नहीं उठा। संत ने कहा, जा गुरुमुखा! क्यों बैठा है? वह कहता, जी! पहले

तो (मैं) आता नहीं था पर अब (मैंने) वापिस नहीं जाना है। मैं, आया हूँ कभी आज तक? तो अब वापिस नहीं जाना है। मुझे आपने आज माफ किया है। वे जट्ट मुझे पीटते भी, मारते भी और बहुत कुछ करते। आप ने बख्शा है, मैं नहीं अब जाऊँगा। वे संत कहते, तुझे मैंने नहीं बख्शा, तुझे परमेश्वर ने बख्शा है। तू नाम परमेश्वर का जपता था या मेरा? कहता, जी! मैं सतिनाम जपता था पूरे ज़ोर के साथ। कहते, फिर? सत (सच) तो परमेश्वर है। तुझे सच्चे परमेश्वर ने बख्शा है भाई! मैंने नहीं बख्शा। तूने, उसका नाम जपा, नाम जपने से तू बख्शा गया। (बिधि चंद कहता) मैं, जी! अब यहाँ सेवा करूँगा, ये मेरे ऊपर कृपा करो। कहने लगे, हम ये बख्शिश लेकर आएँ हैं गुरु अर्जुन देव से, ये कृपा हम पर उन्होंने की है। तू वहाँ चला जा। बिधि चंद चला गया। गुरु साहिब कहते, आ गया? कहता, हाँ जी! आ गया। कहने लगे, सारे लंगर का आटा तूने गूँधना है। वह (बिधि चंद) बोला, जी सत्य वचन! बहुत आटा गूँधा, बहुत सेवा की, झाड़ू लगाया। उसको गुरु अर्जुन देव ने फिर बख्शा, उस पर बड़ी बख्शिश की। गुरु साहिब कहीं बाहर से आए थे, बिधिचंद ने पीछे हाथ करके गुरु साहिब के चरणों पर माथा टेका। क्यों? वह आटा गूँधता आया था, आटे वाले हाथ थे। जब गुरु साहिब के चरणों पर माथा टेका, उनकी चरण धूल लग गई। वे बोले, नीचे झुक, वह थोड़ा ऊँचा था, वह झुका, उन्होंने (गुरु साहिब ने) रेखा ही मिटा दी चोरी की। उसने बड़ी सेवा की। (छठे पातशाह के समय) घोड़े लाया, दुशाले लाया और जब वह लेकर आया तो गुरु साहिब ने कहा–

छीना गुरु का सीना

उसे अपने गले से लगाया, सारी बख्शिश कर दी। इसलिए भाई! जब परमेश्वर गले लगा ले तो सारी बख्शिश कर देता है। वह परमेश्वर ऐसा कृपालु, दयालु है। उसके बिना दूसरा कोई बख्शने वाला नहीं है–

जा कउ अपुनी करै बख्सीस ।। ता का लेखा न गनै जगदीस ।।

(पृ. २७७)

बिना परमेश्वर के बख्शिश नहीं होती, चाहे वह निराकार रूप में करे, चाहे साकार रूप में करे–

निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही ।। कला धारि जिनि सगली मोही ।।

(पृ. २८७)

वह बख्शने वाला परमेश्वर है–

पिछले अउगुण बखसि लए प्रभु

प्रभु ने पिछले सारे 'अउगुण' (दोष) बख्श दिए बिधि चंद के–

आगै मारगि पावै ।।

आगे सीधे नाम के रास्ते पर डाल दिया। नाम के साथ, उसका मन जोड़ दिया, गुरु अर्जुन देव ने–

हरि अंतरजामी सभ बिधि जाणै

राखा एकु हमारा सुआमी ।। सगल घटा का अंतरजामी ।।

(पृ. ११३६)

सभी के अंदर बैठा, जानता है वह परमेश्वर। आपकी सारी वृत्तियों को देखता है, आपके ख्यालों को देखता है, और ख्यालों को बदल भी देता है और टाइप भी कर देता है–

नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ ।। (पृ. १४४)

वह आप पारखी (परखने वाला) है आपके मन का, दूसरा कोई आपके मन का पारखी नहीं। मन आपका वासना के साथ ही चलता है, और कोई मन को चलाने वाला नहीं। जैसे आपकी वासना होगी, वैसा ही आपका ख्याल होगा, ये आप देख लेना खुद। जो वासना आपकी होगी, उसके अनुसार ही आपका ख्याल होगा। उसकी वासना दूसरी है तो उसका ख्याल दूसरा होगा। आपकी वासना दूसरी तो ख्याल दूसरा होगा, जब तक आपके अन्दर वासना है–

वासना बधा आवै जाइ ।। (भाई गुरदास)

ये, भाई गुरदास ने लिखा है। तब तक ये न कहो, भई आपकी मुक्ति हो जाएगी। वासनाएँ तो अंदर भरी पड़ी हैं आपके, तो मुक्ति कैसे हो जाएगी? और वासना से अलग, परमेश्वर की बख्शिश ही कर सकती है। जब ये (परमेश्वर) बख्शिश कर दे तब इसका (जीव का) नाम के साथ मन जुड़ जाता है। जब नाम के साथ मन जुड़ जाए तो वासनाएँ नहीं उठेंगी। मन तो

परमेश्वर के नाम के साथ एक हो गया, अब वासनाओं की जगह पर नाम आ गया। ये आप अंदर विचार करो, जब नाम अंदर आएगा तो वासना कोई नहीं होगी उस समय। ये आप खुद ख्याल करना, किसी से पूछना मत। जब आपका मन, नाम के साथ एक हो जाएगा, आपको नामी प्राप्त हो जाएगा। वह इस (नाम के) मार्ग पर चलाएगा, वह परमेश्वर जब आप पर कृपा करेगा। वह क्या कृपा करेगा? नाम के मार्ग पर चला देगा आपको। पहले आपका मन, वासना के अनुसार चलेगा, आप देखना खुद। जैसी वासना होगी, वैसा ही आपको सपना आएगा। जैसी वासना होगी, वैसा ही मन हो जाएगा। जब आपकी वासना दुख की होगी, आपका मन भी दुख में डूब जाएगा। जब आपकी वासना खुशी की होगी, आपका मन भी खुश हो जाएगा पर इस (दुख और सुख) में बख्शिश तो नहीं है। और जब आपका मन नाम के साथ जुड़ जाएगा, वह कौन-सा मार्ग है? नाम मार्ग। नाम के साथ मन जुड़ा तो नामी प्राप्त हुआ-

नाम संगि जिस का मनु मानिआ ।।
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ।। (पृ. २८१)

वह निराकार को जान लेता है। वह सभी अवगुण बख्श कर परमेश्वर, उस नाम के मार्ग में इसके मन को लगा देता है, ये उसकी कृपा है। कृपा के बिना कभी (मन) लगता नहीं। आप पढ़ते हो न पहली पउड़ी, आखिर में आता है-

गुर प्रसादि ।।जपु।।
१ ओंकार सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ।।जपु।।

पर

गुर प्रसादि ।।जपु।।

उस ओंकार, सोहं प्रकाश को, तू गुरु से समझ कर 'जपु' (जप)। आज रागी ने बहुत अच्छा कहा, उस तरफ ले गया, चाहे किसी उदाहरण के साथ ले गया पर वह लगा बड़ा सुंदर। इसलिए, वह 'गुर प्रसादि' लिखा ही ना होता, यदि जीव अपने आप कर सकता तो फिर गुरु की कृपा कैसी? कहाँ है? ना-

गुर प्रसादि ।।जपु।।

तू, गुरु की कृपा से जो तुझे नाम बताया है, उस नाम को जप, इसका अर्थ यही है। गुरु की कृपा द्वारा जब तू समझ कर जपेगा। तो नाम का मार्ग तुझे प्राप्त हो जाएगा, फिर तेरी मोक्ष हो जाएगी।

अब वही पंक्ति फिर से पढ़-

पिछले अउगुण बखसि लए प्रभु

प्रभु पिछले अवगुण बख्श देता है सारे-

आगै मारगि पावै ।।

आगे सीधे 'मार्ग' नाम के (मार्ग पर) डाल देता है। जब इसका मन नाम के साथ जुड़ा-

नाम संगि जिस का मनु मानिआ ।।

नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ।। (पृ. २८१)

बस! नाम के साथ जब इसका मन जुड़ जाएगा, कोई कामना नहीं होगी, कोई वासना नहीं होगी, कोई ख्याल नहीं होगा। ये आप खुद देखना, आप नाम के साथ मन को जोड़ो, नाम के साथ क्या जोड़ो? जब आपका वृत्ति (ख्याल) के साथ मन जुड़ जाएगा, वृत्ति जो आपके सामने आती है तो परमेश्वर उसको देखता है। दृष्टा तो परमेश्वर है, जो देखने वाला है, वह आपका अपना आप है। उसके साथ जब आपका मन मिल गया, आपको उसी समय शान्ति आ जाएगी। इसलिए, उस नाम के मार्ग पर गुरु ने, परमेश्वर ने चला दिया-

गुरु परमेसरु एको जाणु ।। (पृ. ८६४)

बड़ी कृपा की परमेश्वर ने-

हरि अंतरजामी सभ विध जाणै

ये सभी विधियों को जानता है जो अंतर्यामी (परमेश्वर) है-

राखा एकु हमारा सुआमी ।। सगल घटा का अंतरजामी ।।

(पृ. ११३६)

वह चार (४) श्रेणियों (अंडज, जेरज, उतभुज, सेतज) के जीवों का अंतर्यामी है, वह सभी विधियों को जानता है। दुनिया में लोग विधियाँ बताते

हैं, ये विधि करना, तो ऐसा होगा, वो विधि करना, तो ऐसा होगा। टोने-टोटके वाले भी विधियाँ बताते हैं। ये सभी विधियाँ गलत हैं। वह अंतर्यामी सभी विधियों को जानता है परंतु दुनिया के विधि-विधानों से कभी किसी की मोक्ष नहीं हुई। मोक्ष, 'नाम' के साथ ही होगी। उसने सीधे, नाम के मार्ग डाल दिया-

ता किसु पहि आखि सुणाईऐ ।।

अब, ये बात किस को कह कर सुनाएँ? ये मन-वाणी का तो विषय नहीं है परमेश्वर। जो वस्तु प्राप्त हुई 'नाम' और 'नामी', वह मन-वाणी का विषय नहीं। अब, ये बात किसे कह कर सुनाएँ? ये तो विस्माद है, अनोखा है-

कहणै कथनि न भीजै गोबिंदु

ये तेरे कहने और कथनों से गोविंद ने, परमेश्वर ने दयालु नहीं होना। वह तो दृष्टा (देखने वाला) है, तेरी कहनी का और तेरी कथनियों का। वह तो यह भी जानता है, ये कहता क्या है और इसका जीवन क्या है। ये कथन क्या करता है और मन में इसके क्या है। कथन तो करता है, बड़ा सुंदर बोलता है, अंदर माया की इच्छा पड़ी होती है। सारी दुनिया माया के लिए भागी फिरती है, कोई शब्द गाता है, कोई कुछ करता है। उसे पैसे न दो, दूसरे दिन नहीं आ कर गाते। ये तो सभी माया के चेले हैं, ये किसी का भला क्या कर देंगे? इसलिए, माया के लिए सारे (काम) करते हैं। वह (परमेश्वर) आपकी बातों, कथनों से नहीं खुश होता। ना इन बातों-कथनों से लोगों का भला होता है। ये माया की खातिर जो चले रहते हैं, तू लोगों को क्या कहेगा? तू परमार्थ तो जानता ही नहीं है, इसलिए कहते हैं, कहने से, बातों से वह दयालु नहीं होता। वह अकथनीय कथा है। वह जब आपकी निरंकार में निगाह होगी, लोग तुम्हें पूजने लग जाएँगे। जिस समय भी आपका मन निरंकार के साथ मिला, जो सामने आएगा, उसे भी शान्ति आ जाएगी। इसलिए भाई, वह तुम्हारी खाली बातों, खाली कथनियों, के साथ गोविंद नहीं खुश होता। आपका प्रयोजन (मकसद) तो माया का है-

हरि भावै पैज रखाईऐ ।।

यदि हरि को अच्छे लग जाएँ तो आपकी इज्जत रह जाएगी, 'पैज' नाम

है इज्जत का। यदि हरि को अच्छा लग गया नामदेव, तो उसकी इज्जत रह गई। रविदास हरि को अच्छा लग गया तो उसकी इज्जत रह गई, उस का दिन मनाते हैं लोग। जब तक ये (जीव) परमेश्वर को नहीं अच्छा लगेगा, कब तक नहीं अच्छा लगेगा? जब तक ईश्वर के हुक्म में नहीं खड़ा होगा, ये पक्की बात है। जब यह ईश्वर के हुक्म में खड़ा हो जाएगा, अच्छा लग जाएगा, तब ये परमेश्वर का हो गया–

जो तुधु भावै साई भली कार ।। तू सदा सलामति निरंकार ।।

(पृ. ३)

ये कोई छोटी पदवी (बात) है? भई, परमेश्वर जो करता है, वह मुझे मंजूर है। फिर तो संकल्प (विचार) ही ना रहा। अब तो नाम जपने का समय आ गया, मन काम से खाली हो गया, इसलिए भाई! कहनियों-कथनियों से कुछ नहीं बनता है, यहाँ न फँसना। जो कहनियों-कथनियों को जानने वाला परमेश्वर आप के अंदर अंतर्यामी बैठा है, वह बख्शने वाला है, उस का सहारा लो–

अवर ओट मै सगली देखी

मैंने सभी ओटें (आसरे) देख लिये, गुरु अर्जुन देव जी कहते–

इक तेरी ओट रहाईऐ ।।

पर एक तेरी ओट (आसरा) रह गई थी, मैं उस में अब आ गया। तेरी ओट से पहले, मैंने सारी ओटें देखीं पर कुछ न बना। जब आप का आसरा लिया, आप की शरण पड़े तो हमारी आबरू रह गई, इज्जत रह गई–

होए दइआलु किरपालु प्रभु ठाकुरु

वह ठाकुर, मालिक, दयालु, कृपालु हुआ–

आपे सुणै बेनंती ।।

वह सभी अरदासें खुद ही सुनता है। वह कोई बहरा है? जो आप ख्याल करते हो, वह उसे देखता भी है और जानता भी है। वह दाना-बीना है। वह तो सुनता है–

सभु किछु सुणदा वेखदा किउ मुकरि पइआ जाइ ।। (पृ. ३६)

वह तो सब सुनता और देखता है। उस से कैसे इंकार करोगे। वह तो

ऐसा दयालु 'ठाकुर' है-

पूरा सतगुरु मेलि मिलावै

जब पूरे सतगुरु, श्री गुरु रामदास, के साथ मिले तो उन्होंने हमारा मेल मिला दिया परमेश्वर के साथ। मिलाप लिखा नहीं गुरु अर्जुन देव ने सुखमनी में? भई, मुझे परमेश्वर प्राप्त हुआ है। मुझे अंदर से परमेश्वर प्राप्त हुआ है। जब मैं गुरु रामदास के चरणों में पड़ा। मुझे अंतर-ज्ञान प्राप्त हुआ, परमेश्वर प्राप्त हुआ। क्या लिखा है भला तेइसवीं (२३वीं) अष्टपदी में?

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा ।। नाम प्रभू का लागा मीठा ।।

(पृ. २६३)

मैंने उस संत गुरु रामदास महाराज के साथ अपने अंदर ईश्वर देखा। जब मैं उन के साथ मिला, उन्होंने मेरा मेल, परमेश्वर के साथ मिला दिया। मैं उनके चरणों में पड़ा, उन्होंने मेरे अंदर वह परमेश्वर दिखा दिया। ये गुरु और परमेश्वर में ताकत है। गुरु, परमेश्वर से मिलाता है और परमेश्वर गुरु से मिलाता है। गुरु तो मिला होता है परमेश्वर से और परमेश्वर गुरु से मिलाता है और गुरु के पास, परमेश्वर ले जाएगा, तो वह (गुरु) परमेश्वर से मिला देगा। इसलिए, मेरा मेल (मिलाप) भाई! गुरु 'रामदास' ने मिला दिया। इनके (श्री गुरु अर्जुन देव जी के) गुरु 'रामदास' जी थे। कहते हैं, पूरे गुरु ने मेरा मेल, भाई! परमेश्वर के साथ मिला दिया-

सभ चूकै मन की चिंती ।।

तो सभी मन की चिंताएँ खत्म हो गईं, जब परमेश्वर के साथ मिल गए, ब्रह्म ज्ञान हो गया, मोक्ष हो गई। हमारी सारी चिंताएँ खत्म हो गईं-

हरि हरि नामु अवखदु मुखि पाइआ

हरि का नाम हमारे मुख में, औषधि (दवाई) के रूप में डाल दिया, अब नाम के अलावा हमारा कोई काम नहीं है। नाम हमारा आठों पहर (हर समय) चलता है-

जन नानक सुखि वसंती ।।

श्री गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं, अब हम सुख स्वरूप परमेश्वर में बसते हैं। वह जो आत्मा का सुख, पूर्ण आत्मिक सुख है, उसमें हमारा मन निवास

करता है। अब हमारा मन संसार से निकल गया, आत्मा में बस गया, सभी चिंताएँ खत्म हो गईं। उनको जो प्राप्त हुआ, इस शब्द के द्वारा आप सब को उन्होंने बता दिया–

पूरा सतगुरु मेलि मिलावै सभ चूकै मन की चिंती ।।
हरि हरि नामु अवखदु मुखि पाइआ जन नानक सुखि वसंती ।।

बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु !

❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

6

धनासरी महला ५ ।।
जह जह पेखउ तह हजूरि दूरि कतहु न जाई ।।
रवि रहिआ सरबत्र मै मन सदा धिआई ।।१।।
ईत ऊत नही बीछुड़ै सो संगी गनीऐ ।।
बिनसि जाइ जो निमख महि सो अलप सुखु भनीऐ ।।रहाउ।।
प्रतिपालै अपिआउ देइ कछु ऊन न होई ।।
सासि सासि संमालता मेरा प्रभु सोई ।।२।।
अछल अछेद अपार प्रभ ऊचा जा का रूपु ।।
जपि जपि करहि अनंदु जन अचरज आनूपु ।।३।।
सा मति देहु दइआल प्रभ जितु तुमहि अराधा ।।
नानकु मंगै दानु प्रभ रेन पग साधा ।।४।।३।।२७।।

(पृ. ६७७)

सारी संगत किरपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु ! सतिनामु श्री वाहिगुरु !!

धनासरी महला ५ ।।
धरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरूपी रहिओ भरि ।।
भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख्य हरि ।।

(पृ. १४०६)

गुर जोति अरजुन माहि धरी ।। (पृ. १४०६)

श्री गुरु रामदास, ये 'ज्योत' गुरु अर्जुन में रख कर, खुद वैकुण्ठ चले गए। पिरथीए (श्री गुरु अर्जुन देव जी के बड़े भाई) में नहीं रखी, महादेव (श्री गुरु अर्जुन देव जी के दूसरे भाई) में नहीं रखी। ये (श्री गुरु अर्जुन देव) छोटे थे, एक ही 'ज्योत' थी। ईश्वर के न्याय में, इस दुनिया का कोई रिश्ता महत्वपूर्ण नहीं होता। यदि दुनिया का कोई रिश्ता होता तो पिरथीए का हक

था, वह बड़ा था। उसके बाद फिर महादेव का हक था। पर नहीं, ये तो ईश्वरीय संबंध है। उन्होंने (गुरु रामदास ने) वह ज्योत-

जोति रूप हरि आपि गुरू नानक कहायउ ।।
ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ ।। (पृ. १४०८)

वह जो ज्योति स्वरूप, अवतार धारण करके दुनिया को तारने आया। आपको पता है? आठ लोगों को ज्ञान हुआ ननकाना साहिब (श्री गुरु नानक साहिब जी के जन्म स्थान) में। मुल्ला को, पंडित को, बीबी नानकी को और जब वे (गुरु साहिब) बखान करने लग गए तो गुरु साहिब को आप उन्होंने (परमेश्वर ने) सुल्तानपुर बुलाकर कहा, आपको तो पैगाम देने के लिये भेजा था, आपने तो दुनिया को पता देना था कि भई, इस रास्ते पर चलना है। आपको गुरु बना कर भेजा था, आपने तो दुनिया को सीधे रास्ते चलाना है। वह ठीक है, जो आप परोपकार करते हो पर आपका गुरु-प्रचार (धर्म प्रचार) का हक तो बहुत बड़ा है। अवतार तो कई प्रकार के होते हैं, आप पढ़ोगे अंशावतार, गुरु अवतार (आदि)। पर गुरु अवतार तो तभी आता है, जब अन्याय बढ़ जाता है दुनिया में। इसलिए, फिर उन्होंने (श्री गुरु नानक देव जी ने) चार (४) यात्राएँ की, दुनिया को बहुत उपदेश दिया, उन (श्री गुरु नानक देव जी) में से अब ये ज्योत पाँचवें शरीर में आ गई-

जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ ।।

(पृ. ९६६)

अब वह ज्योत, परमेश्वर की ज्योत, पाँचवें शरीर में आ कर, उन्होंने वाणी कही है जो, वह वाणी (श्री गुरु ग्रंथ साहिब) में है। अब सुनो-

जह जह पेखउ तह हजूरि दूरि कतहु न जाई ।।
जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई ।।
एको अंम्रित बिरखु है फलु अंम्रितु होई ।। (पृ. ४२१)

कबीर साहिब ने तो साफ कह दिया-

किआ नागे किआ बाधे चाम ।। जब नही चीनसि आतम राम ।।

(पृ.३२४)

जब तक तुमने अपने आप को व्यापक (परमात्मा) के साथ, वृत्ति (ख्याल) छोड़ कर, एक नहीं किया, जब तक वह संसारी वृत्ति त्याग के, वृत्ति

यहाँ (व्यापक के साथ) नहीं जुड़ी और भक्त रविदास की जुड़ी-

साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी ।। तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी ।।

(पृ. ६५६)

रविदास ने जब उपासना की, तब जो कुछ हुआ, उस की भावना के अनुसार उसने कहा। क्यों?

साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी ।।

वह (प्रभु) कहता (भक्त रविदास की परीक्षा लेने के लिए) दूर हो जा, तू चमार है। वह (रविदास) कहता, दूर कहाँ हो जाऊँ अब?-

साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी ।। तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी ।।

(पृ. ६५६)

द्रिसटिमान है सगल मिथेना ।। (पृ. १०८३)

जो देखने में आता है, वह मिथ्या है-

मुई सुरति बादु अंहकारु ।। ओहु न मूआ जो देखणहारु ।।
जै कारणि तटि तीरथ जाही ।। रतन पदारथ घट ही माही ।।
पड़ि पड़ि पंडितु बादु वखाणै ।। भीतरि होदी वसतु न जाणै ।।
हउ न मूआ मेरी मुई बलाइ ।। ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ ।।
कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ ।। मरता जाता नदरि न आइआ ।।

(पृ.१५२)

जनमि न मरै न आवै न जाइ ।। नानक का प्रभु रहिओ समाइ ।।

(पृ. ११३६)

नानक का प्रभु तो व्यापक (हर समय, हर वस्तु में, हर जगह पर हाज़िर) है, नानक का प्रभु प्रच्छिन्न (एक वस्तु, एक समय, एक जगह से जुड़ा) नहीं है। वह कागजों की मूर्तियाँ नहीं है, पत्थर की मूर्तियाँ नहीं है। नानक का प्रभु तो व्यापक है, अकाल पुरुष है-

१ ओंकार

एक (१), लिखा ही इसलिए है-

एका एकंकारु लिखि देखालिआ ।। ऊड़ा ओअंकारु पासि बहालिआ ।।

(भाई गुरदास)

भाई साहिब इसका अर्थ करते हैं, भाई गुरदास जी-

एका एकंकारु लिखि देखालिआ ।।

एक (१), आप को लिख कर दिखाया, ईश्वर एक है।

ऊड़ा ओअंकारु पासि बहालिआ ।।

ये उसका नाम है, ओ३म् (ੳ) उसका नाम है पहला, उपनिषद में। इसलिए, वह आपको बता दिया कि ये ओंकार (ੳ) उसका नाम है और ये (੧) नामी है। इसके सिवाय आपने दुनिया में नहीं जाना है। दुनिया के व्यवहार आप–

साचि नामि मेरा मनु लागा ।। लोगन सिउ मेरा ठाठा बागा ।।

(पृ. ३८४)

अपने मन को जोड़ कर रखना है यहाँ (व्यापक परमेश्वर में) और दुनिया का व्यवहार, 'गौण' (जो मुख्य न हो) वृत्ति से करना है। परंतु दुनिया ने मुख्य कर लिया है 'व्यवहार' और परमेश्वर कर दिया 'गौण'। इसलिए, इनको अंत में ठोकरें खानी पड़ेंगी–

अंत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइओ ।।

(पृ. ६३४)

नौवें पातशाह (श्री गुरु तेग बहादुर जी) कहते, अंत समय भाई, अंत में परमेश्वर के सिवाय (बिना) कोई आपके काम नहीं आएगा। ये जो आप दुनिया में मोह के साथ फँसे हुए हो, यह ऐसे ही फालतू काम हैं, ऐसे आपका काम नहीं चलना है। इसलिए, जितनी देर परमेश्वर की दया नहीं होती, परमेश्वर की कृपा नहीं होती, 'गुरु प्रसादि' नहीं होता, उतनी देर जीव बँधा हुआ है–

जन नानक हरि भए दइआला तउ सभ बिधि बनि आई ।।

(पृ. २१६)

नौवें पातशाह कहते, जब हरि दयालु हो जाए तो तेरी सभी विधियाँ (काम) खुद ही बन जाएँगी। तूने परमेश्वर के चरणों में गिरकर शरणागति ली, उसने दया करनी है। हे महाराज! दया करो। उसकी दया से 'गुरु प्रसादि' के साथ आप पार हो जाओगे। इसलिए, वह हाज़िर है, हजूर है, जाहिर है, जहूर है तो और कहीं मत फिरना भागते हुए–

रवि रहिआ सरबत्र मै

वह (परमेश्वर) सभी में व्यापक है–

बिसरि गई सभ ताति पराई ।। जब ते साधसंगति मोहि पाई ।।१।।रहाउ।।
ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ।।१।।
जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ एह सुमति साधू ते पाई ।।२।।
सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै पेखि पेखि नानक बिगसाई ।।३।।८।।

(पृ. १२६६)

गुरु अर्जुन देव कहते, गुरु रामदास महाराज की कृपा से जो (परमेश्वर) सारे रमा (हर कण में फैला) हुआ, व्यापक था, मुझे मिल गया है। मैं बहुत खुश हूँ। इसलिए, वह परमेश्वर सब में 'रवि रहिआ' (यानि) व्यापक है–

मन सदा धिआई ।।

हे मन! उसका ध्यान करना सदा। देखना! कहीं दुनिया के साथ न लिपट जाना। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार विकार हैं पाँच। तेरा मन यदि यहाँ चिपक गया, (तो) खाली, बेकार जाएगा। शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध पाँच विषय हैं। यदि तेरा मन इनमें अटक गया, तू कितना भी माँग ले, ईश्वर तुझे नहीं मिलेगा। इसलिए, सदा तू परमेश्वर का ध्यान करना, दुनिया का हर्ता (समाप्त करने वाला) कर्ता (बनाने वाला) एक परमेश्वर है, पैदा वह करता है, पालता वह है, नाश वह करता है, वह मालिक है सब का। जपुजी साहिब के टीके (व्याख्या) में उसने लिखा है (ख्वाजा) दिल मोहम्मद ने, और भी अनेकों ने टीके लिखे हैं। उसने कहा, ओए! नानक तो एक का उपासक है, आपने तीन क्यों लिख दिए? ब्रह्मा, विष्णु, महेश– ये तो देवता हैं। नानक तो एक का उपासक है, नीचे पंक्ति लिख दी और दूसरों को तो पता नहीं लगा किसी को। इसलिए, आप एक के उपासक हो। वह (परमेश्वर) व्यापक है, वह सारे रमा हुआ है। उसका ध्यान, अपने मन में रखना, अपने मन को उसके साथ जोड़ना। आप मन के दृष्टा (देखने वाला) हो, मन आपका दृष्टा नहीं। आप रोज, मन को देखते हो, मन मेरा ठीक है कि गलत है। यदि आपको कोई बुलाए तो आप कहते हो– 'मुझे मत बुलाओ, मेरा मन ठीक नहीं।' जब ये खुश, ठीक होता है तो कहता है, अब बात कर। इसलिए, आप मन को देखते हो, आपको पता है– भई, मेरा मन कहाँ चिपका हुआ है। मेरा मन कहाँ अटका हुआ है, कहाँ जुड़ा हुआ है। कहते, मन को परमेश्वर के

ध्यान में जोड़, मन को और कहीं दुनिया में नहीं जोड़ना। परमेश्वर के ध्यान में ही मन को जोड़ना और वह व्यापक है, परिपूर्ण (सब जगह फैला) है, अंतर्यामी (सब के मन की बात जानने वाला) है-

राखा एकु हमारा सुआमी ।। सगल घटा का अंतरजामी ।।

(पृ. ११३६)

आपका भला ऐसे होगा भाई! ये, गुरु साहिब जी का वचन है-

ईत ऊत नही बीछुड़ै सो संगी गनीऐ ।।

वह 'संगी' है जो लोक-परलोक में, कभी बिछुड़े न आपसे। जब आप सूक्ष्म शरीर में जाओगे, (ये स्थूल शरीर) बदल के दूसरे जन्म में, तब भी परमेश्वर साथ है और अब भी साथ है-

नामु संगी सो मनि न बसाइओ ।। छोडि जाहि वाहू चितु लाइओ ।।

(पृ. ७१५)

आपका 'संगी' है 'नामु'। 'नामु' आपका राखा है। ये आपने मन में नहीं बसाया 'नामु'। और ये आपको पता है? आपके मन में क्या कुछ बसा रहता है। वह सब कुछ आपके सामने है, कोई परदा तो है नहीं। जो आपके मन में बसा रहता है, वह दिखता नहीं आपको? मन भी दिखता है और जो मन में बसा रहता है, वह भी दिखता है, वह (नाम) है आपका 'संगी' पर-

नामु संगी सो मनि न बसाइओ ।।

परंतु जीव ने 'नामु' जो इसका 'संगी' था, वह मन में नहीं बसाया-

छोडि जाहि वाहू चितु लाइओ ।। (पृ. ७१५)

जो पदार्थ इसने छोड़ कर जाने थे, उनके साथ मोह लगा लिया और ये तो उल्टी तरफ चल पड़ा। नाम के बिना आधार (सहारा) नहीं भाई! नाम एक ऐसी चीज है। ये नामी को मिला देता है, नाम-

नाम संगि जिस का मनु मानिआ ।। नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ।।

(पृ. २८१)

जिसका 'नाम' के साथ मन मान जाएगा, वह निराकार परमेश्वर को जान लेगा। उसकी मुक्ति हो जाएगी। देखना, कहीं अपने मन को दुनिया में न जोड़ लेना, यह गलत काम हो जाएगा-

बिनसि जाइ जो निमख महि सो अलप सुखु भनीऐ ।।रहाउ।।

ये उपनिषद में आता है, जब वे ऋषि (सनक, सनंदन, सनातन, सनत कुमार) नारद के पास गए। उसने (नारद) कहा, आप जी, मुझे उपदेश करो। उसने (ऋषि ने) कहा, ओए! 'भूमा' यानि व्यापक परमेश्वर, सत्य-स्वरूप है। ये जो विषय हैं 'अल्प-सुख' के, इनमें मत उलझ जाना कहीं। इसलिए, ये जो 'अल्प-सुख' है ना, पल भर का, इसमें जीव! उलझ कर विषय विकारों में ना फँस जाना। मारा जाएगा, कुछ नहीं तुझे मिलेगा। चालाकी तो तू करेगा, और चालाकी करके लोगों को भी खराब करेगा। ये भी मैं आपको बता दूँ, पर आपको समझ ही नहीं कि मैंने काम क्या करना है, बात तो सच्ची यह है। बाणी (गुरुबाणी) आपको आती ही नहीं है, बाणी का आपको पता ही नहीं, बाणी कहती क्या है। यदि बाणी के साथ चल पड़ो तो समझ आ जाए। बाणी के साथ चल कर तो देख लो, (ईश्वर के साथ) एक कर देगी। बाणी के साथ तो चलना नहीं, दूसरों के साथ चालाकियाँ करनी। मन ने तो चालाकियों के साथ चलना है। इसलिए फिर पढ़ भाई-

बिनसि जाइ जो निमख महि सो अलप सुखु भनीऐ ।।

कहते हैं, जो विषय (शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध) नाश हो जाने हैं, 'अल्प सुख' हैं, थोड़ा-सा सुख है, ये जो 'अल्प सुख' है, इसमें मत फँस जाना। आत्म-सुख में वृत्ति (ध्यान) जोड़ना, आत्मा के साथ वृत्ति जोड़ना, नाम के साथ वृत्ति जोड़ना और बाकी दुनिया के साथ ना वृत्ति जोड़ बैठना। अब आप अपने साक्षी खुद हो, जहाँ आपका मन जुड़ेगा, आपको तो पता है। ये लोग सिनेमा में भागे जाते हैं, जैसे वहाँ दुनिया की खुशियाँ बरस रही हों, साथ में रूपए देकर आते हैं। क्यों जाते है? इसका मतलब है कि इनका मन, 'नामु' के साथ जुड़ा ही नहीं है। जिसका मन 'नामु' के साथ जुड़ जाएगा, वह ऐसे काम नहीं करता। रविदास, कबीर, नामदेव, धन्ना वह ना इधर (संसार की तरफ) चले गए? इसलिए ऐसे ही ये तो दुनिया के गलत से काम हैं-

प्रतिपालै अपिआउ देइ

कहते, आपकी प्रतिपालना (पालना) नहीं करता परमेश्वर? आपको खाना-पीना, कपड़े नहीं देता? एक संत के पास, एक आदमी आया, वह कहता, जी! मैं बड़ा दुखी हूँ। वह (संत) कहते, तेरे कपड़े तो बहुत अच्छे हैं।

तुझे रोटी नहीं मिलती? तुझे रहने की जगह मिली हुई है? फिर और पूछा, कहते तुझे तो रोटी, कपड़ा चाहिए, ईश्वर देता है, इसके सिवाय तूने क्या लेना है? इसलिए-

प्रतिपालै अपिआउ देइ

कहते, तेरी प्रतिपालना करता है परमेश्वर। तुझे खाना-पीना देता है, तेरे संबंधी तेरी सेवा करते हैं, वह भी उसके (परमेश्वर के) बनाए हुए हैं, कि इसकी सेवा करो-

कछु ऊन न होई ।।

कभी कोई 'ऊन न होई' (कमी नहीं होगी), सब को रोज रोटी मिलती है। सब को सब कुछ मिलता है, परंतु गलतफहमी है। अब शराब तो नहीं ईश्वर आपको देगा और अफ़ीम नहीं देगा। ये तो आप लोगों को ठग कर खाओगे, ये न समझो भई, ये ईश्वर ने तुम्हें भेजनी हैं, ऐसे तो नहीं कि ईश्वर तुम्हें अफीम भेज देगा और शराब भेज देगा। वह तो आपको रोटी खाने को देता है। कितना अन्न खर्च होता है रोज़ दुनिया में, फिर भी कभी समाप्त होता है? और कितने फल देता है। कितना सब कुछ देता है। यह सब कुछ उसका दिया हुआ है और कुछ कमी नहीं उसने रखी। आपको खाना-पीना, आपके प्राणों का सहारा देता है पर आप उस परमेश्वर के साथ नहीं जुड़ते-

सासि सासि संमालता मेरा प्रभु सोई ।।

वह (ईश्वर) साँस-साँस आपको याद करता है, कभी नहीं भूलता आपको। आप उसे भूल जाओगे, ईश्वर आपको नहीं भूलता कभी भी। यदि ईश्वर (आपको) भूल जाए तो आपके कर्मों को टाइप कैसे करे?

नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ ।। (पृ. १४४)

जो आप बहुत चालाकियाँ करते हो, वह तो उनको भी देखता है। मैं, कुराण बहुत सुनता रहा हूँ और (कुराण में) खुदा कहता है, मैं तो उन्हें भी देखता हूँ मोहम्मद! यदि तूने भी ऐसा किया तो तुझे भी, कहते, नरक में फेंकूँगा। मैं तो तेरे अंदर की सारी बात जानता हूँ। ये तो दुनिया की चालाकियाँ हैं। इसलिए, वह तेरी प्रतिपालना करता है। वह ऐसा दयालु है, वह रहम दिल है, वह बड़ा दयालु है परमेश्वर-

मेरा प्रभु सोई ।।

वह मेरा प्रभु है। ये कौन कहते हैं? पंचम पातशाह। पंचम पातशाह कहते हैं, मेरा ईश्वर भई ऐसा है, जो ये काम (प्रतिपालने का) करता है, वह मेरा ईश्वर है–

अछल अछेद अपार प्रभ

वह जो प्रभु है वह 'अछल' है, उसे कोई छल नहीं सकता, 'अछेद' (उसके टुकड़े नहीं हो सकते) है। वह प्रभु सब का प्रेरक है, व्यापक है, रक्षा करने वाला है–

ऊचा जा का रूप ॥

सभी से, उसका स्वरूप बड़ा है, अटल (सदा स्थिर रहने वाला) है। वह कभी पैदा और नाश नहीं हुआ–

आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥

(पृ. १)

ये बात तो अब आपके सामने है। यदि आपका आत्मा अमर न हो तो आप एक बार जन्म लेकर ही मर जाओ–

कई जनम भए कीट पतंगा ॥ कई जनम गज मीन कुरंगा ॥

(पृ. १७६)

ये (जीव) अपनी भूल के कारण जन्मों में धक्के खाता, भटकता फिरता है, अपनी गलती के कारण। परमेश्वर की बख्शिश में कोई फर्क नहीं–

जा कउ अपुनी करै बखसीस ॥ ता का लेखा न गनै जगदीस ॥

(पृ. २७७)

वह तो बख्शिश (कृपा) कर देता है, आप उसकी कृपा के लायक बनो भाई! उसका नाम सिमरन करो, हुक्म को मानो, अहंकार त्याग दो, वह तब आपको बख्श देगा–

जपि जपि करहि अनंदु जन

'जपि जपि' के आनंद करते हैं, जिन्होंने नाम जपा। कबीर ने, धन्ने ने, नामदेव ने (नाम जपा), वे आनंद में पहुँच गए। उनको आनंद स्वरूप (परमेश्वर) प्राप्त हो गया–

अचरज आनूपु ॥

वह परमेश्वर बड़ा 'अचरज' (अनोखा) है, बराबरी उसकी कोई नहीं।

बराबरी तभी हो यदि दूसरा कोई परमेश्वर हो। वह तो अनूप है, अनोखा है, व्यापक है, राखा है, परिपूर्ण है और बड़ा दयालु है-

सा मति देहु दइआल प्रभ

गुरु अर्जुन देव महाराज कहते, हे दयालु! वह 'मति' (बुद्धि) मुझे दे दो, आपका आराधन करने वाली 'मति' (आपके) देने पर ही मिलेगी। कबीर ने लिखा है-

कहि कबीर बुधि हरि लई मेरी बुधि बदली सिधि पाई ।। (पृ. ३३६)

कबीर कहता, वह पहली बुद्धि मेरी ईश्वर ने छीन ली। (लोग) पूछते, फिर? (कबीर जी) कहते, दूसरी बुद्धि दे दी-

बुधि बदली सिधि पाई

जब ये बुद्धि बदल दी, मुझे मुक्ति दे दी। ऐसी 'मति' दी, मुझे व्यापक के साथ एक होने की, मेरी मोक्ष हो गई। कहते, ये उपकार, कबीर कहता-परमेश्वर ने मेरे ऊपर किए। गुरु साहिब कहते, वह बुद्धि मुझे दे दो। 'सा' का अर्थ है वह 'मति' दे दो, हे परमेश्वर! (जिससे) तेरी स्तुति हो-

जितु तुमहि अराधा ।।

जिस के द्वारा मैं आपका ही आराधन करूँ। आपका ही नाम जपूँ, आपका ही ध्यान करूँ, आपकी आज्ञा मानूँ। ये 'मति', हे परमेश्वर! मुझे बख्शिश कर दो, गुरु अर्जुन देव जी कहते-

नानकु मंगै दानु प्रभ

एक 'दानु' गुरु साहिब जी कहते, हे प्रभु! हे परमेश्वर परिपूर्ण! मैं एक 'दानु' आपसे माँगता हूँ-

रेन पग साधा ।।

मैं, जो ईश्वर के बख्शे हुए हैं, उनके चरणों की धूल हो जाऊँ। बस, जो ईश्वर के बख्शे हुए हैं, उनके चरणों की धूल हो जाऊँ। वे जो बख्शे हुए हैं, वे मुझे भी बख्शवा देंगे-

तैडी बंदसि मै कोइ न डिठा तू नानक मनि भाणा ।।
घोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले जै मिलि कंतु पछाणा ।।

(पृ. ६६४)

(हे ईश्वर!) तेरे बराबर का, गुरु साहिब कहते, मैंने कोई नहीं देखा। तू

मेरे मन को अच्छा लग गया।

घोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले जै मिलि कंतु पछाणा ।।

गुरु अर्जुन देव कहते, गुरु रामदास महाराज ने, उस बिचोले 'रामदास गुरु' ने मुझे (परमेश्वर से) मिलाया, मैं उसका (परमेश्वर का) ही दास हूँ। मैं गुरु रामदास का भी दास हूँ। परमेश्वर का तो मैं दास हूँ ही। वह तो सब का मालिक है। मैं, गुरु रामदास
'साधु' के चरणों की धूल माँगता हूँ-

सा मति देहु दइआल प्रभ जितु तुमहि अराधा ।।
नानकु मंगै दानु प्रभ रेन पग साधा ।।

बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु !

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

7

सोरठि महला ५ घर ३ दुपदे
१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।
रामदास सरोवरि नाते ।। सभि उतरे पाप कमाते ।।
निरमल होए करि इसनाना ।। गुरि पूरै कीने दाना ।।१।।
सभि कुसल खेम प्रभि धारे ।।
सही सलामति सभि थोक उबारे गुर का सबदु वीचारे ।।रहाउ।।
साधसंगि मलु लाथी ।। पारब्रहमु भइओ साथी ।।
नानक नामु धिआइआ ।। आदि पुरख प्रभु पाइआ ।।

(पृ. ६२५)

सारी संगत किरपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु ! सतिनामु श्री वाहिगुरु !!

शब्द, हुक्मनामा श्री गुरु अर्जुन देव द्वारा आया है। ईश्वर की वाणी है और जिनके द्वारा हुक्मनामा आया है, वह भी ईश्वर हैं-

धरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरूपी रहिओ भरि ।।
भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख्य हरि ।।

(पृ. १४०९)

इसलिए, जो हुक्मनामा आया है उस का विचार जैसे परमेश्वर की कृपा से मेरी बुद्धि करेगी, वैसा करेंगे-

सोरठि महला ५ ।।

सोरठ राग में पंचम पातशाह श्री गुरु अर्जुन देव महाराज कथन करते हैं-

घर ३ दुपदे

ये तीसरी तार में गाना है, दो पदों का शब्द है-

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

एक जो परमेश्वर है, वह सतगुरु की कृपा से ही प्राप्त होता है-

रामदास सरोवरि नाते ।।

आप को इस बात का पता है-

एकम एकंकारु निराला ।। अमरु अजोनी जाति न जाला ।।
अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ ।। खोजत खोजत घटि घटि देखिआ ।।

(पृ. ८३८)

जब परमेश्वर की, गुरु की, पूर्ण कृपा होती है तो सब के हृदय में परमेश्वर दिखाई देता है। परमेश्वर व्यापक है, परिपूर्ण है, सब का अपना आप है जिसे 'आत्मा' कहते हैं-

जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई ।।
एको अंम्रित बिरखु है फलु अंम्रितु होई ।। (पृ. ४२१)

अपने आप को जानने से परमेश्वर प्राप्त हो जाता है। क्यों? ये तो आप कह नहीं सकते भई, परमेश्वर दो हैं और ये भी नहीं कह सकते, भई, वह एक परमेश्वर पूर्ण नहीं-

आदि पूरन मधि पूरन अंति पूरन परमेसुरह ।।
सिमरंति संत सरबत्र रमणं नानक अघ नासन जगदीसुरह ।।

(पृ. ७०५)

पूरा प्रभु आराधिआ पूरा जा का नाउ ।।
नानक पूरा पाइआ पूरे के गुण गाउ ।। (पृ. २९५)

पूर्ण प्रभु का, पूर्ण परमेश्वर का, जब ये (जीव) पूर्ण के साथ एक हो जाता है, तब अहंकार की समाप्ति हो जाएगी। अहंकार की समाप्ति से, तृष्णा आदि जितने रोग हैं, वह सारे दूर हो जाते हैं। इसलिए एकंकार (१ ओंकार) जो परमेश्वर है, जब पूरे गुरु की दया, मेहर होती है तब इसे वह प्राप्त होता है-

रामदास सरोवरि नाते ।। सभि उतरे पाप कमाते ।।

आपको पता है, भाई बहलो कहाँ जंगल प्रदेश में बैठा था पर उसकी बुद्धि माया के प्रभाव में आकर, कुछ भटक गई। वह, गुरु की सेवा करता आ रहा था पिछले जन्मों से। परंतु गुरु तो एक ही 'ज्योत' होता है-

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ ॥
ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ ॥ (पृ. १४०८)

ये एक ही 'ज्योत' जो होती है, उस को सर्वज्ञता (सब के मन को जानने की ताकत) होती है। वह पूर्ण सर्वज्ञ 'ज्योत' होती है। ईश्वर में कभी अल्पज्ञता आई नहीं। 'भाई के फफड़े' उसे (गाँव को) अब कहते हैं, पर पहले उसका नाम 'फफड़े' था। उस जगह का ये (भाई बहलो) नंबरदार हो गया, मुसलमानों ने इसे एक छड़ी दे दी। अपने घर में इसने एक चबूतरा बना लिया, जिसके ऊपर बैठकर वह लोगों को वरदान देता था। परंतु उस पर गुरु की कृपा पहले हुई थी। माया का झोंका आया तो वह उन का विरोधी सेवक हो गय। जब गुरु साहिब ने यह प्रण किया, भई, हरिमंदिर साहिब (गुरुद्वारा श्री अमृतसर साहिब) बनाना है, बनाकर, उसमें गुरु ग्रंथ साहिब का स्वरूप स्थापित करना है, यह सारी विधि ऐसे करनी है। उस समय भाई बहलो ने बड़ी सेवा की और उस पर कृपा हो गई। (भाई बहलो) कहता, हम पानी के बिना, जल के बिना, बड़े दुखी थे और अब हमारा सारा गाँव, पशु आदि सब सुखी हो गए। और अब वहाँ तालाब बना हुआ है। लोग वहाँ स्नान करते हैं, बीमार बच्चों को (स्नान) कराते हैं। यह एक बड़ी खास जगह हो गई। इसलिए, सेवा करने वाला भी निहाल हो गया। जो वहाँ श्रद्धा के साथ, पूरी श्रद्धा के साथ नहाएगा, उसके भी पाप उतर जाएँगे, कोई बड़ी बात नहीं। कहने वाले का मतलब जो है, वह कुछ और है कि नाम से नामी प्राप्त होता है और शब्द के अंत में जाकर बता दिया कि भई, ऐसे 'नाम' जप के नामी (परमेश्वर) प्राप्त हुआ और नाम मुख्य है–

सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥
अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥ (पृ. ४)

'अंतरगति तीरथि' में जीव तब नहाता है, जब इसकी बुद्धि की मैल सारी उतर जाती है पर शर्त यह है भई, इसकी पूरी श्रद्धा हो। इसकी श्रद्धा, विश्वास में कोई फर्क न हो–

जा कै रिदै बिस्वासु प्रभ आइआ ॥
ततु गिआनु तिसु मनि प्रगटाइआ ॥ (पृ. २८५)

जीव को विश्वास नहीं होता। श्रद्धा, विश्वास हो जाए तब परमेश्वर तो

दूर नहीं, व्यापक है। इसकी बुद्धि में बैठा है, इसकी वृत्ति (ख्याल) में बैठकर वृत्ति को प्रकाश करता है। इसके मन में बैठकर मन को प्रकाश करता है। इसलिए, परमेश्वर अंतर्यामी है, वह सारी दुनिया का राखा है।

राखा एकु हमारा सुआमी ।। सगल घटा का अंतरजामी ।।

(पृ. ११३६)

वह सब के हृदय का अंतर्यामी है। वह कहीं दूर नहीं है। वह इसका आपा है। इसे दृष्टा (मन, बुद्धि को देखने वाला) कहते हैं, साक्षी कहते हैं, दाना-बीना (देखने-जानने वाला) कहते हैं, पारख (सही-गलत को परखने वाला) कहते हैं। यही इसका मतलब है भई, किसी वक्त इसे कुछ खबर उधर की मिल जाए, ये उस देश (आत्म-देश) में चला जाए-

उह रसु पीआ इह रसु नही भावा ।। (पृ. ३४२)

जब इस को, वह रस (आत्म-रस) प्राप्त हो गया, ये (संसार का) रस इसको नहीं अच्छा लगेगा। इसलिए, उस परमेश्वर के प्यारे जो भी वहाँ (रामदास सरोवर में) स्नान करेंगे, वह गुरु-परमेश्वर ने खुद तीर्थ बनाया। इसलिए बनाया भई, जो श्रद्धा, भक्ति के साथ स्नान करेंगे, उनका कल्याण होगा। हम एक जगह संतों के पास गए। वह संत बड़े अच्छे थे। उन्होंने जो कुछ वहाँ किया, पुण्य और स्नान करना, ज्यादा करना। इसमें एक ही बात उन्होंने ये कही कि भाई, स्नान बाहर करना है। फिर पवित्र होकर बड़ी शुद्धता के साथ (सरोवर में) स्नान करना है, इस विधि के साथ करना है, और उनको श्रद्धा बहुत थी, कि इस सरोवर में जो नहाएगा, उसके पाप दूर हो जाएँगे-

रामदास सरोवरि नाते ।।

जो भी गुरु रामदास के सरोवर में नहाएँगे। क्यों? खुदाई का पहला टप्पा गुरु रामदास जी ने लगाया था, गुरु अमरदेव ने भेजा था, ये इतिहास है। गुरु रामदास जी के सरोवर में जो भी स्नान करेगा-

सभि उतरे पाप कमाते ।।

उनके पाप दूर हो जाएँगे, उनकी बुद्धि शुद्ध हो जाएगी-

निरमल होए करि इसनाना ।।

भई, शुद्ध हो कर स्नान करना है, अंदर से पूर्ण श्रद्धा, विश्वास, बाहर

से पूरी शुद्धि करके, स्नान करके विधि से, फिर स्नान करना है-

गुरि पुरै कीने दाना ।।

ये पूरे गुरु, गुरु रामदास दान कर गए हैं, भई, जो यहाँ स्नान करेगा, उसके पाप नाश हो जाएँगे, बड़ा भारी दान किया-

सभि कुसल खेम प्रभि धारे ।।

और सारे कुशल-क्षेम, कल्याण (प्रभु ने) किए, जो प्रभु के इस तालाब में स्नान करेगा, पूरी श्रद्धा के साथ (उसके भी हो जाएँगे)-

सही सलामति सभि थोक उबारे

हमारे जितने 'थोक' जो चीजें (थी), सही सलामत 'उबारे' बचा लिये, जो हमें वर दिए थे, वे पूरे हो गए-

गुर का सबदु वीचारे ।।रहाउ।।

पर गुरु के शब्द का विचार करो। गुरु का शब्द जो होता है, वह मन को पकड़ कर, नामी (परमेश्वर) के साथ मिला देता है। शब्द होता है 'नाम' परमेश्वर का और जब नाम के साथ-

नाम संगि जिस का मनु मानिआ ।। नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ।।

(पृ. २८१)

जब नाम के साथ इसका मन, मान गया तो नामी के साथ ये एक हो गया, तो इस की मुक्ति हो जाएगी-

साधसंगि मलु लाथी ।।

ये संतों के संग करके, गुरु रामदास महाराज जी के संग करके, गुरु साहिब कहते, हमारी सारी मैल उतर गई और जो पूर्ण श्रद्धा के साथ 'संगि' करेगा, उसकी भी मैल दूर हो जाएगी। सब से बड़ी मैल 'अहंकार' की होती है, उस के बाद पापों की होती है। मैल तो कई प्रकार की लिखी है। जितनी देर अहंकार की मैल, जीव के अंदर से न जाए, उस (संतों के संग) ने इसका कुछ नहीं करना। इसलिए, उन संतों के संग के साथ गुरु रामदास महाराज के संग के द्वारा, हमारी मैल उतर गई है। आप ही गुरु साहिब ने कथन किया है-

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा ।। नामु प्रभू का लागा मीठा ।।

(पृ.२९३)

ये 'संत' के 'संगि' से हमने अपने अंदर परमेश्वर देखा, उस नाम ने हमें नामी के साथ मिला दिया। इसलिए भई, संतों के संग से परमेश्वर प्राप्त हो जाता है-

पारब्रहमु भइओ साथी ।।

अब हम पारब्रह्म के साथी हो गए। अब हमारा मन, अब हमारी परमेश्वर के साथ लिव (लगन) लग गई, एक हो गया (परमेश्वर के साथ)। अब हम परमेश्वर के साथी हो गए। अब दुनिया का संग हमारा कोई नहीं रहा। अब हम परमेश्वर के साथी हो गए-

नानक नामु धिआइआ ।।

श्री गुरु अर्जुन देव जी कहते, जो हमें नाम श्री गुरु रामदास महाराज जी ने बख्शा, उसका हमने जाप किया। ध्यान और सिमरन एक होता है, ये नियम है एक। जितनी देर आपका ध्यान नहीं होगा, उतनी देर आप का सिमरन नहीं चलता, चाहे आप जोर लगा लो। काज़ी का नहीं चला और पठान का नहीं चला। जब तक आपका ध्यान वहाँ (परमेश्वर में) नहीं टिकेगा, उतनी देर आपका सिमरन नहीं चलेगा। उस गुरु की कृपा, श्री गुरु रामदास की कृपा के साथ, हमने नाम का ध्यान किया-

आदि पुरख प्रभु पाइआ ।।

जो सभी का 'आदि पुरख' परिपूर्ण परमेश्वर था, श्री गुरु अर्जुन देव जी कहते, वह हमने पा लिया।

बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु !

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

8

सोरठि महला ५ ।।
गुरि पूरै पूरी कीनी ।। बखस अपुनी करि दीनी ।।
नित अनंद सुख पाइआ ।। थाव सगले सुखी वसाइआ ।।१।।
हरि की भगति फल दाती ।।
गुरि पूरै किरपा करि दीनी विरलै किन ही जाती ।।रहाउ।।
गुरबाणी गावह भाई ।। ओह सफल सदा सुखदाई ।।
नानक नामु धिआइआ ।। पूरबि लिखिआ पाइआ ।।२।।१७।।

(पृ. ६२८)

सारी संगत किरपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु ! सतिनामु श्री वाहिगुरु !!

धरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरूपी रहिओ भरि ।।
भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख्य हरि ।।

(पृ. १४०९)

श्री गुरु अर्जुन देव, पंचम (पाँचवें) गुरु नानक द्वारा, ये शब्द आया है ईश्वर की वाणी का, उसी की व्याख्या करते हैं। बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु!-

सोरठि महला ५ ।।

सोरठ राग में पंचम पातशाह महाराज कथन करते हैं-

गुरि पूरै पूरी कीनी ।।

पूर्ण गुरु रामदास महाराज ने मेरी बात (इच्छा) पूरी कर दी, कोई बात अधूरी नहीं छोड़ी है-

बखस अपुनी करि दीनी ।।

गुर जोति अरजुन माहि धरी ।। (पृ. १४०९)

अपनी पूर्ण बख्शिश कर दी, अब वह 'ज्योत' गुरु अर्जुन देव में रख दी।

संसार के मुताबिक तो पिरथीए (श्री गुरु अर्जुन देव जी के बड़े भाई) का हक था, बड़ा था। महादेव छोटा था पर ईश्वर का हुक्म नहीं था। इसलिए, पूर्ण गुरु ने मुझ पर पूरी कृपा कर के, मेरे सारे काम, गुरु अर्जुन देव कहते, पूरे कर दिए, गुरु रामदास ने-

नित अनंद सुख पाइआ ।।

वह जो 'नित्य आनंद' है आत्म आनंद, वह 'सुख पाया', आत्म-सुख मिल गया। अब मुझे वह पूर्ण-सुख मिल गया, परंतु गुरु के सिवाय और किसी से मिलता भी नहीं है-

थाव सगले सुखी वसाइआ ।।

सब जगह अब मैं सुखी हो गया। अमृतसर तीर्थ बन गया, तरन तारन बन गया, एक और उन्होंने हुक्म दिया था भई, करतारपुर बनाना है, वह भी हो गया। गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ बन गई। सब काम मेरा पूरा हो गया, सब जगह सुख हो गया-

हरि की भगति फल दाती ।।

वह जो प्रेमा भक्ति थी, फल देने वाली, वह मुझे गुरु रामदास ने बख्श दी, वह मुझे प्राप्त हो गई-

गुरि पूरै किरपा करि दीनी

पूर्ण गुरु रामदास ने, मुझ पर पूरी कृपा कर दी-

विरलै किन ही जाती ।।रहाउ।।

परंतु इस बात का पता नहीं-

गुरु कुंजी पाहू निवलु मनु कोठा तनु छति ।।
नानक गुर बिनु मन का ताकु न उघड़ै अवर न कुंजी हथि ।।

(पृ. १२३७)

गुरबाणी गावह भाई ।। ओह सफल सदा सुखदाई ।।

वह गुरुबाणी बड़ा सफल करेगी आपके जन्म को और आपको सुख देगी। इसलिए भाई, ऐसा किया करो-

नानक नामु धिआइआ ।।

श्री गुरु (अर्जुन देव) साहिब कहते, मैंने 'नामु धिआइआ'। जो नाम (शब्द) मुझे बख्शा था श्री गुरु रामदास ने, उस नाम का मैंने जाप किया-

पूरबि लिखिआ पाइआ ।।

ये पहले का लिखा हुआ था मेरा–

संजोगु विजोगु धुरहु ही हूआ ।। (पृ. १००७)

ये पहले लिखा हुआ न होता तो वह पिरथीए को मिल जाता, महादेव को मिल जाता। वह पहले लिखा हुआ था कि जब गुरु रामदास ज्योति स्वरूप आएँगे, वह ज्योत तुझ में (गुरु अर्जुन देव में) रखकर फिर वह गुरु गद्दी देकर–

जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ ।।

केवल शरीर का ही फ़र्क किया, 'ज्योत' और 'जुगति' (तरीका) जो गुरु रामदास जी का था, वह दोनों गुरु अर्जुन देव को बख्श कर चले गए। ये 'नामु' की ताकत है, ये नाम का प्रताप है–

नानक नामु धिआइआ ।। पूरबि लिखिआ पाइआ ।।

बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु !

❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

9

धनासरी महला १ ।।
चोरु सलाहे चीतु न भीजै ।। जे बदी करे ता तसू न छीजै ।।
चोर की हामा भरे न कोइ ।। चोरु कीआ चंगा किउ होइ ।।१।।
सुणि मन अंधे कुते कूड़िआर ।। बिनु बोले बूझीऐ सचिआर ।।१।।रहाउ।।
चोरु सुआलिउ चोरु सिआणा ।। खोटे का मुलु एकु दुगाणा ।।
जे साथ रखीऐ दीजै रलाए ।। जा परखीऐ खोटा होइ जाइ ।।२।।
जैसा करे सु तैसा पावै ।। आपि बीजि आपे ही खावै ।।
जे वडिआईआ आपे खाइ ।। जेही सुरति तेहै राहि जाइ ।।३।।
जे सउ कूड़ीआ कूड़ु कबाड़ु ।। भावै सभु आखउ संसारु ।।
तुधु भावै अधी परवाणु ।। नानक जाणै जाणु सुजाणु ।।४।।४।।६।।

(पृ. ६६२)

पहले पातशाह श्री गुरु नानक देव महाराज द्वारा जो शब्द ईश्वर की वाणी का आया है, उस हुक्मनामे की जैसे ईश्वर की कृपा से व्याख्या होगी (करेंगे)।

आप सारे किरपा करके बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु ! सतिनामु श्री वाहिगुरु !! सतिनाम श्री वाहिगुरु !!!

गुरु के एक सेवक ने चोरी कर ली थी। (लोगों ने) गुरु साहिब को आ कर कहा, महाराज! उसको कृपा करके छुड़वा दो। वे कहते, ना!–

चोर की हामा भरे न कोइ ।। चोरु कीआ चंगा किउ होइ ।।

जब चोरी करना अच्छा काम नहीं, हम उसकी 'हामा' (गवाही) कैसे भरेंगे?

चोर की हामा भरे न कोइ ।।

हम भी चोर की 'हामा' नहीं भरेंगे। फिर वह (बात) जैसे आगे हुई, फिर वह (चोर) छूट गया। फिर उसने माफी माँगी जो कुछ हुआ। परंतु गुरु साहिब

ने इंकार कर दिया। गुरु साहिब ने कोई लिहाज़ नहीं किया, सिफारिश नहीं की–

चोरु कीआ चंगा किउ होइ ॥

चोरी करना अच्छा काम नहीं है। जो काम अच्छा नहीं, हम उसकी हाँ कैसे भरें?

गुरु पीरु हामा त भरे जा मुरदार त खाइ ॥ (पृ. १४१)

गुरु पीर उसकी हामी भरेगा जो पराया माल नहीं चुराएगा, धोखा नहीं करेगा। असली 'गुरु पीरु' जो सोहं-प्रकाश, चेतन का बख्शा हुआ परमेश्वर का, वह कभी झूठ की हामी नहीं भरेगा। वह तो झूठ, चोरी, गलत आदतों को छुड़वाने आया है तो हामी कैसे भर दे? इसलिए, वह शब्द है–

चोरु सलाहे चीतु न भीजै ॥

यदि चोर प्रशंसा करे तो भले पुरुषों का मन नहीं भीगता (दयालु होता)। उसने चोरी की है। उस चोर की कोई प्रशंसा करे आकर कि वह अच्छा आदमी है, वह भला आदमी है। महापुरुषों का, सच्चे पुरुषों का मन उस पर दयालु नहीं होगा। वह तो सर्वज्ञ हैं, वह तो जानते हैं सब कुछ। हाँ, शरणागति आने पर, सब को त्याग कर परमेश्वर की शरण आएगा, गुरु की शरण आएगा, फिर उस महापुरुष का मन दयालु होगा। भाई भूमिए पर, जब उसने वचन मान लिया तब गुरु नानक देव जी का उस पर मन दयालु हुआ। सज्जन ठग जब सारी ठग्गी छोड़ चरणों में पड़ गया सच्चे दिल से, तो गुरु नानक देव जी का उस पर मन दयालु हो गया, तो गुरु जी ने बख्शा। चोर की आप प्रशंसा करो, भला कहो परंतु गुरु पीरों का उस पर मन नहीं पसीजता, वे किसी की बात ऐसी-वैसी नहीं मानते–

जे बदी करे ता तसू न छीजै ॥

यदि कोई (भले पुरुषों की) बुराई करे तो उसकी बुराई से भले पुरुषों का 'तसू' (तिनके) जितना भी नुकसान नहीं होता, सच्चे पुरुषों का कभी नुकसान नहीं होता। सच को कभी आँच लगती ही नहीं। प्रह्लाद सच्चा था, उसे आँच लगी? अग्नि ने नहीं उसे जलाया। क्यों? वह सच्चा पुरुष था। सच्चे पुरुषों का कुछ नहीं बिगड़ता, सच का कभी कुछ नहीं बिगड़ता। बुराई करने वालों का ही नुक्सान होगा और उनका तो तिनका भर भी नुकसान नहीं होगा,

सच्चे पुरुषों का। ऐसे तो फिर सच्चे पुरुषों को लोग नुकसान पहुँचा दें। प्रह्लाद को ना पहुँचा दिया, नामदेव को ना पहुँचा दिया, कबीर को ना पहुँचा दिया, किसी को पहुँचा नुकसान? तिनका भर भी उनका, कुछ बिगड़ा? इसलिए, बुराई से डरकर कभी आप उन की सिफारिश ना करो। उन की बुराई से डरकर कभी उन के साथ न मिलो। आजकल यही खराब हो गया है न काम, लोग जो बुराई करने वाले हैं, उन से डरकर चुप कर जाते हैं, उनके साथ मिल जाएँगे। ऐसे तो सुधार ही नहीं होगा, यदि बुराई करने वालों से डरकर आप उनके साथ मिल गए, फिर बुराई बढ़ जाएगी। आपने तो सच को सामने लाना है, आपने तो सच के रास्ते पर चलना है-

सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ ।।
नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ ।। (पृ. ४६८)

आपका भला तो सच ने करना है। आपके सारे पाप सच ने खत्म करने हैं। यदि आप बुराई करने वालों से डर गए, मिल गए उनके साथ, फिर तो सच्चाई को खत्म कर दिया आपने। आपने, सच में टिके रहना है। ऐसे तो फिर गुरु नानक, चारों दिशाओं में गए, किसी से डरे कभी वह? क्यों? उन्होंने दुनिया में सच जाहिर करना था। उन्होंने अपने मुख से कहा-

आदि सचु जुगादि सचु ।। है भी सचु नानक होसी भी सचु ।।१।।
(पृ. १)

फिर उनकी इस बात की क्या कीमत पड़ती, यदि वे झूठ के साथ, चोरों के साथ, बुराई वालों के साथ मिल जाते या उनकी सिफारिश करते तो फिर सच सामने कैसे आता? वह तो सच को टिकाने (स्थापित करने) आए थे। वह तो जो रहस्यक (सदा) सच है, आत्मा का सच है, उस को जाहिर करने आए थे-

चोर की हामा भरे न कोइ ।।

गुरु साहिब कहते, भाई! चोर की हामी कोई नहीं भरेगा, चाहे वह चोर गुरु का सिक्ख बना हुआ था, सेवक बना हुआ था, उसने चोरी कर ली। गुरु साहिब कहते, ना भई!-

चोर की हामा भरे न कोइ ।।

चोर की हामी कभी कोई नहीं भरेगा-

चोरु कीआ चंगा किउ होइ ॥

जब चोरी करना अच्छा काम नहीं है फिर कैसे हामी भर लें? जब चोरी करना अच्छा काम नहीं, गुरु पहली पातशाही (श्री गुरु नानक देव जी) कहते, हम उस की हामी कैसे भर दें, चोर की। उन्होंने बिल्कुल सिफारिश नहीं की, कुछ नहीं किया। उसकी करनी का फल आएगा-

करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥

जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥ (पृ. ८)

कर्म तो अपने-अपने हैं। पार तो इस जीव को 'नामु' ने लगाना है। जब तक ये कर्म में है, भले-बुरे में, तब तक तो यह जीव है और जीवपने की हद तो जब इसका मन 'नाम' के साथ जुड़ना है, अभ्यास द्वारा समाधि में, स्वरूप में पहुँचना है तो इसने पार होना है। 'नामु' के साथ तो इसका मन ही नहीं अभी जुड़ा और ये कर्म में है और कर्म इसके खुद को ही मिलेंगे चाहे भले हैं, चाहे बुरे हैं। कर्म तो अपने-अपने हैं या नहीं? पार तो नाम की मेहनत ने करना है, पार तो इसे नाम अभ्यास ने करना है। जब मन 'नामु' के साथ जुड़ गया और इस ने अभ्यास किया तो नामी (परमात्मा) प्राप्त हो जाएगा। इसका जन्म-मरण कट जाएगा। इस को असली रूप मिल जाएगा तो इसलिए-

चोरु कीआ चंगा किउ होइ ॥

गुरु साहिब कहते, चोरी करना अच्छा काम नहीं है तो फिर चोर की हामी हम, गुरु साहिब कहते, कैसे भरें? ये पहले पातशाह (श्री गुरु नानक देव जी) का शब्द है-

सुणि मन अंधे कुते कूड़िआर ॥

हे मन! तू सुन ले एक बात, क्या?-

सुणि मन अंधे

हे मूर्ख मन! अज्ञानी, सुन ले बात-

कुते

तू कुत्ता है, लोभ में फँस के तू ये सारे काम करता है-

कूड़िआर ॥

झूठा है, कूड़िआर है, तू झूठा है, मन!-

बिनु बोले बूझीऐ सचिआर ।।

पर तुझे मन! गलतफहमी है ये तो–

बिनु बोले बूझीऐ सचिआर ।।

वह जो सच तेरे अंदर है, परमेश्वर, चेतन, जो 'दाना बीना साई मैडा' है, जो तेरे सारे कामों को भी देखता है, तुझे भी देखता है, तुझे भी जानता है, तेरे कारनामों को भी जानता है। उस सच को कुछ बताने की जरूरत है? ये ऐसे ही लोगों को भूल है। उस कर्म ने जिस दिन आना है, अपने आप इंसाफ हो जाना है। वह (परमेश्वर) तो बिना बताए सच जानता है। उस के, 'दाना-बीना' (देखने-जानने वाले) के सामने तो मन ख्याल करता है, संकल्प करता है। जो कुछ, चाहे वह चोरी का करे, चाहे वह यारी का करे, चाहे वह झूठ का करे, वह सभी तो उसके सामने करता है। इसलिए मन को डाँटा गया है–

सुणि मन अंधे कुते कूड़िआर ।।

हे मन! तू सुन ले, तू अन्धा है और कुत्ता है और व्याभिचारी, झूठा है। पर तुझे ये नहीं पता–

बिनु बोले बूझीऐ सचिआर ।।

ये, सच्चा परमेश्वर बिना कहे, सब कुछ जानता नहीं? वह तो दाना-बीना है। 'दाना' नाम है जानने वाले का और 'बीना' नाम है देखने वाले का। वह तो मेरे सारे ख्यालों को देखता है, जानता है और टाइप भी उसी समय करता है। ऐसे तो नहीं वह करता कि भई, आज देखा है तो कल टाइप करेगा। नहीं, उसी समय टाइप कर देता है। यदि ऐसे (देर) करे तो कई कागज़ गुम हो जाएँ उसके तो, या दूसरे दिन कोई कागज़, वही (आदमी) उठा कर ले जाए, जिसका हो। मन ही अपने कागज़ को गुम कर दे। ना-ना, उसने तो तभी देखा और जाना और टाइप किया, बस! उसी समय, वह तो सब कुछ जानता है। हे मन! तुझे गलती है। तू सोचता है, कोई देखता नहीं, जानता नहीं, मैं अकेला ही करता हूँ। नहीं! वह तेरी पिछली तरफ, सच्चा परमेश्वर बैठा है, तेरा साक्षी है, तेरा दृष्टा है। 'दाना' जानने वाला और 'बीना' देखने वाला। वह सब कुछ जानता है, उसने टाइप मन के साथ कर देना है। तू अपने आप समझ, यदि तू समझ जाए फिर तू चोरी करे ही क्यों? वह गुरु

साहिब कहते, इसको पता नहीं था, इसको आत्मा का ज्ञान नहीं था, इसको असली ज्ञान नहीं था। ये सच्चे (परमेश्वर) को कहीं दूसरी जगह सातवें आकाश में या चौथे आकाश में मानता था। कई लोग सातवें आकाश में ईश्वर को मानते हैं। कई चौथे आकाश में, जैसे इसाई लोग मानते हैं, कई नौवें आकाश में भी, एक धर्म के लोग मानते हैं। अब वह (उस आकाश से) आएगा फिर आगे फैसला करेगा? फिर आगे टाइप करेगा? वह तो ज्ञाता (जानने वाला) है। वह तेरा जो ज्ञाता है, वह तो तेरे पास है। वह तो मन, तुझे और तेरे सारे कामों को जानता है और उसने टाइप कर देने हैं–

चोरु सुआलिउ चोरु सिआणा ।।

चोर को 'सुआलिउ', कहते, चोर बड़ा अच्छा है, और चोर भई, बड़ा समझदार है। समझदार तो होता है पर चोरी करने में समझदार होता है। सच्चे (परमेश्वर) के आगे तो नहीं समझदार। लोगों के लिए तो समझदार है। धोखे करने में समझदार है, चोरी करने में समझदार है। ये सुनार (गहना) बनाते-बनाते बीच में से सोना ले जाते हैं उसके (ग्राहक के) सामने। परमेश्वर के सामने तो नहीं समझदार! वह (सुनार) तो ये ख्याल करते हैं, भई इतना सोना ऐसे ले सकते हैं, वह (ख्याल) तो तभी टाइप हो गया जब (मन) इधर (चोरी की तरफ) गया। वह तो टाइप हो गया पर (लोग) कहते हैं, बड़ा समझदार है। लोग कहते, भई ये आदमी बड़ा समझदार है परंतु समझदार किस काम का है? पागल कहो, जिसने ऐसे काम करके, टाइप करवा लिये। उसमें मन फँस गया और भोगने भी पड़े। जब भोगेंगे तब पूछना, भई समझदार है तू? वह कहेगा, ना! मेरी अरदास करो, मैंने बड़े पाप किए हैं। मुझे माफी दिलवाओ! वह समझदारी कहाँ गई उसकी? या तो वे कर्म (टाइप) ना होते, उसे न भोगने पड़ते, तब तो समझदार था। समझदार वही (ईश्वर) है दुनिया में, ईश्वर के आगे किसकी समझदारी है? समझदारी तो हम ईश्वर से लेकर इस्तेमाल करते हैं। चेतन, आत्मा का ज्ञान लेकर तब बुद्धि काम करती है। जब तक आत्मा, चेतन सत्ता-स्फूर्ति ना दे, बुद्धि काम ही नहीं करती। इसलिए भाई! ये चोर की प्रशंसा करते हैं और चोर को कहते, ये बड़ा अक्लमंद है, ये (बात) गलत है। समझदार दुनिया में या ईश्वर के आगे? वह समझदारी तो जो इसने दिखाई है, परमेश्वर की दी हुई ताकत के साथ

दिखाई है और परमेश्वर इसको जानता है, वह उसी समय इसके संकल्पों को टाइप करता है। यदि ऐसा ना हो तो मन से किया हुआ पाप तो लगे ही न किसी को। वो नाव वाले कहते हैं, भाई! मन का पापी न कोई चढ़ना, नाव डूब जाएगी। तो मन का पाप बहुत बुरा हुआ या नहीं? इसलिए, वे (चोर को) समझदार कहते हैं और उसकी प्रशंसा भी करते हैं, भई, बड़ा समझदार है। आजकल कहते हैं बड़ा सियासती है। उसे कहो सियासती नहीं, झूठा बड़ा कहो, चालाक, झूठा कहो–

खोटे का मुलु एकु दुगाणा ।।

अब तो नहीं कोई कसर रही, वह खोटे कामों से खोटा हो गया या नहीं? वह तो चोरी करने से, यारी करने से, बेइमानी करने से, झूठ बोलने से खोटा हो गया और खोटे की कीमत क्या होती है? यदि रूपया खोटा हो, वह कहते हैं, भई ये दो पैसे लेने हैं तो ले लो, उतनी ही चाँदी तो होगी इस रूपए में, उससे ज्यादा (नहीं) होगी। समझ गए? दो पैसे, खोटे रूपए की कीमत होती है। उस आदमी की कीमत आधा आना, अधन्नी कह दो। वह तो सोलह आने उसकी कीमत थी परंतु वह तो दो पैसे का रह गया। बात भी करते हैं लोग, कहते हैं, वह आदमी कैसा है? वह तो दो पैसे का भी नहीं। वो ऐसे ही कहते हैं कि वह तो दो पैसे का भी नहीं है। इसलिए, उस खोटे की कीमत कभी पड़ी है सोलह आने? खोटे की कीमत दो पैसे कह दो या अधन्नी कह दो–

जे साथि रखीअै दीजै रलाइ ।।

यदि खोटे को साथ रखोगे तो आपके साथ भी वह मिल जाएगा। और आप भी मिल जाओगे। जिसके पास आप बैठोगे, उसके संस्कार आपके अंदर आ जाएँगे और आपके उसके अंदर चले जाएँगे पर पूर्ण ब्रह्मज्ञानी ऐसे नहीं होता। आप जाकर खोटे आदमी के पास बैठो, वही बातें आप में आ जाएँगी। उसका तो संग करना ही बुरा है, खोटे का तो–

नानक मनमुखा नालो तुटी भली जिन माइआ मोह पिआरु ।।

(पृ. ३१६)

गुरु साहिब कहते, जिन का माया के मोह में प्यार लगा हुआ है, उससे तो (दोस्ती) टूट जाना बेहतर है। उसके साथ यदि टूट जाए तो आगे के लिए

अच्छा हो जाए। अगर ज्यादा पास बैठेगा तो उस कुसंगति का असर आ जाएगा। सत्संग का असर भी आता है और कुसंग का असर भी आता है। सत्संग, सच के साथ जोड़ता है और कुसंग दुनिया के साथ जोड़ता है। इसलिए, उसके (खोटे आदमी के) साथ भी भाई ना रहो कभी-

जा परखीऐ खोटा होइ जाइ ।।

और जब फिर वह (खोटा आदमी) महापुरुषों की परख में गया, फिर वह खोटा नहीं गिना जाएगा? जब सुनार के पास खोटा रूपया जाएगा, वह खोटा फेंक नहीं देगा? वह कहेगा, दूसरा दो। किसी से सौदा लो और खोटा रूपया उसे पकड़ाओ, वह ले लेगा? कहेगा ना, वापिस ले जा। वह तो परखने से फिर खोटा हो जाना है। खोटे ने तो खोटा ही हो जाना है। जब आप परख कराते हो चाँदी के रूपयों की, वह (चाँदी) खड़का कर बता नहीं देता कि भई, खोटा है। वह परख में फिर खोटा हो जाएगा। वह धर्मराज के सामने जाकर खोटा हो जाएगा-

जैसा करे सु तैसा पावै ।।

कहते, ये जी! क्यों ऐसा हुआ? कहते, जैसा जीव करेगा, उसे वैसा ही प्राप्त करना (लेना) पड़ेगा। चोरी का फल चोरी मिलेगा, ठग्गी का फल ठग्गी मिलेगा, धोखे का फल इसके साथ धोखा होगा। इसलिए, जैसा करेगा-

जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ।। (पृ. १३४)

ये तो कर्मों का खेत है, शरीर। जैसा करेगा, वैसा ही इस को भोगेगा-

आपि बीजि आपे ही खावै ।।

ये तो गुरु साहिब ने अर्थ ही कर दिया। अपना बीजा हुआ ये आप खाएगा। अपना किया हुआ बुरा (काम) इसे खुद ही भोगना पड़ेगा। लोग तो ऐसे ही गलत कहते हैं। हाँ दो आदमियों का ग्रथों में लिखा है, भई, गुरु शिष्य को तीन बार कहे कि ये बात ठीक नहीं। पिता, पुत्र को तीन बार ज़रूर कहे, कि ये बात ठीक नहीं। पति, पत्नी को तीन बार ज़रूर माफी दे कि ये बात ठीक नहीं। उसका कहने का हक है दूसरों को तो हक ही नहीं कुछ कहने का। इसलिए, जैसा वह बोएगा, वैसा ही खाएगा। किसी को उसका कोई दुख नहीं है। कर्म अपने-अपने जो हैं, जो करेगा वही भरेगा, लोग अक्सर कहते हैं-

जे वडिआईआ आपे खाइ ।।

यदि वह अपनी अच्छाइयों को खुद ही खाए। अपनी अच्छाई खुद ही चाहे और खुद ही करे–

जेही सुरति तेहै राहि जाइ ।।

कहते, जैसी उसकी 'सुरति' (ध्यान) है, वैसे ही रास्ते जाएगा। यदि उसकी सुरत (ध्यान) शब्द के साथ जुड़ी है तो वह शब्दी परमेश्वर के पास चला जाएगा और यदि उसकी सुरत विकारों के साथ जुड़ी है तो विकार की फल होगा और यदि उसकी सुरत विषयों के साथ जुड़ी है तो विषय ही फल होगा रास्ता वैसा ही मिलेगा। क्यों? सुरत को प्रकाश परमेश्वर ने देना है और देना है आपके कर्मों के अनुसार, ये नियम है। उसने कम-ज्यादा नहीं करना। वह तो कर्म फल का दाता है। फल प्रदाता वह (ईश्वर) होता है, जब तक हमारे अंदर अहंकार हो, उन कर्मों के कारण, यदि हम कर्म करें अहंकार के साथ तो परमेश्वर फल प्रदाता हो जाएगा। बख्शने वाला नहीं हो सकता। बख्शने वाला तब होगा जब हम उसकी शरणागति पड़ जाएँगे, माफी तो शरण में गए हुए की होती है–

जिते शरण जैहै तितिओ राख लैहै ।।
बिना शरण ता की नही और ओटं ।।
लिखे जंत्र केते पड़े मंत्र कोटं ।।
बचेगा न कोई करे काल चोटं ।।
जिते शरण जैहै तितिओ राख लैहै ।। (दसम ग्रंथ)

जितने शरण आए चाहे कबीर आया, नामदेव आया, धन्ना आया, रविदास आया, जयदेव आया सभी रख लिये। शरणागत आया कोई वापिस नहीं गया, वह तो पहुँच गया, उस पर तो बख्शिश हो गई, वह तो बख्शा गया और जितनी देर इसके अंदर प्रच्छिन्न (झूठा, क्षणभर का) अहंकार है, उतनी देर इसे कर्मफल भोगना पड़ेगा। परमेश्वर कर्म के अनुसार ही फल प्रदाता होगा, बख्शने वाला नहीं होगा। माफी तो शरणागति को दी। तब तक (अहंकार होने तक) फल प्रदाता है परमेश्वर। वह अपना किया इसे आप भोगना पड़ेगा–

जे सउ कूड़ीआ कूड़ु कबाड़ु ।।

यदि सौ बार गलत करेगा-

कूड़ीआ कूड़ु कबाड़ु ॥

गलत काम का भी कबाड़ इसके अंदर भरा जाएगा। ये, आप किसी के साथ बात करो, जो झूठ बोलता हो, वह बीस बातें झूठी भी मिला देगा। क्यों? उसके अंदर झूठ ही भरा होता है। यदि उसे कहो- सच बोलो, वह बोलेगा? वह तो अफसरों के सामने सच नहीं बोलता जाकर और उसके अंदर कबाड़ भरा है, झूठ भरा है, उसने सच्चाई तो नहीं भरी। उसके मन में, अंतःकरण में, उसकी बुद्धि में कूड़ा-कबाड़ा भरा हुआ है। वह जो कर्म हैं, उसके अनुसार ही इसे रास्ता मिलना है, वह तो उधर (झूठ की तरफ) ही जाएगा, कुसंग करने वाला-

भावै सभ आखउ संसारु ॥

चाहे सारा संसार कहे, बड़ा लायक है पर उसके अंदर तो कूड़ा-कबाड़ा भरा हुआ है। आपके वोटों से तो नहीं वह सच हो जाएगा?-

सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ ॥
कूड़ की मलु उतरै तनु करै हछा धोइ ॥ (पृ. ४३८)

फिर यह तन-मन धो कर अच्छा कर लेगा-

सचु सभना होइ दारू

इस के अंतःकरण को सच ने साफ करना है। झूठ ने तो मैला करना है, झूठ तो कूड़-कबाड़ है। जैसे कहते हैं भई, ये कूड़ा-कबाड़ा भरा पड़ा है, दूर फेंको। ये तो झूठ का कबाड़ा भरा है इसने, चाहे सारे लोग उसे कहें, बड़ा अच्छा है। उसके अंदर तो कबाड़ है। इसलिए, गुरु साहिब कहते, ये बात है भाई! इसे रास्ता ही ऐसा मिलेगा-

तुधु भावै अधी परवाणु ॥

कहते, यदि तुझे अच्छे लग जाएँ, परमेश्वर तू खुश हो जाए तो आधी रोटी भी हमें मंजूर है। फिर तो आधी रोटी भी मंजूर है, यदि परमेश्वर को अच्छे लग जाएँ। और विदुर बेचारा खिचड़ी ही खाता था, समझ गए? और लालो कोधरा (एक तरह का सस्ता अनाज) ही खाता था और मलिक भागो तो रोज पूरियाँ ही खाता था, समझ गए? परंतु (लालो गुरु साहिब को) अच्छा लग गया था, यदि अच्छा ना लगा होता लालो, तो गुरु नानक देव उसके घर

क्यों जाते, क्यों बैठते? वह (मलिक भागो) बुलाने आया था? जब वह चले हैं ननकाना साहिब से। वहाँ गए हैं तो कहाँ बैठे हैं? लालो के घर जाकर बैठे हैं, उसकी कोधरे की रोटी खाई है। जब मलिक भागो ने निमंत्रण दिया, ब्रह्म-भोज किया, निमंत्रण देने गए। उन्होंने (श्री गुरु नानक देव जी) ने कहा, ना भई, हमें नहीं जाना। उसने पाँच आदमी भेजे कि भई, यदि वैसे (बुलाने पर) नहीं आते, तो ऐसे (जबरदस्ती उठाकर) ले आओ। मैं भी खत्री और वे भी खत्री। मैंने ब्रह्म-भोज किया है और वे शूद्र के घर कोधरा खाता है बैठकर, खत्री होने पर भी। जब उन्होंने (नौकरों ने) कहा- महाराज! हम लेने आएँ हैं, उसकी (मलिक भागो की) जबरदस्ती है। अगर आपने हमें बचाना है तो एक बार वहाँ चलो ताकि हमारी नौकरी बच जाए। गुरु साहिब ने कहा चलो। उन (नौकरों) पर दया करके गए थे। फिर कहा मलिक भागो ने 'आप उस शूद्र के कोधरे की रोटी खाते हो और मेरे ब्रह्म-भोज को ना करते हो।' वह (गुरु नानक देव जी) कहते, यह खाने लायक नहीं। कहता (मलिक भागो), इसकी क्या निशानी। कहते, जा लालो! वह पड़ा होगा (रोटी का टुकड़ा) वह ले आ। और (मलिक भागो) तू भी ले आ, वह सारा जो बनाया है। और उसके सामने (पदार्थों को निचोड़ के) दिखाया। कहते बताओ, ये 'खून' खाने लायक है? और ये (लालो का कोधरा) तो दूध है, समझ गए? ये बात है भाई! आधी मंजूर है यदि परमेश्वर को अच्छे लग जाएँ। तब तो बस जैसा मिला वैसा मंजूर है। पर परमेश्वर को अच्छे लग जाएँ। परमेश्वर हम पर खुश हो जाए। भाई लालो पर पूरा खुश नहीं था? बख्शा नहीं उसे? हाँ, आप बख्शा जाकर-

नानक जाणै जाणु सुजाणु ॥

कहते, वह परमेश्वर जानने वाला है, सूझवान है, सब कुछ जानने वाला है। जो सर्वज्ञ है, वह सब में, सब को जानने वाला है जिसे साधारण-असाधारण दोनों ज्ञान हैं। वह परमेश्वर सब जानता है। उसने किसी के कहने पर नहीं बख्शना, उसने तो सच को बख्शना है। वह तो न्याय करने वाला है, कृपालु है, दयालु है, पर न्यायकारी भी है साथ में। इसलिए, वह एक समाजी मत है, बाँगर (पंजाब, हरियाणा की सीमा के इलाके) में है खास तौर पर। वह कहते, जी! यदि परमेश्वर दयालु है तो न्यायकारी नहीं हो सकता। यदि

न्यायकारी है तो दयालु नहीं हो सकता। यदि दया करेगा तो फिर न्याय कैसे रह गया? उसने तो दया कर दी, छोड़ दिया। यदि न्याय करेगा तो दयालुता कैसे कर सकता है? उसके अपराध की (सजा) उसे देनी पड़ेगी। यह उनकी शंका है, रोहतक जिले की। मैंने कहा, ना भई! ऐसे नहीं। उन्होंने कहा, क्यों? मैंने कहा, आपको हम एक उदाहरण देते हैं फिर और देंगे, वह सुन लो। कहते, सुनाओ। मैंने कहा, गाय जो होती है, कहते हाँ! जब वह पहले दिन बछड़ा देती है, उसका बच्चा गोबर से भर जाता है (लथपथ हो जाता है), कैसा होता है? कहते हाँ जी, गिर जाता है, भर जाता है उसके गोबर से। मैंने कहा, उसे वह चाट कर साफ नहीं कर देती? कहते, जी! कर देती है। मैंने कहा, वह गोबर कहाँ गया जो उसने चाटा? कहते, जी! गाय के पेट में गया। मैंने कहा, आप घास को गोबर लगाकर रख दो, अगर गाय वह घास खा जाए तो मुझे पकड़ लेना। गाय का गोबर लगाकर घास को, उसके (गाय के) आगे रख दो, कभी नहीं खाएगी, भूखी मर जाएगी। परंतु उस दिन वह (बछड़े पर लगा) गोबर सारा चाट गई, उसके अंदर गया। वह भी तो गाय का गोबर था, क्यों? बस वह उस पर इतनी दयालु थी, उसे पता ही नहीं लगा, भई, वह गोबर मेरे अंदर गया कि नहीं। ऐसे ही जब परमेश्वर दया करता है, भक्तों को वह बख्श देता है फिर उसकी दया बिल्कुल सफल हो जाती है। जब गाय दयालु भी हो सकती है तो न्यायकारी भी हो सकती है। न्यायकारी होने पर वह अपना गोबर लगा हुआ घास नहीं खाती। ये न्याय है और दयालु ऐसे कि भई, बछड़े पर लगा सारा गोबर चाटने पर, उसके अंदर चला जाएगा, उसे पता ही नहीं। इसी तरह परमेश्वर भक्तों पर दयालु भी है और न्यायकारी भी है, ये एक साथ है । कहते हाँ! बात तो ठीक है। भई, इसलिए परमेश्वर सब कुछ जानने वाला है, सब जानता है और फिर वह दयालु भी है और न्यायकारी भी है। वह ऐसा परमेश्वर है, वह खुद ही सब कुछ सही कर देता है। शरण में आए हुए पर पूरा दयालु है और अहंकार वालों पर वह पूरा न्यायकारी है-

जा कउ अपुनी करै बखसीस ।। ता का लेखा ज गनै जगदीस ।।

(पृ. २७७)

वह सारा लेखा अब कहाँ गया? जब वह शरण आया, उस पर बख्शीश

कर दी। उसके सारे पाप चले गए। सज्जन (ठग) का कोई पाप रहा? सधने (कसाई) का कोई पाप रहा? वैश्या (गनका) का कोई पाप रहा? अजामल (पापी) का कोई पाप रहा? बताओ कहाँ गए सारे पाप? वह तो बख्श दिए, उनके पाप कौन भोगेगा?

जा कउ अपुनी करै बखसीस ।। ता का लेखा न गनै जगदीस ।।

(पृ. २७७)

उसका (शरण में आए हुए का) लेखा समाप्त हो जाता है। जितनी देर आप अपनी बुद्धि का, अपने मन का, अपनी पढ़ाई का, अपनी जातियों-मजहबों का अभिमान रखोगे, तब तक ईश्वर भी न्यायकारी है, वह (कर्मों का) फल देने वाला है। आपका कर्म आपको ही भोगना पड़ेगा। ये बात है, वह सब कुछ जानने वाला है। वह लिखा है बुल्ले शाह ने 'ज्ञान दीप' में, वह जो जानता है, उसे तू अपना रूप समझ। वहाँ उसने लिखा है, वह बुद्धि जो जानती है सब चीजों को और जो उसको जानता है बुद्धि को, उसे तू अपना स्वरूप समझ। वह चेतन है, तेरा अपना आप है, तेरा आत्मा है। वह है सब जानने वाला।

पढ़ दे पिछली पंक्ति-

तुधु भावै अधी परवाणु ।।
नानक जाणै जाणु सुजाणु ।।

उसे नहीं पता कि इसे दर्द है? या इसे कुछ चाहिए। उसने रास्ता बता देना है।

बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु !

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

10

सोरठि महला ५ ।।
अबिनासी जीअन को दाता सिमरत सब मलु खोई ।।
गुण निधान भगतन कउ बरतनि बिरला पावै कोई ।।१।।
मेरे मन जपि गुर गोपाल प्रभु सोई ।।
जा की सरणि पइआं सुखु पाईऐ बाहुड़ि दूखु न होई ।।१।।रहाउ।।
वडभागी साधसंगु परापति तिन भेटत दुरमति खोई ।।
तिन की धूरि नानकु दासु बाछै जिन हरि नामु रिदै परोई ।।२।।५।।३३।।

(पृ. ६१७)

सारी संगत किरपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु ! सतिनामु श्री वाहिगुरु !!

सोरठि महला ५ ।।

अबिनासी जीअन को दाता

नाश से रहित जो परमेश्वर है, अविनाशी, वह भूल न जाए। परमेश्वर सभी जीवों की उत्पत्ति (पैदा करना), पालना, लय (समाप्त) करता है। वह सारे, चार श्रेणियों (अंडज, जेरज, उतभुज, सेतज) के जीवों का दाता है, सभी का राखा है–

राखा एकु हमारा सुआमी ।। सगल घटा का अंतरजामी ।।

(पृ. ११३६)

जो सब के हृदयों में बैठा है परमेश्वर, वह सभी जीवों का दाता है–

सिमरत सब मलु खोई ।।

परंतु जीव के लिए एक ही कर्त्तव्य है, उसका (परमेश्वर का) सिमरन नहीं छोड़ना कभी, आपके अंतःकरण की सारी मैल दूर हो जाएगी, धुल जाएगी। अंतःकरण साफ हो जाएगा, साफ शीशे में मुँह साफ दिखेगा, जब साफ शीशे के सामने आ जाता है, इस को मुँह ज्यों का त्यों साफ दिखता

है। ये जो मन है वृत्ति, जब ये मन शुद्ध हो गया तो इसे अपने स्वरूप की पहचान हो जाती है। फिर बस एक उपदेश मात्र ही होता है। इसे अपने स्वरूप का ज्ञान हो जाता है। इसका शुद्ध अंतःकरण, यानि मन, उस शीशे की तरह अभिव्यंजक है। अभिव्यंजक उसे कहते हैं जो (किसी वस्तु को) दिखाए, अभिव्यंग उसे कहते हैं जो (वस्तु) दिखाई दे। जब शीशा सामने आता है, मुख ज्यों का त्यों दिखाई देता है। इसलिए भाई, आपने सिमरन नहीं छोड़ना-

सिमरि सिमरि नामु बारं बार ।। नानक जीअ का इहै अधार ।।

(पृ. २६५)

हे जीव! तूने (परमेश्वर का) सिमरन नहीं कभी छोड़ना, तेरी सारी मैल धुल जाएगी। ये सब से ऊँची दवाई है-

सरब रोग का अउखदु नामु ।। कलिआण रूप मंगल गुण गाम ।।

(पृ. २७४)

सारी बीमारियों की एक दवाई है 'नामु'। जितनी भी बीमारियाँ हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और तृष्णा ये (नाम) सब को काट देता है। जब इसका सिमरन पूरा हो जाता है, पूरी एकाग्रता में, मन के आगे रह जाता है एक 'परमेश्वर'। बाकी सब साफ हो जाता है पर इसकी क्या दवाई है? 'सिमरन'-

गुण निधान भगतन कउ बरतनि

गुणों का खजाना जो परमेश्वर (है), भक्तों की उस (परमेश्वर) के साथ ही सारी 'बरतनि' (लेन-देन) होती है। जैसे आपका लेन-देन होता है, आपके जो नज़दीकी रिश्तेदार हैं, वह शादी में आते हैं, वह शादी में आपकी मदद करते हैं। भक्तों की एक ही 'बरतनि' है, और कोई नहीं। क्या?

गुण निधान भगतन कउ बरतनि

गुणों का खजाना जो है परमेश्वर, भक्तों का लेन-देन उसके साथ ही होता है। भक्तों के काम वही करता है। भक्त और किसी के पास कभी फरमाइश (अरदास) नहीं करते। नरसी (भक्त) ने एक ही बात कही 'भात साँवलिया (श्री कृष्ण) भरेगा'। उस समय साँवलिए ने उसकी भात भरी। जंगल में गया (नामदेव) घास-फूस लेने झुग्गी के लिए, झोंपड़ी के लिए। जब

उसने उखाड़े वे (तिनके), सुबह की ओस पड़ी थी (उनपर), ऐसे उठा कर देखे, कहता, भई जब मुझे दुख लगता है, दुख तो इन को भी लगता है। कई लोग तो बहुत ज्यादा वहम (भ्रम) करने लग गए परंतु फिर उसकी झोंपड़ी किसने बनाई? परमेश्वर ने। भक्तों का सारा लेन-देन परमेश्वर के साथ ही होता है-

समै संत पर होत सहाई । ता ते संखया संत सुनाई । (दसम ग्रंथ)

दसवें पातशाह (श्री गुरु गोबिंद सिंह) जी ने लिखा है, उन्होंने कहा-

समै संत पर होत सहाई ।

कहते, जब भी कोई संकट आया, संत पर, उसी वक्त परमेश्वर ने सहायता की। इसलिए भक्तों का लेन-देन गुणों के खजाने परमेश्वर के साथ है, उनका और किसी के साथ लेन-देन नहीं। यदि संसार के साथ लेन-देन है, संसार की इच्छा है तो भक्त ही नहीं। उसे भक्त कौन कहेगा फिर? भक्त (नरसी) की भात भरी साँवले (श्री कृष्ण) ने या दुनिया के लोगों ने? वह (लोग) तो मज़ाक करते थे। इसलिए भाई, संतों का और भक्तों का लेन-देन परमेश्वर के साथ होता है, यही इनके काम चलाएगा। भक्त किसी दूसरे पर आस नहीं रखते-

बिरला पावै कोई ।।

इस बात को कोई बिरला ही पाएगा, जिसका परमेश्वर पर पूरा भरोसा हो। ऐसा तो 'नरसी' ही था जिसकी भात भरी। दुनिया की करोड़ों शादियाँ हुई हैं, कभी किसी की भात परमेश्वर ने भरी है? और नामदेव की झोंपड़ी बनाई, दूसरे सभी तो अपने आप ही बनाते फिरते हैं। ऐसा भरोसा तो परमेश्वर पर, भाई! कोई बिरला ही प्राप्त करता है। जो इस जगह (पूर्ण भरोसे) पर टिका, ऐसे यकीन वाला हो कि कर्ता (करने वाला), हर्ता (लय करने वाला) परमेश्वर ही है। और-

राखा एकु हमारा सुआमी ।। सगल घटा का अंतरजामी ।।

(पृ. ११३६)

ऐसे (यकीन वाला) तो कोई बिरला है। एक भक्त थी द्रोपदी, चारों (धृतराष्ट्र, दुर्योधन, शकुनि, दुष्शासन) की दुखी की हुई थी परंतु भक्त थी और दुखी हो चुकी थी। उसने अरदास दुखी होकर की। भीष्म को याद किया,

द्रोणाचार्य को याद किया परंतु काम तो कोई ना आए। जब द्वारकावासी कहने लगी फिर कौन-सा काम चल गया। जब उसने दुखी होकर पूरा कहा, 'हे घट-घट के अंतर्यामी! मेरी रक्षा करो'। उसे सामने कृष्ण दिखा, भगवान सामने खड़ा दिखा। क्यों? उसका इष्ट यही था। परमेश्वर को जिस इष्ट में आप देखोगे, उसी रूप में ही आपको दर्शन देगा, ये नियम है। इसलिए, वह आता है ना रामायण में-

जिन्ह के रही भावना जैसी । प्रभु मूरत तिन्ह देखी तैसी ।।

(रामचरितमानस - बाल कांड)

तुलसी दास कहता, भावना का फल है। रावण आदि उसे (श्री राम जी को) दुश्मन समझते थे, लड़कियाँ कुछ और रूप समझती थी, सारी दुनिया में वह जो भक्त थे उसे भगवान रूप में ही देखते थे। उनको (भक्तों को) उस समय भगवान दिखा और उस (रावण) को दुश्मन दिखा और लड़कियों को कुछ और रूप दिखा, भई, ये जनक का मेहमान है। तुलसीदास ने यहाँ फैसला कर दिया-

जिन्ह के रही भावना जैसी । प्रभु मूरत तिन्ह देखी तैसी ।।

(रामचरितमानस - बाल कांड)

ये भावना का फल है। जिस पुरुष की भावना शुद्ध होगी, परमेश्वर को उसी रूप में देखेगा। भक्तों को परमेश्वर उसी रूप में ही दिखेगा-

मेरे मन जपि गुर गोपाल प्रभु सोई ।।

हे 'मेरे मन'! तू ये काम ज़रूर कर। फिर पढ़-

मेरे मन जपि गुर गोपाल प्रभु सोई ।।

उस गुरु रूप परमेश्वर को 'जपि'। 'गोपाल' सारी दुनिया के मालिक का नाम है। वह 'सोई' परंतु है वही। गोपाल भी वही है और गुरु भी वही है, इस रूप से तू परमेश्वर (के नाम का) जाप करना-

गुर परमेसरु एको जाणु ।। जो तिसु भावै सो परवाणु ।।

(पृ. ८६४)

और गुरु तथा परमेश्वर दो ना कभी बना देना। तू इस रूप से जपना कि है 'सोई'-

जा की सरणि पइआं सुखु पाईऐ

जिस की 'शरण' में पड़ने से आत्म-सुख मिल जाए। कौडे राक्षस को आत्म-सुख मिला। जब उसने देखा, उसके गुरु ने दिया था एक शीशा, इतिहास में लिखा है। उसे, (उसके) गुरु ने एक शीशा दिया था। उसे श्राप हो गया था (अपने) गुरु का। उसने कहा (श्राप मिलने के बाद) जी, आगे के लिए भी कुछ बता दो। उन्होंने कहा, ये शीशा ले ले, जिस (आदमी) में मनुष्य का मुँह तुझे दिखे, उसके चरणों में झुक जाना, बस किसी और बात की जरूरत नहीं। जिसका (मुँह) दिखता था, कुछ और दिखता था। जब उसने गुरु नानक के सामने किया शीशा तो उसे मुँह दिखा, मनुष्य का। वह कहता (कौडा राक्षस) बस! ठीक है, यही हैं। वह एकदम चरणों में गिर पड़ा जब ठीक पता चल गया, चरणों में गिर कर रोने लग गया, बस! पल में ही 'नानक नदरी नदरि निहाल'। ये काम, मेरे मन! तू करते रहना, परमेश्वर को देखते रहना, सभी में, वही परमेश्वर है मालिक। ये बात ना तू छोड़ना-

बाहुड़ि दूखु न होई ।।१।।रहाउ।।

फिर तुझे कभी दुख नहीं होगा जन्म-मरण का। फिर तुझे कभी कोई दुख नहीं होगा यदि तेरी भावना इस ओर की है। सब में परमेश्वर तुझे दिख गया। जिसकी भी सेवा करे, परमेश्वर समझ के करना और जो तेरा हक है, ले लेना, रोटी तो खानी है पर सेवा परमेश्वर समझ कर करना। जब परमेश्वर समझ कर करेगा, वह (परमेश्वर) बख्श देगा तुझे, वह खुश हो जाएगा। दुश्मन समझ कर सेवा न करना। भाई कन्हैया (श्री गुरु गोबिंद सिंह साहिब जी के एक सिक्ख सेवक) की तरह, सब की सेवा करना परंतु करना परमेश्वर समझ कर, उसकी तरह-

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ।।
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ।। (पृ. १४२७)
ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति ।
भ्रामयन् सर्व भूतानि यंत्रा रुढानि मायया । (गीता १८/६१)

सभी के हृदयों में परमेश्वर बैठा है। गीता कहती है, सभी के हृदयों में परमेश्वर बैठा है और गुरु ग्रन्थ साहिब कहते हैं, सब के हृदय में परमेश्वर बैठा है, तूने उसको देखना है। जब सब का वेद, शास्त्र, गीता और गुरु ग्रन्थ साहिब का कथन ऐसे है, तूने उसके साथ चलना है, तूने दुनिया के साथ नहीं चलना-

वडभागी साधसंगु परापति

किसी बड़े भाग्य वाले को ऐसे साधुओं का 'संग' प्राप्त होता है। गुरु अर्जुन देव जी कहते, मेरे बड़े भाग्य थे, तभी मुझे गुरु रामदास 'साधु' का 'संग' मिला–

तिन भेटत दुरमति खोई ।।

जब उन का दर्शन किया तो, तभी खोटी बुद्धि खत्म हो गई–

तिन की धूरि नानकु दासु बाछै

मैं उनके चरणों की धूल, गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते, माँगता हूँ। उन गुरु रामदास संत की चरण–धूल मैं माँगता हूँ–

जिन हरि नामु रिदै परोई ।।

जिनके हृदय में, 'हरि नामु' पिरोया गया, जैसे सूई में धागा पिरोया होता है–

सुरति सबदि भव सागरु तरीऔ नानक नामु वखाणे ।। (पृ. ६३८)

जिसकी 'सुरति' (ध्यान) 'सबदि' (शब्द) में पिरोई गई और शब्द तथा सुरत एक हो गए तो उनकी चरण–धूल मैं माँगता हूँ, जिनकी वृत्ति (सोच) शब्द के साथ जुड़ गई और शब्द में परमेश्वर बैठा है। 'नाम' में है या नहीं?

नावै अंदरि हउ वसां नाउ वसै मनि आइ ।। (पृ. ५५)

वह (परमेश्वर) तो नाम में बैठा है। जब नाम के साथ आपकी वृत्ति जुड़ गई तो नामी (परमेश्वर) ही दिखेगा। मैं, उनकी चरण–धूल माँगता हूँ (जिनकी सुरत शब्द में पिरोई गई)–

तिन की धूरि नानकु दासु बाछै जिन हरि नामु रिदै परोई ।।

बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु !

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

11

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।
धनासरी महला ६ ।।
काहे रे बन खोजन जाई ।।
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ।।१।।रहाउ।।
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ।।
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई ।।१।।
बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई ।।
जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई ।।२।।१।

(पृ. ६८४)

सारी संगत किरपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु ! सतिनामु श्री वाहिगुरु !!

तैडी बंदसि मै कोइ न डिठा तू नानक मनि भाणा ।।
घोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले जै मिलि कंतु पछाणा ।।

(पृ. ६६४)

यह महावाक अकाल पुरुष की तरफ से, गुरु नौवें पातशाह (श्री गुरु तेग बहादुर) द्वारा आया है। लगभग ये प्रसिद्ध ही है, अनेकों के मन में होता है। अर्थ तो इसके (सरल हैं) सभी जानते हैं परंतु किसी को यहाँ अब बताने की ज़रूरत नहीं है। इन, गुरु साहिब (नौवें पातशाह) ने धर्म के लिये शीश देकर, धर्म की रक्षा की है, ये सभी को पता है। ये बात कहना आसान है पर करनी बड़ी मुश्किल है। इसलिए, कश्मीर के पंडितों के साथ (गुरु जी का) कोई रिश्ता नहीं था, कोई जाति संबंध नहीं था, कोई मतलब नहीं था। वे (पंडित) आकर शरण पड़े, भई, हमारे धर्म की रक्षा करो। उनको (गुरु जी ने) ये बात कह दी भई, ये बात जा कर कह दो बादशाह को, उनको (गुरु जी को) आप पहले अपने धर्म में ले आओ तो हम सभी आ जाएँगे, जाओ!

ये बात, उन्होंने कह दी–

तिलक जंझू राखा प्रभ ताका ।।
कीनो बडो कलू महि साका ।।
साधनि हेति इती जिनि करी ।।
सीसु दीआ परु सी न उचरी ।। (दसम ग्रंथ)

वह गुरु साहिब, गुरु ग्रंथ साहिब में जहाँ धर्म के बारे में लिखा है–

सरब धरम महि स्रेसट धरमु ।।
हरि को नामु जपि निरमल करमु ।। (पृ. २६६)

दो बातें ही लिखी हैं, निष्काम सेवा, निष्काम कर्म और सिमरन–

सेवा करत होइ निहकामी ।।
तिस कउ होत परापति सुआमी ।। (पृ. २८६)
खोजत खोजत ततु बीचारिओ दास गोविंद पराइण ।।
अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण ।।

(पृ. ७१४)

एक परमेश्वर का सिमरन ही जीव को पार लगाने वाला है और निष्काम सेवा अंतःकरण शुद्ध करने वाली वस्तु है। जिस के पास ये दो बातें हैं, वह मनुष्य है, वह देवता है, वह बड़ा लायक है। जिसके पास नहीं है, उसका सारा ही गलत व्यवहार है, वह जो कुछ करता है–

भई परापति मानुख देहुरीआ ।।
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ।।
अवरि काज तेरै कितै न काम ।।
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ।। (पृ. १२)

एक नाम का ही सिमरन परमेश्वर से मिलाने वाला है, आप को पता है। इसलिए, लावों (शादी के फेरों के समय पढ़ी जाने वाली एक वाणी) में बताया है जहाँ लिव लगती है, वहाँ अविनाशी पद (परमेश्वर) का प्राप्त होना (मिलना) भी लिखा है। इसलिए, इंसान को चाहिए परमेश्वर का सिमरन करना और निष्काम सेवा करनी। ये (सेवा, सिमरन का) धर्म 'परम धर्म' को मिलाने वाला है। अब बोल भाई–

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

एक जो परमेश्वर है, वह गुरु की कृपा से प्राप्त होता है। आज तक गुरु की कृपा के बिना, पहले किसी को मिला नहीं, अब भी नहीं मिलता और आगे भी नहीं मिलेगा–

गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु ।।
हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु ।।

(पृ. २६३)

जब परमेश्वर की दया, कृपा हुई तो 'संत भेटिआ' (संत मिले) गुरु रामदास महाराज। गुरु अर्जुन देव जी कहते कि मेरे अंतःकरण में ज्ञान का प्रकाश हो गया। अंतःकरण में तो वह पहले ही बैठा था पर पहले प्रकट नहीं था, साक्षात प्रकट नहीं था। उसके ना प्रकट होने से अज्ञान का ही पर्दा था। इसलिए, वह गुरु की कृपा जब हुई–

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा ।। नामु प्रभू का लागा मीठा ।।

(पृ. २६३)

जब 'नाम' के साथ मन जुड़ गया तो वह अपने अन्दर परमेश्वर देखा जो सभी के अन्दर है। सभी की बुद्धि का साक्षी है, सभी का प्रतिबोध (जानने वाला) है–

प्रतिबोध विदितं मतम् अमृत त्वम् हि विंदते ।
आत्मना विंदते वीर्यं विद्यया विंदते अमृतम् ।

(केन उपनिषद खंड २ मंत्र ४)

ब्रह्माकार वृत्ति से 'अज्ञान' अंधकार की समाप्ति हो जाती है पर आत्मा तो इसका 'अमर' अपना आप पहले ही है। वह, ना पहले, और ना अब अमर होना है, वह तो सदा 'अमर-स्वरूप' है। वह गुरु की कृपा से मिलना है, गुरु परमेश्वर की दया से मिलना है। जब परमेश्वर की दया होगी तो गुरु प्राप्त होता है। जिसको गुरु प्राप्त हो जाए, उसका रहन-सहन बदल जाता है। बात तो सच ये है–

बिसरि गई सब ताति पराई ।।
जब ते साधसंगति मोहि पाई ।।१।।रहाउ।।
ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ।।१।।
जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ एह सुमति साधू ते पाई ।।२।।

सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै पेखि पेखि नानक बिगसाई ।।३।।

(पृ. १२६६)

उसे सभी के अंतःकरण में 'इक ओंकार' (੧ੴ) दिखाई दे जाता है–

एकम एकंकारु निराला ।। अमरु अजोनी जाति न जाला ।।

अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ ।। खोजत खोजत घटि घटि देखिआ ।।

(पृ. ८३८)

वह 'घट–घट मै हरि जू' है, वह परमेश्वर है पर वह गुरु की दया से प्राप्त होता है, ये मर्यादा है। 'गुर प्रसादि' जब हो जाता है, परमेश्वर प्राप्त हो जाता है। परमेश्वर की कृपा से गुरु प्राप्त होता है, गुरु की कृपा से परमेश्वर प्राप्त होता है परंतु 'गुरु' ब्रहमज्ञानी चाहिए। चलिए–

धनासरी महला ६ ।।

नौवें पातशाह श्री गुरु तेग बहादुर जी महाराज (कहते हैं)–

काहे रे बन खोजन जाई ।।

भाई! क्यों जंगल खोजता है? 'बन' एक जगह 'संकटबन' संसार को भी लिखा है। और बाहर जो जंगल है। क्यों जंगलों को खोजता है? क्यों संसार के विषयों को खोजता फिरता है?

सरब निवासी सदा अलेपा

वह सारे 'सर्व निवासी' (हर जगह बसने वाला) है और सदा निर्लेप (विषयों में न फँसने वाला) है–

तोही संगि समाई ।।रहाउ।।

तेरी वृत्ति का साक्षी है–

एक समय ही भान ह्वै, साक्षी अरु आभास ।

दूजो चेतन को विषै, साक्षी स्वयं प्रकास ।।

(निश्चलदास विचार सागर ४/११६)

निश्चलदास जी ने लिखा है, आभास सहित वृत्ति, परता प्रकाश है पर चेतन स्वयं (अपने आप) प्रकाश है। वह अपना 'आपा' है, वह निर्लेप है–

असंगो ह्यम् पुरुष । (बृहदारण्यक उपनिषद अः४, ब्राः३ मंत्र १५)

असंगो न हि सज्यते । (बृहदारण्यक उपनिषद अः४, ब्राः२ मंत्र ४)

वह (चेतन) कभी आज तक संग वाला नहीं हुआ, निर्विकार (बिना विकारों के) है, निर्लेप है। वह कभी विकारी नहीं होता। वह निर्विकार है, शुद्ध है, वह परिपूर्ण है, वह सत, चित्त, आनंद स्वरूप है। एक ग्रंथकार ने बड़ा लेख लिखा है। उसने कहा- सत, चित्त, आंनद जान लेना कोई बड़ी बात नहीं। सत, चित्त, आंनद अपने-आप को दृढ़-निश्चय कर लेना ही ज्ञान है। वह सारे व्यापक है, वह सर्व निवासी है, निर्लेप है, तेरे अंतःकरण में, तेरी बुद्धि की वृत्ति (ख्यालों) का साक्षी है, दृष्टा है-

दाना बीना साई मैडा नानक सार न जाणा तेरी ।। (पृ. ५२०)

वह तेरी वृत्ति को देखने वाला और जानने वाला परमेश्वर है-

पुहप मधि जिउ बासु बसतु है

ये उदाहरण दिए हैं दो (२)। पंडित रामसिंह जी इनको बड़ा समझाया करते थे। उतना वक्त तो अब लगा नहीं सकता। वे पूछते, दो उदाहरण क्यों दिए हैं? ये हमें भी पूछा, ये बातें पूछा करते थे (ऋषिकेश) झाड़ी में। दो उदाहरण क्यों देते हैं? एक तो निर्लेपता में दिया और दूसरा व्यापकता में दिया। वह व्यापक भी है और निर्लेप भी है। ये दो उदाहरण इकटठे, इसलिए दिए। अब दोनों बोल दे भाई-

पुहप मधि जिउ बासु बसतु है

सारे फूल में, जैसे खुश्बू रहती है। कोई जगह नहीं फूल की जहाँ खुश्बू ना हो।ऐसे परमेश्वर सारे व्यापक, परिपूर्ण है। जैसे सारे गहनों में सोना व्यापक है, सारे मिट्टी के बर्तनों में मिट्टी व्यापक है, सारे लोहे के हथियारों में लोहा व्यापक है। कारण 'सति' होता है, कार्य 'कल्पित' होता है, इसलिए-

आपि सति कीआ सभु सति ।। तिसु प्रभ ते सगली उतपति ।।

(पृ. २९४)

यह सारे परमेश्वर है, परंतु वह देखने वाली आँखें गुरु से मिलती हैं-

मुकर माहि जैसे छाई ।।

'मुकर' नाम है शीशे का। शीशे में आप देखो, आपकी छाया दिखती है परंतु उसे (शीशे को) ऐसे (उल्टा) कर दो, वह शीशा पकड़ कर नहीं उस छाया को ले जाता? उसने तो आपके मुंह के दाग (निशान) दिखा देने हैं। शास्त्र ने भी जो आपके अवगुण हैं, अंदर कमियाँ हैं, झूठ बोलना, बेईमानी

करनी, धोखा करना, वह सारे आपको दिखा देने हैं, वह आपको खुद दिखेंगे। वह देखने वाला दृष्टा आपके अंदर है–

मूई सुरति बादु अहंकारु ।। ओहु न मूआ जो देखणहारु ।।

(पृ. १५२)

वह देखने वाला जीवित वस्तु है, चेतन है। आपको, मुझे, सभी को पता है, परंतु

जानि बूझ कै बावरे तै काजु बिगारिओ ।।
पाप करत सुकचिओ नही नह गरबु निवारिओ ।। (पृ. ७२७)

तूने ये दो चीज़ें ना छोड़ीं। पाखंड न छोड़ा, लोभ ना छोड़ा, क्रोध न छोड़ा, ये विकार ना छोड़े; कुछ फायदा ना हुआ। अंतःकरण शुद्ध ना हुआ, निर्लेप ना हुआ और परमेश्वर तो पहले ही शुद्ध स्वरूप है। अंतःकरण ही शुद्ध करना है, शीशा ही साफ करना है–

घट ही खोजहु भाई ।।

हे भाई! अपने हृदय में ही खोजो। बाहर ना कभी खोजो। वह आपके हृदय का, आपकी बुद्धि का, आपके मन का साक्षी है। वह सब का साक्षी है–

क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्व क्षेत्रेषु भारत ।
क्षेत्र क्षेत्रज्ञ योर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम् । (गीता १३/२)

वह सब के हृदयों में व्यापक है, भगवान कृष्ण चंद्र कहते, परंतु उन्होंने शरीर को नहीं कहा, शरीर का खंडन वह सातवें अध्याय में कर आए हैं–

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः ।
परं भावमजानन्तो मम अव्ययम् अनुत्तमम् । (गीता ७/२४)

वह अज्ञानी है जो इस 'शरीर' को आत्मा मानता है। ना! मैं क्षेत्रज्ञ हूँ, सब में परिपूर्ण, घट-घट (हर वस्तु) में व्यापक हूँ। वह सब में हरि का रूप परमेश्वर व्यापक है, निरंतर (है), परंतु हृदय में खोजो। पहले आपने अपनी बुद्धि को खुद ही देखना है, अपने मन को खुद ही देखना है। जो मन-बुद्धि में वस्तु है, उसको भी आपने खुद ही देखना है। वह पारख है–

नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ ।। (पृ. १४४)

वह पारख है जो अंदर खोटे-खरे संकल्पों को जानने वाला है, उसे पारख कहते हैं-

नानक परखे आप कउ ता पारखु जाणु ।।
रोगु दारू दोवै बुझै ता वैदु सुजाणु ।। (पृ. १४८)

पहले 'पारख' को जानो फिर अपने आप को परखो, भई हमारा अपना-आप जड़ है या चेतन है? परता प्रकाश है या स्वयं प्रकाश है? उस को, सत्य स्वरूप को (पहचानो), सही अपने-आप को करो-

बाहरि भीतरि एको जाणहु

जो आपके हृदय का साक्षी है, वही सभी के हृदयों का (भी साक्षी है), वही बाहर भी है-

अंतरि बसे बाहरि भी ओही ।।
नानक दरसनु देखि सभ मोही ।। (पृ. २६४)

वह अंदर भी है और बाहर भी परिपूर्ण है। कोई जगह नहीं है जहाँ इसका अपना-आप परमेश्वर नहीं है, पर पक्का विश्वास होना बड़ा मुश्किल है-

इहु गुर गिआनु बताई ।।

ये हमारे गुरु ने 'ज्ञान' बताया है। गुरु नानक देव हमारे पहले गुरु हुए हैं, ये हमें 'ज्ञान' बताया है, इसका नाम 'ज्ञान' है पर बीच में एक बात और भी है। पढ़ दे-

बाहरि भीतरि एको जाणहु इहु गुर गिआनु बताई ।।
जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई ।।

पर भ्रम का पर्दा अपना आप पहचाने बिना नहीं मिटता। जब तक यह अपने आप को साक्षात्कार (पहचान) नहीं लेता, सही नहीं कर लेता, तब तक इसका भ्रम नहीं कभी भी जाता। इसका भ्रम पहले तो माया आदि में फँसा रहता है। बड़ा, एक बड़ा (भ्रम) 'मान' और यदि बहुत ही ऊँचा चला जाए तो-

मान मुनी मुनिवर गले मानु सभै कउ खाइ ।। (पृ. १३७२)

इस (जीव) को खाने वाले बहुत हैं। वह भ्रम जो है, इसे अपने स्वरूप का साक्षात्कार नहीं होने देता। 'आपा' पहचानने के बाद, भ्रम नहीं रहता।

'आपा' अपना-आप है, आत्मा है। आत्मा कहो, अपना-आप कहो-

जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई ।।
एको अंम्रित बिरखु है फलु अंम्रितु होई ।। (पृ. ४२१)

फिर यह अमर हो जाएगा, अपना-आप पहचान कर-

जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई ।।

बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु !

१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि ।।

12

सूही महला ४ ।।
कीता करणा सरब रजाई किछु कीचै जे करि सकीऐ ।।
आपणा कीता किछु न होवै जिउ हरि भावै तिउ रखीऐ ।।१।।
मेरे हरि जीउ सभु को तेरै वसि ।।
असा जोरु नाही जे किछु करि हम साकह जिउ भावै तिवै बखसि ।।१।। रहाउ ।।
सभु जीउ पिंडु दीआ तुधु आपे तुधु आपे कारै लाइआ ।।
जेहा तूं हुकमु करहि तेहे को करम कमावै जेहा तुधु धुरि लिखि पाइआ ।।२।।
पंच ततु करि तुधु स्रिसटि सभ साजी कोई छेवा करिउ जे किछु कीता होवै ।।
इकना सतिगुरु मेलि तूं बुझावहि इकि मनमुखि करहि सि रोवै ।।३।।
हरि की वडिआई हउ आखि न साका हउ मूरखु मुगधु नीचाणु ।।
जन नानक कउ हरि बखसि लै मेरे सुआमी सरणागति पइआ अजाणु ।।४।।

(पृ. ७३६)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु ! सतिनामु श्री वाहिगुरु !!

दुनिया में, आखिर में शरणागति पर आकर, ग्रंथकारों ने ग्रंथों की समाप्ति की। कथा (व्याख्यान) की समाप्ति भी कई पुरुष, शरणागति पर जाकर करते हैं-

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा ।।

(पृ. ५४४)

ये नियम है परमेश्वर का, जो उसकी शरण आएगा, उसे वह कंठ लगा लेगा। शरण का अर्थ मधुसूदन स्वामी ने गीता के अपने टीके (व्याख्या) में

लिखा है, मैं तेरा हूँ बस। अपना तन- मन-धन तीनों चीजें, सब अर्पण कर दिए, मैं तेरा हूँ, कोई बाकी वस्तु ना रही। जब मैं ही तेरा हो गया तो सब कुछ तेरा हो गया और तू मेरा है, चल, उसके पास भी कोई बाकी ना रही और 'तू और मैं' एक हैं। यहाँ शरणागति की उसने बड़ी फिलॉस्फी के साथ समाप्ति की। शरणागति के बाद बख्शिश होती है। जो शरण आया-

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा ।।

(पृ. ५४४)

जब जीव परमेश्वर की शरण जाता है, उसके पाप सारे, अपने आप मिट जाते हैं-

सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।

अहम् त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ।। (गीता १८/६६)

(अर्जुन!) तू मत सोच करना। भगवान कृष्ण कहते, शरणागति आ जा, मैं तेरे पापों का जिम्मेवार हूँ। फिर मैं हर तरह से जिम्मेवार हूँ। इसलिए, एक छोटा-सा दृष्टांत है। संधावालीए (महाराजा रणजीत सिंह के समय की एक मिसल के सिक्ख) जब शरण आए, लहणा सिंह और अजीत सिंह, और अपराध करके भी आए। प्रताप सिंह पर गोली चलाई, बच्चे पर (चलाई) और शेर सिंह पर चलाई, धोखा किया, मित्र बनकर। वह बाबा वीर सिंह की शरण आए, आकर बैठ गए। बाबा जी को कहते, हम आज से आप की शरण में हैं। उसने कहा, तुमने बड़ी गलती की, ये बात नहीं थी करनी। परंतु आकर शरणागति पड़ गए और नहीं फिर वहाँ से हिले। आखिर में जो कुछ हुआ हीरा सिंह फौज लेकर आया, सब कुछ हुआ। तीन दिन फौज बैठी रही, भई, इनको (लहणा सिंह और अजीत सिंह को) निकाल दो या आप खुद आ जाओ। उसने (बाबा जी ने) कहा, ना, इन्होंने शरणागति कह दिया, ये शरण पड़ गए, अब आप ये बात ना करो। परंतु (बाबा जी) नहीं हटे, उनको शरणागति से धक्का नहीं दिया और अपना शरीर उन्होंने वहाँ बलिदान कर दिया बाबा वीर सिंह ने। शरणागति एक ऐसी चीज़ है। वे (संधावालीए) आए सच्चे दिल से शरणागति। यदि बड़े से बड़ा अपराध करके, शरणागति आ

जाए। भाई लालो, परमेश्वर (गुरु नानक देव जी) की पहले (दिन) ही, जाते ही, शरणागति हो गया, सारा काम उसका हो गया और सज्जन ठग भी शरणागति हो गया, और इसका भी जन्म-मरण कट गया। परंतु भाई लालो तो भक्त था। सज्जन ठग ने तो उनको (गुरु नानक देव जी को) मारने के लिए प्रबंध किया था या नहीं। परंतु नहीं, जब उसने (श्री गुरु नानक देव जी को) देखा, शरणागति पड़ गया, उसी समय वह बख्शा गया, बड़े से बड़ा अपराधी। भीलनी, मतंग (ऋषि) की शरणागति आई। उसने (मतंग ऋषि ने) उसे नाम दे दिया परंतु सारे ऋषियों ने उसे (मतंग ऋषि को) अलग कर दिया पंक्ति से, उसने इस बात की कोई परवाह नहीं की परंतु भीलनी को तो बख्श ही दिया, नाम दे दिया। शरणागति एक ऐसी चीज़ है, इस से बख्शिश हो जाती है-

मेरे हरि जीउ सभु को तेरै वसि ।।

सारी दुनिया जितनी पैदा की है, उसकी उत्पत्ति, पालना, लय सब तेरे वश है। हे ईश्वर! मुझे इस बात का ज्ञान हो गया, ये सब तेरे वश है, गुरु साहिब जी कहते-

असा जोरु नाही जे किछु करि हम साकह

हमारे अंदर कोई ताकत नहीं, कि हम कोई वस्तु (बना सकें) या कुछ कर सकें। हम एक आपकी शरणागति आए हैं। आप, हम पर बख्शिश कर दो, आखिरी माँग यही है। हमारा कोई वश नहीं, क्यों? हमारी बुद्धि, हमारे वश में नहीं है-

जैसी मति देइ तैसा परगास ।। पारब्रहमु करता अबिनास ।।

(पृ. २७५)

हमारा मन हमारे वश में नहीं। जब तक हमारा मन अहंकार में है, तब तक कर्मों के वश में है। आप, अपनी सारी ताकत लगा लो, भई, हमने सुबह भजन करना है। परंतु मन, मानता नहीं आपका। क्यों? मन ने तो कर्म के अनुसार (करना है), मन की बारी तो कर्मों के अनुसार निकलनी है। जैसा कर्म होगा, वैसा आपके मन का संकल्प होगा। क्यों? आपने जो कर्म किए हैं, मन आपका, उनका कैदी है। कैद तो इसकी तभी टूटती यदि आपका मन

शरणागति चला जाता। फिर तो–

जा कउ अपुनी करै बखसीस ।। ता का लेखा न गनै जगदीस ।।

(पृ. २७७)

बख्शिश तो, तभी होती यदि आपका मन शरणागति पहुँच जाता। आपका मन तो कर्मों के अहंकार में है। जब कर्म किए, तभी उसने अहंकार सहित किए हैं। मैं ये पुण्य करता हूँ, मुझे ये फल मिले, मैं ऐसा करता हूँ, मुझे ये फल मिले। इसलिए, मन–

करमा उपरि निबड़ै जे लोचै सभु कोइ ।। (पृ. १५७)

गुरु साहिब कहते, भाई! यदि तुम इच्छा करो, सारी दुनिया इच्छा करती है, चाहती है कि मेरा मन परमेश्वर के साथ जुड़ जाए, नाम के साथ जुड़ जाए–

करमा उपरि निबड़ै जे लोचै सभु कोइ ।। (पृ. १५७)

आपके अंदर तो अभी अहंकार पड़ा है जाति का, मजहब का, विद्या का। वह तो अभी अंदर से निकला नहीं। अहंकार के कारण जीव भागा फिरता है। कभी रूठ जाता है, कभी मान जाता है, कभी खुश हो जाता है पर इसके वश में कुछ नहीं, ये मन के वश में है। ये तो मन के वश में है। मन का संकल्प जैसा होना है, वैसा ही इसने करना है। इसलिए–

करमा उपरि निबड़ै जे लोचै सभु कोइ ।। (पृ. १५७)

कब तक? जब तक अहंकार है हृदय में–

जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ।। (पृ. १३४)

जैसा बीज बोएगा वैसा काटेगा, (जीवन तो) इसके कर्मों का खेत है। कर्मों का निपटारा तो शरणागति में होना है, उस से पहले नहीं होता। अब, ये जीव को एक, गुरु साहिब की तरफ से ऐसा शब्द आया है। आप देखोगे, ये आपके साईंस (विज्ञान), कलाकारी वगैरह सब का इसने खंडन कर देना है, इसके कारण भी देने हैं–

जिउ भावै तिवै बखसि ।।रहाउ।।

ऐसे कहो परमेश्वर के आगे, ये परमेश्वर के आगे सच्चे दिल से विनती

करो-

मेरे हरि जीउ सभु को तेरै वसि ।।

हे हरि! मुझे, गुरु साहिब कहते, यकीन हो गया, सारा संसार तेरे वश में है। कोई ऐसा जीव नहीं जो तेरे वश में न हो, जब तक अहंकार है। पर मेरी आप के आगे एक विनती है, मेरी अरदास है। वह क्या है?

असा जोरु नाही जे किछु करि हम साकह

मैं, पहले ही आप के आगे अरदास करता हूँ, मुझ में कोई ताकत नहीं, कोई ज़ोर नहीं अहंकार का, जो मैं कुछ कर सकूँ। ये मेरे कोई वश की बात नहीं। मैं, आप को पहले ही ये बात, विनती, अरदास करता हूँ। जीव को ऐसे अरदास करनी चाहिए-

जिउ भावै तिवै बखसि ।।रहाउ।।

जैसे आपको अच्छा लगता है, वैसे बख्श दो। बस! मैं एक बख्शिश के दरवाज़े पर खड़ा हूँ और आप बख्श दो। दूसरा मेरे पास कोई तरीका नहीं। आखिर में, ये इतिहास में पढ़ोगे, सज्जन (ठग), जब उसे यकीन हो गया, ये (गुरु नानक देव जी) वो शक्ति है जिस शक्ति को दुनिया में कोई झुका नहीं सकता, वह चरणों में गिरकर रो पड़ा चीखें मारकर, मैं बड़ा अपराधी हूँ, जैसे आप चाहो, मुझे बख्श दो। वह सारा अहंकार उड़ गया और गुरु साहिब ने उस पर कृपा दृष्टि कर दी और वह सच्चा सज्जन बन गया। ये विनती करो, हे परमेश्वर! जैसे तुझे अच्छा लगे, मुझे बख्श दो, और मैं इस से ज्यादा कोई बात नहीं जानता-

सूही महला ४ ।।

चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास महाराज जी (कहते)-

कीता करणा सरब रजाई किछु कीचै जे करि सकीऐ ।।

(हे परमेश्वर!) जो आपने किया है, जो करना है। (जीव!) तुम खुद जो (परमेश्वर के) बनाए हुए हो। विनती आप जीव होकर करते हो। ब्रह्म तो विनती करता नहीं। व्यापक, चेतन तो कभी विनती करता नहीं। जो, खुद ही (परमेश्वर के) किए हुए में से है, किया-

कीता करणा सरब रजाई ।

तेरी मर्जी में किए हुए ने करना है, जो कुछ करना है। किया हुआ कौन है?, जीव। इसने जो कुछ करना है, तेरी रज़ा में करना है। तेरी रज़ा, तेरी मर्जी से बाहर तो जीव कुछ कर नहीं सकता। जब भी ये करेगा, अहंकार सहित जीव, परमेश्वर के किए हुओं में ही करेगा। जो काम करेगा किए हुए में ही करेगा। यदि कोई चीज बनाएगा तो भी पाँच तत्व पहले बने हुए हैं, उनका ही हेर-फेर करके बनाएगा। कोई इसने, अपने नए तत्व बनाकर तो नहीं कुछ कर लेना?-

किछु कीचै जे करि सकीऐ ।।

परंतु हम, तब कुछ करें यदि कुछ कर सकते हों। हम तो, कुछ कर ही नहीं सकते। कर्ता पुरुष एक है-

बिनु करतार न किरतम मानो ।।

आदि अजोनि अजै अबिनासी तिह परमेसर जानो ।। (दसम ग्रंथ)

दसवें पातशाह ने कह दिया, बिना करतार के, कभी किरत (किए हुए) को न मानो। कहते, वह कैसा है, जो आपका कर्ता पुरुष है?-

बिनु करतार न किरतम मानो ।।

आदि अजोनि अजै अबिनासी तिह परमेसर जानो ।। (दसम ग्रंथ)

वह जो अनादि, एक रस रहने वाला, जन्म-मरण से दूर, नारायण, परमेश्वर (है), उसको परमेश्वर मानो, उसकी उपासना करो-

करता पुरखु न चेतिओ कीते नो करता करि जाणै ।। (भाई गुरदास)

इसने कर्ता पुरुष को माना नहीं, कर्ता पुरुष की उपासना ना की-

कीते नो करता करि जाणै ।। (भाई गुरदास)

ये तो (परमेश्वर के) किए हुए को, 'करता' कर के जानने (समझने) लगा। जो इसने खुद बनाए थे, स्थापित किए थे, उसमें इसने परमेश्वर बुद्धि चलाई (उनको परमेश्वर मान लिया)। परमेश्वर में परमेश्वर बुद्धि नहीं चलाई। इसलिए, बिना करतार के करने वाला और कोई नहीं। उस के सिवाय भाई! किसी को (कर्ता) न मानना, उस गुरु की शरण लो। गीता में भी उस

की ही शरण, रामायण में, गुरु ग्रन्थ साहिब में, सब में एक की शरण, परमेश्वर की शरण है। चाहे उस वक्त सर्गुण हुआ खड़ा हो, चाहे वह निर्गुण है-

निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही ।। कला धारि जिनि सगली मोही ।।

(पृ. २८७)

वह अवतार, ऐसे तो नहीं होता कि, वह खुद को परमेश्वर नहीं जानता (बल्कि) वह अपने-आप को शरीर नहीं मानता है-

अव्यक्तं व्यक्तिमापनं मन्यन्ते मामबुद्धयः ।।
परं भावमजानन्तो मम अवययम् अनुत्तमम् ।। (गीता ७/२८)

वह तो मूर्ख हैं जो उस अव्यक्त (परमेश्वर) को 'व्यक्ति' शरीर वाला मानते हैं। शरीर तो पाँच तत्वों (पृथ्वी, जल, आकाश, वायु और अग्नि) का होता है। किसी का माया उपाधि होगा, किसी का पाँच तत्व-भूतों का होगा। शरीर तो माया का ही होगा और ये-

ब्रहम गिआनी का सगल अकारु ।। ब्रहम गिआनी आपि निरंकारु ।।

(पृ. २७३)

वह अपने आप को निराकार, व्यापक, साक्षात जानता है। इसलिए परमेश्वर की शरणागति लेनी है। ये (परमेश्वर का) बनाया हुआ जीव खुद कुछ कर नहीं सकता और परमेश्वर की कृपा के द्वारा ही कर सकता है, जो कुछ कर सकता है-

आपणा कीता किछु न होवै

जीव का किया कुछ नहीं होता। ये (परमेश्वर) खुद चाहे, कुछ कर ले, इसका (जीव का) किया कुछ नहीं होता-

जिउ हरि भावै तिउ रखीऐ ।।

जैसे हरि को अच्छा लगेगा वैसे जीव को रखेगा, इसके (जीव के) कर्मों के अनुसार। जब तक इसे अहंकार है, अपने कर्मों का अभिमान है, तब तक ये परमेश्वर के हुक्म में ही रहेगा-

मेरे हरि जीउ सभु को तेरै वसि ।।

हे परमेश्वर! हे मेरे आत्मा! परिपूर्ण परमेश्वर! सब कुछ तेरे वश में है, किसी दूसरे के वश नहीं–

असा जोरु नाही जे किछु करि हम साकह

हमारा कोई ज़ोर नहीं, हम में कोई ताकत नहीं अहंकार की, जो हम कुछ कर सकें। हम में कोई ताकत नहीं। ये आप सारा अहंकार अंदर से निकाल दो–

जिउ भावै तिवै बखसि ।।रहाउ।।

जैसे तुझे अच्छा लगे, बस! हम तो एक ही वस्तु माँगते हैं, 'बख्शिश'। हमें अब बख्श दे बस! हमारा और कोई उपाय नहीं, कोई बात नहीं। हम तो एक बख्शिश के दरवाज़े पर खड़े हैं–

सभु जीउ पिंडु दीआ तुधु आपे

ये मेरा जीवपना, जो आभास सहित बुद्धि की वृत्ति है–

एक समय ही भान ह्वै, साक्षी अरू आभास ।
दूजो चेतन को विषै साक्षी स्वयं प्रकास ।।

(निश्चलदास, विचार सागर ४/११६)

आपके अंदर एक ऐसी वस्तु है, जिसे 'दाना बीना साई मैडा' कहते हैं। वह चेतन, आत्मा है, वह परमात्मा है पर उसके आगे एक और वस्तु भी है, 'आभास सहित वृत्ति'। क्यों? वेदांत ग्रन्थों में लिखा है 'सर्व व्यवहार का हेतु वृत्ति है'। आप ख्याल करना भई, ये ईंट ऐसे लगती है, ये खिड़की ऐसे लगती है, ये चीज ऐसे बनती है, दीवार ऐसे बनेगी, कोई भी तस्वीर बनाओगे, ऐसे बनेगी। पहले उस वस्तु का नक्शा उतरेगा आपके मन में, चेतन में कोई नक्शा नहीं उतरता है, वह निराकार है। फिर आप उस नक्शे को देखोगे अंदर और बाहर वैसा ही बना दोगे। इसलिए वह तो आभास सहित वृत्ति है, सारे व्यवहार का कारण, जिस में चेतन का आभास पड़ता है, उसे जीव कहते हैं। और वह जो चेतन, प्रकाश-रूप, आपके अंदर 'दाना बीना' परमेश्वर है, उस को साक्षी, दृष्टा, निज-रूप, अपना-आप, व्यापक (कहते हैं)। वह सारे विशेषण उस एक ही वस्तु के हैं समझाने के लिए। जब

स्वामी शंकराचार्य श्रीनगर (कश्मीर) पहुँचे, वहाँ मंडन मिश्र नाम का एक पंडित था, बहुत बड़ा न्याय (शास्त्र) का आचार्य था। उसने अपने दरवाज़े पर लिख कर लगाया हुआ था 'परता-प्रकाश'। वह क्यों? उस को स्वरूप का ज्ञान, सही नहीं था। परता-प्रकाश कौन है? वृत्ति सहित आभास, यहाँ वो खड़ा था। आनदंमय कोश में। उस ने लिखा हुआ था वह (परमेश्वर) 'परता-प्रकाश' है। स्वामी शंकराचार्य ने जाकर उसके नीचे लिख दिया 'स्वतः प्रकाश'। जब उसने बाहर निकल कर देखा तो स्वामी शंकराचार्य पिछली तरफ खड़े हो गए। अब उस जगह मठ है, मैं भी वहाँ रहा हूँ कुछ समय। उसने (पंडित ने) लिखा हुआ देखा, (कहता) ये किसने लिखा है? मेरे सामने आओ। स्वामी जी पिछली तरफ से आकर कहते, 'मैं हूँ, मैंने लिखा है'। (पंडित कहता) तू सिद्ध करेगा? हाँ करूँगा। अच्छा, लाओ मध्यस्थ। उस कश्मीर में कोई पंडित मध्यस्थ न मिला। उस मंडन मिश्र की जो पत्नी थी, उसे मध्यस्थ बनाया और स्वामी जो को उसने (पंडित ने) पूछा, तुझे ये मंजूर है? हाँ मंजूर है। तो 'परता-प्रकाश' और 'स्वतः-प्रकाश' पर वहाँ शास्त्रार्थ उनका हुआ। उस ने 'परता-प्रकाश' जीव रख दिया। आभास सहित वृत्ति, जिसे जीव कहते हैं, भूली हुई वृत्ति होती है। आज आपको बात एक, हमने जो संतों से सीखी है, वह बताते हैं। भूलना वृत्ति में होता है, न भूलने वाला गुरु करतार होता है। गुरु और करतार कभी भूल (गलती) नहीं करते और जीव भूल करता है। क्यों? जीव अपने-आप को वृत्ति मानता है। ये खुद साफ-साफ कहता है, हर समय, मैंने ही सोची ये बात, मैंने जान ली ये बात, फिर मैंने संकल्प किया, फिर मैं उसके पास गया, फिर मैंने बात की, ये देख ले जीत हासिल हो गई। अब इसे पूछो, सोचना वृत्ति का धर्म, संकल्प भी वृत्ति का और मन का धर्म है तथा सारे धर्म तो जीवपने के हैं। तू, अपने-आप को तो सोच। तू क्या वस्तु है? पर अपने-आप का पता नहीं। (तू) खुद तो दाना-बीना है-

दाना बीना साई मैडा नानक सार न जाणा तेरी ।। (पृ. ५२०)

वह 'दाना बीना' है, गुरु साहिब ने साफ लिखा है-

जो इहु जाणहु सो इहु नाहि ।। (पृ. ८८५)

जो जानने में आता है, वह परमेश्वर नहीं, भाई! अब आपकी वृत्ति, आपके जानने में आती है। जब ख्याल करते हो, भई मेरा यह ख्याल है पर जो ख्याल का प्रकाशक है, वह तो नहीं आपने देखा आज तक? ना वह दिखे-

द्रिसटिमान है सगल मिथेना ।। (पृ. १०८३)

जो दिखता है, वह तो मिथ्या होता है। वह (परमात्मा) तो आपकी दृष्टि में कभी आया नहीं, वह तो दृष्टा है। वह तो देखने वाला है-

मूई सुरति बादु अहंकारु ।। ओहु न मूआ जो देखणहारु ।। (पृ. १५२)

वह तो 'देखणहारु' (देखने वाला) है, वह देखने में तो नहीं कभी आया? उस वक्त जब उन का (शंकराचार्य और मंडन मिश्र का) शास्त्रार्थ हुआ, तो स्वामी जी ने कहा, वह दृष्टा, चेतन-

न हि दृष्टुर दृष्टेर विपरिलोपो विद्यते अविनाशी त्वात् ।

(बृहदारण्यक उपनिषद अः ४ ब्राः ३ मंत्र २३)

वह कहता, वह तो अविनाशी (नाश न होने वाला) है। दृष्टा की दृष्टि आज तक ना लोप हुई है, ना बदली है, ना किसी ने देखी है। 'दृष्टि' जो वृत्ति है जीव की, वह बदलती है। वह जो चेतन है, वह तो उसके (दृष्टि के) साथ मिला हुआ दृष्टा होता है, वह तो नहीं कभी बदला? जब शास्त्रार्थ हुआ, वह स्वामी जी जीत गए। उसकी (मंडन मिश्र की) पत्नी ने कहा, पति जी! आप हार गए। शर्त यह थी भई, जो हार गया वह चेला, जो जीत गया वह गुरु। अब मंडन मिश्र को चेला बनना पड़ा। उसका नाम बाद में, आदर-सत्कार से श्रेष्टाचार्य रखा। उसने बड़ा काम किया ग्रंथों के बारे में। भई, आप सोचो कि देखने वाला और जानने वाला-

जाननहार प्रभू परबीन ।। बाहरि भेख न काहू भीन ।। (पृ. २६६)

वह तो जानने वाला है, जानने में आने वाला नहीं। आपकी वृत्ति जानने में आती है। आप कहते हो न, मेरा भई ये ख्याल था। 'ख्याल' नाम वृत्ति का है। ख्याल कहो, संकल्प कहो। कई कहेंगे मेरा ये संकल्प है, कोई कहेगा मेरा ये ख्याल है, कोई कहेगा, भई मेरा मन तो यहाँ खड़ा है, उसे पूछो, भई, (यह तो) वृत्तियाँ (ख्याल) हैं। अब ख्याल जिसके आकार होना है, विषय के

आकार, वही आपके देखने में आना है। मेरी वृत्ति यहाँ गई, ये वस्तु है, आँखे हैं, वृत्ति है, तीनों मेरे देखने में आती हैं। देखने वाला तो दृष्टा, चेतन है पर इसे ये पता नहीं, ये दृष्टा, चेतन, व्यापक, परिपूर्ण अपना आत्मा है। इसलिए, अब बताओ, हम कुछ कर सकते हैं? जो कुछ आप वृत्ति के साथ सोचोगे, वह आपकी वृत्ति भी झूठी, आपके नेत्र प्रकृति के, ये वस्तु प्रकृति की, ये तो त्रिकुटी है। त्रिकुटी का साक्षी तो कभी नहीं बदला। वह तो एक रस रहेगा, उसने कभी कम-ज्यादा नहीं करना। आप कभी, किसी की कोई वस्तु ले लो। दस रूपए (१०) लेकर जेब में डाल लो, उसे कहो पाँच (५) हैं, वह अंदर आपके आवाज़ आएगी, नहीं दस (१०) हैं। उसने (साक्षी ने) तो कभी नहीं बदलना, देखने-जानने वाला कभी बदलता है? देखने वाला और जानने वाला, ये न कभी बदला है, ना इसने कभी झूठ बोला है। ये तो रहस्यक (आत्मा का) सच है, असली सच है-

आदि सचु जुगादि सचु ।। है भी सचु नानक होसी भी सचु ।।१।।

(पृ. १)

ये आत्मा तो आपका ऐसा है, आप ये वस्तु हो (ना बदलने वाली)। वह (मंडन मिश्र) हार गया और वह (स्वामी शंकराचार्य) जीत गया। इसलिए, अब आप और कोई बात ना करो। भई, परमेश्वर सब कुछ तेरे वश में है। अपने मन को सन्मुख कर दो, तो सारा काम निपट जाएगा। यदि आप मुँह से भी कहते जाओगे परंतु मन से नहीं मानोगे तो कौन-सा काम बन जाएगा आपका? आपने तो सच में (टिकना है), आपका तो निपटारा सच से होना है, रहस्यक सच से-

सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ ।।
नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ ।। (पृ. ४६८)

इस रहस्यक सच ने इसका निपटारा, जीव का, करना है। जीव से ब्रह्म यहाँ जाकर बनना है। परंतु ये तो अपने अंदर, खुद को छिपाए जा रहा है। जितना छिपाता है, उतना ही धोखा होता है। यदि छिपे किसी और से, माया से, तब तो काम पूरा हो जाए। गुरु साहिब ने एक जगह लिखा है-

सभु किछु सुणदा वेखदा किउ मुकरि पइआ जाइ ।। **(पृ. ३६)**

वह कहते, (परमेश्वर) जब सब कुछ देखता भी है और सुनता भी है, अब उसके आगे मुकर जाने का कोई तरीका नहीं रहा। जो भी आपने ख्याल करना है और मुँह पर लाकर शब्दों के साथ बोलना है, वह ख्याल तो उसके, चेतन के आगे हैं। वह आपके छिपाने से छिप जाएगा? परंतु उस से अच्छा है, जैसे गुरु साहिब कहते हैं, महाराज! बख्श दो, जैसे आपको अच्छा लगता है, वैसे बख्श दो और बख्शने लायक गुण मुझ में तो कोई है नहीं, पर आप बख्शिंद हो, बख्श दो। मैं अब बख्शिश ही माँगता हूँ।

सभु जीउ पिंडु दीआ तुधु आपे

तूने खुद, ये शरीर दिया है, आप ही आभास सहित वृत्ति, जिसे जीव कहते हैं, वह जीव दिया है और सब कुछ तूने दिया है। ये तीन शरीर (स्थूल, सूक्ष्म, कारण) जो कुछ दिया, बाहर के पदार्थ, ये सब तेरा दिया हुआ है-

तुधु आपे कारै लाइआ ।।

और तेरी कृपा, तेरी सत्ता-स्फूर्ति के साथ मैं काम में लगा। जब आपकी वृत्ति, कानों द्वारा सुनती है, परमेश्वर की शक्ति के साथ। वाणी मेरी बोलती है, परमेश्वर की शक्ति के द्वारा तो दोनों तरफ वही ना रहा?-

आपि उपदेसै समझै आपि ।। आपे रचिआ सभ कै साथि ।।

(पृ. २७६)

तो फिर इसमें (मेरी) क्या बात? जब तेरी कृपा के द्वारा हुआ है। हे ईश्वर! हे परमेश्वर! हे मेरे आत्मा-परमात्मा! व्यापक! तेरी कृपा से सब कुछ हुआ है-

जेहा तूं हुकमु करहि तेहे को करम कमावै

तेरे हुक्म में जीव कर्म करता है। हुक्म, बख्शिश से पहले-पहले होता है जीव को। बख्शिश के बाद तो ये ब्रह्म ज्ञानी बन जाता है। (परमेश्वर) उसका अपना-आप हो जाता है। बख्शिश से पहले-पहले, जैसा-जैसा तू हुक्म करेगा, वैसा ही जीव कर्म कमाएगा। तेरे हुक्म में कमाएगा, कम-ज्यादा नहीं कर सकेगा-

हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ।।
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ।। (पृ. १)

हुक्म देने वाले (परमेश्वर) की इसे समझ न आई। जहाँ से हुक्म आया है, उस का पता नहीं चला इसको-

सरब भूत आपि वरतारा ।। सरब नैन आपि पेखनहारा ।।
सगल समग्री जा का तना ।। आपन जसु आप ही सुना ।।
आवन जानु इकु खेलु बनाइआ ।। आगिआकारी कीनी माइआ ।।
सभ कै मधि अलिपतो रहै ।। जो किछु कहणा सु आपे कहै ।।

(पृ. २६४)

माया के वश में कभी हुक्म आया है? माया तो खुद ईश्वर के अधीन है-

आगिआ आवै आगिआ जाइ ।। नानक जा भावै ता लए समाइ ।।

(पृ. २६४)

जब ये (जीव) अच्छा लग जाएगा (परमेश्वर को) तो समा जाएगा। ये अपनी बुद्धि छोड़ता नहीं जीव। ये बात आप सोच लो, मैं भी रोज देखता हूँ, ये अपनी बुद्धि ऐसी लड़ाता है, उससे (दूसरे से) ऊपर होना चाहता है। किसी के साथ जब बात करो, वह ऐसी साथ के साथ बुद्धि लड़ाएगा अपनी, वह ये दिखा देगा, भई मैं तेरे से ज्यादा जानता हूँ। ये आप किसी के साथ बात करके देख लो कभी, ऐसे ही करेगा। वह अपनी ऐसी बात बनाएगा कि क्या जानो, वाह भई वाह! उसे पूछो- 'तू तो ये बात करता है। तू उस जगह पर नहीं खड़ा हुआ, जहाँ खड़े होना था। तूने तो ईश्वर की मर्जी में खड़ा होना था, तूने तो हुक्म में खड़े होना था।' हाँ जी! ठीक है, हो गया महाराज! (अगर तू सोचता) परमेश्वर का हुक्म है चल, तो भी काम आसान हो जाता। इसलिए इसने (जीव ने) ये गलती की, यदि ना करता तो ऐसे हो जाता। मैं, इसे कह भी चुका हूँ पहले, भई तू बचना, परंतु ये बच नहीं सका। उसे कहो, वह बचने का तरीका तेरे पास है? बचने का तरीका तो किसी और के पास है। बचाने वाला तो हुक्मी (परमेश्वर) है। वह तो हुक्मी के हाथ में है सब कुछ। और तेरे तो सारे ख्याल माया के हैं। इस माया के अधीन कभी आज तक परमेश्वर हुआ है?

जो किछु कहणा सु आपे कहै ॥ (पृ. २६४)

जो उसने काम कहना होगा, वह खुद कहेगा। वह हुक्मी है, इस हुक्मी की इसे अभी पूरी पहचान नहीं आई, हम को भई (पहचान नहीं आई) कि हुक्मी एक है। वह हुक्मी जब एक है तो सभी के हृदय में कैसे?

एकम एकंकारु निराला ॥ अमरु अजोनी जाति न जाला ॥
अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ ॥ खोजत खोजत घटि घटि देखिआ ॥

(पृ. ८३८)

वह सब के हृदय में भी तो बैठा है। वह जो एक ओंकार है, वह सब के हृदय में नहीं बैठा? वह वहाँ (हृदय में) बैठ कर हुक्म नहीं दे सकता?

घट घट मै हरि जू बसै सतंन कहिउ पुकारि ॥ (पृ. १४२७)

वह जो हृदयों में बैठा है 'हुक्मी', वह हुक्म नहीं दे सकता? ब्रह्म ज्ञानी के हृदय में बैठ कर, कभी बुरा हुक्म दिया है उसने?

ब्रहम गिआनी ते कछु बुरा न भइआ ॥ (पृ. २७२)

ब्रहम ज्ञानी से कभी बुरा होना ही नहीं है। क्यों? ब्रहम ज्ञानी, कोई और चीज़ तो है नहीं-

ब्रहम गिआनी से जन भए ॥नानक जिन प्रभु आपि करेइ ॥

(पृ. २७२)

वह तो खुद बैठा है, उसके (ब्रह्म ज्ञानी के) हृदय में-

बिनु सतिगुर किनै न पाइओ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ ॥
सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणाइआ ॥

(पृ. ४६६)

उसने (परमेश्वर ने) तो खुद सतगुरु में, अपना-आप रखा है। अब सतगुरु की पहली बुद्धि तो नहीं वहाँ रही। वह तो खुद नया, सतगुरु ने खुद वहाँ ज्योति-स्वरूप प्रकट किया है, अपना-आपा। इसलिए, ये जीव हुक्मी के हुक्म में नहीं खड़ा होता। यदि हुक्मी की समझ आ जाए, तो फिर ये बख्शिश भी माँग ले। फिर ये शरणागति भी पड़ जाए-

जेहा तुधु धुरि लिखि पाइआ ॥

कहते, तूने जैसा अपने पास से लिख के डाला है, जीव को उसके अनुसार चलना पड़ेगा–

पंच ततु करि तुधु स्रिसटि सभ साजी

तूने पाँच तत्वों (आकाश, पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि) की ये सारी सृष्टि बनाई है। गिन लो आप, ये पाँच से कम किसी में नहीं होंगे। सभी में पाँच तत्व हैं, किसी में कोई तत्व विशेष है। किसी में हवा विशेष है, जिसे उड़ाना है। जिसने नहीं उड़ना, भारी होना है, उसमें पृथ्वी विशेष (तत्व) है। सारा संसार पाँच तत्वों से ही, हे ईश्वर! तूने बनाया, गुरु साहिब कहते, चौथे पातशाह–

कोई छेवा करिउ जे किछु कीता होवै ।।

जो कोई कहे, मैं भी ये काम कर सकता हूँ, उसे कहो, छठा (६) तत्व बना दे, चल सुखी हो जाएँगे। एक तत्व कोई और बना दो छठा! वह बना देगा छठा तत्व? किसी ने आज तक छठा तत्व बनाया है? वह कहते, यदि (कोई) कहे, मैं ऐसे कर दूँगा अपनी अक्ल के साथ, उसे कहो भाई! छठा तत्व बना दे या पाँच और बना दे, दस हो जाएँगे। मैं आ रहा था, दमदमा साहिब से, (रास्ते में) संतों का डेरा है उदासियों का। बरगद के पेड़ के नीचे इकट्ठे होकर बैठे थे। वहाँ एक कम्युनिस्ट बैठा था बठिंडे का, बाकी संत बैठे थे, और लोग भी बैठे थे। वह (कम्युनिस्ट) सब को कह रहा था 'ईश्वर नहीं है। ऐसे ही लोगों ने बनाया हुआ है। आपने देखा है?' जब (वह) ऐसी-वैसी बातें बहुत किए जा रहा था, मैं भी आ बैठा। एक जट्ट दूर से आ बैठा, था वह (जट्ट) पढ़ा-लिखा वेदांत का, मुझे वहाँ (डेरे में) ले गया था। एक रात मैं, उसके (खेत) में रहा (उसकी) 'बातों' की वजह से। वह बहुत कहे (रह जाओ।), मैंने कहा, अब नहीं। वह (जट्ट) कहता, (कम्युनिस्ट को) मेरी बात सुन लो पहले। उसने कहा, सुना। उस (जट्ट) ने तो कुछ और ही कहा (गाली निकाल कर), उसने (जट्ट ने) कहा, हमारी धरती से उठ जा, फिर बात करना। उस (जट्ट) ने तो कुछ और ही कहा (गाली निकाल कर), वह कम्युनिस्ट मुँह की तरफ देखे उस (जट्ट) के। (जट्ट) कहता, मैंने तुझे जो

कहा है, धरती से उठ जा, फिर बात करना। वह (कम्युनिस्ट) कहता, क्यों, तू नहीं बैठा? वह कहता, हमारे तो पिता (परमेश्वर) की है। अपने पिता की वस्तु पर पुत्र का हक होता है और तू नहीं मानता परमेश्वर को, हमारे पिता को। तू हमारी धरती से उठ, हमारा हक है, पाँचों तत्वों को इस्तेमाल करने का। हमारा पिता जो है परमेश्वर, हम पुत्र हैं। या तो तू कह, भई, मैं उसका पुत्र हूँ, नहीं तो धरती से उठ जा, फिर तेरे साथ बात करेंगे, हो जा एक तरफ। वह (कम्युनिस्ट) उसके मुँह की तरफ देखे, वह कमज़ोर था 'शहरी' और वह था 'जट्ट'। वे सारे हँस पड़े। मैंने कहा, बता अब क्या बात करेगा? उसके (जट्ट के) मुँह की तरफ देखे हैरान हुआ-सा। वह (जट्ट) कहता, मैंने तुझे एक बार कहा, दो बार कहा, भई हमारी धरती से उठ जा, फिर बात करना। वह (जट्ट) गुस्से में जब बोला, वह (कम्युनिस्ट) ऐसे काँपने लगा। मैंने कहा, दे ज़वाब, कुछ देगा? कहता, मैं क्या (ज़वाब) दूँ। उसे पता था, भई, जैसे ही मैंने कुछ और कहा तो जट्ट मुझे मारेगा। फिर नहीं बोला, चुप कर गया। वे सारे कहते, ले भई, तूने चुप कराया। उसने यही कहा, पाँच तत्व हमारे पिता (परमेश्वर) ने बनाए हैं। हमारा शरीर पाँच तत्वों का, हमारे पिता ने बनाया। वह (जट्ट) था वेदांत पढ़ा हुआ। उसने सारी बात जब बता दी, तू मानता नहीं हमारे पिता को, जो पिता को ना माने, वह नालायक होता है। उठ! बाहर (जा) उतर जा धरती से, उतर जा, तेरा कोई हक नहीं है। अब वह बैठे कहाँ? इसलिए भाई। ये सब कुछ परमेश्वर ने पाँच तत्वों का बनाया है। जो कोई, अपना कुछ अहंकार रखता है, वह छठा तत्व बना कर गुरु साहिब कहते, दिखाए? एक छठा तत्व वह बना दे-

इकना सतिगुरु मेलि तू बुझावहि

'इकना' (कुछ) को तू सतगुरु के साथ मिलाकर, अपना स्वरूप दिखा देता है, समझा देता है। ये तेरी कृपा के साथ सब कुछ बनना है। किसी को तू सतगुरु से मिलाता है और सब अपना स्वरूप दिखा देता है। गुरु अमर देव, मुझे परमेश्वर ने मिलाए, उनके द्वारा मुझे आत्मा-परमात्मा समझाया-

इकि मनमुखि करहि सि रोवै ॥

कुछ मनमुखता (मनमानी) करते हैं, मानते ही नहीं। परमेश्वर कोई नहीं है, ऐसा कोई नहीं है और रोते भी हैं। जब यमदूत पकड़ते हैं, रोना भी तो उनको ही पड़ता है, अंत में, जन्म-मरण में, चौरासी में। फिर पढ़ दे ऊँची आवाज़ में। समझ आ जाए-

इकना सतिगुरु मेलि तूं बुझावहि

कुछ को, तू सतगुरु के साथ मिलाकर परमेश्वर दिखा देता है, समझा देता है। आत्मा-परमात्मा का अभेद निश्चय करा देता है-

इकि मनमुखि करहि सि रोवै ।।

कुछ मनमुखता करते हैं, परमेश्वर को नहीं मानते तो रोना भी उनको ही पड़ता है चौरासी में। दुख-सुख भी उनको ही भोगने पड़ते हैं। उन पर बख्शिश नहीं होती-

जा कउ अपुनी करै बखसीस ।। ता का लेखा न गनै जगदीस ।।

(पृ. २७७)

कभी भी किसी मनमुख पर आज तक बख्शिश, बताओ हुई हो? जब हुई है सन्मुख पर हुई है। जब कौडा राक्षस, गुरु साहिब के चरणों में गिर कर रोया सच्चे दिल से जाकर, तो वह सेवक बना, तो वह कृपा हुई। इसलिए मनमुख को हमेशा रोना पड़ता है-

हरि की वडिआई हउ आखि न साका ।।

गुरु, चौथे पातशाह (श्री गुरु रामदास जी) महाराज कहते, मैं, 'हरि की' महिमा पूरी तरह से भाई! कह नहीं सकता, जितनी महिमा है। मेरी ताकत नहीं, परमेश्वर की पूरी महिमा कह देना-

हउ मूरखु मुगधु नीचाणु ।।

मैं तो मूर्ख हूँ, मुगध हूँ, नीचों का नीच हूँ, मैं ऐसा हूँ। मैं परमेश्वर की महिमा कह नहीं सकता। ये जीव का, मनमुख का सारा हाल बताते हैं-

जन नानक कउ हरि बखसि लै मेरे सुआमी

हे मेरे स्वामी! मुझे बख्श ले। मैं 'गुरु नानक' की शरण आया हूँ और मुझे बख्श ले। हे मालिक! हे गुरु! मुझे बख्श-

सरणागति पइआ अजाणु ।।

मैं बिल्कुल अनजान हूँ, परंतु आप की शरणागति पड़ा हूँ। मैं बिल्कुल अनजान, अज्ञानी परंतु आप की शरणागति पड़ा हूँ। आप की शरण आया हूँ–

हरि की वडिआई हउ आखि न साका ।।

मैं नहीं कह सकता–

हउ मूरखु मुगधु नीचाणु ।।

मैं मूर्ख हूँ, मुगध हूँ, नीचों का नीच हूँ। अपने सभी गुणों का, विद्या का, सब की सफाई करके परमेश्वर की शरण पड़ जाओ–

जन नानक कउ हरि बखसि लै मेरे सुआमी

हे मेरे मालिक! मुझे नानक के कारण बख्श ले, मैं 'नानक' के साथ मिलकर आप की शरणागति आया हूँ। हे स्वामी! मुझे बख्श ले–

सरणागति पइआ अजाणु ।।

मैं आप की शरणागति आया हूँ और अनजान हूँ, मुझे बख्श लो, मैं आप की शरणागति आया हूँ।

बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु !

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

13

सोरठ महला ६ ।।
मन रे कउनु कुमति तै लीनी ।।
पर दारा निंदिआ रस रचिओ राम भगति नहि कीनी ।।१।।रहाउ।।
मुकति पंथु जानिओ तै नाहनि धन जोरन कउ धाइआ ।।
अंति संग काहू नही दीना बिरथा आपु बंधाइआ ।।१।।
ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ नह उपजिओ कछु गिआना ।।
घट ही माहि निरंजनु तेरै तै खोजत उदिआना ।।२।।
बहुतु जनम भरमत तै हारिओ असथिर मति नही पाई ।।
मानस देह पाइ पद हरि भजु नानक बात बताई ।।३।।३।।

(पृ. ६३१)

सारी संगत किरपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु ! सतिनामु श्री वाहिगुरु !!

ये नौवें पातशाह (श्री गुरु तेग बहादुर जी) का शब्द है, जिन्होंने अपना शीश तक बलिदान कर दिया। धर्म की रक्षा, आखिर में यहाँ तक जाकर ही होती है, जब शीश तक अपना, धर्म पर से कुर्बान हो जाए। लोग, आम तौर पर इन गुरु साहिब को 'धर्म की चादर' कहते हैं। ये, सभी धर्मों के रक्षक हैं–

सरब धरम महि स्रेसट धरमु ।। हरि को नामु जपि निरमलु करमु ।।

(पृ. २६६)

ये, श्री गुरु तेग बहादुर जी महाराज, धर्म के रक्षक–

तिलक जंझू राखा प्रभ ताका ।। कीनो बडो कलू महि साका ।।
साधनि हेति इती जिनि करी ।। सीसु दीआ परु सी न उचरी ।।

(दसम ग्रंथ)

जिसने धर्म के लिए, अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया और उन ब्राह्मणों के साथ (गुरु जी का) कोई रिश्ता नहीं था कश्मीर वालों के साथ। कोई जाति संबंध नहीं था, गोत्र का संबंध नहीं था। उन्होंने (ब्राह्मणों ने) आकर प्रार्थना की, भई, हमारा धर्म (बताओ!), हमने बहुत देवी-देवताओं की उपासना की, हमारा धर्म बचाओ! हमारा धर्म जाता है। गुरु साहिब ने उन को ये बात कह दी, कि, आप जाकर बादशाह को कह दो भई, मुसलमान केवल उन को (गुरु जी को) बना दो, हम सारे बन जाएँगे। उसे (औरंगजेब को) बड़ी खुशी हुई कि ये बड़ी अच्छी बात है। पर ये नहीं था पता कि भई, अब धर्म की रक्षा हो कर, पाप की जड़ उखाड़ी जानी है। जुल्म जब हद तक आ जाए, आखिरी हद आ जाए तो पाप का नाश हो जाता है। जब पाप बहुत बढ़ जाए तो धर्म ढक जाता है, धर्म नाश नहीं होता, धर्म कभी नाश नहीं होता, ढका जाता है। इसलिए, उन्होंने (गुरु साहिब ने) उस धर्म की रक्षा की। अब, उनके द्वारा जो महावाक आया है, अकाल पुरुष का, वह सुनो-

सोरठ महला ९ ।।

सोरठ राग में नौवें पातशाह शहीदों के शिरोमणि, ये कथन करते हैं, जो अकाल पुरुष की तरफ से महावाक आया है-

मन रे कउनु कुमति तै लीनी ।।

'रे' शब्द ग्रंथों में तिरस्कार का (संबोधक) है। 'रे' किसी को कहें तो गुस्सा करता है। कभी प्यारा मन भी कहेंगे बहुत जगह। जब नाम में मन जुड़ेगा, गुरु साहिब उसे 'प्यारा मन' कहेंगे। रे मन! तूने कौन-सी खोटी बुद्धि ली? तू तो खोटी बुद्धि में फँस गया। वह कौन सी खोटी बुद्धि है? वह खुद ही गुरु साहिब जी कथन करते हैं-

पर दारा निंदिआ रस रचिओ

पराई स्त्रियों और पराई निंदा, बाकी सभी गलत काम ऊपर से जोड़ लेने, पराया धन वगैरह जो भी है। ये कुमति है, ये खोटी बुद्धि है, तू इस में, हे मन! लग गया। तूने सारी उम्र यही काम किया और पराया धन, पराई स्त्री, पराई निन्दा, पराई चीज को अपना समझा। अपनी वस्तु को, अपनी नहीं समझा। जब इस को अपनी वस्तु का ज्ञान हो जाए, ये पराई वस्तु को त्याग देता है। 'विचार सागर' में निश्चल दास ने लिखा है-

एक समें ही भांन ह्वै साक्षी अरु आभास ।
दूजो चेतन को विषै साक्षी स्वयं प्रकास ।

(निश्चलदास विचार सागर ४/११६)

दुनिया में दो वस्तुएँ हैं, एक पुरुष और एक प्रकृति। एक माया और एक ब्रह्म और कई प्रकार से दो वस्तुओ को शास्त्रकारों ने लिखा, अलग-अलग सभी ने, परंतु सब का मतलब एक है। एक परता-प्रकाश है और एक स्वतः प्रकाश है। जब आप अपने अंदर अपने ख्याल को, वृत्ति को, संकल्प को देखते हो, उसमें जो संस्कार भरा पड़ा है, यदि नाम है तो आप नामी के साथ जुड़ गए। फिर तो सुमति में आ पहुँचे, उस (वृत्ति) को भी देखते हो, वह जो देखने में आता है, वह परमेश्वर नहीं है-

जो इहु जाणहु सो इहु नाहि ।। (पृ. ८८५)

जो (संसार) आपके देखने में आता है, वह परमेश्वर नहीं होता-

जानणहारे कउ बलि जाउ ।। (पृ. ८८५)

और आपके अंदर कोई जानने वाली वस्तु भी है-

जाननहार प्रभू परबीन ।। बाहरि भेख न काहू भीन ।। (पृ. २६६)

वह जानने वाला प्रभु है। वह बड़ा चतुर, ज्ञाता, ज्ञेय, सर्वज्ञ आपके अंतःकरण में है। आपकी बुद्धि और वृत्ति में है, वह 'दाना बीना साई मैडा' है-

दाना बीना साई मैडा नानक सार न जाणा तेरी ।। (पृ. ५२०)

वह सब से अलग है, उस को जानने वाला दूसरा कोई नहीं। जानने वाला एक ही है और दृष्टा भी एक ही है, दृश्य अलग-अलग हैं-

द्रिसटिमान है सगल मिथेना ।। (पृ. १०८३)

जितना देखने में आता है, वह सब झूठ है और परता प्रकाश है परंतु देखने वाला एक ही है-

मुई सुरति बादु अंहकारु ।। ओहु न मूआ जो देखणहारु ।।
जै कारणि तटि तीरथ जाही ।। रतन पदारथ घट ही माही ।।
पड़ि पड़ि पंडितु बादु वखाणै ।। भीतरि होदी वसतु न जाणै ।।
हउ न मूआ मेरी मुई बलाइ ।। ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ ।।
कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ ।। मरता जाता नदरि न आइआ ।।

(पृ. १५२)

वह, न जन्म लेने और न मरने वाली वस्तु है। उसे स्वयं प्रकाश कहते हैं, स्वतः सिद्‌ध कहते हैं। गुरु घर में उसे 'सैभं' कहते हैं, सैभं (स्वतः प्रकाश) वह वस्तु, इसका अपना आपा है और दूसरा परता प्रकाश जो है वह प्रकृति है, वह दृश्य है, वह दृष्टा नहीं है। दृष्टा एक होता है, दृश्य अलग-अलग सामने आते हैं। इसलिए, वह एक है, वह व्यापक है, वह 'दाना बीना साई मैडा' है। वह हमारे सभी ख्यालों का साक्षी है, वह परमेश्वर है। तूने, उसके साथ, व्यापक 'राम' के साथ जुड़ना था, फिर तू सुमति में आ जाता। ये जितनी है सारी कुमति है- पराई निंदा, पराया धन, पराई स्त्री। दूसरे की चीज को जो अपनी देखना है, अपनी मानना है, वह निन्दा के लायक ही है, वह कुमति है, खोटी बुद्‌धि है-

पर दारा निंदिआ रस रचिओ

पराई स्त्रियों, और निंदा के रस में तू लग गया और अनात्म रस में तू लग गया, ये रस झूठा था। झूठे रस में, तेरा मन लग गया। आत्मा के रस में, जिस दिन (मन) लग गया, उस दिन तो यह पहुँच जाएगा। उस दिन तो इसकी मुक्ति हो जाएगी, मोक्ष हो जाएगी-

आतम रसु जिह जानिआ हरि रंग सहजे माणु ।।
नानक धनि धनि धंनि जन आए ते परवाणु ।। (पृ. २५२)

राम भगति नहि कीनी ।।१।।रहाउ।।

तूने तो 'राम' जो-

रमत राम जनम मरण निवारै ।। (पृ. ८६५)

तूने तो, जो रमा हुआ 'राम' है, सारे परिपूर्ण (कण-कण में व्यापक), उसकी भक्ति करनी थी। उसकी भक्ति है- उसका सिमरन। तेरा मन, 'नाम' के साथ जुड़ जाता तो 'नामी' तुझे अपने आप ही मिल जाएगा-

वडा साहिब ऊचा थाउ ।। ऊचे उपरि ऊचा नाउ ।।
एवडु ऊचा होवै कोइ ।। तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ।।
जेवडु आपि जाणै आपि आपि ।। नानक नदरी करमी दाति ।।

(पृ. ५)

वह परमेश्वर है। जब 'नाम' के साथ एक बार भी मन जुड़ गया तो 'नामी' (परमात्मा) प्राप्त हो जाएगा। 'नाम' और 'नामी' एक चीज़ हैं-

आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ।।
दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ।। (पृ. ४६३)

दूसरी तो कुदरत है, माया है, इसलिए, नाम-नामी तो अभेद (अलग नहीं) है, वह एक हैं। तूने, उस नाम के साथ मिलना था। तूने, अपने मन को, नाम के सिमरन में जोड़ना था, तुझे अविनाशी पद की प्राप्ति हो जाती-

खोजत खोजत ततु बिचारिओ दास गोविंद पराइण ।।
अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण ।।

(पृ. ७१४)

'नाराइण' (नारायण) शब्द के बड़े अर्थ किए हैं। आत्म पुराण वाले ने भी ग्यारह अर्थ किए। आखिर में उसने कहा, जो सारे नरों का आइण (आसरा), जो सृष्टि का अधिष्ठान (मूल आधार), जो दुनिया को पैदा करने वाला, पालने वाला, समाप्त करने वाला, सब का मालिक है, वह परमेश्वर एक है। उसका नाम जपने से, तुझे उस की प्राप्ति करवाएगा। 'नाम', 'नामी' की प्राप्ति कराएगा परंतु ये वर्तमान में एक क्षण भी जुड़ जाए तो-

एक चित्त जिहि एक छिन धिआइओ ।।
काल फास के बीच न आइओ ।। (दसम ग्रंथ)

वर्तमान में रहे। बीते समय को याद न करे, आने वाले को याद न करे तो इस समय में जो हाजिर है-

कि ज़ाहर ज़हूर हैं ।। कि हाज़र हजूर हैं ।। (दसम ग्रंथ)

उसके साथ, अपने मन को जोड़ो। उसके नाम के साथ मन को जोड़ने से, नामी के साथ जुड़ जाएगा। फिर ये सुमति में चला जाएगा, ये श्रेष्ठ बुद्धि है। प्रेमा-भक्ति सब से ऊँची है। प्रेमा-भक्ति संत बना देती है-

प्रेम भगति उधरहि से नानक करि किरपा संतु आपि करिओ है।।

(पृ. १३८८)

परमेश्वर ने प्रेमा-भक्ति द्वारा, गुरु साहिब कहते, हमें 'संतु' बना दिया और प्रेम के साथ जो नाम का सिमरन है एक रस, जिसमें कोई रूकावट न आए, वह (एक रस सिमरन) उस परमेश्वर के साथ इसे मिला देता है। पर वह क्षण (पल) जीवन में एक हो जाए। ऐसे नहीं (समय का) एक क्षण, ये क्षण तो बदलना है पर वह क्षण एक हो जाए, वह आखिर तक एक क्षण बना

रहे, नाम के अभ्यास का क्षण बना रहे–

मुकति पंथु जानिओ तै नाहनि

तूने, मुक्ति का रास्ता ही नहीं जाना भाई! 'नाहनि', नहीं जाना। तुझे पता ही नहीं लगा, मुक्ति कैसे होती है। वह मुक्ति का तूने रास्ता ही नहीं जाना–

गुरु अरजन कलिआण वखान । भरम भै मिटे सु ब्रहम गिआन ।

(मोक्ष पंथ प्रकाश – सवैया १०)

वह पंडित गुलाब सिंह लिख गए हैं। उन्होंने ज्ञान ही मुक्ति का रास्ता बताया है, 'कलिआण' राग में पढ़ना, गुरु साहिब यही बता गए हैं, वेद भी यही बता गए हैं। मुक्ति का मार्ग था–मन को 'नाम' के साथ जोड़ कर 'नामी' की प्राप्ति करना। तेरी लिव लग जाती, बस। लिव में, अविनाशी पद की प्राप्ति हो जाती है। ये आपको पता है, आप 'लावें' (शादी के फेरों के समय पढ़े जाने वाले शब्द) पढ़ते हो। चौथी 'लांव' में यही आएगा, जब 'लिव' लग गई तो अविनाशी पद की प्राप्ति हो गई, वह थी 'लिव'। पर वह दो रास्ते हैं– एक है 'लिव' और दूसरा है 'धात'–

लिव धातु दुइ राह है हुकमी कार कमाइ ।। (पृ. ८७)

लिव रास्ता है मुक्ति का, 'धात' रास्ता है 'धोखा खा जाने का'। जो 'धाह' यानि 'पदार्थ' हैं झूठे, उन के पीछे फिरता रहे, उसे 'धात' मार्ग कहते हैं, वह है कुमति। ये (लिव) है सुमति, अच्छी बुद्धि–

मुकति पंथु जानिओ तै नाहनि

भाई! तूने मुक्ति का रास्ता जाना नहीं। वह (रास्ता) तेरी बुद्धि में नहीं आया, तुझे समझ नहीं आई–

समझि परी तउ बिसरिओ गावनु ।। (पृ. ४७८)

कबीर साहिब ने लिखा है–

कथनी बदनी कहनु कहावनु ।। समझि परी तउ बिसरिओ गावनु ।।

(पृ. ४७८)

वह समझ तेरे हृदय में नहीं आई–

धन जोरन कउ धाइआ ।।

क्यों नहीं मुक्ति का रास्ता मिला जी मुझे? तू धन इकट्ठा करने में लगा रहा। तूने सारी उम्र धन इकट्ठा किया, तू धन इकट्ठा करने में ही लगा

रहा। तुझे इधर से (धन इकट्ठा करने से), तेरे मन को फुरसत ही न मिली। इसलिए, लिव नहीं तेरी लगी, तेरी परमेश्वर के साथ वृत्ति न जुड़ी। नाम के साथ, तेरा मन एक न हुआ और नामी (परमात्मा) की प्राप्ति नहीं हुई–

अंति संग काहू नही दीना

और अंत में इन सब (वस्तुओं) ने तेरा साथ नहीं देना और नौवें पातशाह जी लिख गए–

अंत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइओ ।।

(पृ. ६३४)

अंत में, बिना हरि के, और कोई काम नहीं आएगा। अंत में, इसकी हरि ने सहायता करनी है, परमेश्वर ने मदद करनी है और इन्होंने (वस्तुओं ने) तेरे साथ अंत में नहीं जाना–

नाम संगि जिस का मनु मानिआ ।। नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ।।

(पृ. २८१)

यदि नाम के साथ मन जुड़ जाता तो निरंजन मिल जाता–

नामु संगी सो मनि न बसाइओ ।। छोडि जाहि वाहू चितु लाइओ ।।
सो संचिओ जितु भूख तिसाइओ ।। अंम्रित नामु तोसा नही पाइओ ।।

(पृ. ७१५)

तेरा संगी 'नाम' था। तेरा मन उसके साथ ना मिला। उसने (नाम ने) तेरा अंत तक साथ देना था, वह तेरा पक्का संगी था। 'नामु' के साथ तेरा मन न जुड़ा और दुनिया की वस्तुओं के पीछे दौड़ता रहा–

बिरथा आपु बंधाइआ ।।

उसके मोह में, धन आदि के मोह में, तूने 'बिरथा आपु बंधाइआ' अपना आप तूने बाँध लिया–

मिथिआ तनु साचो करि मानिओ इह बिधि आपु बंधावै ।।

(पृ. १२३१)

इस झूठे शरीर को, सच्चा करके मान लिया। इसलिए, तू भाई! खुद ही बँध गया, तुझे किसी ने बाँधा नहीं–

साधो इहु तनु मिथिआ जानउ ।।
या भीतरि जो रामु बसतु है साचो ताहि पछानो ।। (पृ. ११८६)

सच्चा तो वह परमेश्वर है, और तो दुनिया की कोई बात सच्ची नहीं है। इसलिए, तू बेकार धन आदि के मोह में फँस गया। पहले तूने इकट्ठा किया फिर उसका मोह हो गया। फिर आपस में तुम्हारी लड़ाई हुई, फिर बाँटने के पीछे हुई, फिर आपस में धोखेबाजी चली। उस धन ने, तुझे बाँध लिया, वह धन तेरे पीछे ऐसे लगा कि उस धन के मोह में तेरा मन कैद हो गया, बँध गया–

ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ

दो काम तूने दुनिया में करने थे, 'हरि का भजन' और 'गुरुओं की सेवा'। पूर्ण जो ब्रह्म ज्ञानी गुरु थे, जो गुरु परमेश्वर के साथ एक हो चुके थे, उस गुरु के साथ तूने जुड़ना था–

गुरु कुंजी पाहू निवलु मनु कोठा तनु छति ।।
नानक गुर बिनु मन का ताकु न उघड़ै अवर न कुंजी हथि ।।

(पृ. १२३७)

और किसी के हाथ में कुंजी नहीं है, बिना 'गुरु' के। कुँजी (चाबी) तो परमेश्वर ने गुरु को दी है। 'गुरु' आपको पता है?

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ ।। (पृ. १४०८)

उसने (ज्योति स्वरूप परमात्मा ने) आकर दुनिया में 'नानक' कहाया। लोग उन को गुरु अपने आप ही कहने लग गए और (वह) कौन था? वह 'ज्योति स्वरूप' आप आया। उस 'ज्योति स्वरूप' ने आकर कितनों के ताले खोले। कहाँ शिवनाभ है, कहाँ सालस राय (जौहरी) है, कहाँ कौडा (राक्षस) है, और कहाँ सज्जन (ठग) है, कितने गिनोगे? वह जो भी ठीक थे, सब के ताले गुरु ने खोल दिए। वह बीच में छोड़ता चला गया, उसे पता था। इतिहास पढ़ोगे तो आपको पता चलेगा। मरदाने! चल, आज वहाँ चलना है, वह बहुत याद करता है। जी, कौन है? यहाँ बड़े अच्छी तरह (सुख से) बैठे थे। नहीं, चल! जब गए, (मरदाना कहता) जी, भूख लगी है। जा, 'झंडे वाडी' के पास चला जा, उसे कह देना, मुझे भूख लगी है, मैंने रोटी खानी है। वह चला गया। उसने (झंडे वाडी ने) कहा, तू अकेला है या कोई और भी है? कहता, एक और है, जिसे 'नानक तपा' कहते हैं। वह (गाँव से) बाहर है। मैं आया हूँ, मुझे भूख लगी है, उसे भूख नहीं लगती। उसने (झंडे वाडी ने) कहा, रोटी

मैं वहीं लेकर आऊँगा, मुझे जगह बता दे। रोटी लेकर गया बड़े प्रेम के साथ, (झंडा वाडी) बड़ा (प्यासा) जिज्ञासु था। सारी उम्र सत्संग करते हो गया था, परंतु वह वस्तु नहीं मिली थी उसे। जब वह रोटी लेकर गया, बड़ी श्रद्धा के साथ रखी, कहता, जी! आप भोजन खा लो, (गुरु नानक देव जी) कहते- 'हम खिला कर खाते हैं। पहले खिलाते हैं फिर खाते हैं।' वह कहता 'सत्य वचन जी'। (गुरु नानक देव) उसे उपदेश देने लग गए। तू क्यों इतना उदास है? वह कहता, जी! मुझे वह वस्तु नहीं मिली। वह वस्तु क्या है, जी? (गुरु नानक देव कहते) वह वस्तु कहते हैं 'सच' है। वह तेरे अन्दर कोई सत्य वस्तु है, जो कभी बदली न हो? तेरे अन्दर कोई ऐसी वस्तु है (कि) तेरे ख्याल बदल जाएँ पर वह वस्तु न बदले? वह ख्याल के आने को, ख्याल की स्थिति को, ख्याल के खत्म होने को (देखता-जानता है), जो सारे 'जाननहार प्रभू परबीन' है, वह तेरे अंदर नहीं है? कहता, जी है। वह सत्य नहीं है? जो न बदले वह सत्य होता है, जो बदले वह झूठ होता है। वह कभी बदला है तेरा अपना आपा? उसने कहा, ना जी, बदला तो कभी नहीं। (गुरु नानक देव जी कहते) यही आत्मा है, यही परमात्मा है, यही सत्य है। उसका (झंडे वाडी का) अंतःकरण शुद्ध था, उसकी बुद्धि में (यह ज्ञान) आ गया। हाँ जी, ठीक। अब मेरी बुद्धि में आ गया यही 'सत' है। अच्छा, कह 'सतिनाम'। उसने कहा, जी 'सतिनाम'। अब बता? कहता (झंडा वाडी) जी! मैं धन्य हो गया। इसलिए, वह वस्तु जो सत, चित्त, आनंद, व्यापक, परिपूर्ण परमेश्वर है, जब उसके साथ, नाम द्वारा इसका मन, नामी के साथ जुड़ जाए, इसे वह वस्तु प्राप्त हो जाती है। परंतु गुरु भी ऐसा ही चाहिए, वह तो (परमेश्वर को) सब जगह दिखा देता है-

एकम एकंकारु निराला ।। अमरु अजोनी जाति न जाला ।।
अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ ।।
खोजत खोजत घटि घटि देखिआ ।। (पृ. ८३८)

ये पहले पातशाह का अर्थ किया हुआ है। उन्होंने कहा, एके (१) को, उन्होंने एक की तरफ उँगली की, भई, ये एक परमेश्वर है, बस। बाकी सब इसकी रचना है, चेले हैं, सेवक हैं। एक परमेश्वर अटल है, ये करतार है-

बिनु करतार न किरतम मानो ।।

आदि अजोनि अजै अबिनासी तिह प्रमेसर जानो ।। (दसम ग्रंथ)

एक करतार है, एक करतार के आप पुजारी हो-

जागत जोति जपै निस बासुर एक बिना मन नैक न आनै ।।

(दसम ग्रंथ)

वह 'जागती ज्योत' को, आपने जपना है। वह 'जागती ज्योत' सभी के हृदयों में है-

सभ महि जोति जोति है सोइ ।।
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ।। (पृ. १३)

वह 'ज्योत' गुरु के साथी (संगी) हुए बिना प्रकट नहीं होती। कोई वह 'ज्योत' बाहर तो नहीं है, वह आपके मन में ही बैठी है। मन को भी जानती है, मन के जितने ख्याल हैं, उन को भी जानती है। वह 'जाननहार प्रभू परबीन' आपके अंदर नहीं है? वह आपका अपना आप है। परंतु वह जो अज्ञान का, अहंकार का पर्दा है, वह आपको देखने नहीं देता। इसलिए, वह परमेश्वर है, वह आपके अंदर है, वह सत्य है। जब 'सत्य' की प्राप्ति हो जाए, 'असत्य' अपने आप ही छूट जाता है। जब इसका मन 'सत्य' के साथ जुड़ जाए, फिर असत्य के साथ नहीं जुड़ता कभी किसी ब्रह्म ज्ञानी का। उस ब्रह्म ज्ञानी की तूने सेवा करनी थी और दो काम तूने करने थे, परंतु तूने ना किए-

ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ

ना तूने गुरु जनों की सेवा की और ना हरि का भजन किया, ये दो काम तूने करने थे। पहले तो तूने गुरुजनों की सेवा करनी थी, गुरुओं ने (गुरु अमरदास जी ने) पहले बारह (१२) साल पानी ढोया और बाद में वे गुरु बने-

नानक गुर ते गुरु होइआ वेखहु तिस की रजाइ ।। (पृ. ४६०)

ये इतिहास में लिखा है। बारह साल वह गागरें भरकर लाते रहे, वह गागर ही दिखाई जब वह (पहले दिन) आए। जब उसने (अमरदास जी ने) कहा, मैं मोक्ष प्राप्त करने के लिए आया हूँ, रिश्ते में आप का समधि हूँ परंतु आया हूँ दास बनकर। उन्होंने (गुरु अंगद देव जी ने) कहा, ये गागर (पानी भरने के लिए घड़ा) है। सुबह तुमने, सुबह के पहले पहर, सवा पहर रहते

(गागर भरकर) लानी है, वे लाते रहे। इतिहास में एक बात है, जब बारह साल पूरे हो गए, वे करीर (एक पेड़) के नीचे थोड़ा रुकते थे, जिसका नाम अब दमदमा साहिब है। भूरी वाले संतो ने बनाया है वह स्थान। वे (अमरदास जी) वहीं रोज दम लेते थे। जब पूरे बारह साल उन की कमाई हो गई तो वहाँ लिखा है, एक योगी की हड्डी पड़ी थी, हठ योगी की। उस (हड्डी) को उनके (पैर का) अंगूठा लगा, वह (योगी) खड़ा हो गया। कहता, मेरी मोक्ष हो गई, मेरी गति हो गई, आप का चरण छूने से। वे (अमरदास जी) कहते, बारह साल से मैं यहीं रूकता हूँ रोज़। योगी कहता, आपको पता नहीं इस बात का। आज आपके ऊपर ईश्वर की कृपा, दया, फ़जल हो गया और आज तक आपकी तपस्या पूर्ण नहीं थी हुई, परंतु आपको आज खुद पता लग जाएगा। अब उसे जाते समय जुलाहे ने देखा, जुलाहिन को पूछा, ये कौन है? उस जुलाहिन ने बताया ये निथावां है, ये निमाणा है। उन गुरु अंगद साहिब ने फिर (अमरदास जी को) बाइस (२२) वर दिए। उस समय उनको (जुलाहे, जुलाहिन को) भी बुलाया और पहले ही हुक्म दिया हुआ था- भई, आज दीवान सजा दो। आधी गागर पानी से स्नान करके कहा, हे पुरुष! कर ले स्नान। उन्होंने (अमरदास जी ने) कर लिया। जब स्नान करके आए, (गुरु अंगद देव जी कहते) बैठ जा गद्दी पर। उस जुलाहे, जुलाहिन को पूछा, उन्होंने वह सारी बात बता दी। उन्होंने (गुरु अंगद देव जी ने) कहा, ये निमानों का मान है, निथावों का थांव है, निराधारों का आधार है। बाइस (२२) वर दिए और बाबा बुड्ढा जी को हुक्म दे दिया, तिलक कर दो। वे (अमरदास जी) गुरु बन गए। जब उनकी पूरी कमाई हो गई, वह गुरु बन गए। चेला बनना बड़ा मुश्किल है। गुरु तो एक क्षण में बन जाता है। जब चेला पूरी तरह बन जाए, उसमें (गुरु बनने में) कोई देरी नहीं। इसलिए, तूने दो काम करने थे। तूने गुरुओं की सेवा करनी थी और हरि का भजन करना था। ये दो काम तूने न किए। इसलिए, तू खोटी बुद्धि में रह गया-

नह उपजिओ कछु गिआना ।।

और, ना तुझे कोई आत्मा का ज्ञान उत्पन्न हुआ, ना तुझे स्वरूप का ज्ञान हुआ, ना तुझे वह मालिक, जो परिपूर्ण सभी में-

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ।।

कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ।। (पृ. १४२७)

वह भी, तुझे प्राप्त न हुआ। उसके बारे, पाँचवें पातशाह ने लिखा है-

बिसरि गई सब ताति पराई ।।
जब ते साधसंगति मोहि पाई ।।१।।रहाउ।।
ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ।।१।।
जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ एह सुमति साधू ते पाई ।।२।।
सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै पेखि पेखि नानक बिगसाई ।।३।।८।।

(पृ. १२९९)

हमें, सब में परमेश्वर दिखा दिया। परमेश्वर की कृपा से गुरु रामदास मिले, गुरु रामदास महाराज ने हमें, सभी में परमेश्वर दिखा दिया। अब हम, बड़े ही खुश हैं, मन से बड़े ही खुश हैं। अब हमें, उस मालिक की प्राप्ति हो गई, जो चारों श्रेणियों (अंडज, जेरज, उतभुज और सेतज) के (जीवों के) हृदय में, एक परमेश्वर व्यापक है-

घट ही माहि निरंजनु तेरै

तेरे हृदय में ही निराकार है। 'अंजनु' कहते हैं माया को। उधर काजल को कहते हैं (जोकि) काला होता है। वह तो 'निरंजन' नाम है निराकार परमेश्वर का, वह तो तेरे हृदय में है 'घट ही माहि निरंजनु तेरै'-

तै खोजत उदिआना ।।

तू तो जंगल खोजता फिरता है, तू तो जंगल में भागा फिरता है, तू तो संसार रूपी जंगल में फँसा हुआ है। इसलिए, तेरे हृदय में जो है, तेरी मन बुद्धि को देखने वाला दृष्टा, साक्षी, चेतन, दाना-बीना, वह तेरे हृदय में है, पर तूने उसे न खोजा, तू खोजने लग गया वनों को, बाहर चला गया और बाहर कोई जानवर (के रूप में) तो नहीं है (वह परमेश्वर)? या पक्षी (के रूप में) नहीं है, वह तो तेरा आपा है। मन माही रे, मन माही रे, मन माही (तेरे मन में है, तेरे मन में है, तेरे मन में ही है)-

बहुतु जनम भरमत तै हारिओ

तू बहुत जन्म भटकता-भटकता हार गया-

कई जनम भए कीट पतंगा ।। कई जनम गज मीन कुरंगा ।।

(पृ. १७६)

तू कई जन्मों में भटकता-भटकता हार गया। इस भूल ने तुझे ऐसा भुलाया, तू भटकता-भटकता कई जन्मों में फिरा-

असथिर मति नही पाई ।।

तेरी बुद्धि परमेश्वर के साथ एक नहीं हुई। तेरी मति, टिकी नहीं। तेरी बुद्धि एकाग्र नहीं हुई। एकाग्र होकर तेरी बुद्धि ने निरूद्ध होना था। 'निरूद्ध' उस अवस्था को कहते हैं जब वृत्ति (ख्याल) लीन हो जाए-

जिउ जल महि जलु आइ खटाना ।। तिउ जोती संगि जोति समाना ।।
मिटि गए गवन पाए बिस्राम ।। नानक प्रभ कै सद कुरबान ।।

(पृ. २७८)

ये तूने प्राप्त करना था, परंतु ना तुझसे ये हुआ-

मानस देह पाइ पद हरि भजु

अब तुझे मनुष्य शरीर प्राप्त हुआ है, तेरे लिए एक ही काम है। अब तुझे, हम सुमति बताते हैं। तूने परमेश्वर का भजन करना है इस शरीर को पाकर। हुक्म है, परमेश्वर का, गुरु नौवें पातशाह द्वारा। मनुष्य शरीर पाकर तूने भजन करना है-

भई परापति मानुख देहुरीआ ।। गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ।।
अवरि काज तेरै कितै न काम ।। मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ।।

(पृ. १२)

तूने, केवल 'नाम' का सिमरन करना था, मनुष्य शरीर में-

हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि ।। (पृ. १३७६)

नामदेव को जब पूछा, उसने आकर त्रिलोचन ने, भई! तू ये क्या काम करने लग गया? लोभ में आकर। वह कहता, ना-

हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि ।। (पृ. १३७६)

मेरा चित्त निरंजन के साथ जुड़ा है। मैं हाथों-पैरों से काम करता हूँ। उसने कहा, बहुत अच्छा! तू मेरे से भी बड़ा-

नानक बात बताई ।।

पर ये बात गुरु नानक देव ने बताई है। नौवें पातशाह जी कहते, हमारे जो पहले (गुरु हैं), जिन्होंने-

जोति रूपि हरि आपि गुरु नानक कहायउ ।। (पृ. १४०८)

वे नानक, 'गुरु' जिन्हें आमतौर पर कहते हैं, उन्होंने हमें ये बात बताई है-

मानस देह पाइ पद हरि भजु नानक बात बताई ।।

ये बहुत अच्छी बात, हमें गुरु नानक देव जी ने बताई है।

पढ़ दे पिछली पंक्ति-

बहुतु जनम भरमत तै हारिओ असथिर मति नही पाई ।।
मानस देह पाइ पद हरि भजु नानक बात बताई ।।

बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु !

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

14

जैतसरी महला ५ ।।
कोई जनु हरि सिउ देवै जोरि ।।
चरन गहउ बकउ सुभ रसना दीजहि प्रान अकोरि ।।१।। रहाउ।।
मनु तनु निरमल करत किआरो हरि सिंचै सुधा संजोरि ।।
इआ रस महि मगनु होत किरपा ते महा बिखिआ त तोरि ।।१।।
आइओ सरणि दीन दुख भंजन चितवउ तुम्हरी ओरि ।।
अभै पदु दानु सिमरनु सुआमी को प्रभ नानक बंधन छोरि ।।२।।५।।६।।

(पृ. ७०१)

सारी संगत किरपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु ! सतिनामु श्री वाहिगुरु !!

आखिर में कहा–

तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु ।। (पृ. ४६८)

तेरे सिवाय जो कुछ भी है, चाहे अहंकार है, चाहे काम, क्रोध है, चाहे दुनिया है, चाहे विद्‌या है, ये सब झूठ है। वह महापुरुष था, उसकी समझ में आ गया। क्यों? पहुँचा हुआ पुरुष था। थोड़ी कमी थी, वह गुरु नानक देव की कृपा से उसे (आत्मा का) साक्षात्कार (पहचान) हो गया। उस ने साफ कह दिया, आप की कृपा से मेरी शंका दूर हो गई। इसलिए, जीव जो है, ये लिव (परमात्मा के प्रेम और ध्यान) के साथ नहीं चलता और लिव, सिमरन के बिना सिद्‌ध नहीं होगी, ये भी नियम है। आज तक मुझे आप कोई (ऐसा) बता दो, जिसकी सिमरन के बिना लिव सिद्‌ध हुई हो? वाल्मीकि की लिव सिद्‌ध हुई तो सिमरन से हुई, सिमरन भी कैसा? उसे (वाल्मीकि जी को) शरीर का पता ही नहीं रहा शरीर भूल ही गया, दीमक लग गई। उसे पता ही नहीं रहा और (ईश्वर तक) पहुँच गया। कृष्ण भी उसके (वाल्मीकि के)

पास चलकर गया, इतिहास में लिखा है, अर्जुन को लेकर। अर्जुन का भी अहंकार वहाँ जाकर खत्म हुआ। जितने दुनिया के भक्त हुए हैं, ये पूर्ण महापुरुष हुए हैं। इन्होंने बड़ा दुनिया का उद्धार (कल्याण) किया पर इनके कदमों पर चलने वाला आदमी कोई विरला ही होता है। इसलिए, संत और भक्त दो बड़ी ऊँची चीजें हैं और दोनों का अर्थ ही ज्ञानी है, भक्त भी ज्ञानी को कहते हैं। संत भी ज्ञानी को कहते हैं, और ज्ञानी भी प्रेमा भक्ति के साथ बनता है और प्रेमा भक्ति के बिना ज्ञानी नहीं होंगे। ये फर्क है 'संत मत' का और 'ब्राह्मणी मत' का। और तो कोई फर्क नहीं, इतना ही फर्क है 'संत मत' का। वह अपने आप को ही समझकर कबीर ने, नामदेव ने, धन्ने ने, रविदास ने (प्रेमा भक्ति की), आपने सुना है, भाई गुरदास की 'वारें' (रचनाएँ) पढ़ी हैं? इसलिए, उन्होंने प्रेमा भक्ति नहीं छोड़ी। (ऋषि) कागभुसुंडि के पास चलकर गया 'गरुड़' जो है, उसने प्रश्न किए। उसने (ऋषि ने) एक ही उत्तर उसे दिया–

प्रेम भगति जल बिनु खगराई ।।
अभिअंतर मल कबहुँ न जाई ।। (रामचरितमानस–उत्तर काण्ड)

उसने (गरुड़ ने) प्रश्न किया– भई, मेरे अंतःकरण की मैल क्यों नहीं जाती? मैं, विष्णु का वाहन हूँ, मेरा भाई (जटायु) भी बड़ा अच्छा है। सब कुछ है मेरे पास पर मेरे अंतःकरण की मैल क्यों नहीं जाती भ्रम की? उसने (ऋषि ने) कहा–

प्रेम भगति जल बिनु खगराई ।।

हे खगों (पक्षियों) के 'राई'! 'राई' यानि बादशाह–

अभिअंतर मल कबहुँ न जाई ।। (रामचरितमानस–उत्तर काण्ड)

ये, तेरे अंतःकरण की मैल नहीं जाएगी, जितनी देर तू प्रेमा भक्ति धारण नहीं करेगा। जब प्रेमा भक्ति रूपी जल तुझे प्राप्त हो गया, तेरे हृदय की मैल चली जाएगी। अंतःकरण शुद्ध होकर तुझे अपने स्वरूप का ज्ञान हो जाएगा। इस प्रकार जीव काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार में फँसा हुआ है और इससे दो बातें कभी इकट्ठी नहीं होंगी–

उह रसु पीआ इह रसु नही भावा ।। (पृ. ३४२)

जब तक ये विषयों का, दुनिया का रस पीता है, तब तक इसे वह (ईश्वर के प्रेम का) रस नहीं आएगा और जब वह (ईश्वर के प्रेम का) रस आ गया तो ये (विषयों का) रस इसे अच्छा नहीं लगेगा। कबीर, नामदेव, धन्ना सब के जीवन पढ़ कर देख लो। उनको ये (दुनिया का) रस पसंद ही नहीं आया। उन्होंने कहा, ये तो बहुत बड़ा गड्ढा है, इसमें गिर कर तो आदमी निकल ही नहीं सकता। इसलिए, ये भूल गया-

समझ न परी बिखै रस रचिओ जसु हरि को बिसराइओ ।।

(पृ. ७०२)

गुरु साहिब कहते, इसे समझ न आई। यदि समझ आ जाती तो विषय-रस में क्यों फँसता ये? इसे, समझ न आई, इसे बुद्धि नहीं आई-

जसु हरि को बिसराइओ ।। (पृ. ७०२)

ये परमेश्वर का सिमरन ही भूल गया, परमेश्वर का यश (महिमा) करना ही भूल गया। ये विषय-रस में ऐसा तदाकार (मग्न) हुआ, (उस विषय के साथ) एक हो गया। इसे दुनिया के विषयों का रस ऐसा लगा, ये भूल गया उस रस को। इसलिए, वह रस तो तभी आता यदि यश करता रहता, परमेश्वर का सिमरन करता रहता, नाम जपता रहता-

नाम संगि जिस का मनु मानिआ ।।
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ।। (पृ. २८१)

नाम के साथ जिसका मन मान गया, उसने 'निरंजन' निराकार को जान लिया-

नावै अंदरि हउ वसां नाउ वसै मनि आइ ।। (पृ. ५५)

नाम में परमेश्वर है। नाम, वास्तव में कहते ही दृष्टा (देखने वाला), साक्षी को हैं-

नाम के धारे खंड ब्रहमंड ।। (पृ. २८४)

जब ये नाम को यहाँ (सृष्टि को धारण करने वाले तक) ले जाते हैं तो जहाँ तक इनकी पहुँच है, वहीं तक कहते हैं। इनकी पहुँच साक्षी तक है,

दृष्टा तक है, दाना-बीना तक है। यहाँ तक इनकी पहुँच है, सत, चित्त तक है। आनंद तक तो इनकी पहुँच नहीं है। इसलिए, आप ये सब जानते हो, आपके अंदर ये बात है। जब आप हर वस्तु के बारे में मनोराज करते हो, आपस में (माया के) बातें करते हो। वह आपको, वहाँ भी देखने वाला और जानने वाला बैठा है। जो अंदर बताता है- भई, ये जो बात है, मैंने समझी थी ये गलत थी और ये जो थी वह ठीक थी। वह वहाँ कोई है या नहीं? साक्षी, चेतन, आत्मा जिसे कहते हैं। वह अंदर बैठा हर वक्त देखता रहता है और ये तो कभी हुआ नहीं आज तक कि भई, कल्पित वस्तु जिस (गुण और अवस्था) में हो, अधिष्ठान (मूल आधार) भी उसी (गुण और अवस्था) वाला हो, फिर तो बात ही नहीं बनती है। जो चेतन नित्य है, वह अनित्य हो नहीं सकेगा। आपकी बुद्धि की जहाँ तक कल्पना है, वहाँ तक चेतन, साक्षी ने भी साथ ही चलना है। उसने (चेतन, साक्षी ने) बताना भी है, भई, ये मेरी गलत बात है, ये कुछ तूने बोला। इतना झूठ बोला और इतना सच बोला। यदि वह अंदर न होता तो बताता कौन? इसे पता ही ना लगता, इसे पूछना पड़ता। वह जो परिपूर्ण परमेश्वर है, तूने उस को दूर जाना-

मै मूरख जानिआ दूरी रे ।। (पृ. ६१२)

तू, हे परमेश्वर! ऐसे मेरे साथ है परंतु मैंने (अपनी) बेवकूफी से तुझे दूर समझा है। वह दूर कहीं नहीं है, वह इसका अपना आप ही है पर अपने आप की इसे समझ नहीं आई। अपने आपे (स्वरूप) में इसकी, लिव के बिना पहुँच नहीं हो सकती कभी भी। पहले सिमरन पक्का होगा, (फिर) अनाहत धुनि, (फिर) लिव लगेगी, लिव का स्विच लगेगा तो अविनाशी पद की प्राप्ति होगी। वहाँ, इसके संशय सारे टूट (समाप्त) जाएँगे। इसलिए-

सिमरि सिमरि नाम बारं बार ।। नानक जीअ का इहै अधार ।।

(पृ. २६५)

'बारं बार' अलंकार है। बारं बार, दो-तीन बार तभी कहते हैं जो ज़रूरी चीज हो। तू बारं बार सिमरन न कहीं छोड़ देना और सिमरन का 'साक्षी' तू है। तुझे पता है, मेरा मन अब सिमरन करता है या मेरा मन दुनिया का

चिंतन करता है या खुशी में है या दुख में है। किस चीज में है, इस बात का तुझे खुद ज्ञान है–

खोजत खोजत ततु बीचारिओ दास गोविंद पराइण ।।
अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण ।।

(पृ. ७१४)

वाल्मीकि को, जो उसे मंत्र मिला ऋषियों से, वह उसने छोड़ा नहीं और मंत्र तो कोई और मिला था परंतु वह सिमरन के द्वारा सिद्ध हो गया। वह मरा-मरा करते हुए, राम-राम हो गया। राम-राम करते हुए को राम ही मिल गया। इसलिए जब तक इसकी लिव नहीं जुड़ती, तब तक इसे वह वस्तु प्राप्त नहीं होती। गुरु साहिब ने यही बात बतानी है। कोई ऐसा मुझे मिले, जो मुझे परमेश्वर के साथ जोड़ दे। गुरु रामदास ने, गुरु अर्जुन देव को जोड़ दिया। उन्होंने खुद, ये बात अपने शब्द में कही है–

बिसरि गई सभ ताति पराई ।।
जब ते साधसंगति मोहि पाई ।।१।। रहाउ।।
ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ।।१।।
जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ एह सुमति साधू ते पाई ।।२।।
सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै पेखि पेखि नानक बिगसाई ।।२।।७।।

(पृ. १२६६)

अब मुझे सब में, जो सब के हृदयों में एका (१) था, एकंकार (१ ओंकार) वह मुझे प्राप्त हो गया–

एकम एकंकारु निराला ।। अमरु अजोनी जाति न जाला ।।
अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ ।। खोजत खोजत घटि घटि देखिआ ।।

(पृ. ८३८)

जो (एका), गुरु नानक ने सभी, चार श्रेणियों (अंडज, जेरज, उतभुज और सेतज) के जीवों के हृदयों में देखा, गुरु साहिब कहते, मुझे भी वह प्राप्त हो गया, साक्षात दिख गया। अब मैं बहुत खुश हूँ, मुझे बड़ा आनंद है, अब मुझे दुख नहीं है।

चल भाई पढ़–

जैतसरी महला ५ ॥

जैतसरी राग में, पाँचवें पातशाह श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज, कथन करते हैं–

कोई जनु हरि सिउ देवै जोरि ॥

कोई ऐसा महापुरुष, पूर्ण पुरुष मुझे मिल जाए, जो हरि के साथ जोड़ दे। इसलिए, उन्होंने खुद ही लिखा है–

तैडी बंदसि मै कोइ न डिठा तू नानक मनि भाणा ॥
घोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले जै मिलि कंतु पछाणा ॥ (पृ. ६६४)

पंचम गुरु कहते, मैं उस परमेश्वर जैसा किसी को नहीं समझता, उसके बराबर का कोई है ही नहीं पर मुझे जिस बिचोले (श्री गुरु रामदास जी) ने उससे (परमेश्वर से) मिलाया है, दिखाया है, जोड़ा है, उन्हें भी मैं नमस्कार करता हूँ। इसलिए, ब्रह्मज्ञानी और परमेश्वर दोनों पूजनीय होते हैं–

ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर ॥
नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर ॥ (पृ. २७३)

ये गुरु साहिब जी खुद ही कथन करते हैं–

ब्रहम गिआनी सभ स्रिसटि का करता ॥
ब्रहम गिआनी सद जीवै नही मरता ॥
ब्रहम गिआनी का सगल अकारु ॥
ब्रहम गिआनी आपि निरंकारु ॥ (पृ. २७३)

इसलिए–

गुरु परमेसरु एको जाणु ॥ जो तिस भावै सो परवाणु ॥ (पृ. ८६५)

गुरु और परमेश्वर एक होते हैं परंतु ये नहीं हो सकता कि गुरु न हो, अकेला परमेश्वर ही हो, और ये भी नहीं हो सकता कि परमेश्वर न हो और गुरु ही काम कर दे, ये दोनों बातें गलत हैं। ये जो कहते हैं सोसायिटियों वाले, वह भी गलत कहते हैं। उनको अंदर से पता भी है, भई, हम गलत कहते हैं परंतु जिद्द में कहते हैं, गलत कहते हैं। गुरु-परमेश्वर यदि गुरु, परमेश्वर दो न होते तो गुरु नानक को–

जोति रूपि हरि आपि गुरु नानकु कहायउ ।। (पृ. १४०८)

तो फिर ज्योति स्वरूप को 'गुरु नानक' कहलवाने की क्या ज़रूरत थी? गुरु की ज़रूरत थी, गुरु ने परमेश्वर के साथ जोड़ना है परंतु गुरु पूर्ण हो, गुरु पहुँचा हुआ हो। और उसे चाहे गुरु कह दो, चाहे पीर कह दो, जो आपकी खुशी है कह दो, वह हो पर 'आत्म ज्ञानी', 'ब्रह्म ज्ञानी'। इस करके भाई! कोई ऐसा मैं पुरुष चाहता हूँ जो मुझे परमेश्वर के साथ जोड़ दे। बस, और कुछ नहीं चाहता। बाकी दुनिया की चीजें यहाँ गिनी ही नहीं। पहले ही ये बात कही है, मैं तो उस महापुरुष की शरण लेता हूँ जो मुझे हरि के साथ जोड़ दे-

चरण गहउ बकउ सुभ रसना

मैं, उसके चरण पकड़ूँगा, अपनी जिह्वा (शब्दों) के द्वारा बड़ी उसकी स्तुति करूँगा, उस गुरु की। जो भाई! मुझे परमेश्वर के साथ जोड़ दे, मैं उसके चरणों में पड़ूँगा-

दीजहि प्राण अकोरि ।।रहाउ।।

मैं अपने प्राण उसे अर्पण कर दूँगा। 'अकोरि' का अर्थ है अर्पण करना। मैं अपने प्राण उसको अर्पण कर दूँगा। मैं मन, तन, धन सब उसको अर्पण कर दूँ। आपको पता है? जब (ऋषि) अष्टावक्र आया। अष्टावक्र का पिता था (राजा जनक की) जेल में। जब उसे इस बात का पता चला। वह (अष्टावक्र) पिछले जन्म का योगी था और आठ (८) उसके (शरीर में) वक्र थे, (उसे) श्राप था। लड़कों ने कहा, एक ने उसे धक्का मारा और दूसरा कहता, ना ओए! इसका पिता तो जेल में है, पंडित। इस बेचारे को कुछ न कहो, ये तो अपने नाना के पास रहता है। उसे (अष्टावक्र को) तो यह भी नहीं पता था कि वो अपने नाना के पास रह रहा है। वह तो अपने नाना को ही पिता कहता था। उसने अपनी माता को पूछा, उसने सच बताया। वह (अष्टावक्र) कहता, फिर दो रोटियाँ पका दे और मैं (राजा जनक के पास) जाता हूँ। माँ ने कहा, तू वहाँ क्या करेगा? इतने तो पंडित कैद हैं, बारह हजार (१२०००) और वहाँ दूसरा कोई है नहीं? और जनक का ये प्रण है

जो मुझे ज्ञान करा दे, वह गद्दी पर बैठे। जब उसने बहुत हठ किया, बच्चों वाला हठ। उसने (माता ने) दो रोटियाँ पका दी, खाकर वहाँ (जनक के पास) चला गया और जाकर गद्दी पर बैठ गया। वे सारे हँसे, जितने थे वो पंडित। जब जनक आया वह कहता, जी! आपने यह (लिखा हुआ) पढ़ा है? कहता, हाँ! पढ़ा है। कहते, फिर आप मुझे ज्ञान दोगे? कहता, हाँ ज़रूर, पर दक्षिणा तुझे देनी पड़ेगी। वह कहता, दक्षिणा क्या है? कहते मन, तन, धन सब कुछ मेरे अर्पण कर दे। उसने तीन अँजुलियाँ भरके वचन दिया, कहता कि मेरा तन, मन, धन सब आप का है। कहता, ठीक है बस। इतनी बात जब कही, उसने (जनक ने) कहा, जी, ये आपको पता है कितने पंडित यहाँ बैठे हैं? परंतु यहाँ, गद्दी पर कोई नहीं बैठा। (अष्टावक्र) कहता, कौन? कहते, ये जो बैठे हैं। (अष्टावक्र) कहता, नहीं! इनमें से आधे चमार हैं और आधे कसाई हैं। जनक कहता, ये क्या बात महाराज? (अष्टावक्र) कहता, मुझे देखकर हँसे (ये), जब मैं गद्दी पर बैठा, ये बड़े हँसे और मैं समझ गया, इनमें से तत्वेत्ता कोई नहीं, तत्व को जानने वाला हँसता नहीं होता कभी भी। वह तो यथार्थ बोलने वाला होता है, यथार्थ देखने वाला होता है तो मैं समझ गया। इन्होंने मेरा रंग काला देखा चमड़ी का और ये जो हड्डियाँ हैं, ये टेढ़ी-मेढी देखकर हँसे। कसाई, हड्डियों को देखकर खुश होता है, ये जो चमार होते हैं, वे चमड़े से खुश होते हैं। ये सब मेरी चमड़ी, हड्डियाँ देखकर हँसे हैं। वो हैरान हो गए कि भई, ये क्या हुआ। फिर (जनक) बोला, जी! ज्ञान करो! कहता, अच्छा! वह (जनक) सब कुछ अर्पण कर बैठा तो उसने संकल्प किया, भई, मैं घोड़े पर चढ़ूँ, रकाब में पैर डालूँ, उतनी देर में, मेरा प्रण है- ये मुझे ज्ञान करा दें। जब उसने संकल्प किया, वह (अष्टावक्र) था योगी। पता तो था नहीं उन दरबारियों को, पर था वह योगी, वह केवल पंडित तो नहीं था। उसने (अष्टावक्र ने), उसकी (जनक की) अंतर-आत्मा, अंतःकरण को देखा। उसने कहा-तू तो बादशाह भी है और बेईमान भी है, वह (जनक) कहता, ये क्या? (अष्टावक्र) कहता, तूने मुझे तन, मन, धन अर्पण करके दिया? कहता, हाँ दिया। तो तूने संकल्प क्यों किया मेरे मन के साथ? तूने मुझे पूछा था? कहता,

ना जी! तो फिर मन मेरा है या तेरा? (जनक) कहता, जी, आपका। तूने संकल्प क्यों किया? वह (जनक) कहता, ओहो! ये तो कोई अंतर्यामी है, ये तो कोई संत है। वह चरणों में गिर गया। कहता, ऐसा ही मैं चाहता था, जो अंदर की जानने वाला हो, अंतर्यामी। उसने (जनक ने) कहा, मैं निहाल हो गया। इसलिए, गुरु साहिब कहते, मैं चरण भी उसके पकड़ूँगा और अपने वचनों के द्‌वारा उसकी प्रशंसा भी करूँगा। उसके चरण पकड़कर, उसके चरणों में भी पड़ूँगा। अपने प्राण भी उसे अर्पण कर दूँगा। तन, मन, धन सब अर्पण कर दूँगा, जो मुझे परमेश्वर के साथ जोड़ दे और मैं कुछ नहीं चाहता–

मनु तनु निरमल करत किआरो

वह जैसे खेत को साफ करते हैं किसान, तू अपने मन, तन को पहले भाई! साफ कर ले। तेरे मन में कोई दुनिया के ख्याल न हों, दुनिया की वासनाएँ न हों, दुनिया की कामनाएँ न हों। आया हो तू ईश्वर के साथ जुड़ने और तेरे मन में हो कामना माया की फिर तो झगड़ा पड़ जाए, उल्टा फिर तो गलत काम हो जाए। ऐसे तो बहुत आते हैं, अंदर कुछ और होता है और बाहर कुछ और होता हैं। तू पहले अपने मन को साफ कर, सही कर जैसे खेत सारा साफ कर देते है माली, उसमें तिनके आदि कुछ नहीं छोड़ते। ऐसे ही तेरे मन में कोई कामना, वासना, संकल्प, संशय, विपर्जय आदि न रहें। एक ही तेरी इच्छा हो प्रभु को मिलने की, फिर तेरा काम पूरा हो जाएगा–

हरि सिंचै सुधा संजोरि ।।

और फिर वे उस (खेत) को बड़ी अच्छी तरह पानी देते हैं। जब उसमें बीज बोते हैं फिर वह हरा हो जाता है। ऐसे ही 'सुधा' का अर्थ है पवित्रता। उस पवित्रता के साथ जब तेरा अंतःकरण पवित्र हो गया फिर उसमें से वह रस आ जाएगा। उसमें से रुहानियत तुझे मिलेगी। तेरे अंतःकरण में ही रुहानियत है। कबीर ने लिखा है न–

सेजै रमतु नैन नही पेखउ इहु दुखु का सउ कहउ रे ।।

(पृ. ४८२)

कबीर कहता, वह मेरी सेज (अंतःकरण) में मेरा ईश्वर बैठा है। मेरे अंतःकरण में मेरा परमेश्वर बैठा है जो अंतःकरण का भी साक्षी, दृष्टा (देखने वाला) है पर मुझे उसका साक्षात्कार (मिलाप) नहीं होता, ये दुख किसे कहूँ? ये अब किसे, कैसे (महापुरुष) को सुनाऊँ कि भई, यहाँ तक मैं पहुँच गया कि मेरे मन में चेतन बैठा है। अंतःकरण में जो साक्षी, दृष्टा है, वह मुझे मिलता नहीं। मिले तो तभी जब ये (जीव) दृश्य का पीछा छोड़े। चाहता तो है ये दृश्यों को, बातें दृष्टा की करता है। ये तो धोखा है, ये तो गलत काम है। हम सभी ऐसे ही भक्त हैं, गुरु साहिब ने एक पंक्ति में कह दिया। क्या?-

द्रिसटिमान है सगल मिथेना ।। (पृ. १०८३)

जो देखने में आता है, सब झूठ है। आपकी बुद्धि, आपके देखने में आती है पर वह झूठी है और बदलने वाली है। बदलती है आपके सामने। मन आपको दिख जाता है, संकल्प-विकल्प और मन भी बदलने वाला है। प्राण आपको दिखते हैं, इंद्रियाँ आपको दिखती हैं, शरीर दिखता है, सारा संसार दिखता है। ये तो सब झूठ है, सच तो दृष्टा ही रह गया एक। जो आपके अंतःकरण को देखने वाला है, वही एक रह गया, जिसका जन्म-मरण नहीं होता-

मूई सुरति बादु अंहकारु ।। ओहु न मूआ जो देखणहारु ।।

(पृ. १५२)

एक देखने वाला (दृष्टा) ही, जन्म-मरण से रहित आपके पास है। वह आपका अपना आप है। इस में कोई शक नहीं है। सारे शास्त्र पढ़ लो, ग्रंथ पढ़ लो, वही दृष्टा आपका अपना आप है। यदि देखने वाला न हो, आपको बुद्धि का पता ही न लगे कि, भई क्या करती है, यदि देखने वाला न हो तो मन का पता ही न चले। यदि देखने वाला न हो, आप ऐसे (मन को) देख लो? कभी-कभी आपका कान दर्द होता है और कान को पता ही नहीं कि मुझे दर्द हो रहा है। आप कहते हो मेरा कान दर्द होता है, मेरी आँख में दर्द है, मेरा जी, हाथ काम नहीं करता। कभी हाथ ने नहीं कहा कि मैं काम नहीं करता। कान ने कभी नहीं कहा कि मुझे दर्द होता है। किसी जड़

पदार्थ ने आज तक कोई बात बोल कर नहीं कही। आप, जो उसमें ममता करने वाली 'मैं' है, उस 'मैं' ने ही सब कुछ देखना है। उस 'मैं' को ही अंत में इन्होंने 'ब्रह्म' बनाना है, उसी को ही 'ईश्वर', 'चेतन' बनाना है, उसी को ही दृष्टा बनाना है-

मुई सुरति बादु अंहकारु ।। ओहु न मूआ जो देखणहारु ।।
जै कारणि तटि तीरथ जाही ।। रतन पदारथ घट ही माही ।।
पड़ि पड़ि पंडितु बादु वखाणै ।। भीतरि होदी वसतु न जाणै ।।
हउ न मूआ मेरी मुई बलाइ ।। ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ ।।
कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ ।। मरता जाता नदरि न आइआ ।।

(पृ. १५२)

अब, मन में करके देख लो-

मुई सुरति बादु अंहकारु ।। ओहु न मूआ जो देखणहारु ।।

वह (दृष्टा है) जो, वही (चेतन) है, वही देखने वाला साथ भी है, वह व्यापक साथ भी है। वही दोनों को बताया है कि भई, यहाँ से (दृष्टा से व्यापक तक) चलना है। यहाँ तक तेरी पहुँच है, तेरा 'दृष्टा' व्यापक है, अन्य कोई वस्तु व्यापक नहीं है। व्यापक एक है, दो तो व्यापक हैं नहीं। इसलिए इसे अपने आप की सूझ नहीं आई-

समझ न परी बिखै रस रचिओ (पृ. ७०२)

अभी ये समझ नहीं आई, 'बिखै रस रचिओ' अभी विषयों के रस में ऐसा रचा है कि इसे समझ नहीं आई। ये तो बीमारी ऐसी पड़ी हुई है, सब को परेशानियाँ हैं। आपको भी चिंताएँ होंगी कई, आज आटा नहीं आया, आज नमक नहीं आया, आज वो नहीं आया, ये नहीं आया। आज चिट्ठी ऐसे आई है, आज ऐसे करो ओए! ये तो सब यहाँ फँसे पड़े हैं मिथ्या (झूठ) में, यदि झूठ भी समझ लें तो भी बहुत है। और झूठ क्या है? 'झूठ' को ये सच जानते हैं और जो 'सच' है उसे 'गौण' (सामान्य) जानते हैं। उसकी (परमेश्वर की) कोई जरूरत नहीं है पर इन चीजों की ज़रूरत है। मैं आपको ये बात बताता हूँ, परंतु ये समझता नहीं। हम एक जगह रोटी खाने लगे, मैंने

उसे (एक आदमी को) कहा, ओए! कुत्ते को हटा दे। वह मेरे कान के साथ मुँह लगा कर कहता, जी! 'बलिहारी कुदरत वसिआ'। मैंने कहा तेरे 'बलिहारी' को फिर देखेंगे, रोटी खा लेने दे, कुत्ते को हटा दे। बात तो उसने ठीक कही। कहता, 'बलिहारी कुदरति वसिआ' अगर मेरे साथ नाराज़ हो गया? 'बलिहारी' ना गुस्सा हो जाए। मैंने कहा, बात तो तेरी ठीक है, पर ये बात बाद में करेंगे। तो इसलिए, जो 'गौण' (सामान्य) बात है उसे ये मुख्य समझता है, जो मुख्य है, उसे सामान्य समझता है। गुरु साहिब कहते, प्राणों से ज्यादा प्यारा कुछ नहीं होता, मैं सब कुछ अर्पण कर दूँगा। मैं उसके चरणों में झुक जाऊँगा, मैं उसकी स्तुति करूँगा हमेशा, परंतु मुझे कोई उस परमेश्वर के साथ जोड़ दे। चलिए-

मनु तनु निरमल करत किआरो

इस (मन-तन को) को, जैसे वह माली खेत को साफ कर देता है, जब बीज बोता है, ऐसे ही मन-तन को शुद्ध (साफ) कर दो। इसमें जो कामनाएँ, वासनाएँ, संस्कार, संशय हैं, इन को निकाल कर बाहर कर दो, इनको अपने मन से अलग कर दो। परंतु ये तो चिपकी पड़ी हैं। एक संत लेटा था गंगा में, आधा (शरीर पानी के) बीच में (और) आधा बाहर था। एक आदमी उसके पास गया। मक्खियाँ उस (संत) पर बैठ रही थीं। वह (आदमी) जाकर कहता, तू इन मक्खियों को नहीं हटाता? तेरे ऊपर बैठ रही हैं। वह कहता, ओए! तेरी वासनाएँ तेरे मन को चिपकी हुई हैं, उनको तो हटा दे। मेरी मक्खियाँ तो हट जाएँगी, तू अपनी जो वासनाएँ हैं चिपकी हुई मन को, उनको हटा दे। उस (आदमी) ने कहा, भई, बात तो ठीक है। मैं तो ऐसे ही समझता था, संत तो अंदर की भी जानने वाला है। परंतु ये (जीव) वासनाओं, कामनाओं को नहीं हटाता और बाहर से ही शरीर को धोकर बहुत अच्छा बना लेता है और अंदर जो कुछ होता है, यह खुद ही जानता है। ये कौन-सा भूला हुआ है। अंदर कुछ और होता है, बाहर कुछ और होता है, ये गलत है-

हरि सिंचै सुधा संजोरि ।।

कहते, वह 'हरि' इसे आप सींच देगा, 'सुधा' यानि उस रस के साथ, जो रस तुझे कभी भूलेगा नहीं-

उह रसु पीआ इह रसु नही भावा ।। (पृ. ३४२)

वह रस तुझे आ जाएगा, वह हरि तुझ पर कृपा करके, तुझे वह वस्तु देगा। जब तूने मन, तन सब अर्पण कर दिया, परमेश्वर तुझे वह वस्तु खुद ही दे देगा। चाहे गुरु द्वारा दे, चाहे अपने आप साक्षात दे। योग दर्शन में लिखा है। और गुरु साहिब ने लिखा है-

गुर महि आपु समोइ सबदु वरताइआ ।। (पृ. १२७६)

कहते, गुरु में बैठकर परमेश्वर ने ये शब्द सुनाया। इसे (जीव को) तो पता ही नहीं था, शब्द क्या सुनाना है? उस ने खुद-

गुर महि आपु समोइ सबदु वरताइआ ।।

और गुरु में बैठकर शब्द सुनाया। ये सारा शब्द गुरु में बैठकर नहीं परमेश्वर ने कहा? यदि गुरु कहते तो इसे गुरुबाणी कहते, ईश्वर की वाणी (रब्बी बाणी) कभी न कहते। ईश्वर ने (गुरु में) बैठकर शब्द बोला। इसलिए, इसे हम ईश्वर की वाणी कहते हैं। गुरु द्वारा आई है और ईश्वर की वस्तु (है) और कहा सब कुछ ईश्वर ने-

इआ रस महि मगनु होत किरपा ते

कहते, जी! ये रस क्यों नहीं मिलता? कहते, कृपा से मिलता है। सीधी बात है, ये जो रस है, जब तेरा अंतःकरण शुद्ध हो जाएगा (तब मिलेगा)। कबीर ने साफ कहा।

कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरु ।।
पाछै लागै हरि फिरै कहत कबीर कबीर ।। (पृ. १३६७)

कबीर कहता, तू मन तो शुद्ध कर। तुझ पर ईश्वर कृपा करेगा, तू कृपा के लायक तो बन, अभी तो तेरे से मन ही शुद्ध नहीं हुआ। मन में तो अभी वासनाएँ बैठी है, कामनाएँ बैठी है, संशय बैठे हैं, ये जाति-मज़हब का इतना अभ्यास (अध्यास) बैठा है, मरने वाला हो जाता है आदमी। मैं वहाँ लसाड़े (गाँव) गया। मेरे पास एक भगत राम आता था। तब वह कांग्रेस (के समय)

में कैद था, उसके साथ एक सिपाही रहता था। मेरे पास आकर बाहर बैठ जाता था कुटिया में। बातें करते रहते थे। बड़ा अक्लमंद आदमी था, पहले हैडमास्टर था। एक पंडित उसका दोस्त था, इंजीनियर था, वह भी आने लग गया। वह (इंजीनियर) कहता, जी! ईश्वर नहीं है। मैंने कहा, यदि ना हो ईश्वर, तो तेरा मन काम ही न करे। यदि सत्ता-स्फूर्ति, शक्ति अंदर न दे, ये तेरा मन काम कैसे करता? जब तू इंजीनियर है, तुझे पता है इन पुर्जों का कि ऐसे चलते हैं। 'ईश्वर' तू कहता, है नहीं। अंदर शक्ति, कौन देता है? मैंने उसे बहुत कुछ कहा, वह मान गया। वह कहता, मुझ से एक अंखड पाठ कराओ, मेरे पास रूपया बहुत है। मैंने कहा, तू खुद ही करवा ले। मैं वहाँ किसलिए जाऊँ? और एक वहाँ सिक्ख रहता था, वह कहता, जी! वहाँ मुसलमान ज्यादा हैं, रंघड़-सैनी थोड़े हैं, कुछ ब्राह्मण हैं। वह (सिक्ख) कहता, जब मैं मुसलमान को देखता हूँ, मुझे इतनी तकलीफ होती है, जैसे आग लग जाती है। जब मैं हिंदू को देखता हूँ, कुछ शाँति आ जाती है, पूरी नहीं आती। जब सिक्ख को देखता हूँ, तो मुझे शाँति आती है। वह (पंडित) उस सिक्ख को भी ले आया। वह आकर कहता, जी! इसे ये बात बताओ, मेरा मित्र है, बड़ा दुखी है। हमारे यहाँ मुसलमान ज्यादा हैं, इसे मुसलमान बहुत दिखते हैं हर वक्त, ये बड़ा दुखी है। इसका कोई ईलाज आप जानते हो? पंडित कहता और हिंदू से भी आधी शाँति आती है। वह (सिक्ख) कहता, (पंडित!) मुझे तू इसलिए लाया था यहाँ? मुझे तो तू (यह कहकर) लाया था कि भई, चलो संतों के पास बातचीत करेंगे जाकर और यहाँ और ही बात छेड़ दी। मैंने कहा, ये तो देखने का फर्क है इस बात में, कोई बात नहीं। सदा रहने वाली दृष्टि सब की एक है, बदलने वाली दृष्टि अलग-अलग है-

न हि दृष्टुर दृष्टेर विपरिलोपो विद्यते अविनाशी त्वात् ।

(बृहदारण्यक उपनिषद अः३ ब्राः२ मंत्र २२)

नाश न होने वाली दृष्टि तो इसका अपना आप, चेतन, दृष्टा ही है और जो इसकी वृत्ति है, इसने बदलते रहना है। जैसे-जैसे आप संस्कार वृत्ति में डालोगे, आपकी वृत्ति वैसी ही हो जाएगी। इसे, ये संस्कार पड़ गए कि भई,

मुसलमान बुरे ही होते हैं और हिंदू कुछ अच्छे होते हैं, सिक्ख बड़ा अच्छा होता है। मैंने कहा, ये तो वृत्ति (ख्याल) है। मैंने, जब उसे समझाया, वह कहता, बात तो ठीक है पर इसने (पंडित ने) मुझे लाकर धोखा किया है। मैं क्यों यहाँ आता। इसने कहा था, संत बड़ा अच्छा है और बड़े सुंदर अर्थ करता है। (वहाँ) मैं, नौवें पातशाह (श्री गुरु तेग बहादुर जी) की वाणी सुनाता था। तू सुन तो सही चलकर, ये कहता था, अब कथा तो सुन ले। वह (सिक्ख) बोला, सुना दो कथा भी अब, जो सुनानी है। इसलिए, इसकी वृत्ति में जैसे संस्कार हों, वैसा ये बन जाएगा। और इसकी वृत्ति है बनावटी, जैसे आप संस्कार बाहर से डाल दोगे, आपकी वृत्ति ने वैसी ही बन जाना है और जो आपकी सदा रहने वाली दृष्टि है, वह ना बदलने वाली है, उस में कभी फ़र्क नहीं आया। उसको (अर्जुन को) कृष्ण ने कहा, तुझे वह आँखें दूँगा (जो गुरु साहिब ने लिखा है)-

नानक से अखड़ीआं बिअंनि (पृ. १३६७)

वही दृष्टि है, इसका अपना 'आपा' चेतन। यदि उस दृष्टि में खड़े होकर देखो तो इसे कोई बुरा नहीं नजर आएगा। क्यों? उसका ईश्वर जिम्मेवार है, इसके कर्म जिम्मेवार हैं, ये तो नहीं जिम्मेवार। इसने (दृष्टा ने) तो यदि वह पूछे तो बता देना है, भई, ये ठीक है, ये ठीक नहीं है, इससे ज्यादा तो इसका (दृष्टा का) काम नहीं है। इस तरह, वह जब मैंने समझाया वह (पंडित) कहता, कुछ समझ आई? वह (सिक्ख) कहता, भई, समझ तो कुछ आई है परंतु ये बात पक्की हो गई है अब। इस तरह, उसके देखने में ये संस्कार पड़ गए। खेत साफ करो पहले, मन को साफ करो, वासना-कामना निकाल कर। ये सब के शरीर पाँच तत्वों के हैं, (चाहे) कोई हो-

पांच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान ।।
जिह ते उपजिओ नानका लीन ताहि मै मानु ।। (पृ. १४२७)

और छेवां भी तो है-

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ।।
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ।। (पृ. १४२७)

वह छेवां भी तो कोई अंदर बैठा है आपके-

ईश्वरः सर्वभूतानां हृददेशे अर्जुन तिष्ठति ।

भ्रामयन सर्व भूतानि यंत्रा रूढानि मायया । (गीता १८/६१)

वह आपके हृदय में ईश्वर, चेतन, आत्मा, परमेश्वर, भी तो बैठा है, उसने सब साफ करना है। आपकी ये दृष्टि जिस दिन आपको मिल गई, तो ये आपकी ऐनकें खुद ही उतर जाएँगी काली-पीली। अभी तो आप कभी काली ऐनकें लगा लेते हो, कभी पीली लगा लेते हो, कभी कोई लगा लेते हो। वह जैसी वृत्ति (सोच) होती है, वैसे ही (आप) बन जाते हो पर वृत्ति तो न रहने वाली है, वह तो बदलती है, उसने तो बदलते रहना है। ये हिंदू से मुसलमान बन जाए, वह कहता- 'धर्म इससे पक्का नहीं और कोई।' यहाँ मेरे पास आया था एक, उनके लड़के इधर आए हैं, वह आया था, वह मुसलमान बन गया, मक्का जाकर आया है। उसने कहा, धर्म तो इस (मुस्लिम धर्म) जैसा पक्का दुनिया में कोई नहीं है, जैसा ये धर्म पक्का है। अब उसके दिल में बैठ गई ये बात, परंतु पहले वह सिक्ख था। अब बताओ, किस ने बदला संस्कारों को? और असल में तो चेतन एक है, सब में आत्मा एक है, उसका रस आपको तब आएगा जब उसके साथ आपकी वृत्ति जुड़ेगी। अभी तो संसार के साथ जुड़ी है। इसलिए, ये रस कृपा से प्राप्त होता है। गुरु साहिब कहते, जब परमेश्वर की कृपा होगी तो आपको ये रस आएगा-

उह रस पीआ इह रसु नही भावा ।। (पृ. ३४२)

जब वह (ईश्वर के प्रेम का) रस आ गया तो ये (विषयों का) रस आपको कभी अच्छा ही नहीं लगेगा। ना कबीर को ये रस अच्छा लगा, ईसा को अच्छा नहीं लगा, गुरु नानक को अच्छा नहीं लगा, किसी को ये रस पसंद ही नहीं आया और हमें ये रस पसंद है, वह रस आता ही नहीं है-

इआ रस महि मगनु होत किरपा ते

कहते, ये (ईश्वर के प्रेम का) रस तो भाई! फिर पढ़ दे ऊँची आवाज़ में-

इआ रस महि मगनु होत किरपा ते महा बिखिआ ते तोरि ।।

इस रस में मग्न तब हो जाओगे, जब ईश्वर की कृपा होगी। फिर आपका मन, मस्त हो जाएगा, फिर आपका मन, कहीं आएगा-जाएगा नहीं। ये तो कृपा की ज़रूरत है, परमेश्वर की कृपा की। पहले आप साधन करो, मन को शुद्ध करो, शुद्ध करके, मन-तन-धन सब परमेश्वर को अर्पण कर दो। उस के दास बन जाओ। फिर आपको वह रस आ जाएगा। कबीर को आया, नामदेव को आया, धन्ने को आया, रविदास को आया तो हमें भी आ जाएगा। परंतु ये कृपा द्वारा आएगा फिर आप वहाँ मग्न हो जाओगे। फिर कहीं आना-जाना नहीं रहेगा। चलिए-

महा बिखिआ ते तोरि ।।

ये, जो विषयों को तू बड़ा महत्त्व देता है हररोज़, काम, क्रोध आदि विकारों को, शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध को, इससे तो अलग हो जा। वह लिखा है रविदास ने-

साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी ।। तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी ।।

(पृ. ६५६)

रविदास को जब ईश्वर के दर्शन हो गए, उसने (ईश्वर ने) कहा, सुना! कहता, सच्चा प्रेम मैंने तेरे साथ लगा लिया और तेरे साथ लगा कर सभी विषयों से तोड़ लिया। परंतु कहते, उन बड़े विषयों को, जिनको तू बड़ा ज़रूरी समझता है, तू उनको तो तोड़, परंतु ये कृपा के बिना टूटते ही नहीं। जब कृपा से ये रस आएगा, वह (विषयों का) रस अपने आप भूल जाएगा। फिर वह (विषयों का) रस तेरे कभी नज़दीक नहीं आएगा-

आइओ सरणि दीन दुख भंजन

हे दीनों के स्वामी! हे सभी दुखों का नाश करने वाले परमेश्वर! मैं गरीब, तेरी कृपा के द्वारा, तेरी कृपा के लिए, तेरी शरण आया हूँ, इसके सिवाय मैं कुछ नहीं चाहता, मैं तो एक शरणागति में आ गया हूँ। और जो-

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै (पृ. ५४४)

ये तो धर्म है परमेश्वर का, शरण में आए हुए को उसने कंठ लगा लेना है। ये तो, सभी का विचार यही है-

चितवउ तुम्हरी ओरि ॥

अब तो तुझे देखूँगा, तेरे सिवाय (बिना), और किसी को नहीं देखता। जब सबके सहारे (अधिष्ठान) का पता लग जाए तो अध्यस्त को कोई नहीं देखता। जब रस्सी दिख जाए, साँप को कोई नहीं देखता। जब सीपी उठा कर सीपी को देख लो, तो उसमें जो चाँदी नज़र आ रही थी, वह दिखाई नहीं देती, वह सारी गलतफहमी खुद ही हट जाती है। अब तो तुझे ही देखूँगा और तेरा ही दास हूँ, तेरी शरण में हूँ, तेरे हुक्म में चलूँगा-

हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥ (पृ. १)

अब तो 'नानक' ईश्वर के हुक्म में चलने वाला है। अब तो तेरे हुक्म में चलूँगा-

अभै पदु दानु सिमरनु सुआमी को

कहते, कुछ माँग भी है? कहते, एक चीज की माँग है, वह मेरी कभी हटे न। अब पढ़ भाई-

अभै पदु दानु सिमरनु सुआमी को

कहते, मैंने 'अभै पदु दानु' लेना है, स्वामी का सिमरन मुझे पक्का हो जाए। सिमरन से परमेश्वर मिलना है। वह मेरा सिमरन ना कभी बंद हो और मुझे वह पद मिल जाए 'अभै पदु' जो जन्म-मरण से रहित है, जिसमें किसी तरह का कोई डर नहीं। वह 'अभै पदु', सिमरन है स्वामी का-

प्रभ नानक बंधन छोरि ॥

'प्रभ', हे प्रभु! गुरु साहिब गुरु अर्जुन देव कहते, मेरे बंधन काट दो। अब मुझे और किसी वस्तु की जरूरत नहीं, मेरे ये बंधन काट दो। जीवों को बताया है कि भाई! इस रास्ते चलो, यहाँ पहुँच कर आपका ये काम बनना है, और कोई बात नहीं है। उनके (गुरु साहिब के) बंधन कटे हुए थे। इसलिए, अब एक तो जन्म-मरण का बंधन काट दो, गलतफहमी दूर कर दो, भ्रम दूर कर दो। ये साफ लिखा है गुरु साहिब ने, नौवें पातशाह ने-

काहे रे बन खोजन जाई ॥

सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥१॥रहाउ॥

पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ।।
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई ।।१।।
बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई ।। (पृ. ६८४)

बस यहाँ आकर बंद कर दिया। बस, 'बाहरि-भीतरि' वह एक ही है परमेश्वर। सहज पद, ब्रह्म, ईश्वर जिसे कहते हैं-

जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई ।।

जितनी देर तू, उसे अपना आप नहीं पहचानता, उतनी देर तेरा भ्रम दूर नहीं होता। जब अपना आप पहचान लेगा, गुरु की कृपा, ईश्वर की कृपा द्वारा, (तो) तेरा जन्म-मरण कट जाएगा। (गुरु साहिब कहते) मेरे बंधन काट दो, और मेरी दुनिया से संबंधित कोई माँग (इच्छा) नहीं है।

चल भाई-

अभै पदु दानु सिमरनु सुआमी को प्रभ नानक बंधन छोरि ।।

बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु !

❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

15

सोरठि महला ४ पंचपदा ।।
अचरु चरै ता सिधि होई सिधी ते बुधि पाई ।।
प्रेम के सर लागे तन भीतरि ता भ्रमु काटिआ जाई ।।१।।
मेरे गोबिद अपुने जन कउ देहि वडिआई ।।
गुरमति राम नामु परगासहु सदा रहहु सरणाई ।।रहाउ।।
इहु संसारु सभु आवण जाणा मन मूरख चेति अजाणा ।।
हरि जीउ क्रिपा करहु गुरु मेलहु ता हरि नामि समाणा ।।२।।
जिस की वथु सोई प्रभु जाणै जिस नो देइ सो पाए ।।
वसतु अनूप अति अगम अगोचर गुरु पूरा अलखु लखाए ।।३।।
जिनि इह चाखी सोई जाणै गूंगे की मिठिआई ।।
रतनु लुकाइआ लुकै नाही जे को रखै लुकाई ।।४।।
सभु किछु तेरा तू अंतरजामी तू सभना का प्रभु सोई ।।
जिस नो दाति करहि सो पाए जन नानक अवरु न कोई ।।५।।

(पृ. ६०७)

सारी संगत किरपा, दया, मेहर, करके बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु ! सतिनामु श्री वाहिगुरु !!

ये महावाक ईश्वर की वाणी का, श्री गुरु रामदास महाराज द्वारा आया है। जो इस में अर्थ है, जितना बुद्धि काम करेगी, खोलेंगे। ये ईश्वर की वाणी है, अगम (मन-वाणी की पहुँच से दूर) है, अगाध (बड़ी गहरी) है। इसलिए, आपको पता है इस बात का?

जब बरदानि समै वहु आवा ।।
रामदास तब गुरु कहावा ।।
तिह बरदानि पुरातनि दीआ ।।

अमरदासि सुरपुरि मगु लीआ ।। (दसम ग्रंथ)

पहले, दोनों शहर (लाहौर और कसूर) दोनों राजकुमारों (लव और कुश) ने बसाए थे। ये दोनों (भगवान) रामचंद्र के पुत्र थे, उस जगह वह रहते थे, वाल्मीकि जी के पास। वाल्मीकि का आश्रम अमृतसर से पाँच कोस (लगभग १२ किलोमीटर) दूर है। उस ने, कुश ने कसूर बनाया और लव ने लाहौर बनाया। इस (पंजाब) देश को उन्होंने बड़ी अच्छी तरह बसाया, बड़ा अच्छा हुआ। बाद में फिर उनका आपस में मनमुटाव हो गया। आपसी फर्क आने से, कुशों ने लवों को (लाहौर से) निकाल दिया। लव, सनौढ़ देश (मथुरा, भरतपुर से अमरकोट तक का इलाका) में आ गए। वहाँ (सनौढ़) का जो राजा था, उसने लवों के राजकुमार, जो कि सोढियों का बेटा था, 'सोढी' वहाँ से ही नाम पड़ा। उसके साथ, सनौढ़ के राजा ने अपनी बेटी की शादी कर दी। एक ही लड़की थी, राज्य भी दे दिया। इनके जो पुत्र हुआ, उस लड़की से, उस का नाम 'सोढी राय' रखा। उस दिन से इन (लवों) का नाम सोढी पड़ गया। उस राज्य की ताकत लेकर, लवों ने आकर लाहौर से कुशों को निकाल दिया। कुश, काशी (बनारस) में चले गए। उन्होंने चार वेद पढ़े, उनका नाम 'वेदी' पड़ गया। वह चार वेद पढ़ने से, उन (कुशुओं) का नाम वेदी पड़ गया। उन्होंने बड़े अच्छे काम किए, बड़े धर्म के काम किए वेदियों ने। फिर वह लव, उन (कुशुओं) को जाकर (बनारस से) ले आए। उन्होंने (लव वंश के सोढियों ने) कुशुओं से चार वेद सुने। जो राजा था (सोढी) चार वेद सुनकर अपना राज्य और धन आदि सब (वेदियों को) चढ़ाकर जंगल में चला गया। उन्होंने (वेदियों ने) कहा, चौथी गद्दी आपकी (सोढियों की) होगी। वह चौथी गद्दी पर गुरु रामदास महाराज जी आए। वे गद्दी के मालिक बने, उनके द्वारा जो शब्द आया है, वह सुनो-

सोरठि महला ४।।

सोरठ राग में, चौथे पातशाह महाराज कथन करते हैं-

पंचपदा।।

पाँच पदों का ये शब्द है-

अचरु चरै ता सिधि होई

कहते 'अचरु' जो हैं काम, क्रोध, आदि 'बड़े कठिन', शब्द, स्पर्श, रूप,

रस और गंध सब को यदि चर ले, सब को खा ले, अहंकार को खत्म कर दे। एक हांडयों की जाति में हुआ है कंबोज 'प्रेमा', वह बड़ा अच्छा था। उसके पास मुसलमान इकट्ठे होकर आए, अपने पीर को साथ लेकर। वह जब आमने-सामने बैठे, उसका नाम 'प्रेमा' था, बड़ा ज्ञानी था। उसने (प्रेमे ने) उस पीर से पूछा, तूने सुअर खाया? वह कहता, नहीं खाया। कहता, फिर तू नहीं बात कर सकता। वह कहता, हाँ! ठीक है। प्रेमा कहता, पहले सुअर खाकर आना फिर बात करना। वे मुसलमान बड़े गुस्से हो गए। उस पीर ने कहा, नहीं। तुम क्यों गुस्सा हो रहे हो? हमारी, किताबों में लिखा है 'सुअर' अहंकार का नाम है। उसने (प्रेमे ने) पूछा था, तूने अहंकार को खा लिया। मैंने कहा, भई, नहीं खाया। कहता, फिर तो बात नहीं कर सकता ज्ञान की, अहंकार को खाकर फिर बात करना। वे उठ गए। उन मुसलमानों को उस (पीर) ने रोका। कहते, इसने (प्रेमे ने) ठीक कहा है। हमारी किताबों में लिखा है 'अहंकार' को 'सुअर' कहते हैं। जब तक ये खाया नहीं जाता तब तक ज्ञान नहीं होता। इसने (प्रेमे ने) ठीक कहा। इसने पूछा तो मैंने कहा, नहीं खाया, प्रच्छिन्न (शरीर, मन, बुद्धि संबंधी) अहंकार तो मेरा समाप्त नहीं हुआ। (प्रेमा) कहता, फिर तू (अहंकार) खाकर आना, फिर तू बात करना, तो आकर ज्ञान की बात करेगा। फिर उसने (पीर ने) उन (मुसलमानों) को समझाया। सब को कहता, भई, बिल्कुल इसने ठीक कहा है। जब ये सारे अहंकार को काम, क्रोध आदि को खा जाए तो फिर क्या होगा? अब पढ़-

अचरु चरै ता सिधि होई

फिर सिद्ध हो जाता है। रूकावट तो अहंकार की ही है। 'अहम् अस्मि' मैं क्या हूँ? ये सब से पहली वृत्ति इसकी होगी, और कोई नहीं होती। 'अहम् अस्मि' मैं हूँ। अब ये ऐसे नहीं, तू क्या हैं? कुछ साथ लगाएगा तो लोगों को पता लगेगा। मैं ब्राहमण हूँ, मैं सिक्ख हूँ, मैं जट्ट हूँ, कुछ तो लगाएगा, मैं ज्ञानी हूँ, मूर्ख हूँ। इसलिए आगे जब कुछ लगाएगा तो पता लगेगा। 'अहम् अस्मि' मैं हूँ। है तो सही वह परमेश्वर परंतु जितनी देर 'प्रच्छिन्न अहंकार' (स्वयं को शरीर, मन, बुद्धि समझने के अहंकार) की निवृत्ति नहीं होती, उतनी देर ज्ञान नहीं होता अपने स्वरूप का। वह अहंकार जहाँ से उठता है ना 'अहम्

अस्मि', ये है एक वृत्ति। वह वृत्ति जहाँ से उठती है वहाँ साक्षी, चेतन, व्यापक है। उस साक्षी, चेतन का इसे पूरा, ज्ञान हो जाए, तो यह 'अपैहत' (उपाधि रहित) हो जाता है, ये जीव नहीं रहता। जीव तो 'चिदाभास' को कहते हैं। वृत्ति के द्‌वारा जो अभास होता है, उसे जीव कहते हैं परंतु वह जीव जो है, वह चलता किसके सहारे है? वह चलता है अहंकार के सहारे और वह (अहंकार) समझ से बाहर की शक्ति है माया की। रमन (ऋषि) ने बड़ा लिखा है, उस अचिंतनीय शक्ति (अहंकार) के सहारे सारे जीव चलते हैं परंतु उस अहंकार की जड़ जहाँ से उठती है, 'अहम् अस्मि', उसको प्रकाश देने वाला तो चेतन, व्यापक है। वह है साक्षी त्रिकुटियों का, ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय और ध्याता, ध्यान, ध्येय। वह सब का साक्षी है। वह साक्षी, निराकार है। वह लक्ष्य है और उधर विराट हिरण्य गर्भ (के रूप में) ईश्वर-साक्षी, व्यापक (हर जगह, हर समय, हर वस्तु में) है। वह जो ईश्वर-साक्षी और जीव-साक्षी है, वह एक है, वह चेतन है, वह व्यापक है। जब इसे ईश्वर-साक्षी का पता लग गया कि भई, 'तत्वम् असि' ये तत् है, ये धुन है तो उसके (ईश्वर के) अलग होने का, वह विचार दूर हो जाएगा। जब इसे ये पता लगा कि भई, ये जो 'त्वम्' पद अलख है ये सार (परमेश्वर) के साथ एक है, अखंड है, तो इसकी प्रच्छिन्नता (स्वयं को शरीर, मन, बुद्‌धि समझने की गलती) समाप्त हो जाएगी। फिर इसे व्यापक का पता लग जाएगा, फिर उसका जन्म-मरण टूट जाएगा। चाहे शरीर के साथ पता लग जाए चाहे बाद में पता लग जाए। वह जब (पता) लग जाएगा तो ये सिद्‌ध होगा-

सिधी ते बुधि पाई ।।

उस 'सिधी' से आत्म-बुद्‌धि पाई। आत्माकार (आत्मा के आकार) वृत्ति, अखंडाकार (अखंड परमेश्वर के आकार) वृत्ति, 'अहम् ब्रहम अस्मि', उस 'सिद्‌धि' से इसने ये 'बुद्‌धि पाई', इस को अपने-आप का ज्ञान हो गया-

प्रेम के सर लागे तन भीतरि

ये है इसका साधन। कहते, जिसके अंदर पूर्ण प्रेम आ गया-

ता भ्रमु काटिआ जाई ।।१।।

तो भ्रम न रहा-

भरमे सुरि नर देवी देवा ।। भरमे सिध साधिक ब्रहमेवा ।।
भरमि भरमि मानुख डहकाए ।। दुतर महा बिखम इह माए ।।
गुरमुखि भ्रम भै मोह मिटाइआ ।। नानक तेह परम सुख पाइआ ।।

(पृ. २५८)

और भ्रम (गलतफहमी) जो है, ये जीव को कहीं न कहीं बाँध कर रखता है। किसी को बुलाकर देखो, मैं पंडित हूँ, मैं साधु हूँ, ये हूँ, मैं वो हूँ। जहाँ बँधा होगा, वह वहीं से बोलेगा। उसे पूछने वाला हो, 'तू चेतन' (है), क्या पागलपन कर रहा है हर रोज़? है तो ये चेतन। दोनों चीज़ें हैं, एक 'जड़' है, एक 'चेतन'। 'जड़' की तो सत्ता ही नहीं है, 'चेतन' की सत्ता है। उस (जड़) की तो सत्ता नहीं है, सत्ता 'चेतन' की है। ये चेतन है, अगर चेतन ना हो, तो ये बोले ही ना, पता ही न लगे, इसे मन-बुद्धि का पता ही न लगे। इसलिए, ये जहाँ बंधा हुआ होगा, बोलेगा वहीं से। कभी आप, अकेले से बात करो, वहीं से बोलेगा। इसी तरह, सुच्चा सिंह ने पूछा था ना वहाँ, छोटे-छोटे बच्चे को हँसी-मजाक में, जो वहाँ आते थे लंगर लेने। पूछते, तुम में से जनता (पार्टी) का कौन है? कांग्रेसी कौन हैं? (एक बोला) मैं कांग्रेसी, सारे बोले, हम हैं जी कांग्रेस के। एक कहता, मैं जनता पार्टी का। समझ गए? छोटे-छोटे बच्चे। सुच्चा सिंह ने तो पूछा था हँसी-मजाक के लिए, लो वे बच्चे भी बँधे पड़े हैं, छोटे-छोटे बच्चे भी बँधे पड़े हैं, अभी चलना जानते हैं मुश्किल से। इसलिए जीव परंपरा में बँधा हुआ आया, जहाँ बँधा हो वहीं रहेगा। उसे हिला कर देख लो, यदि हिल जाए तो मुझे पकड़ लेना। अंदर जो इसके बात होगी, किसी दिन वह निकल आएगी, इसलिए इसे अभी अपने स्वरूप का ज्ञान नहीं हुआ परंतु यदि तुम कहो 'सत्य'। सत्य तो दुनिया सारी ही है। ये सत्य है, वह सत्य है और कीकर सत्य है, आम सत्य है। जितने दुनिया के आप गिन लो, उस सत्य (व्यापक परमेश्वर) को तुम नहीं हटा सकोगे? 'है' जो, वह सच है। सच तो सारे संसार में व्यापक है। हाँ! इतना हटा लोगे कि कीकर को छोड़कर आम कह दोगे, आम को छोड़ कर बेर का पेड़ कह दोगे। वह

तो बदलते जाँएगे परंतु सत्य तो नहीं बदलने वाला, वह कभी बदल नहीं सकता। सत्य कभी बदलता नहीं है। दूध (सार तत्व) का बदलाव नहीं होता। वह दही तब बनता है जब दूध नाश हो जाता है। अगर सत्य का बदला रूप आप संसार कहो तब तो सत्य समाप्त हो जाए, (परंतु) सत्य का कुछ नहीं बिगड़ता। वह जो जीव का भ्रम है, भ्रम के अनुसार यह जीव है। जीव 'चिदाभास' का नाम है। जीव कई तरह के हैं परंतु परमेश्वर की अचिंतनीय शक्ति है वह माया, जो सारे जीवों को चलाती है-

सरब भूत आपि वरतारा ।। सरब नैन आपि पेखनहारा ।।
सगल समग्री जा का तना ।। आपन जसु आप ही सुना ।।
आवन जानु इकु खेलु बनाइआ ।। आगिआकारी कीनी माइआ ।।
सभ कै मधि अलिपतो रहै ।। जो किछु कहणा सु आपे कहै ।।
आगिआ आवै आगिआ जाइ ।। नानक जा भावै ता लए समाइ ।।

(पृ. २६४)

इसलिए, यह एक खेल है 'माया'। इसकी जिम्मेवार है अचिंत शक्ति। और-

सभ कै मधि अलिपतो रहै ।। (पृ. २६४)

ये तो निर्लेप (राग-द्वेष से रहित) है, वह चेतन कभी लेप वाला नहीं हुआ। यदि चेतन लेप वाला हो तो आप सौ (१००) यज्ञ कर लो, फिर कौन-सा शुद्ध हो जाएगा। वह तो है ही शुद्ध। उसके बारे में, इनको भूल पड़ी हुई है जीवों को, भई! ये हो गया, वह हो गया, 'दृढ़ ज्ञान' नहीं है बस। इसलिए भाई! वह प्रेम जो है, जब आपमें पूरा प्रेम आ जाएगा तो अहंकार चला जाएगा। ये नियम है, प्रेम आया तो अहंकार गया। और दूसरी अहंकार की कोई दवाई नहीं। 'प्रेमा भक्ति' ही अहंकार की दवाई है अन्य कोई दवाई नहीं। आप चाहे सारे ग्रंथ पढ़ लो और ज्ञान होगा प्रेम के द्वारा। 'प्रेमा भक्ति' आएगी, फिर इसकी वृत्ति ज्ञान के आकार हो जाएगी, फिर इसे ज्ञान होगा-

मेरे गोबिद अपुने जन कउ देहि वडिआई ।।

हे मेरे गोविंद! हे परमेश्वर! अपने दासों को तू खुद ही बड़ाई (मान-सम्मान) दे सकता है, मुक्ति की। मान क्या है मोक्ष का? तू अपने दासों की मोक्ष खुद ही कर सकता है। इसका नाम 'भक्ति' है-

गुरमति राम नामु परगासहु

गुरुओं के उपदेश के द्वारा राम के नाम का प्रकाश कर दो। नाम नामी (परमात्मा) का अभेद (एक ही रूप) है। जब आपकी नाम के साथ वृत्ति जुड़ेगी, उसे समाधि कहते हैं। फिर दुबारा आपको अज्ञान नहीं होगा। 'निर्विकल्प समाधि' (जहाँ चेतन के सिवाय कोई न हो) में ये एक बार चला जाए, फिर इसे अज्ञान नहीं होता, है यह निर्विकल्प। इसलिए हे सतगुरु! हे परिपूर्ण परमेश्वर! हे गुरु! मेरे अंदर नाम का प्रकाश कर दो। 'राम' जो रमा हुआ (व्यापक) राम है, उसका प्रकाश कर दो-

रमत राम जनम मरणु निवारै ।। (पृ. ८६५)

'रमे हुए राम' के साथ जिसका मन लीन हो गया, तो जन्म-मरण उसका समाप्त हो गया। वृत्ति ने लीन होना है, 'निर्विकल्प समाधि' उसका नाम है, जहाँ विकल्प ना रहे। विकल्प क्या है, त्रिकुटि का नाम विकल्प है। ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय और ध्याता, ध्यान, ध्येय ये त्रिकुटियाँ हैं। इसे कहते हैं 'विकल्प न रहना' यानि स्वरूप का ज्ञान। वहाँ इसकी वृत्ति लीन हो गई, वृत्ति की तो सत्ता ही न रही। वृत्ति अलग नहीं है। वह (स्वरूप से) अलग होना वृत्ति का चला गया, इसे ज्ञान हो गया, ब्रह्म ज्ञान हो गया। ये बात है-

सदा रहहु सरणाई ।।

फिर परमेश्वर की शरण में रहो हमेशा। ये भक्ति है, फिर परमेश्वर की आज्ञा में रहो-

जो तुधु भावै साई भली कार ।। तू सदा सलामति निरंकार ।।

(पृ. ३)

फिर यहाँ (शरण में) रहो। फिर कभी न सोचो कि भई, ऐसे हो गया, वैसे हो गया, ये हो गया, वह आ गया। ये जितनी देर सोचता है, उतनी देर फँसा रहता है। जब ये परमेश्वर की शरण में चला गया फिर तो कोई बात ही नहीं है। वह श्री कृष्ण ने लिखा है ना-

सर्व धर्मान परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।।

अहं तवा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ।।

(गीता १८/६६)

वह जब पिछला प्रश्न हुआ, उसने कहा अर्जुन ने, मेरी गति नहीं हो सकती, मेरा मन नहीं टिकता। वह बोले, शरणागति आ जा। तू सोच छोड़ दे, तू कोई सोच न कर, तू तो शरण आ जा। जब ये परमेश्वर की शरण पड़ गया फिर इसे चिंता क्या है? फिर तो परमेश्वर जिम्मेवार है इसका। इसे कोई जिम्मेवारी नहीं फिर। इसका, शरण में पड़ना ही एक काम है-

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा ।।

(पृ. ५४४)

बस! शरणागति गया, परमेश्वर ने अपने साथ एक कर लेना है-

रहाउ ।।

'रहाउ' होता है रागियों के लिए कि भई, दो बार पढ़ो पहली पंक्ति-

इहु संसारु सभु आवण जाणा

ये संसार भाई! आने-जाने वाला है। इसने पैदा भी होते रहना है और मरते भी रहना है। ब्रह्म ज्ञानी के सिवाय जन्म-मरण और किसी का टूट नहीं सकता। चाहे कुछ कर ले-

मन मूरख चेति अजाणा ।।

हे अनजान, मूर्ख मन! परमेश्वर का चिंतन कर-

सिमरि सिमरि नाम बारंबार ।। नानक जीअ का इहै अधार ।।

(पृ. २९५)

बस, सिमरन ना ये कभी छोड़े। दो (२) इस गुरुघर के संकेत हैं, निष्काम सेवा और सिमरन। सेवा निष्काम करनी और सिमरन करना-

सेवा करत होए निहकामी ।। तिस कउ होत परापति सुआमी ।।

(पृ. २८६)

निष्काम सेवा करने वाले को परमेश्वर प्राप्त हो जाएगा। सेवा करने वाले का अंतःकरण शुद्ध हो जाएगा। शुद्ध (साफ) अंतःकरण में सिमरन चल जाएगा। इसे लक्ष्य हो जाएगा आत्मा का, भई, ये व्यापक है जो, साक्षी है, जो हर वक्त देखने वाला है, हर समय साक्षी है। दृष्टा से अलग जो ईश्वर है, वह मन द्वारा कल्पना किया गया है। ग्रंथकारों ने कहा, वह तो आपके

मन की कल्पना है, दृष्टा से अलग परमेश्वर दूसरा कौन है? एक है ईश्वर। दो (२) चार (४) चेतन हों तो आप कहो। साक्षी से अलग कौन होगा? साक्षी आपका हर वक्त है, नहीं हट सकता, आप जोर लगा लो, चाहे ज्ञानी है चाहे अज्ञानी है। जब आप कल्पना करोगे, उसने (साक्षी ने) देखते रहना है फिर आप तंग आकर कहते हो, ऐसे ही बेकार बातें की। वह देखने वाला है या नहीं, अंदर बैठा? आपका अपना-आप तो साक्षी है, आप जीव तो हो नहीं। जब साक्षी का ज्ञान हो गया, दृष्टा (देखने वाला) का ज्ञान हो गया, पारख (सही-गलत परखने वाला) का ज्ञान हो गया, फिर जीव कहाँ रहा?-

नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ ।। (पृ. १४४)

पारख तो खुद है परमेश्वर, जिसने खोटे-खरे की पहचान की है। जो सारे ख्यालों को जानता है अच्छे-बुरे को, उसे 'पारख' कहते हैं। ये खुद नहीं जानता? अपने सब ख्यालों को जानता है। इसे पूछ लो तेरा क्या ख्याल था? जी! कल मेरा ये ख्याल था, आज ये ख्याल है। दूसरे को तो पता ही नहीं चलता पर इसे ये नहीं पता कि मैं दृष्टा हूँ, साक्षी हूँ, पारख हूँ। ये समझता है, मैं जीव हूँ। इसे कहो, जीवपना कैसा? साक्षी में जीवपना होता ही नहीं, ये नियम है। साक्षी तो विशेष का नाम है, वह तो 'उपहित' है, उपाधि वाला है। जितनी देर संसार है, उपाधि रहेगी। उपाधि मिथ्या है, झूठ है, जड़ है। ये (संसार सारा) तो परता-प्रकाश है, स्वयं-प्रकाश तो वह आप है, अन्य सब परता-प्रकाश हैं। इसलिए इस को अपने-आप की समझ नहीं आई। साक्षी तो ये हर समय है। जिस दिन इसे अपने साक्षी, दृष्टा (देखने वाला), पारख (सही-गलत परखने वाला), अपने-आप का पता लग गया-

नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ ।। (पृ. १४४)

दाना बीना साई मैडा नानक सार न जाणा तेरी ।। (पृ. ५२०)

वह 'दाना' जो जानने वाला हर एक ख्याल को और 'बीना' देखने वाला, वह है साईं। भाई वीर सिंह ने लिखा है, साईं साक्षी रूप में सब के अंदर हाज़िर है। भाई साहिब ने लिखा है वहाँ बड़ा अच्छी तरह। उसने वहाँ बड़ी अच्छी तरह कहा, हे हरि! हे परमेश्व! दया करो, हे साईं! कोई ऐसा पूर्ण पुरुष मिला दो, जो ईश्वर का प्यारा हो, जिसे पूर्ण ब्रह्म ज्ञान हो-

ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर ।।

नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर ।। (पृ. २७३)

ये तो फैसला कर गए हैं गुरु साहिब। वह तो आप परमेश्वर है–

ब्रहम गिआनी का सगल अकारु ।।
ब्रहम गिआनी आपि निरंकारु ।।
ब्रहम गिआनी सभ स्रिसटि का करता ।।
ब्रहम गिआनी सद जीवै नही मरता ।। (पृ. २७३)

उसका जन्म-मरण नहीं होता कभी, वह तो–

गुरु कुंजी पाहू निवलु मनु कोठा तनु छति ।।
नानक गुर बिनु मन का ताकु न उघड़ै अवर न कुंजी हथि ।।

(पृ. १२३७)

दूसरे किसी के हाथ में चाबी ही नहीं है। वह गुरु मुझे मिला दे, जो खुद ईश्वर के साथ जुड़ा हुआ हो। वह गुरु अमरदास थे, इनको (गुरु रामदास जी को) मिले। इनके (गुरु रामदास जी के) गुरु अमरदास महाराज थे–

ता हरि नामि समाणा

तो फिर मैं 'हरि' के नाम का सिमरन करूँगा, तो फिर मेरा सिमरन एक रस चलेगा। आपको पता है इस बात का? तीसरे पातशाह ने लिखा है–

नानक गुर ते गुरु होइआ वेखहु तिस की रजाए ।। **(पृ. ४६०)**

गुरु के साथ मिलकर, कहते हम गुरु हो गए, देखो परमेश्वर की इच्छा। इसलिए, भाई! हम परमेश्वर का सिमरन करेंगे, फिर सारा (संसार) तो झूठा हो गया, जड़ हो गया, पर-प्रकाश हो गया और स्वयं-प्रकाश तो यह खुद है, और तो स्वयं-प्रकाश कुछ है नहीं, वह स्वयं प्रकाश है। इसलिए–

साक्षी ब्रह्म स्वरूप इक, नही भेद को गंध ।
राग द्वेष मति के धर्म, ता मै मानत अंध ।

(निश्चलदास, विचार सागर २/१२)

वह (साक्षी और ब्रह्म का भेद) अज्ञानी मानते हैं, निश्चल दास लिखते हैं। वह कहते, वह तो एक है और व्यापक है। वह जो साक्षी है, वह तो व्यापक (हर जगह, हर समय, हर वस्तु में हाज़िर) है। वह साक्षी की व्यापकता पर थोड़ा ज़ोर है। पहले साक्षी, ये आप है। इसे अपने-आप की इतनी पहचान ही नहीं हुई। वह आपकी वृत्ति का साक्षी, चेतन, खुद नहीं हैं?

यदि न हो तो वृत्ति को देखे कौन और जाने कौन? इसलिए भाई! वह व्यापक है–

जिस की वथु सोई प्रभु जाणै

ये जिसकी वस्तु है 'आत्म-वस्तु' वह 'सोई' जानता है। उसने लिखा है-रामतीर्थ ने। उसे कहते, सब का अधिकार है 'आत्मा' में? वह कहता, जन्म सिद्ध अधिकार है सब का। 'आत्मा' अपना-आप है, किसी की चीज तो है नहीं। वही निश्चल दास लिख गए हैं। वह कहता, 'आत्मा' इसका अपना-आप है या किसी दूसरे का है? कहते, खुद ये आत्म-रूप नहीं? फिर, इसका कब्जा है। ये कब्जा खुद ही छोड़ दे तो छोड़ दे। 'आत्मा' तो इसका अपना-आप है। यदि दूसरे पर कब्जा करे तो बड़ी बुरी बात होती है, ये (आत्मा) तो स्वतः-सिद्ध है, जन्म से ही अधिकार मिला है। रामतीर्थ कहता, 'आत्मा' इसका अपना-आप है, किसी (और) का नहीं है। इसलिए, सब का अधिकार (हक) है। इसलिए शूद्रों का, मुसलमानों का, सब का इस में अधिकार है। कोई जीव नहीं, जिसका इस पर अधिकार न हो परंतु मनुष्य को ये बात विशेष दी है–

भई परापति मानुख देहुरीआ ।। गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ।।

(पृ. १२)

भई, ये तेरी बारी (समय) है गोविंद को मिलने की। मनुष्य को कह दिया, तू उसे (गोविंद को) मिल, तू ये मौका मत गँवा देना ऐसे ही, नहीं तो तू धक्के खाएगा–

जिस नो देइ सो पाए ।

जिसे वह कृपा करके दे, वह अपनी आत्म-वस्तु को पाएगा। और नहीं कोई पाता, वह खुद ही पा लेता है–

मूई सुरति बादु अहंकारु ।। ओहु न मूआ जो देखणहारु ।।
जै कारणि तटि तीरथ जाही ।। रतन परादथ घट ही माही ।।
पड़ि पड़ि पंडित बादु वखाणै ।। भीतरि होदी वसतु न जाणै ।।

(पृ. १५२)

वह पंडित, षट-शास्त्री (शास्त्रों का जानकार) गुरु जी को कहता, जी! आप नहीं मरोगे?

हउ न मूआ मेरी मुई बलाइ ।। ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ ।।
कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ ।। मरता जाता नदरि न आइआ ।।

(पृ. १५२)

पंडित! तुझे पता नहीं लगा, तू ऐसे ही वाद-विवाद करता रहा, तूने अपनी वस्तु को नहीं पहचाना। 'आत्म-वस्तु', 'आत्मा' नाम है अपने-आप का। तेरे पास तेरी अपनी वस्तु है, तुझे पहचान नहीं आई। ऐसे ही धक्के खाता रहा सारी जिंदगी वाद-विवाद में-

वसतु अनूप अति अगम अगोचर

वह 'वसतु अनूप' अनुपम वस्तु की कोई तुलना नहीं। वह अगम है, मन-वाणी से दूर है, इद्रियों से वह नहीं जानी जा सकती है। वह मन-वाणी के विषयों के द्वारा, इंद्रियों के द्वारा, वह किसी के द्वारा नहीं जानी जाएगी। एक 'शब्द' (नाम) रखा उसके लिए, बस। वह एक था, 'घीसा पंथी'। वह बड़ा कीर्तन करते हैं इकट्ठे होकर सभी। वह खजान कहता होता था कभी-कभी ओए! मार शब्द की चोट इस (मन) को, कब से ये (विषयों आदि में) अटका पड़ा है। वह जब कीर्तन कर रहे थे। जब कीर्तन चलता था, मैं भी देख रहा था। वह फिर खजान बोलता, कहता, मार शब्द की चोट इसको, कब से ये (विषयों आदि में) अटका पड़ा है। ये शब्द है, 'तत्वम् असि'। 'तत्व तू हैं' तू तत्व हैं, बात निपटी। 'तत्वम् असि' तू है तो वही। एक राम सिंह था, बड़ा समझदार। लोग उसे ब्रह्म ज्ञानी मानते थे। एक खजान था, बड़े लोग (उसके पास) इकट्ठे होते थे। मैंने उसे कहा, जब दलीसपुर गया। मैंने कहा राम सिंह से, तू कीर्तन करा उन (घीसा पंथियों) का। वह (राम सिंह) कहता, वे (घीसा पंथी) तो धरती से बाहर (परमेश्वर) बोलते हैं। मैंने कहा, वे बाहर क्या बोलते हैं? वेदांत के अनुसार बोलते हैं वो। उस घीसे (संत) ने वेदांत बहुत लिखा है, वही उनको (घीसा पंथियों को) याद था ज्यादा। मैंने कहा, तू (कीर्तन करने के लिए) कह दे, और तू अपनी तैयारी कर। उसने कह दिया। वह (घीसा पंथी) कहते, हम आँएगे। उनमें से एक कहता, वह (राम सिंह) तो डरता है, रामायण को मानने वाला है, उसने नहीं मानना। मैंने कहा, मना लेंगे। वह (घीसा पंथी) आ गए, जब कीर्तन करने लगे, मुझे राम सिंह कहता,

जी! ये धरती से बाहर ईश्वर कहते हैं। मैंने कहा, तू गिरता नहीं, बैठा रह। हम ऊपर बैठे हैं। इस तरह, वे कीर्तन बड़ा सुंदर करते थे मिलकर। बड़े साज़-बाजे वगैरह होते थे उनके। जब कीर्तन तेज़ हो जाता था, वह कहता खजान सिंह, मार दे चोट शब्द की, कब से ये मन (विषयों आदि में) अटका पड़ा है, मार ओए! शब्द की चोट। फिर वह शब्द बोलता था। एक उनमें से ज्ञान का बड़ा सुंदर शब्द बोलता था। कबीर की वाणी ज्यादा बोलते थे। मैं वही था रतलाम (राजस्थान) में। वहाँ वो एक मंदिर में कीर्तन करते थे। एक दिन कबीर पंथी आ गया। उसने ऐसा शब्द बोला (कि सब में परमेश्वर है) ना धरती, ना जल, कुछ नहीं छोड़ा, (सब को गिना) वह ले गया अखिर तक। वे सारे, मेरी तरफ देखने लगे। मुझे कहते, महाराज! अब क्या करें? मैंने कहा, कुछ नहीं हुआ, ये कबीर पंथी हैं, कबीर का शब्द है, तुम अपना बाजा बजाओ, गाओ, कोई बात नहीं है। उसने शब्द ऐसा लंबा बोला, वह कबीर के शब्द ऐसे हैं। इसलिए, भाई! वह परमेश्वर व्यापक है, परिपूर्ण है, अगम है, अगोचर है, आपका अपना-आप है। ये भी साथ बात है आपका अपना-आप कोई छीन नहीं सकता, जोर लगा लो। 'आत्मा' अपना-आप है। वह गुरु साहिब ने कहा पंडित को, आत्म-वस्तु तो तुझे प्राप्त ही नहीं हुई, पंडित! हमें तो प्राप्त है। हमारा जन्म-मरण नहीं है-

गुरु पूरा अलखु लखाए ।।

वह पूरा गुरु 'अलख' को दिखाएगा, बस! वह 'अलख' खुद परमेश्वर है, 'चेतन' भी खुद है। क्यों? चेतन किसी का नाम नहीं है, न लक्ष्य (वाचक) है। चेतन तो किसी पद का वाचक नहीं, 'विशेष' वाचक होता है। इसलिए, वाचक तो ये है नहीं किसी पद का, लक्ष्य है। उस लक्ष्य को पूरा गुरु दिखा देगा। भई, वह तेरा आपा है, वह आत्मा है, वह व्यापक है। तेरा अपना-आप व्यापक है, तू साक्षी है, तू दृष्टा है, तू पारख है, तू देख अपना-आप, तू हर एक ख्याल को देखता-जानता नहीं है? वह कहेगा, देखता हूँ। वह कहते, यही तो साक्षी है, जो हर एक ख्याल को देखता है, जानता है, यही तो साईं है, यही तो सब के अंदर बैठा है साक्षी रूप में, और दूसरा कौन है? वह 'आचार्य' रजनीश भी यहाँ आकर साक्षी में रूकेगा। उस 'मैं' को देखा है कि

नहीं उस ने? वह भी यहाँ (साक्षी में) आकर रुकेगा–

जिनि इह चाखी सोई जाणै

जिसने ये बात 'जान ली', वही समझता है, जिसने इसे अंदर समा लिया–

गूंगे की मिठिआई ॥

अब कह तो सकते नहीं, कि भई परमेश्वर कैसा है, यह तो गूँगे की मिठाई है। वह अगम है, अगाध है, अलख है। इसलिए, कह तो आप सकते नहीं। यह तो गूँगे की मिठाई है। जिस तरह, गूँगे को शक्कर, गुड़ कुछ खिला दो, खुश होकर सिर आदि तो हिला देगा परंतु कुछ कह तो नहीं सकता। इसी तरह, वह परमेश्वर अगम, अगाध वस्तु है। यही आपका 'अपना आप' है, यही आत्मा, यही परमात्मा–

जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई ॥
एको अंम्रित बिरखु है फलु अंम्रितु होई ॥ (पृ. ४२१)

आत्मा ही परमात्मा है–

कई कोटि प्रभ कउ खोजंते ॥ आतम महि पारब्रहमु लहंते ॥

(पृ. २७६)

गुरु साहिब कहते, कई करोड़ (लोग) परमेश्वर को खोजने चले परंतु वह परमेश्वर, व्यापक, आत्मा में से मिला। दूसरी किसी जगह से मिलता ही नहीं है। आत्मा ही परमात्मा है–

रतनु लुकाइआ लुकै नाही

वह शुद्ध 'रतनु' जो आपका अपना आप है 'परमेश्वर', आपके अंदर है, वह छिपाने पर छिपता नहीं, उसके सहारे तो सारी दुनिया है। वह बुल्लेशाह लिखता है, कहता है–

ओए तेरे आसरे कुल जहान सारा ।

वह कहता, पीछे क्यों हटता है? (हे परमेश्वर!) तेरे आसरे तो सारे चलते हैं। ये चेतन, इसका प्रकाशक है। ये चेतन ही अधिष्ठान (मूल आधार) है, चेतन ही आधार है, चेतन ही इसका नियंता (नियम में चलाने वाला) है–

जे को रखै लुकाई ॥

यदि कोई छिपा के रखेगा, तो ये छिपने वाली वस्तु नहीं है। इसे कोई छिपा नहीं सकता, ज्ञान को। ज्ञान के बिना आपका काम ही नहीं चलता। ज्ञान के बिना आप, वृत्ति को नहीं देख सकते। ज्ञान के बिना, ख्यालों को नहीं देख सकते, ज्ञान के बिना क्या करोगे? वृत्ति के साक्षी आप खुद हो और वृत्ति में बैठा वो, सारे व्यापक है। वृत्ति में भी तो आप बैठे हो–

सभु किछु तेरा तू अंतरजामी

सब कुछ, हे परमेश्वर! तेरा है, तू अंतर्यामी है–

राखा एक हमारा सुआमी ।। सगल घटा का अंतरजामी ।।

(पृ. ११३६)

तू सब का अंतर्यामी है। आप में भी तो अपने अंदर की बात जानने की शक्ति है, परंतु आपकी ये शक्ति ढकी हुई है। भूल है, उस भूल में आपकी बुद्धि, ऐसी फँस चुकी है, आपकी-हमारी भूल हमें छोड़ती नहीं। हाँ, यदि कोई उस भूल को (छोड़ने) के लिए कहे तो फिर कौन-सा ये भूल छोड़ देते हैं? बिल्कुल नहीं छोड़ते, बल्कि उसे ही गलत कहेंगे–

तू सभना का प्रभु सोई ।।

तू सब का है (हे) मालिक! सब के अंदर आत्मा रूप में बैठा है। वह जीव सब तेरे हैं! अध्यस्त, अधिष्ठान का स्वरूप होता है। गहना जो होगा सोने का, वह सोना ही होगा, जब तोड़ दोगे फिर वह सोने का सोना ही है। इस प्रकार, ये सब कल्पना है। आपका अपना-आप ठीक वैसा है, सोने की तरह–

जिस नो दाति करहि सो पाए

जिस के ऊपर वह 'दाति' (बख्शिश) की कृपा करे, वह पुरुष पाएगा। परमेश्वर की कृपा, 'अनुग्रह' बड़ी ऊँची चीज है। जिसके ऊपर वह करेगा, वह पा लेगा–

जन नानक अवरु न कोई ।।

गुरु साहिब जी चौथे पातशाह कहते, उस परमेश्वर के बिना दूसरा कोई नहीं है–

एकंकारु अवरु नहीं दूजा नानक एकु समाई ।। (पृ. ६३०)

दूसरा कोई है नहीं, सत्ता ही नहीं है। सत्ता तो इसकी अपनी ही है परंतु अपनी सत्ता को ये खो बैठा, सत्ता तो इसकी (आत्मा की) ही है। ना प्राणों की सत्ता, ना बुद्धि की सत्ता, ना इद्रियों की सत्ता, ना मन की सत्ता, ना शरीर की सत्ता, किसी की सत्ता नहीं है। इसलिए, वह सत्ता इसकी (आत्मा की) है-

सभु किछु तेरा तू अंतरजामी तू सभना का प्रभु सोई ।।
जिस नो दाति करहि सो पाए जन नानक अवरु न कोई ।।

बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु !

❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

16

सलोक महला ३ ।।
गुर सेवा ते सुखु ऊपजै फिरि दुखु न लगै आइ ।।
जंमणु मरणा मिटि गइआ कालै का किछु न बसाइ ।।
हरि सेती मनु रवि रहिआ सचे रहिआ समाइ ।।
नानक हउ बलिहारी तिंन कउ जो चलनि सतिगुर भाइ ।।१।।
मः३।। बिनु सबदै सुधु न होवई जे अनेक करै सीगार ।।
पिर की सार न जाणई दूजै भाइ पिआरु ।।
सा कुसुध सा कुलखणी नानक नारी विचि कुनारि ।।२।।
पउड़ी ।। हरि हरि अपणी दइआ करि हरि बोली बैणी ।।
हरि नामु धिआई हरि उचरा हरि लाहा लैणी ।।
जो जपदे हरि हरि दिनसु राति तिन हउ कुरबैणी ।।
जिना सतिगुरु मेरा पिआरा अराधिआ तिन जन देखा नैनी ।।
हउ वारिआ अपणे गुरू कउ जिनि मेरा हरि सजणु मेलिआ सैणी ।।२४।।

(पृ. ६५१)

सारी संगत किरपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु ! सतिनामु श्री वाहिगुरु !!

नानक अंगद को बपु धरा ।। धरम प्रचुरि इह जग मो करा ।।
अमरदास पुनि नामु कहायो ।। जन दीपक ते दीप जगायो ।।

(दसम ग्रंथ)

गुरु अंगद देव जी ने ऐसी कृपा की, इनको (अमरदास जी को) गुरु बना दिया-

नानक गुर ते गुरु होइआ वेखहु तिस की रजाइ ।। (पृ. ६५१)

(गुरु अमरदास जी कहते) ईश्वर की इच्छा देखो, गुरु के साथ मिलकर, मैं गुरु बन गया। ये (श्री गुरु अमरदास जी) भरत (श्री राम के छोटे भाई)

की कुल में से थे, 'भल्ले' थे। भल्ले, भरत की संतान हैं। इसलिए, भरत कुल में से भल्ले थे, बड़े पवित्र थे, महापुरुष थे, भरत बड़ा ही भक्त था। जब हम वहाँ गए, उन्होंने दिखाया भई, ये भरत के चरणों के निशान लगे हुए हैं। इतना उसका प्रेम था, वह पत्थर पिघल गया था। उसी कुल में से थे अमर देव जी महाराज, भल्ले थे। ये, आपको पता है? (अमरदास जी) पहले गंगा जी के उपासक थे। इक्कीस (२१) बार ये गंगा (हरिद्वार) पैदल चलकर गए और पैदल आए। एक बार इन्हें एक ब्रह्मचारी मिल गया, उसके साथ इनका बड़ा दिल मिल गया, इकट्ठे रोटी पकाकर खाते रहे। जब ये (यात्रा के बाद) अलग होने लगे तो उस (ब्रह्मचारी) ने पूछा, तेरा गुरु कौन है? ये (गुरु जी) कहते, मैं तो गंगा को मानता हूँ, मेरा और तो कोई गुरु नहीं। उसने कहा, गंगा एक पवित्र नदी है, पवित्र है, ठीक है और ब्रह्मा के चरणों का जल इसमें आया है, ठीक है, पर ये गंगा तेरी मोक्ष नहीं कर सकेगी, ये बड़ी पवित्र तो है। तुम भजन-पाठ करने वाले तो हो और मैं प्रायश्चित करूँगा, और तू गुरु धारण कर, जा। इस सोच में (अमरदास जी) घर पहुँचे। एक चारपाई पर बैठे और सारी रात वहीं बैठे रहे चारपाई पर, जिस पर कुछ बिछा भी नहीं था। बीबी अमरो जी, थी वह गुरु अंगद देव की बेटी, इनके भतीजे की पत्नी थी, इनके भतीजे के साथ उसकी शादी हुई थी। वह जब सुबह उठकर दही बिलोने (रिड़कने) लगी, उसने ये शब्द पढ़ा-

भइया मनूरु कंचनु फिरि होवै जे गुरु मिलै तिनेहा ॥
एकु नामु अंम्रितु ओहु देवै तउ नानक त्रिसटसि देहा ॥

(पृ. ६६०)

गुरु साहिब (गुरु अमरदास जी) ने पूछा, बेटी! ये किसका शब्द है? उसने कहा, जी! ये गुरु नानक देव महाराज का शब्द है। पूछते, अब कहाँ है? उसने कहा, मेरे पिता खडूर साहिब में हैं, उनकी (श्री गुरु नानक देव जी की) गद्दी पर हैं। इसलिए अब मेरे पिता 'गुरु' हैं, गुरु अंगद देव जी। (श्री गुरु अंगददेव जी) पहले रिश्तेदार तो थे, शादी हुई, (पर) पहले इन (गुरु अमरदास जी) को ये पक्का नहीं था कि ये किसी पदवी के मालिक हैं, महापुरुष हैं और ईश्वर हैं। (गुरु अमरदास जी) सेवक भी नहीं थे, वह

तो बारह (१२) साल गागर ढोकर ही शक्ति आई है इनमें। इसलिए, पहले सेवक नहीं थे। जब गुरु साहिब, अपनी गागर (पानी भरने के लिए घड़ा) लाकर वहाँ टिकाते थे, जहाँ अब दमदमा साहिब है, करीर (एक पेड़) के नीचे दम लेते थे। जब पूरे बारह (१२) साल हो गए, एक वहाँ हठ-योगी की हड्डी पड़ी थी, उनका (गुरु अमरदास जी के पैर का) अगूँठा छू गया, वह (हठ-योगी) खड़ा हो गया, भई! आप का चरण छूने से, मेरी मोक्ष हो गई, आप बड़े पूर्ण हो। उन्होंने कहा, मैं तो बारह (१२) साल से यहाँ खड़ा होता था। (योगी) कहता, आपको पता नहीं, आज वह शक्ति आपके पास आ गई है। ये आपको खुद ही पता लग जाएगा। आज आपका कोर्स पूरा हो गया, आज आपके पास ये शक्ति आ गई है। अब जो आपके सामने आएगा, जिस पर भी निगाह पड़ेगी, वह पवित्र हो जाएगा। यदि श्रद्धावान होगा, वह मुक्ति को प्राप्त हो जाएगा। वह (अमरदास जी) चले गए। आगे उस जुलाहिन का प्रंसग हो गया। उनको (अमरदास जी को) ठोकर लगी, गागर का पानी गिरने नहीं दिया, घुटनों के बल गिरे। उस जुलाहे ने पूछा, ये कौन है? जुलाहिन कहती, निथावां, निमाना 'अमरू' (गुरु अमरदास जी) है और उनका (गुरु अंगददेव जी का) समधि है और इस वक्त तो ये गागर लाता है व्यास नदी से, दिन में झाड़ू मारता है और बर्तन माँजता है। उस जुलाहे ने कहा, इतनी उम्र में भी ये काम करता है? ये बात हुई और गुरु (अंगद देव) साहिब ने पहले ही तैयारी की हुई थी, गद्दी देने की, सब कुछ ठीक था। बाबे बुड्ढे जैसे को कह दिया था। और आधी गागर के साथ खुद (गुरु अंगद देव जी) ने स्नान कर लिया और आधी गागर के साथ (अमरदास जी को) कहा, हे पुरुष! तू (स्नान) कर ले, इन्होंने (अमरदास जी ने स्नान) कर लिया। वह जब आए स्नान करके तो गुरु जी कहते, बैठ जाओ गद्दी पर। ये गद्दी पर बैठ गए। उस समय उस जुलाहे और जुलाहिन को बुलाया, वे दोनों डर गए कि अब क्या होगा? इनका (गुरु अंगद देव जी का) जो वचन निकल जाता है, वह सच हो जाता है। उन्होंने (गुरु अंगद देव जी ने) कहा, कुछ नहीं, तुम अब वह (सुबह वाली) बात दुबारा कह दो। जुलाहिन ने वही (सुबह वाली) बात कह दी। गुरु साहिब ने कहा, ये निमानों का मान, निथावों का थाव, नितानों का तान, निधिरयों

की धिर (निराधारों का आधार), निआसरों का आसरा है। बाइस (२२) वरदान दिए और बाबे बुड्ढे को साफ कह दिया भई! तिलक कर दे। उन्होंने तिलक कर दिया। ये (अमरदास जी) गद्दी के मालिक हो गए। गद्दी के मालिक होने से उनको गुरुवाणी आ गई। ज्योत जहाँ आ जाती है, वहाँ गुरुवाणी आ जाएगी। वह तो जागती ज्योत है-

गुर जोति अरजुन माहि धरी ।। (पृ. १४०६)

उन गुरु रामदास ने लोगों को तारने के लिए, गुरु ज्योत अर्जुन में रखी। वह ज्योत अब दुनिया को तारने के लिए, गुरु अंगद देव वाली, इनमें (गुरु अमरदास जी में) आ गई। ये दुनिया के जगत गुरु बन गए। इनके द्वारा जो वाणी आई, अब आप सुनो-

सलोक महला ३ ।।

तीसरे पातशाह (श्री गुरु अमरदास जी) इसमें अपना, अनुभव जो है, कथन करते हैं-

गुर सेवा से सुखु ऊपजै

भाई! सुख, जो आत्म-सुख है, गुरु की सेवा से पैदा होता है, ये नियम है। दूसरे विषयों (वस्तुओं) का यहाँ कोई प्रसंग नहीं है, मतलब नहीं है। ये आत्म-सुख हमेशा ही गुरु कृपा से, वह आत्म-सुख पैदा होगा। कबीर ने लिखा है-

किआ नागे किआ बाधे चाम ।। जब नही चीनसि आतम राम ।।

(पृ. ३२४)

जब तक तू अपनी आत्मा को, व्यापक नहीं जानता, तब तक तेरा कोई काम सिद्ध (पूरा) नहीं होगा, चाहे तू कुछ बना रहे-

चीनत चीतु निरंजन लाइआ ।। कहु कबीर तौ अनभउ पाइआ ।।

(पृ. ३२८)

जब (व्यापक की) पहचान करके, इसका चित्त परमेश्वर के साथ जुड़ गया, फिर इसे अनुभव प्राप्त हो जाएगा। क्यों? वह जो वृत्ति (ख्याल) है, वह चित्त तक है। चित्त जो है मिट जाता है, मन तक मिट जाता है। मन तो चित्त तक है, वह तो लीन हो जाता है। वहाँ वह ज्योति-स्वरूप के साथ एक हो जाता है। इसे ज्योत प्रकट हो जाती है-

जो इहु जाणहु सो इहु नाहि ।। (पृ. ८८५)

जिसे तुम ईश्वर जानते हो, वह ईश्वर नहीं है। वह तो ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय और ध्याता, ध्यान, ध्येय है। ये तो त्रिकुटियाँ हैं सारी, त्रिकुटियाँ कल्पना हैं। ये कल्पना में इधर (संसार में) चला गया। ये कीकर है, फलां, इत्यादि। वह 'है' जरूर पकड़ेगा साथ में। क्यों? सत्य तो 'है', सत्य तो कभी मिट नहीं सकता। जो आप बात बोलोगे उसमें से 'सत्य' नहीं आप हटा सकते। ये कीकर है। 'है' तो सत्य है। पीपल है, पीपल कहने से कीकर हट गया, पीपल रह गया। बेर है, बेर कहो तो पीपल हट गया। पर 'है' तो नहीं गया, 'है' तो सत्य है, सत्य को आप कभी समाप्त नहीं कर सकते, चाहे पढ़ा-लिखा हो, चाहे अनपढ़ हो। सत्य तो सब जगह है। सत्य तो व्यापक है, पर आपको ये नहीं पता कीकर सत्य है या आत्मा-परमात्मा सत्य है। वह 'है' जो है, असल में वह चेतन है, वह सत्य है। कीकर तो सत्य नहीं है, पीपल सत्य नहीं है, ये तो बदलने वाले हैं, ये 'है' नहीं बदलेगा, इस करके अंदर है 'सोए स्वरूप'। इसलिए, सुखमनी में भी लिखा है 'सोए'। वह कहता, 'सोए' क्या? 'सोए स्वरूप'। वह 'सोए स्वरूप' तेरा 'अपना आप', अज़र (कभी बूढ़ा न होने वाला) है, अमर (कभी न मरने वाला) है। वह (सोए स्वरूप) कभी नहीं हटेगा पर तुझे पता नहीं भई मैं क्या हूँ? यहाँ तक तो तू कहेगा 'अहम् अस्मि'। आगे नहीं तुझे पता, मैं क्या कहूँ? आगे है 'अहम् ब्रहम् अस्मि'। मैं पंडित हूँ, फलां इत्यादि, ये तो तू लगाता है, 'अहम् अस्मि' तक हो गई, 'मैं हूँ'। वह 'हूँ' का तुझे नहीं पता, मैं कौन हूँ। वह त्रिकुटी का साक्षी, चेतन है, वह ज्ञाता है। विषय (वस्तु), वृत्ति (ख्याल) और अंतःकरण (मन, बुद्धि आदि) ये तीनों विषय हैं। ये तो माया के काम है पर जो इनका प्रकाशक (प्रकाश देने वाला), साक्षी, दाना-बीना (देखने-जानने वाला), पारख (सही-गलत परखने वाला) है, कबीर साहिब कहते, वह तो नहीं कभी हटता है। कबीर ने सारा ज़ोर लगाया, उसने कहा, ओए! पारख से आगे कोई चीज नहीं है। ये उसके (पारख के) पहले हमने कहना है जो कुछ कहना है। वह पारख है-

नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ ।। (पृ. १४४)

कबीर ने तो बहुत लिखा है। गुरु साहिब जी लिख गए, पारख परमात्मा

खुद है, दूसरा कोई पारख नहीं। 'आपा' नाम है परमेश्वर का, चेतन का, आत्मा का। इसलिए ये जो त्रिकुटी है, ये तो मिथ्या है। विषय तीन गुणों का होता है हमेशा, ये नियम है और वृत्ति (ख्याल) रजो, तमो, सतो, तीनों की बनी होती है। अंतःकरण आपका जो है, वह प्रधान है। खेत, खाल (वह नाली जिस में से खेतों में पानी जाता है) और चौबच्चा (वह टैंक जहाँ कुएँ का पानी इकट्ठा होता है) ये तीन हैं, ये कभी एक नहीं हो सकते परंतु पानी तो तीनों में एक है। जो क्यारियों में है, वही खाल में है। जो खाल में है, वही चौबच्चे में है और कुएँ में है 'चौथा'। इसलिए-

जो इहु जाणहु सो इहु नाहि ।। जानणहारे कउ बलि जाउ ।।

(पृ. ८८५)

आपके अंदर एक जानने वाली वस्तु भी तो है? जो (जानने वाली वस्तु) बैठी है, उस पर आप कुर्बान हो जाओ। जितनी देर आप त्रिकुटी में रहे, आपका जन्म-मरण कोई तोड़ नहीं सकता-

रज गुण तम गुण सत गुण कहीऔ इह तेरी सभ माइआ ।।

(पृ. ११२३)

ये तीनों गुण तो माया हैं-

चउथे पद कउ जो नरु चीन्है तिन्ह ही परम पदु पाइआ ।।

(पृ. ११२३)

ये तो 'चौथा पद' है। 'चौथा पद' आपका अपना 'आपा' है। वह कभी, न रजो गुण हो सकता है, न तमो गुण, ना सतो गुण हो सकता है। माया तो समाप्त हो गई यहाँ तीनों गुणों की। चौथी अवस्था में आकर माया तो खत्म हो गई, अविद्या खत्म हो गई, सब समाप्त हो गया। परंतु तुम तो 'चौथे' हो और वह (चौथा) तो साक्षी है। वहाँ (चौथे पद में) तो ईश्वर-साक्षी है, चाहे वह बड़ी उपाधि वाला, चाहे छोटी उपाधि वाला। साक्षी तो लक्ष्य होता है, वह किसी पद (अवस्था) का वाचक तो नहीं हो सकता। 'निराकार' किसी पद का कभी वाचक नहीं हुआ आज तक, न हो। वह तो लक्ष्य है, लक्ष्य एक है। वह आपका अपना आप है-

जो इहु जाणहु सो इहु नाहि ।। (पृ. ८८५)

जो आपके जानने में आती है 'त्रिकुटी', ये ईश्वर नहीं है-

जानणहारे कउ बलि जाउ ॥ (पृ. ८८५)

जो जानने वाला परमेश्वर है, आपके हृदय में बैठा है–

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ॥

कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ॥ (पृ. १४२७)

इसके बारे में सब ने लिखा है। कबीर ने भी लिखा, कृष्ण भगवान ने भी लिखा है। उन्होंने लिखा–

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति ।

भ्रामयन सर्व भूतानि यंत्रा रूढानि मायया । (गीता १८/६१)

हे अर्जुन! तेरे हृदय देश में बैठा है ईश्वर, और तो कहीं है नहीं। ये दृष्टा से अलग 'ईश्वर', मन से कल्पना किया हुआ होता है। इसलिए पतंजलि और कपिल मुनि ने ईश्वर नहीं लिखा। वह कहते, ईश्वर क्यों लिखें? जब पतंजलि ने कपिल को कहा, ईश्वर क्यों नहीं लिखा? वह कहता, साक्षी से अलग, ईश्वर कहीं है नहीं, क्यों लिखूँ मैं? वह जैनी जो हैं, उस बड़े (हंस) ने लिखा, उसने आत्मा तो लिख दिया, परमात्मा नहीं लिखा। वे अभी तक जैनी उसी बात पर खड़े हैं। आप जोर लगा लो, मेरी बातचीत हुई, उनका एक बड़ा कीर्तनिया कथा करता था, कहता, बात तो ठीक है। पंतजलि ने ईश्वर नहीं लिखा, कपिल ने ईश्वर नहीं लिखा, जैमिनी ने ईश्वर नहीं लिखा। जैमिनी ने मंत्र को ही मुख्य रखा, मंत्र को जपते जाओ, ये आपको स्वर्ग में ले जाएगा। ये कहते, 'ईश्वर' साक्षी है, कपिल कहता, क्यों लिखा जाए दो बार? आत्मा-परमात्मा है–

जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई ॥

एको अंम्रित बिरखु है फलु अंम्रितु होई ॥ (पृ. ४२१)

आतमा परातमा एको करै ॥ अंतर की दुबिधा अंतर मरै ॥

(पृ. ६६१)

वह (कपिल मुनि) कहता, साक्षी से अलग जो आप ईश्वर कहोगे, वह तो कल्पित है, आपके मन की कल्पना है। दृष्टा से अलग जो आप ईश्वर कहोगे, वह भी आपके मन की कल्पना है। ये तो ठीक है कि लक्ष्य एक है, वे लक्ष्य में चले गए। जैमिनी लक्ष्य में नहीं गया। इसलिए जैनी ने भी आत्मा माना, परमात्मा नहीं माना। बुद्ध ने 'निर्वाण पद' व्यापक माना। इसलिए

भाई-

जो इहु जाणहु सो इहु नाहि ॥ (पृ. ८८४)

जो आपके जानने में आता है, (जैसे) आपका मन, आपके जानने में आता है, आपकी बुद्‌धि, आपके जानने में आती है, प्राण आपके जानने में आते हैं, इन्द्रियाँ आपके जानने में आती हैं कि आज भई, मेरी आँख दर्द करती है, आज ठीक है, इत्यादि। ये शरीर, आपके जानने में आता है, सारी दुनिया जानने में आती है-

जानणहारे कउ बलि जाउ ॥ (पृ. ८८५)

वह जो जानने वाला है, जाननेवाला कौन है? वह साथ ही लिखा है गुरु साहिब ने-

जाननहार प्रभू परबीन ॥ बाहरि भेख न काहू भीन ॥

(पृ. २६६)

जाननेवाला प्रभु, प्रेरक, परमेश्वर है-

बाहरि भेख न काहू भीन ॥ (पृ. २६६)

बाहरी वेश से कभी ईश्वर नहीं आज तक खुश हुआ। यदि खुश हो जाए तो सभी लोग वेश धारण करके मुक्त हो जाते। फिर तो मुश्किल ही कोई नहीं, फिर तो हम भी मुक्त थे भगवे कपड़ों वाले, आप काले कपड़ों वाले भी मुक्त थे, पीले वाले भी मुक्त थे। फिर तो सभी की मोक्ष बिना कोशिश के ही हो जाती। वेशों के साथ कभी मोक्ष नहीं होती, ये (केवल वेश धारण करना) बिल्कुल गलत काम है-

जाननहार प्रभू परबीन ॥ बाहरि भेख न काहू भीन ॥

(पृ. २६६)

जानने वाला कौन है? 'परमेश्वर', 'ईश्वर'-

बाहरि भेख न काहू भीन ॥ (पृ. २६६)

जीव! तू बाहरी वेश में न फँस जाना कहीं! फिर तेरा काम बिगड़ जाएगा। इसलिए भाई, मुझे गुरु की सेवा से आत्म-सुख प्राप्त हुआ है, गुरु अमरदेव जी, ये कथन करते हैं-

गुर सेवा ते सुखु ऊपजै

भाई! गुरु सेवा से आत्म-सुख पैदा होता है। वह कौन है 'परमेश्वर'?

आत्म-सुख, आत्मा-परमात्मा, परमेश्वर, दृष्टा एक के ही नाम हैं सारे। ये हर समय रहेंगे। जब आप दृष्टा (देखने वाले) होंगे, तब साक्षी नहीं होंगे। जब साक्षी होंगे तो पारख (परखने वाले) नहीं होंगे। जब पारख होंगे तो दृष्टा, साक्षी नहीं होंगे। दाना-बीना होंगे, अपने ख्याल को देखने-जानने वाले। वह रहेगा एक ही, दो नहीं हो सकते, परंतु हैं ये, उसके ही नाम। ये अपैहत (उपाधि रहित परमेश्वर) के नाम हैं सारे, ये लक्ष्य के नाम हैं-

फिरि दुखु न लगै आइ ।।

भाई! तुझे जन्म-मरण का दुख कोई नहीं आकर लगेगा, जब तूने अपने-आप को पहचान लिया, आत्म-रूप को। तुझे जन्म-मरण का दुख लगाने वाला कोई नहीं, ना (दुख) आए-

जंमणु मरणा मिटि गइआ

तेरा, जन्म लेना और मरना, मिट गया-

जनमि न मरै न आवै न जाइ ।।
नानक का प्रभु रहिओ समाइ ।। (पृ. ११३६)

नानक का प्रभु तो व्यापक (हर जगह, हर समय, हर वस्तु में हाज़िर) है, वह जन्म-मरण में कैसे आ जाएगा? फिर तू जन्म-मरण में जीव! नहीं आने वाला-

कालै का किछु न बसाइ ।।

काल (मृत्यु) की तो अब कोई ताकत ही नहीं है। काल का, यम का, ये यमदूतों का तो अब कोई संबंध नहीं रहा, इसके साथ, जीवन-मुक्त के साथ। ब्रह्म ज्ञानी के साथ (मृत्यु का) कोई संबंध नहीं होता-

ब्रहम ग्यानी कउ खोजहि महेसुर ।।
नानक ब्रहम गिआनी आपि प्रमेसुर ।। (पृ. २७३)

जब महादेव (भगवान शिव,) ऋषियों का बड़ा देवता, ब्रह्म ज्ञानी को खोजता-फिरता है-

ब्रहम गिआनी का सगल अकारु ।।
ब्रहम गिआनी आपि निरंकारु ।।

वह ब्रह्म ज्ञानी परमेश्वर, निरंकार खुद है-

हरि सेती मनु रवि रहिआ

अब मेरा मन, हरि के साथ लीन हो गया, व्यापक के साथ लिव में लीन हो गया। मन की तो सत्ता नहीं रही। 'मन' वृत्ति का नाम है, संकल्प-विकल्प का। संकल्प-विकल्प को मन कहते हैं और जब आपका मन, लिव में लीन होगा तो आपकी समाधि होगी 'निर्विकल्प'। जब तक संकल्प चलता है, समाधि कैसे होगी? संकल्प और विकल्प, ये दोनों मन के पैर हैं। दोनों पैर गए, झगड़ा खत्म हो गया। इसलिए, अब मन लीन हो गया, परमात्मा में। अब, आपका आत्मा परमात्मा रह गया। अब, मन की कोई सत्ता नहीं रही-

सचे रहिआ समाइ ।।

कहाँ समा गया? तो कहते, सच्चे परमेश्वर में समा गया मन। आपका मन, उस सच्चे परमेश्वर में समा गया, जो-

आदि सचु जुगादि सचु ।। है भी सचु नानक होसी भी सचु ।।१।।

(पृ. १)

है, उसमें समा गया, आपका मन लीन हो गया। आपके मन की तब तक कोई सत्ता नहीं, जब तक परमेश्वर की सत्ता न हो। आपकी वृत्ति में सत्ता होगी तो ही दुनिया की कल्पना करोगे। ये देख लेना, जब वृत्ति लीन हो जाए तो सुषुप्ति में भी दुनिया की कल्पना नहीं रहती। जब तीसरी अवस्था आती है, वहाँ भी ये कहता है-

सुप्तो तथितस्य सौशुप्त तमोबोधो भवेत स्मरतिः
सा चाव बुद्ध विषया अवबुद्धम तत्तदा तमः ।।५।। (पंचदशी)

'मैं बड़े सुख से सोया', 'मुझे कुछ पता न लगा' वहाँ अज्ञान था। यदि अज्ञान न होता तो जितने सुषुप्ति (गहरी नींद) में जाते, सब मुक्त हो जाते। इसलिए,समाधि में जाकर, इसकी मोक्ष होगी। जब तक, मन लीन नहीं होता, तब तक इसकी समाधि नहीं होती निर्विकल्प (जहाँ केवल परमेश्वर ही हो)। तब तक आप जीवन-मुक्त नहीं होते, मोक्ष को प्राप्त नहीं होते, लीन नहीं होते-

नानक हउ बलिहारी तिंन कउ

श्री गुरु अमरदेव महाराज कहते, मैं, उन पर से बलिहार जाता हूँ-

जो चलनि सतिगुर भाइ ।।

जो सतिगुरु के 'भाइ' में, आज्ञा में चलते हैं। मैं, श्री गुरु अंगद देव की आज्ञा में चला, मुझे जो कुछ प्राप्त हुआ, आप पढ़ के देख लो-

नानक गुर ते गुरु होइआ वेखहु तिस की रजाइ ।। (पृ. ४६०)

वह ईश्वर की रज़ा (इच्छा) देखो, गुरु के साथ मिलकर, गुरु अमरदेव जी कहते, मैं गुरु हो गया-

महला ३ ।।

तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदेव जी महाराज-

बिनु सबदै सुधु न होवई

जितनी देर शब्द के साथ आपका मन एक नहीं होगा, शुद्ध नहीं होगा, उतनी देर ज़ोर लगा लो चाहे, अपना सारा ज़ोर लगा लो। चाहे उल्टे लटक जाओ, जो आपकी खुशी है कर लो, सारे वेश धारण कर लो, हाथ में कुछ नहीं आने वाला। ये तो गलत काम हैं, ये तो भूल है आपकी, आप तो गलतफहमी में हो-

भरमे सुरि नर देवी देवा ।। भरमे सिध साधिक ब्रहमेवा ।।
भरमि भरमि मानुख डहकाए ।। दुतर महा बिखम इह माए ।।

(पृ. २५८)

यहाँ तक तो माया है-

गुरमुखि भ्रम भै मोह मिटाइआ ।। नानक तेह परम सुख पाइआ ।।

(पृ. २५८)

'परम सुख' तब मिलेगा जब ये गुरु के पास चला जाएगा। गलतफहमी यदि चली जाएगी तो आपको (परम सुख) मिलेगा। गुरु साहिब ब्रह्म ज्ञानी थे, 'गुरु' नाम ही ब्रह्म ज्ञानी का है। ब्रह्म ज्ञानी के सिवाय सभी लोग, मज़हबों, वहमों (भूल) आदि में फँसे हुए हैं, अपने आप में तो समझदार बने फिरते हैं, परंतु हैं महापागल। इसे पूछो, तुझे आत्म-सुख आया? अपने-आप का तुझे पता ही नहीं लगा और आप तो फँसे पड़े हो, किसी के कहने में आकर बहकाए हुए-

जे अनेक करै सीगार ।।

कहता, 'सीगार' बाहरी वेश, साधन, यज्ञ सारे कर ले परंतु तुझे कुछ नहीं मिलेगा। जब तक पूरे गुरु की कृपा से शब्द नहीं प्राप्त हुआ, शब्द के

साथ मन एक नहीं होता, तब तक सुरत (होश) कैसे आ जाएगी? आपको ज्ञान कैसे हो जाएगा?

पिर की सार न जाणई

पति परमेश्वर की तो इसने सार ही नहीं जानी, भई ये परमेश्वर है-

दाना बीना साई मैडा नानक सार न जाणा तेरी ॥ (पृ. ५२०)

वह तो साईं है, सब का मालिक है। वह देखने वाला, जानने वाला, दृष्टा भी वही है। जो आपको ख्याल आता है, आप ख्याल को देखते भी हो, जानते भी हो। इसलिए, वह आपका साईं है। भाई वीर सिंह ने बड़ा सुंदर लिखा है। वह कहता, साईं सब के अंदर साक्षी रूप में विराजमान है, बैठा है। वह कहता, साईं किधर गया? कहता, सब के अंदर साक्षी रूप में विराजमान है, जाना साईं ने कहाँ था? वह तो दृष्टा है। आपके अंदर जो साक्षी है, वह है मालिक, वह है दृष्टा, वही पारख है-

दूजै भाइ पिआर ॥

इसका (जीव का) द्वैत (अपने-पराए का अंतर करने) के साथ प्रेम लग गया। यह (द्वैत करना) एक भेद है (सोचने का फ़र्क है), लिखा हुआ है, दसवें पातशाह (श्री गुरु गोबिंद सिंह जी) ने जफ़रनामे में, कि औरंगजेब! तू फ़र्क करने (भेदभाव) में मत पड़, तेरी तो बुद्धि में फर्क है भई, कि मुसलमान सारे मोमन (ईश्वर को मानने वाले) हैं, हिंदू सारे काफ़िर (ईश्वर को न मानने वाले) हैं। यहाँ तक तो (औरंगजेब का) काम बढ़ गया था। ये (फ़र्क करने वाला) काम तूने उल्टा कर दिया।

जब मरदाने को प्यास लगी, मरदाना गया पानी पीने के लिए, बली कंधारी (नाम के एक मुस्लिम फ़कीर) के पास। बली कंधारी ने कहा, मैं तुझे पानी नहीं पिलाता। उसके पास एक तालाब था, सारा पानी से भरा हुआ था। उसने सारा पानी रोका हुआ था, अपनी शक्ति से सारा पानी रोका हुआ था। उसके पास इतनी शक्ति थी, पानी नीचे नहीं जाता था। वह गुरु साहिब (श्री गुरु नानक देव जी) इसीलिए आए (पंजा साहिब)। अब तो इलाके में पानी होने से बड़ा अच्छा है। कहते, पानी के बिना जीवों को बड़ा ज्यादा दुख है, ये (बली कंधारी) क्या कर रहा है? वह मरदाना गया, बली कंधारी कहता, मैंने तुझे पानी नहीं पिलाना। तू काफ़िर के साथ रहता है

और काफ़िरों की वाणी पढ़ता है, चला जा। वह वापिस आ गया। (वापिस आकर गुरु जी को) कहता, वह पानी नहीं देता। गुरु साहिब कहते, क्यों? वह (मरदाना) कहता, मैं प्यास से मर रहा हूँ, वह पानी नहीं पिलाता। गुरु साहिब कहते, एक बार फिर जा। वह (मरदाना) कहता, मैं तो मुश्किल से आया हूँ। गुरु साहिब कहते, जा! एक बार फिर जा, हमारे कहने पर। वह गया, बली कंधारी कहता, तुझे एक बार कहा, तू काफ़िरों के साथ रहता है, तुझे पानी नहीं पिलाना। काफिरों को तो क्या पिलाना है? हम तो काफ़िरों के साथ रहने वाले को भी नहीं पिलाते। वह फिर गया, उसने कहा, मैं प्यासा मर रहा हूँ, मुझे पानी पिला। उसने फिर पानी न दिया, वह मरदाना वापिस आ गया। तब ऊपर से सारा पानी नीचे आ गया। उसने फिर पत्थर फेंका बली कंधारी ने, गुरु साहिब ने पंजा (हाथ) लगाया, पत्थर वहीं रूक गया। वह अभी भी (पत्थर पर) हाथ का निशान लगा है। अब अकालियों ने धर्म की दुकानें चलाने के लिए, सारा ही काम खराब कर दिया। लोगों ने कहा, काम ही गँवा दिया तुम (अकालियों) ने, वह तो दृश्य ही गँवा दिया तुमने। वह पहले वाला नज़ारा ही नहीं रहा। फिर वह आया फ़कीर (बली कंधारी) गुरु साहिब के पास, जब पानी सारा खत्म हो गया। कहता–मुझ से गलती हो गई। गुरु साहिब ने कहा, अब तो पानी सारे पीएँगे, शहर के लोग और पशु पीएँगे, खेतों में जाएगा, खेती हरी होगी। उसे (बली कंधारी को) समझाया गुरु साहिब ने। फिर वह मान गया कहता, 'मुझ से भूल हो गई'। इसलिए भाई! वही बात गुरु गोबिंद सिंह लिखते हैं जफ़रनामे में। कहते, ये जो तुझ में संकल्प है (औरंगजेब!), बड़ा भारी पाप है, जो तू अंतर मानता था, भई हिंदू सारे काफ़िर हैं और मुसलमान सारे मोमन हैं। ये कभी हो सकता है? ये तो तुझे किसी ने बहकाया था। तू हमारे सामने आकर बात कर, फिर हम तुझे बख्श देंगे। फिर हम तुझे कुछ नहीं कहेंगे। फिर वह औरंगजेब वहाँ से चला गया। पीर का वह बड़ा भक्त था, औरंगजेब। हम उस जगह गए हैं, वे बताते हैं, यहाँ औरंगजेब की कब्र है। वह मरते समय कह गया, भई, पीर की कब्र का पानी, मेरी कब्र पर पड़े। उस पीर की कब्र ऊँची बनी है। उसकी (औरंगजेब की) कब्र नीचे बनी है। उस पीर की कब्र का पानी, उसकी कब्र पर पड़ता हैं। पीर का भक्त था

परंतु उसे यही था, इतना था भई, हिंदू-मुसलमान का कोई अंतर था। अंतर रखने वाला जो आदमी होता है, वह पापी होता है। वह (परमात्मा) तो सब में है-

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ।।
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ।। (पृ. १४२७)

सब के हृदय में तो ईश्वर है। अब क्या पता कौन जागा हुआ है? कौन सोया पड़ा है? फर्क इतना ही है। वह जिसे जगा दे, वह जाग पड़ता है, बाकी सोए पड़े हैं। और तो कोई फ़र्क नहीं है। इसलिए, जो भेद (फ़र्क) करने वाली बुद्धि है, महापाप वाली है। तभी तो कबीर ने लिखा है-

किआ नागे किआ बाधे चाम ।। जब नही चीनसि आतम राम ।।
(पृ. ३२४)

कबीर साहिब के पास पाँच-छह लोग आए। कबीर कहता, ओए! जब तक तुम आत्मा को व्यापक नहीं समझते, राम (रमा हुआ) नहीं समझते, तब तक आपके धारण किए हुए सभी वेश बेकार हैं। गुरु साहिब ने भी लिखा है-

कई कोटि प्रभ कउ खोजंते ।। आतम महि पारब्रहमु लहंते ।।
(पृ. २७६)

कहते, जो भी खोजेगा, 'आत्मा' को ही 'परमात्मा' मानेगा। और आपको, अपनी आत्मा से अलग ईश्वर, न आज तक किसी को मिला है, ना आपको मिले, ना किसी और को मिले। आत्मा ही परमात्मा है-

आतमा परातमा एको करै ।।
अंतर की दुबिधा अंतरि मरै ।। (पृ. ६६१)

और बाकी सब कुछ केवल कल्पना ही है, आत्मा ही परमात्मा है। है एक ही चीज, गुरु साहिब भी लिखते हैं और सारे महापुरुष भी यही लिखते हैं-

सा कुसुध सा कुलखणी

'कुसुध' है उसकी बुद्धि, और वह 'कुलखणी' है, अच्छे गुणों से रहित (खाली) है उसकी बुद्धि, गलत है-

नानक नारी विचि कुनारि ।।

वह सारे जिज्ञासुओं में फालतू सी है, सारे जीवों में निकम्मी है, 'कुनारि' (बुरी स्त्री) है, गलत है-

पउड़ी ।। हरि हरि अपणी दइआ करि

हे हरि! हे परमेश्वर! हे हर जगह व्यापक, मुझ पर दया कर-

हरि बोली बैणी ।।

मैं, जब भी वचन बोलूँ, हरि के संबंध में बोलूँ! मैं, जब भी वचन बोलूँ, मेरा वचन हरि से संबंधी हो और दुनिया के आकार, मेरी वृत्ति न हो! वृत्ति (सोच) तो सभी की दुनिया के आकार है और बने फिरते हैं भक्त, फिजूल में, बेईमान! ये सारे बेईमान हैं-

हरि नामु धिआई हरि उचरा

हर वक्त मैं, नाम का उच्चारण करूँ, उस नामी का ही ध्यान करूँ! परमेश्वर का ध्यान करूँ! परमेश्वर के नाम का उच्चारण करूँ! गुरु अमरदास जी कहते, हे परमेश्वर! मेरे ऊपर दया कर दे, दया कर दे-

हरि लाहा लैणी ।।

इसमें हरि से 'लाहा' इस अर्थ में लेते हैं, इस माँग के रूप में लेते हैं कि हर समय आपकी वृत्ति उस (परमेश्वर) के आकार हो, उसका ही ध्‍ यान हो और उसका ही नाम जपे-

सिमरि सिमरि नामु बारं बार ।। नानक जीअ का इहै अधार ।।

(पृ. २९५)

'जीअ' का 'आधार' (आसरा) तो और है ही नहीं, बिना सिमरन के, (बिना) सेवा के। ये दो चीजें (सेवा, सिमरन) तो मुख्य हैं। जो, सेवा-सिमरन नहीं करता, उसे कुछ नहीं मिलता। (बाकी) सब तो फिजूल है-

खोजत खोजत ततु बीचारिओ दास गोविंद पराइण ।।
अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण ।।

(पृ. ७१४)

यदि तू अविनाशी (नाश न होने वाला) पद चाहता है, तो नाम का सिमरन कर हर वक्त-

जो जपदे हरि हरि दिनसु राति

जो, दिन-रात हरि के नाम का जाप करते हैं-

तिन इउ कुरबैणी ।।

मैं, उन पर से, गुरु अमरदेव जी कहते, कुर्बान जाता हूँ-

ऊठत बैठत सोवत नाम ।। कहु नानक जन कै सद काम ।।

(पृ. २८६)

जिना सतिगुरु मेरा पिआरा अराधिआ

जिन्होंने मेरे प्यारे सतगुरु, गुरु अंगद देव जी की आराधना की-

तिन जन देखा नैणी ।।

मैं हर समय आँखों से, उन का दर्शन करूँ। मैं उनके दर्शनों से ही खुश हूँ, परंतु जो मेरे गुरु के उपासक हैं, मेरे गुरु के चेले हैं, सेवक हैं-

हउ वारिआ अपणे गुरू कउ

मैं तो बलिहार, कुर्बान जाता हूँ, अपने गुरु अंगद देव से, मैं तो उन पर से कुर्बान जाता हूँ-

जिनि मेरा हरि सजणु मेलिआ सैणी ।।

वह जो मेरा 'सजणु' सदा संबधी था, परंतु ना मिले जैसा था। जब आत्मा-परमात्मा तो हमेशा ही एक हैं परंतु वह न मिले जैसा था। वह जो 'सैणी' यानि मेरा संबंधी था, वह जो परमेश्वर मेरे साथ ही था, मुझे उसके साथ मिला दिया। मेरे अंदर वह दिखा दिया, मुझे आत्मा-परमात्मा की प्राप्ति करा दी, श्री गुरु अंगद देव महाराज जी ने। मैं उन पर से कुर्बान जाता हूँ-

जिना सतिगुरु मेरा पिआरा अराधिआ तिन जन देखा नैणी ।।
हउ वारिआ अपणे गुरू कउ जिनि मेरा हरि सजणु मेलिआ सैणी ।।

बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु !

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

17

मंघिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह ।।
तिन की सोभा किआ गणी जे साहिबि मेलड़ीआह ।।
तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह ।।
साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ।।
तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह ।।
जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह ।।
रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह ।।
नानक बांछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दर पड़ीआह ।।
मंघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ।।१०।।

(पृ. १३५)

सारी संगत किरपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु ! सतिनामु श्री वाहिगुरु !!

वह जो 'ब्रह्म' बैठा है, वह साक्षात परमेश्वर (है), वह 'सूरज' उसका द्वार (रास्ता) लिखा हुआ है।जब ये उस जगह (सचखंड में) जाता है, या तो बड़ा कोई धर्मात्मा या बड़ा महापुरुष हो या उपासना पूरी हो जाए, वह सूरज द्वारा सचखंड को जाता है। इस करके लोग, संक्रान्ति को मानते हैं। जो भी इस महीने में आएगा (उपदेश), वह आपको एक महीना, मानना पड़ेगा। दूसरी संक्रान्ति आएगी तो दूसरा हुक्मनामा, (ये) बदल जाएगा। इसलिए, पहले तुखारी राग में पहले पातशाह (श्री गुरु नानक देव जी) ने 'बारां माहा' लिखा पर उस में अलंकार ज्यादा थे, समझ में नहीं आता था। सारी संगत ने श्री गुरु अर्जुन देव जी के पास विनती की, जी! ऐसा 'बारह मांहा' उच्चारो जो समझ में आ जाए। फिर इन्होंने (श्री गुरु अर्जुन देव जी ने) ये 'बारह मांहा' माझ राग में उच्चारा है। इस को (जीव को) हुक्म है,

भई पहले दिन इसे सुनो, फिर (एक) महीना इस के मुताबिक चलो। अगले महीने में जब संक्रान्ति आएगी, वह (हुक्मनामा) बदल जाएगा। इसलिए, गुरु अर्जुन देव जी महाराज द्वारा जो हुक्मनामा आया है सचखंड में से, ये परमेश्वर की वाणी है, ईश्वर का हुक्म है। इस का अब अर्थ सुनो–

मंघिरि माहि सोहंदीआ

मघ्घर (मार्गशीर्ष) के महीने द्वारा (उपदेश है) वह जिज्ञासु रूप स्त्रियाँ बड़ी शोभा (इज्जत–मान) पाएँगी, जो ईश्वर के जिज्ञासु हैं, जो परमेश्वर को बड़े चाहने वाले हैं, जो परमेश्वर को पाने वाले हैं। वह (जिज्ञासु रूप स्त्रियाँ) कबूल कब होंगी?–

मंघिरि माहि सोहंदीआ

मघ्घर के महीने में वह जिज्ञासु, वह महापुरुष कबूल हो जाएँगे। कौन–से?

हरि पिर संगि बैठड़ीआह ।।

जो हरि परमेश्वर के साथ बैठ (टिक) जाएँगे, जो परमेश्वर के साथ एक हो जाएँगे। वह, गीता में भगवान तो साफ ही कहता है, मैं आत्मा रूप में सभी के अंदर बैठा हूँ तथा मुझे कुछ और न आप समझ लेना और गुरु साहिब ने भी लिखा है–

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ।।
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ।। (पृ. १४२७)

जो सब के हृदय में परमेश्वर बैठा है। एक सीमा होती है हर चीज की। जब तक इसकी विवेक वृत्ति नहीं पैदा हुई, तब तक इसकी अविद्या वृत्ति है। इसे ये नहीं पता, ईश्वर कहाँ है?–

एकम एकंकारु निराला ।। अमरु अजोनी जाति न जाला ।।
अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ ।। खोजत खोजत घटि घटि देखिआ ।।
(पृ. ८३८)

ईश्वरः सर्वभूतानां हृददेशे अर्जुन तिष्ठति ।।
भ्रामयन सर्व भूतानि यंत्रा रूढानि मायया ।। (गीता १८/६१)

सभी महापुरुषों ने आखिर में कहा, भई, सब के हृदय में परमेश्वर है। वह आत्मा है, आत्मा को ही परमात्मा कहते हैं, नाम दो हैं। बुद्ध का और

महावीर का पच्चीस (२५) वर्ष का अंतर है। जब बुद्ध ने महावीर को पूछा, जैनियों का जो आखिरी तीर्थंकर (गुरु) था, भई तूने आत्मा कहा, परमात्मा क्यों नहीं कहा? वह कहता, 'आत्मा ही परमात्मा' है, यदि आत्मा के बिना कहीं परमात्मा होता, तो मैं कहता। वस्तु एक है, चाहे उसे आत्मा कह लो, चाहे परमात्मा कह लो-

कई कोटि प्रभ कउ खोजंते ।। आतम महि पारब्रहमु लहंते ।।

(पृ. २७६)

कई करोड़ जीव परमेश्वर को खोजने चले पर आत्मा में से उन्हें परमेश्वर मिला। आत्मा जो है, वह ब्रह्म की प्रतिष्ठता (रूप) है। प्रतिष्ठता का अर्थ होता है कि 'आत्मा' ही परमात्मा है-

जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई ।।
एको अंम्रित बिरखु है फलु अंम्रितु होई ।। (पृ. ४२१)

वह (आत्म स्वरूप को पाने वाला जीव) अमर हो जाएगा। अब आप ये बताओ, आपकी वृत्ति में चेतन बैठा है। जब तक वह, जो चेतन, साक्षी, दृष्टा, परमेश्वर, पारख-

नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ ।। (पृ. १४४)

पारख तो वह (परमेश्वर) आप है, जब तक ये उसे नहीं जानता। कबीर साहिब को कहते, तू बावरा (पागल) है। वह कहते-

सो बउरा जो आपु न पछानै ।। (पृ. ८५५)

कबीर कहता, वह पागल है जिसने अपना-आप नहीं पहचाना और मैं क्यों पागल हूँ? जिसने अपना-आप नहीं पहचाना, वह पागल है। क्यों? उसे अपना-आप मिला ही नहीं, पतंजलि ने भी यही बात कही-

तदा द्रष्टूः स्वरूपे अवस्थानम् (पातंजल योगदर्शन प्र. ४)

वह जो दृष्टा तेरे अंदर बैठा है, उसके स्वरूप में तू टिक जा, तुझे परमेश्वर मिल जाएगा। पतंजलि भी, हंस वाला भी, यही समाप्त कर गया कपिल भी, इसलिए वह परमेश्वर, जो आपके अंदर ज्योति स्वरूप बैठा है-

सभ महि जोति जोति है सोइ ।।
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ।।
गुर साखी जोति परगटु होइ ।। (पृ. १३)

वह, जो आपके अंदर ज्योति स्वरूप है, वह आपके जितने ख्याल हैं, उन सब को देखने वाला और जानने वाला है। यदि आपके अंदर वह ज्योत न हो तो आप, ये (जो) आपके ख्याल हैं, ये तो जड़ हैं, कामनाएँ आपकी जड़ हैं, वासनाएँ आपकी जड़ हैं, ये तो सारी जड़ वस्तु है, ये तो सारी प्रकृति है। और वह देखने वाला और जानने वाला आपके हृदय में बैठा है, उस को परमेश्वर कहते हैं। जब आपकी वृत्ति को और वृत्ति को देखने वाले को, आप अलग कर लोगे, उसका नाम है 'विवेक बुद्धि', 'विवेक वृत्ति'। उस वृत्ति से आपकी अविद्या नाश हो जाएगी। जो आप परमेश्वर को और संसार को इकट्ठा समझते थे, मन में एक समझते थे, पता नहीं लगता था? तो फिर वह जो देखने वाला आपके अंदर, दृष्टा-चेतन है-

मूई सुरति बादु अहंकारु ।। ओहु न मूआ जो देखणहारु ।।

(पृ. १५२)

वह दृष्टा तो जन्म-मरण वाली वस्तु नहीं है-

द्रिसटिमान है सगल मिथेना ।। (पृ. १०८३)

एक मिथ्या वस्तु है, एक सत्य वस्तु है। वह सत्य आपका 'आपा', 'आत्मा' है और मिथ्या प्रकृति है। (प्रकृति) जड़ है-

सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ ।।
करन करावन तिनि मूलु पछानिआ ।। (पृ. २८५)

उस 'सत्य स्वरूप' को जिसने निश्चय कर लिया, पक्का निश्चय कर लिया, उसने परमेश्वर, मूल कारण को जान लिया। वह जो आपके अंदर दृष्टा है, देखने वाला चेतन, वह आपका 'आपा' है, उसे आत्मा कहते हैं, अपना-आप आपका वह है। जब आप उस को अपना-आप समझ लोगे तो आपको शाँति आ जाएगी। समझ ही नहीं लोगे जब आपकी वृत्ति उसके आकार हो जाएगी, कि जो मेरी वृत्ति को, ख्यालों को देखने वाला है, वह दृष्टा, चेतन है, वह जन्म-मरण वाली वस्तु नहीं है, फिर आपको शाँति आ जाएगी। यदि इस से (दृष्टा से) फिर आप आगे हो गए, आप की समाधि ये होगी कि सारी वृत्तियों (ख्यालों) को आपने जागते रहकर, देखते रहना है। कोई वृत्ति छिपी तो होती नहीं, सारी सामने होती हैं पर उनको जानने वाला तो चेतन है, वृत्तियाँ तो ज्ञाता नहीं होती। वृत्तियाँ तो जड़ हैं, जितने ख्याल

हैं जड़ है पंरतु देखने वाला तो ज्ञाता (परमेश्वर) है, वह तो पारख है, वह तो सारे ख्यालों को परखता रहता है-

नानक पारखु आपि

वह आप जो है, गुरु साहिब कहते, वह पारख है-

जिनि खोटा खरा पछाणिआ ॥ (पृ. १४४)

जो आपके सभी ख्यालों को जानता है। भई, ये खोटा ख्याल है और ये अच्छा ख्याल है, वह सारे ख्यालों के मुताबिक आपका निपटारा होना है-

करमा उपरि निबड़ै जे लोचै सभु कोइ ॥ (पृ. १५७)

परंतु जीव के कर्मों पर निबेड़ा होना है। सब चाहते हैं, मुझे ये मिल जाए, ये हो जाए। आप देखते नहीं? कैसा धोखा करते फिरते हैं, भागे फिरते हैं, माँगते हैं। फिर क्या जा कर उसका खाते हैं, क्या ये करते हैं, इसे पूछने वाला तो कोई है नहीं। यदि पूछने वाला हो तो फिर ऐसे काम क्यों हो। मत (सम्प्रदाय) तो बन गए परंतु इन सम्प्रदायों में समझदार आदमी भी तो चाहिएँ, जो ये देखे भई, तू क्या करता है, भई तेरी जाति क्या है? धर्म क्या है? तू मानता क्या है और फर्ज़ तेरा क्या है? ऐसे तो इनको पूछने वाला कोई नहीं। जो खुशी है, करते हैं। इसलिए, जब तक आप में ये समझ नहीं आएगी भई, ये मेरा ख्याल गलत है, ये ख्याल सही है, ये ख्याल छोड़ कर अब इस ख्याल पर चलूँ। गीता में दोनों निष्ठाएँ लिखी है- कर्म निष्ठा और ज्ञान निष्ठा। निष्काम (बिना कामना के) कर्म करना है, जब तक आपका अंतःकरण शुद्ध (पवित्र) न हो जाए। निष्काम कर्म करने से आपका अंतःकरण शुद्ध हो जाएगा और शुद्ध होने से आपको ज्ञान हो जाएगा, ज्ञान होने से आपकी मोक्ष हो जाएगी परंतु बात तो ये है। गुरु साहिब ने बीच में एक बात ये बड़ी सुंदर लिखी है। उन्होंने कहा, आप अपने मन को नाम के साथ जोड़ लो-

नाम के धारे खंड ब्रहमंड ॥ (पृ. २८४)

उसके साथ मन को जोड़ लो, आपको नामी (परमात्मा) प्राप्त हो जाएगा। जब तक आपका मन 'नाम' के साथ नहीं जुड़ता, तब तक 'नामी' प्राप्त नहीं होता। ज्यादा बातें करने से नहीं होता, आशीर्वाद के साथ नहीं होता, 'नामी' चालाकी के साथ नहीं मिलता, वह तो बख्शिश है-

जा कउ अपुनी करै बखसीस ।। ता का लेखा न गनै जगदीस ।।

(पृ. २७७)

उसका लेखा नहीं गिना जाता। आपको पहले मैंने सुनाया था। एक महापुरुष बड़ा लायक, ईश्वर का बख्शा हुआ था। वह एक काम करता था, जहाँ वह बैठा था, वहाँ लंगर लगा हुआ था। लोग ही लंगर लगाते थे और लोग ही खाते थे, निमित्त (माध्यम) वह महापुरुष वहाँ बैठा था। एक पुरुष सीधा-सा, बड़ा सीधा, उसके पास आया, जी! मुझे भी कल्याण का उपाय बताओ कोई? उन्होंने कहा, भाई! यहाँ (लंगर में) चावल बनते हैं रोज। तब (छिलका उतारने के लिए) चावल की कुटाई किया करते थे। 'तू चावल की कुटाई किया कर, फिर तेरे चावल लंगर में, क्षेत्र में लगेंगे, ये कल्याण का रास्ता है, ये सेवा किया कर।' वह पुरुष चावल की कुटाई करने लग गया। उसके जीवन में लिखा है, चौबीस (२४) साल चावल की कुटाई करता रहा। चौबीस साल बाद जब ये बात आई, भई इन महात्मा का शरीर (जाने वाला है), उन्होंने (महात्मा ने) कहा, भाई! हमारे शरीर ने चले जाना है। (संगत ने सोचा) इन की गद्दी पर कौन बैठेगा? अब देखो कोई ऐसा ही महापुरुष। उन्होंने (संगत ने) वह सारा पर्चा छपवाया जो कुछ किया। वह (आदमी) चावल कूट रहा था बैठे हुए, एक पढ़ा-लिखा आदमी लेकर गया (पर्चा), जाकर कहता, जी! ये इश्तिहार निकला है, भई जो शुद्ध अंतःकरण वाला हो, ज्ञानी हो, ऐसा हो। वह कहता, ना-ना, मैं (उत्तर) लिखवाता हूँ तुझे। शुद्ध-अशुद्ध कोई नहीं है, परमेश्वर व्यापक है, इसका अपना-आप है, इसमें कोई अन्तर नहीं है, इसमें कोई बुरा नहीं, कोई भला नहीं, परमेश्वर भला ही भला है। उसने जो लिखवाया, वह (लिखकर) लाए । जब उस महापुरुष को सुनाया। वह कहते, बुलाओ उसे, उसे बुलाया गया। (महापुरुष) उसको कहते- तेरा अंतःकरण बड़ा शुद्ध है, तू बड़ा महापुरुष है। कहता (वह आदमी), जी! वह तो एक ही चेतन है, एक ओंकार, वह तो परिपूर्ण है, शुद्ध-अशुद्ध वहाँ कोई नहीं। अब बात तो उसकी ठीक थी, मोक्ष काल में तो (शुद्ध-अशुद्ध) कुछ नहीं होता। महापुरुषों ने कहा, ये कमंडल है और ये चिप्पी है, (ये) लाठी है। इसे बिठा दो गद्दी पर। उसे गद्दी पर बिठा दिया और वह ब्रह्म ज्ञानी हुआ, उस परमेश्वर की कृपा से।

सत्यकाम जब अपने ऋषि (गुरु) के पास गया, उसने कहा, जी! मुझे कोई कल्याण का उपाय बताओ। उन्होंने कहा, कितनी गायें हैं? कहता, इतनी हैं। (गुरु ने कहा) इनको जंगल में ले जाओ, जब दोगुनी हो जाएँ तब ले आना। उसने बारह-तेरह (१२-१३) साल वे गायें चराईं। जब उन गौओं ने आवाज दी (बैल ने) भई, तू हमें ले चल, तेरा काम पूरा हो गया है, अपने गुरु के पास (ले चल)। जब रास्ते में लेकर आया तो उन्होंने ही उपदेश किया, 'ब्रह्म असंग (अच्छे-बुरे के प्रभाव से रहित) है, वह ब्रह्म शुद्ध है, वह परिपूर्ण है, वह व्यापक (हर जगह, हर समय, हर वस्तु में हाज़िर) है।' जब गुरु के पास गायें लेकर आया, उसने (गुरु ने) कहा, जो काम होना था, वह तो हो गया। यह उपनिषद में लिखा हुआ है, (गुरु ने कहा) अब मैंने तुझे उपदेश ये देना है, भई, गुरु का तरीका होता है, तुझे वस्तु तो प्राप्त हो गई। इसलिए-

सेवा करत होइ निहकामी ।। तिस कउ होत परापति सुआमी ।।

(पृ. २८६)

भाई मंझ ने कितनी सेवा की। इसलिए, जिस जिसने सच्चे मन से परमेश्वर की, पब्लिक की सेवा की। परमेश्वर सभी में एक ही है, जनता जनार्दन है। ये जो लोग, जनता जनार्दन हैं, ये परमेश्वर रूप हैं। जैसे भाई कन्हैया ने परमेश्वर समझकर जल पिलाया। चाहे कोई पठान आ गया, सिक्ख आ गया, हिन्दू आ गया, उसे इस बात का पता ही नहीं। गीता में लिखा है-

योगस्थः कुरू कर्माणि सङ्ग त्यक्त्वा धनञ्जय ।
सिद्धय असिद्धयोः समोभूत्वा समत्वं योग उच्यते ।।

(गीता २/४८)

जो समयोग (कर्म के अच्छे-बुरे परिणाम के प्रति एक जैसा भाव) है, वह पिछले कर्मों का नाश कर देता है और फिर उसे आशा आगे की हो जाती है, परमेश्वर की प्राप्ति की, परंतु तभी, जब इसमें समता आ जाए-

बिसरि गई सभ ताति पराई ।।
जब ते साधसंगति मोहि पाई ।।१।।रहाउ।।
ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम को बनि आई ।।१।।

जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ एह सुमति साधू ते पाई ।।२।।
सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै पेखि पेखि नानक बिगसाई ।।३।।८।।

(पृ. १२६६)

गुरु अर्जुन देव जी कहते, ये 'सुमति' (श्रेष्ठ बुद्धि) हमें गुरु रामदास संत से प्राप्त हुई। ये समदृष्टि हमें श्री गुरु रामदास संत से प्राप्त हुई। हमारी सारी बुद्धि शुद्ध हो गई और हमारी किसी के साथ कोई दुश्मनी नहीं, वैर नहीं। सब में एक परमेश्वर हमें प्राप्त हो गया। इसलिए जब ये 'समत्व योग' में पहुँच जाता है, फिर इसके सारे पाप नाश हो जाते हैं। इसलिए अब इसको 'समत्व योग' धारण करना चाहिए। इस के आगे फिर ज्ञान आएगा और ज्ञान से मुक्ति हो जाती है। गुरु साहिब ने साफ लिखा है-

गिआनै कारन करम अभिआसु ।। गिआनु भइआ तह करमह नासु ।।

(पृ. ११६७)

ज्ञान के लिए आपने शुभ कर्मों का अभ्यास करना है। श्रवण (सुनना), मनन (मानना), निध्यासन (जीवन में दृढ़) करना है-

सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ।। अंतरगति तीरथि मलि नाउ ।।

(पृ.४)

कहते, जब आपका श्रवण, मनन, निध्यासन, समाधि हो गई, आपका मन लीन हो जाएगा आत्मा में, परमात्मा में। आप के सारे पाप नाश हो जाएँगे, ज्ञान प्राप्त हो जाएगा। ये कब होगा? जब आपका अंतःकरण (मन) शुद्ध हो जाएगा। शुद्ध अंतःकरण आपका निष्काम सेवा और निष्काम कर्म से होना है। कबीर ने तो साफ लिखा है-

कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरु ।।
पाछै लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर ।। (पृ. १३६७)

वह कहता, जब इसका मन शुद्ध हो गया, इसे अपने स्वरूप का खुद ही प्रकाश हो जाएगा। शीशा शुद्ध हो, इसको मुख (चेहरा) खुद ही दिखाई देगा, शुद्ध जल हो, मुख दिखाई दे जाता है। पहले इसने अंतःकरण शुद्ध करना है पर वह कर्मयोग (गुरु परमेश्वर को सन्मुख रखकर कर्म करना) तब तक करना है जब तक अंतःकरण शुद्ध न हो जाए। इसलिए, पहले कर्मयोग है, फिर ज्ञानयोग (प्रकृति के तीनों गुणों और शरीर से ऊपर उठकर आपने

स्वरूप में टिकना) है, दोनों निष्ठाएँ हैं, ये जीव के लिए कर्त्तव्य है। जब इसका (अंतःकरण शुद्ध) हो गया फिर, इसका मेल हो जाएगा परमेश्वर के साथ। तो जो (जीव रूपी स्त्रियाँ) परमेश्वर के साथ बैठ गईं, यानि 'एक' हो गई, उन का आना सफल हो गया, वह शोभा (इज्जत-मान) के लायक हैं, ये पंक्ति का अर्थ है। पढ़ दे-

मंघिरि माहि सोहंदीआ

मध्धर (मार्गशीर्ष) महीने द्वारा गुरु साहिब कहते, वह जिज्ञासु शोभा पाएँगे-

हरि पिर संगि बैठड़ीआह ।।

जो पति-परमेश्वर के साथ एक हो जाएँगे, यह है अलंकार। जब इनको ये पता लग गया, भई सत्ता एक है, वह चेतन ही 'परमार्थ-सत्ता' है। 'परमार्थ-सत्ता' के बिना व्यावहारिक (संसार की) और प्रतिभावक सत्ता झूठी है। एक इसकी (चेतन की) सत्ता है, ये सोहं प्रकाश, स्वतः सिद्ध, चेतन खुद है, इस बात में इसको कोई शक न रहे-

तिन की सोभा किआ गणी

अब उन की 'सोभा' (शोभा) आपको क्या बताएँ मुख के साथ, शब्दों के साथ। वह जो परमेश्वर के साथ मिलकर एक हो गए, वह तो ब्रह्म ज्ञानी हो गए-

ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर ।।
नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर।।
ब्रहम गिआनी सभ स्रिसटि का करता ।।
ब्रहम गिआनी सद जीवै नहीं मरता ।।
ब्रहम गिआनी का सगल अकारु ।।
ब्रहम गिआनी आपि निरंकारु ।। (पृ. २७३)

वह तो निराकार हो गया। अब उसकी शोभा (प्रशंसा) कैसे कहें? मन, वाणी के तो विषय नहीं, उन की शोभा अब क्या गिने और क्या कहें?-

जे साहिबि मेलड़ीआह ।।

जो परमेश्वर ने कृपा करके अपने साथ मिला लिये। बाबा बुड्ढा, हनुमान, उद्धव और दूसरे जितने भी दुनिया के महापुरुष हुए हैं, नामदेव,

कबीर, धन्ना ये सारे ही परमेश्वर के साथ मिले थे, ये सारे ही परमेश्वर रूप हो गए हैं। वह ब्रह्म ज्ञानी, आप परमेश्वर होता है–

गुरु परमेसरु एको जाणु ।। जो तिसु भावै सो परवाणु ।।

(पृ. ८६४)

गुरु और परमेश्वर एक हैं। गुरु कौन होता है? गुरु परमेश्वर की तरफ से ही आता है–

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ ।।
ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ ।। (पृ. १४०८)

उस ज्योति-स्वरूप को खुद आना पड़ा, जब घोर (बहुत अधिक) अन्याय संसार में हुआ। उन्होंने (श्री गुरु नानक देव जी ने) आकर चार (४) यात्राएँ की, कितने आदमियों को जगा दिया। भाई गुरदास जी की वार (रचना) पढ़ लो, कितने ही जगाए हैं, इसमें लिखे हुए हैं। इसलिए वह जगा दिए। उन (श्री गुरु नानक देव जी) के संग से फिर वे भी महापुरुष हो गए–

नानक अंगद को बपु धरा ।। धरम प्रचुरि इह जग मो करा ।।
अमरदास पुनि नाम कहायो ।। जन दीपक ते दीप जगायो ।।
अमरदास रामदास कहायो ।। (दसम ग्रंथ)

इसलिए, वह तो आगे जाकर, गुरु गद्दी कायम हो गई। इसी तरह कबीर आया, गुरु नानक साहिब आए, दादू महाराज आए, दुनिया में जो भी आए, उन्होंने आकर दुनिया को जगाया। वह जो जागे हुए थे, वह दुनिया को उपदेश देने लग गए, उन को वह वस्तु प्राप्त हो गई। अब उन की शोभा कहें क्या? बाकी तो कुछ है नहीं–

तनु मनु मउलिआ राम सिउ

उनका 'तनु मनु' 'राम' के साथ 'मउलिआ' मिल गया, एक हो गया। उनके अंदर जो (आत्मा रूप) परमेश्वर था, वह सारे व्यापक परमेश्वर के साथ एक हो गया। देह अध्यास (स्वयं को केवल शरीर, मन-बुद्धि मानना) उनका समाप्त हो गया। उन को पता लग गया कि मैं देह नहीं हूँ, पाँच तत्वों का शरीर है और मैं मन नहीं, ये (शरीर) पाँच तत्वों का है। मैं बुद्धि नहीं, ये पाँच तत्वों की है। ये प्राण, वायु के हैं। वह अपना-आप उनको प्राप्त हो गया, भई, यह हमारा आपा है, इसके आगे वे कुछ कह नहीं सकते–

नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ ।। (पृ. १४४)

वह 'पारखु' बन गए, बस पारख बन गए। कबीर ने 'कबीर बीजक' (ग्रंथ) में पारख के आगे नहीं लिखा। वह कहता, आगे कुछ है नहीं, पारख है बस। जब आप पारख में गए, पारख खुद आप, वह परमेश्वर है। इसलिए कबीर ने तो यहाँ ही खड़ा किया, जितना अपना आपा था। इसलिए भाई! वह परमेश्वर के साथ एक हो गए और मन-

तन महि मनूआ मन महि साचा ।।
सो साचा मिलि साचे राचा ।। (पृ. ६८६)

इस शरीर में मन जो है, वह हर समय संकल्प-विकल्प ही करता है। मन में परमेश्वर बैठा है, वह परमेश्वर सारे एक है, व्यापक है-

पूजन चाली ब्रहम ठाइ ।। सो ब्रहमु बताइओ गुर मन ही माहि ।।१।।
जह जाईऐ तह जल पखान ।। तू पूरि रहिओ है सब समान ।।
बेद पुरान सब देखे जोइ ।। ऊहां तउ जाईऐ जउ ईहां न होइ ।।२।।
सतिगुर मै बलिहारी तोर ।। जिनि सकल बिकल भ्रम काटे मोर ।।
रामानंद सुआमी रमत ब्रहम ।। गुर का सबदु काटै कोटि करम ।।३।।

(पृ. ११९५)

इसलिए, वह तेरे शरीर में जो मन है, मन में वह परमेश्वर आप बैठा है। वह जो मन में बैठा है, वह व्यापक है, सारे परिपूर्ण है, तेरा अपना आप है। उसे आत्मा कहते हैं, उसे परमेश्वर कहते हैं, दृष्टा कहते हैं। ये सारे ही उसके रूप हैं-

संगि साध सहेलड़ीआह ।।

जी! वह कहाँ से प्राप्त हुआ? कहते, 'साध' जो गुरु रामदास महाराज थे, ये उनकी संगत से श्री गुरु अर्जुन देव को यह रास्ता प्राप्त हुआ। उन संतों की कृपा से, गुरु रामदास जी की कृपा से, ये ईश्वर की वाणी, धुर से आई हुई (बाणी) का बखान करते हैं, गुरु अर्जुन देव। इसलिए उन गुरु रामदास साधु की कृपा हुई गुरु अर्जुन देव पर। कबीर की कृपा हुई धर्मदास पर, गरीबदास पर, दादू पर। ये सारी उस परमेश्वर ने कृपा की-

साध जना ते बाहरी

जो ब्रह्म ज्ञानियों से दूर है, जिसे पूर्ण ब्रह्म ज्ञानी की कृपा नहीं हुई,

बख्शिश नहीं हुई। आपको पता है? एक मुख्य बात है, पिरथीए (श्री गुरु अर्जुन देव जी के बड़े भाई) को बख्शिश नहीं हुई। बादशाह के साथ उसकी दोस्ती थी, और बड़ी कोशिश उसने की और 'सुलही खान' को लाया। वह जब ईंटों के भट्ठे दिखाने गए, घोड़े सहित सुलही (खान) भी (भट्ठे की आग में) गिर गया, फौज दिल्ली चली गई। आखिर में बादशाह ने कह दिया, गुरुओं की बात के बीच में कोई न जाए, मैं इसका जिम्मेवार नहीं, फिर जो हुआ। परंतु पिरथीए जितना चालाक तो कोई नहीं था, उसने तो लंगर के पैसे इतने इकट्ठे किए थे, उसके पास बहुत पैसा था और गुरु अर्जुन देव को जब (श्री गुरु रामदास जी ने) गुरु गद्दी दी तो उसने कितनी ईर्ष्या की! भाई गुरदास ने अपनी वारों (रचनाओं) में उसे 'मीणा' (दिल का खोटा) लिखा है। वह कहता, ये तो मीणा है। इसलिए किसी तरफ आप जाओ, जितनी देर परमेश्वर की बख्शिश, आप पर, किसी ब्रह्म ज्ञानी द्वारा नहीं होगी, उतनी देर आपको आत्मा नहीं प्राप्त होगा। यह साधुओं की कृपा है। 'साधु' ब्रह्म ज्ञानी का नाम है। 'साधु' किसी रंग का नाम नहीं, किसी वेश का नाम नहीं। 'साधु' नाम ब्रह्म ज्ञानी का है, जिसका अंतःकरण शुद्ध हो गया, आत्मा की प्राप्ति हो गई। उसे लोग साधु कहते हैं, भई, जो शुद्ध हो गया। इसलिए भाई! इन संतों की कृपा से उस गुरु परमेश्वर ने बख्शा यानि, सब में परमेश्वर देखा–

साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ।।

जिन्होंने महापुरुष, पूर्ण ब्रह्म ज्ञानी का संग नहीं किया, ये गुरु रामदास ने खुद साफ-साफ कहा। खुद कहा पिरथीए को, हे पुत्र! पिता के साथ झगड़ना पाप होता है, गुरु के साथ झगड़ना महापाप होता है परंतु वह नहीं हटा, वह तो माया में फँसा हुआ था। जो आदमी माया में फँसा हुआ हो, वह किसी का भला नहीं कर सकता। उसने तो ठग्गी करनी है, किसी तरह करे। उसने तो लोगों के कपड़े, जेबें काटनी हैं, सारा दिन उसने काटने हैं, जितने उससे काटे जाएँगे, काट लेगा। जिस दिन दूसरी (लेखा देने की) बारी आ गई फिर उसे ही लेखा देना पड़ेगा। इसलिए, जितनी देर पूर्ण पुरुषों का संग नहीं होता, उतनी देर आप बदलोगे नहीं कभी। आप उस पुरुष का संग करना, जिसके संग के साथ आप 'सत्य' के साथ मिल जाओ। सत्संग जो

लिखा हुआ है, जब आप को सच का संग हो जाए, आप साधु हो जाओगे। ये 'सत्य' तो आत्मा है, 'सत्य' परमात्मा है। ये दुनिया का अहंकार तो सारा झूठ है, बिल्कुल इस (संसार की) तरफ न चलना, झूठ की तरफ न चलना, सच की तरफ चलना-

आदि सचु जुगादि सचु ।। है भी सचु नानक होसी भी सचु ।।१।।

(पृ. १)

आप सत्य रूप हो जाआगे, 'सचु' परमेश्वर है, और कोई नहीं। वह तो जैसे शीशे में मुँह दिखता है, वह तो आपके अंदर ही बैठा है, परमेश्वर तो आपके मन में बैठा है। परंतु बैठने का क्या है? आपका मेल तो हुआ नहीं। इसलिए ओ भाई! दुख कभी नहीं हटेगा, दुनिया में दुख ही दुख है। सुख तो नाम में है, नाम के बिना किसी को आज तक सुख मिला नहीं। जब नाम के साथ आपका मन जुड़ गया, तब सुख ही सुख हो जाएगा। नाम और नामी अलग नहीं है। फिर आपको परमेश्वर मिल जाएगा। फिर आपका जन्म-मरण का दुख भी कट जाएगा-

तिन दुखु न कबहू उतरै

उनके दुख कभी नहीं उतरेंगे, जिनका संसार में, माया में मोह है-

माइआ मनहु न वीसरै मांगै दंमां दंम ।।

सो प्रभु चिति न आवई नानक नही करंमि ।। (पृ. १४२६)

ये (मोह, माया) तो कर्म ही नहीं जीव का। आप ये बताओ, सच बात सभी? भई जितने आप में से दुकानें चलाते हो, कुछ करते हो, चाहे ब्लैक करते हो, जो भी (करते हो) और तुम सारा दिन लोगों को लूटते नहीं हो? धोखा करते हो सारा दिन। चाहे कोई ग्रंथी बना हो, चाहे कोई रागी बना हो, चाहे कोई साधु है। माया के खींचे पड़े हैं सारे, इनके साथ कभी कोई बात करके तो देखो, इनके अंदर से क्या निकलता है? इसलिए, आप ऐसे तो नहीं देखते भई, ये सामान लेने वाला, ईश्वर आया है। ये अपनी कमाई करके, अपनी रोटी के लिए, तब (पैसे) लाया है, ये तो नहीं आप देखते? आप तो इतने-इतने पैसे गलत तरीके से कमाते हो, गलत जगह पर ही लगाते हो, लगाते भी गलत जगह पर ही हो। परंतु ईश्वर का आसरा तो कोई ना हुआ,

ईश्वर का डर तो कोई न हुआ, फिर खुश होते हो शाम को। जिस दिन ज्यादा लूटोगे, उस दिन ज्यादा खुश हो जाओगे। उसे कहो, 'ओए! कोई है ऊपर ईश्वर या नहीं?' इसे पता है लेखा माँगने वाला तो कोई है नहीं परंतु इसे ये पता नहीं कि लेखा माँगने वाला तो मन में ही बैठा है। वह ईश्वर तो पारख (परखने वाला) है, दृष्टा (देखने वाला) है, वह तो दाना-बीना (देखने-जानने वाला) है, वह तो यहाँ (मन में) बैठा है। वह तो आपके कर्मों को लिखता जाता है, उसने तो टाइप करने हैं। ये तो आपको समझ ही नहीं है। जितना ज्यादा चालाकी से लूटोगे, उतना ज्यादा रात को खुश होंगे और यदि तुम ईश्वर समझ लो सब में, फिर आप ये काम करो कभी? कभी न करो, यदि आपको एक आदमी का पता लग जाए, भई ये ईश्वर है। मांगेवालिया (माँगेवाल गाँव का) संत था, उसे कुछ अनुभव था। उस पर कुछ कृपा थी, कई बातों में, मैने भी देखी। आप जितने उसके पास जाते थे (जानते थे) कि वह बड़ा लायक आदमी था संत। वह करनैल मेरे पास आया, उसका (संत का) सेवक था बड़ा। वह (संत) उसके (करनैल के) साथ बातें करता परंतु उसका (करनैल का) मन वहाँ नहीं था। वह संत कहता, ओए! क्या करता है तू, मेरा सेवक होकर? मन तेरा वहाँ है और मुझे बातों से टाल रहा है, मन तेरा वहाँ है, साथ में इधर बातें करता है। वह (करनैल) कहता, जब मैंने देखा, भई गलत हो गया, मैं चुप कर गया। (संत कहते) अगर (मन से बात) निकालनी है तो निकाल दे, जो मन में बात हो, वह कहनी होती है। अंदर कुछ और बाहर कुछ दूसरी नहीं कहनी, संत कहता। वह मेरे पास आ बैठा करनैल, ऊँची दौद (गाँव) में। मैंने कहा, करनैल! तू बोलता नहीं आज? कहता, मैं नहीं जी साधु के साथ बोलता। मैंने कहा, क्यों? कहता, मैं पकड़ा गया, संत (मांगेवाल वालों) ने पकड़ लिया। (करनैल कहता) मैंने सोचा, इन के साथ नहीं बोलना अब, साधुओं के साथ, इनको तो पता होता है अंदर का। मैंने कहा,'सारे नहीं होते ऐसे, डर ना जाना!' इसलिए वह दाना-बीना तो आपके अंदर बैठा है और वह आपको आवाज़ नहीं देता? भई ये बात बुरी है, ये अच्छी है। आप चोरी करने चलो, एक आवाज़ देगा, वैसे तो दो-तीन देगा, एक आवाज़ तो जरूर देगा, भई गलत काम है। वह आवाज़

सुनते हो आप? किसी के साथ ठग्गी करते समय सुनते हो आप वह आवाज़? बस, सारा दिन इसी काम में लगे रहते हो कि भई थोड़ा-सा एक उँगली कपड़ा कम काट कर देंगे, कितना बच जाएगा शाम तक। आप ये क्या करते हो? ऐसे पब्लिक सुखी हो जाएगी कभी? कभी नहीं हो सकती, आप जोर लगा लो पूरा। आगे तक तो बँटवारा हुआ पड़ा है, भई तू लेगा, इसे भी देना है, उसे भी देना है, ऐसे भी करना है। ये कोई 'इंसानों' की बातें हैं? ये तो 'ठगों' की बातें हैं। इसलिए जिन पर उस 'परमेश्वर' की और पूर्ण ब्रह्म ज्ञानी की कृपा नहीं हुई, वह अकेले रहेंगे। गुरु साहिब कहते, वे जन्म-मरण में जाएँगे। उनका जन्म-मरण का दुख काटने वाला कोई नहीं। सच तो कह रही है, गुरु की वाणी-

से जम कै वसि पड़ीआह ।।

कहते, जाएँगे किधर? कहता, यमदूतों के वश पड़ेंगे। तब ही पर्चा कट जाएगा। धर्मराज में और कोई शक्ति नहीं लिखी हुई, बस सर्वज्ञता (सब कुछ जानने की ताकत) है उसे। उसके सामने जो आता है, वह उस (सर्वज्ञता) के साथ अंतःकरण पढ़ लेता है। कहता, तेरे साथ ऐसा होगा, ये जाति, ये भोग (वस्तुएँ), इतनी आयु होगी, इस स्थान पर जाएगा, यहाँ तेरा जन्म होगा, इसके सिवाय धर्मराज के पास क्या है? सर्वज्ञता दी हुई है ईश्वर की, इसलिए वह बता देता है। फिर यमदूतों के वश में पड़ना होगा, जितनी भी ठग्गी, बेईमानी सब तरह की, ये यमदूतों के वश में डाल देगी। ये आप ऐसे मत समझना- भई, गुजर गया आज, अब कौन पूछेगा। ऐसे नहीं काम चलना यहाँ, उन यमदूतों के वश में पड़ना होगा-

जिनी राविआ प्रभु आपणा

आप ये बताओ, वही जनक राजा जब धर्मराज के सामने गया, उसे (जनक को) न उस (धर्मराज) ने कह दिया, भई तेरा यहाँ जन्म होगा, ये तुझे फल मिलेगा, ये तेरी जाति होगी। उसे (जनक को) क्यों नहीं कहा उसने? ये तो गुरु ग्रंथ साहिब में लिखा है, फिर वहाँ क्या कहा उसने (धर्मराज ने)?-

नानक धरम ऐसे चवहि कीतो भवनु पुनीत ।। (पृ. १४२५)

ये 'चवहि' नाम है बोलने का, बोली (भाषा) सिंध की है। 'चवहि' यानि

कहते बोलो, कुछ कहो। वह कहता, धर्मराज उठकर, हाथ जोड़कर कहता, 'मेरा भवन पवित्र हो गया' जनक को कहता, आप के चरण पड़ने से। तो उस (जनक) को नहीं उसने कहा, भई ये तेरी जाति होगी, यहाँ जाएगा, ऐसे होगा। क्योंकि, भाई! वह जनक पूर्ण ब्रह्म ज्ञानी था, सच्चा पुरुष था। इसलिए जब आप सच्चे होंगे, जब आपके पास सच आ गया, आपके पाप कट जाएँगे–

सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ ।।
नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ ।। (पृ. ४६८)

सच तो कोई बोलना ही नहीं जानता, कूड़ (झूठ) बोलते हैं, थोड़ा या ज्यादा। कहते, इधर की बात ऐसे करनी है। ये समझते हैं कि सभी पागल हैं। हर एक आदमी यह समझता है, अक्लमंद मैं ही हूँ, ये पागल फिरते हैं सभी। इसलिए, ये बात नहीं है, भाई! सच को पकड़ो–

सरब रोग का अउखदु नामु ।। कलिआण रूप मंगल गुण गाम ।
(पृ. २७४)

आप अपने मन को नाम के साथ जोड़कर सच बोलो, कोई तुम्हें पकड़ नहीं सकता। यही दो दवाइयाँ हैं गुरु ग्रंथ साहिब में 'सच' और 'नाम'। परंतु अगर आपका मन, नाम के साथ न जुड़ा, सच न बोले, फिर नहीं काम चलना। फिर तो तुलसी दास को जब पूछा गया, भई झूठ क्या है? वह कहता–

नहीं असत सम पातक पुँजा । बिखम होई ता कोटिक गुँजा ।
(रामचरितमानस)

वह कहता, झूठ एक पहाड़ है और जो पाप है वह तो (झूठ की) गूँज की आवाज़ है, (जैसे) सुनार जब सोने के गहने बनाता है तो उस वक्त जैसे आवाज़ होती है। सब से बड़ा पाप, एक पहाड़, 'झूठ' है, यहाँ से सारे झूठ चलने हैं, यहीं से जीव उल्टी तरफ जाएगा। इसलिए, यदि आप झूठ छोड़ दो, सच को पकड़ लो, मन को नाम के साथ जोड़ लो–

नाम संगि जिस का मनु मानिआ ।। नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ।।
(पृ. २८१)

नामु संगी सो मनि न बसाइओ ।। छोडि जाहि वाहू चितु लाइओ ।।

(पृ. ७१५)

नाम को, आप पहले ऐसे करो, सच को पकड़ो तो नाम प्राप्त होगा। सच और नाम आप को सीधा वैकुंठ में ले जाएँगे। वह तो–

अजामल कउ अंत काल महि नाराइण सुधि आई ।।
जा गति कउ जोगीसुर बांछत सो गति छिन महि पाई ।।

(पृ. ६०२)

जब उस अजामल का, नाम के साथ मन जुड़ गया, उसी समय उसकी मोक्ष हो गई, उसकी गति हो गई। जब वे आए यमदूत लेने के लिए, भई ये तो 'अजामलु पापी जग जानै' पापी है, तो उधर रामदूत आ गए, ये लिखा हुआ है, उस के इतिहास में। वह (यमदूत) कहते, तुम क्यों आए हो? ये तो पापी है। वह (रामदूत) कहते, ये करता क्या है? कहते, नाम जपता है। (रामदूत) कहते नाम जपने वाला कभी पापी होता है? वह यमदूत कहते नहीं! (रामदूत कहते) फिर निकल जाओ। वे (यमदूत) चले गए। जब इसका मन, नाम के साथ जिस पल जुड़ गया, इसकी मुक्ति हो जाएगी। कोशिश तो करनी है नाम की और सच की परंतु आप करोगे झूठ की और दुनिया की वस्तुओं की, (ये) गलत काम है–

जिनी राविआ प्रभु आपणा

जिन्होंने अपने आत्मा-परमात्मा को 'राविआ', सिमरन किया–

सिमरि सिमरि नामु बारं बार ।। नानक जीअ का इहै अधार ।।

(पृ. २९५)

खोजत खोजत ततु बिचारिओ दास गोविंद पराइण ।।
अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण ।।

(पृ. ७१४)

जब आपका सिमरन सदा के लिए चल गया फिर आपको परमेश्वर प्राप्त हो जाएगा। जब ये सिमरन पूरा हुआ, अहंकार ने समाप्त हो जाना है। अनाहत और धुन हो कर, लिव लग जानी है। अविनाशी (नाश ना होने वाले) पद की प्राप्ति हो जानी है, ये गुरु का मत है–

जिनी राविआ प्रभु आपणा

जिन्होंने अपने परिपूर्ण परमेश्वर को 'राविआ', उच्चारण किया, सिमरन किया, याद किया–

सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ।। (पृ. २)

उस ईश्वर को कभी भूलना नहीं भाई!–

से दिसनि नित खड़ीआह ।।

वह (जिज्ञासु रूप स्त्रियाँ) परमेश्वर के दरवाजे पर खड़ी हुई दिखाई देंगी आपको। वह जिज्ञासु तो परमेश्वर के साथ मिल गए, समझ लो। जिन का सिमरन, अनाहत धुन और लिव लग गई, परमेश्वर प्राप्त हो गया–

रतन जवेहर लाल हरि

उनके हृदय में 'रतन' कौन है? शुद्ध चेतन। 'लाल' को दूर करने वाला कौन है? ज्ञान। जवाहर कौन है? समाधि पर पहुँच जाना श्रवण (सुनने), मनन (मान लेने) के द्वारा–

कंठि तिना जड़ीआह ।।

उनके मन में वह प्रकट है भाई! सच, साक्षी, परमेश्वर। ब्रह्म ज्ञानी हो गया, उसे वह परमेश्वर अपने हृदय में साक्षात मिल जाएगा। वह सत्य स्वरूप है–

सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ ।।

करन करावन तिनि मूलु पछानिआ ।। (पृ. २८५)

नानक बांछै धूड़ि तिन

श्री गुरु अर्जुन देव जी कहते, उन पुरुषों के चरणों की मैं धूल चाहता हूँ, माँगता हूँ–

प्रभ सरणी दर पड़ीआह ।।

वह जो (ईश्वर के) दरवाजे पर जाकर परमेश्वर की शरण पड़ गए–

सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।

अहं त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः । (गीता १८/६६)

मत सोच कर, शरण में ही सारे पाप खत्म हो जाते हैं। ना धर्म, न अधर्म, कुछ नहीं रहता। जब ये शरण आ जाता है, उस समय, वह बख्शा जाता है। जो बख्शा गया, वह पार हो गया। उस पर बख्शिश हो गई–

मंघिरि प्रभु आराधणा

मघ्घर महीने को पवित्र कहते हैं लोग, क्यों? इस महीने में भाई! प्रभु का आराधन करना है, आपने नाम जपना है, सारे मघ्घर महीने में परमेश्वर को भूलना नहीं-

बहुड़ि न जनमड़ीआह ।।

आपका फिर जन्म-मरण नहीं होगा। यदि आप मघ्घर के महीने में अपने मन को, 'नाम' के साथ जोड़ कर (नाम) जपोगे, तो आपका जन्म-मरण कट जाएगा। 'वापिस' आप जन्म-मरण में नहीं जाओगे-

नानक बांछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दर पड़ीआह ।।
मंघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ।।

बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु !

१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।

18

सलोक मः ३।।

माइआ ममता मोहणी जिनि विणु दंता जगु खाइआ ।।
मनमुख खाधे गुरमुखि उबरे जिनी सचि नामि चितु लाइआ ।।
बिनु नावै जगु कमला फिरै गुरमुखि नदरी आइआ ।।
धंधा करतिआ निहफलु जनमु गवाइआ सुखदाता मनि न वसाइआ ।।
नानक नामु तिना कउ मिलिआ जिन कउ धुरि लिखि पाइआ ।।१।।
मः ३।। घर ही महि अंम्रितु भरपूरु है मनमुखा सादु न पाइआ ।।
जिउ कसतूरी मिरगु न जाणै भ्रमदा भरमि भुलाइआ ।।
अंम्रितु तजि बिखु संग्रहै करतै आपि खुआइआ ।।
गुरमुखि विरले सोझी पई तिना अंदरि ब्रहमु दिखाइआ ।।
तनु मनु सीतलु होइआ रसना हरि सादु आइआ ।।
सबदे ही नाउ ऊपजै सबदे मेलि मिलाइआ ।।
बिनु सबदै सभु जगु बउराना बिरथा जनमु गवाइआ ।।
अंम्रितु एको सबदु है नानक गुरमुखि पाइआ ।।२।।
पउड़ी।। सो हरि पुरखु अगंमु है कहु कितु बिधि पाईऐ ।।
तिसु रूपु न रेख अद्रिसटु कहु जन किउ धिआईऐ ।।
निरंकारु निरंजनु हरि अगमु किआ कहि गुण गाईऐ ।।
जिसु आपि बुझाए आपि सु हरि मारगि पाईऐ ।।
गुरि पूरै वेखालिआ गुर सेवा पाईऐ ।।४।।

(पृ. ६४३)

सलोक मः ३

माइआ ममता मोहणी जिनि विणु दंता जगु खाइआ ॥

सारी संगत किरपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु ! सतिनामु श्री वाहिगुरु !!

एकम एकंकारु निराला ॥

अमरु अजोनी जाति न जाला ॥

अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ ॥

खोजत खोजत घटि घटि देखिआ ॥ (पृ. ८३८)

वह (परमेश्वर) तो सब के हृदय में है-

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ॥

कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ॥

(पृ. १४२७)

गुरु नानक के बारे में, मैं आपको एक बात कहता हूँ-

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ ॥

ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ ॥ (पृ. १४०८)

वह ज्योति स्वरूप थे पर-

सभ महि जोति जोति है सोइ ॥

तिसदै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥

गुर साखी जोति परगटु होइ ॥ (पृ. १३)

परंतु जितनी देर पूरे गुरु का उपदेश नहीं मिलता, उतनी देर आपके हृदय में (परमेश्वर) साक्षात प्रकट नहीं होगा। वह ज्योति है तो सब में, परंतु प्रकट नहीं होगी। पहले आपने एक ही काम करना है, जैसे कबीर साहिब ने लिखा है-

कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरु ॥

पाछै लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर ॥ (पृ. १३६७)

कबीर साहिब को पूछा, जी! परमेश्वर के मिलने का कोई तरीका है? कबीर कहता, एक ही तरीका है, मन को शुद्ध कर ले-

कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरु ॥

निर्मल यानि शुद्ध। मन में जब अहंकार, ममता आए, अहंकार भी

एक वृत्ति (ख्याल) है, ममता भी एक वृत्ति है, मोह भी, क्रोध भी एक वृत्ति है। वृत्ति अंतःकरण (मन, बुद्धि और चित्त) में होती है। अंतःकरण में जैसा-जैसा सामान (संस्कार) होगा, वृत्ति वैसी ही होगी। ये एक नियम की बात है। जैसा-जैसा जिसका अंतःकरण होगा, आप उसके साथ बातचीत करने लग जाओ, उसके अंदर से वही बात निकलेगी। इसलिए मैं आपको ये बताता हूँ, भई पहले मन है, मन में अहंकार है, ममता है। ये दूर करनी हैं। ये किसके साथ दूर होंगी? जब आपकी वृत्ति परमेश्वर के साथ लीन हो जाएगी, जब आपका प्रेम-प्रीति परमेश्वर के साथ हो जाएगी, जब आपको उसका प्रकाश (ज्ञान) हो जाएगा, तब अहंकार, ममता अपने आप भाग जाएँगे। बाकी क्या रह गया? आपके अंतःकरण में बैठा चेतन, वह सारे व्यापक है-

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ॥ (पृ. १४२७)

वह तो सब के हृदय में है। कोई ऐसा हृदय है, जहाँ वह नहीं है? रामानंद जी (भक्त कबीर जी के गुरु साहिब) कहते-

कत जाईऐ रे घर लागो रंगु ॥
मेरा चितु न चलै मनु भइओ पंगु ॥१॥रहाउ॥
एक दिवस मन भई उमंग ॥
घसि चंदन चोआ बहु सुगंध ॥
पूजन चाली ब्रहम ठाइ ॥
सो ब्रहमु बताइओ गुर मन ही माहि ॥१॥
जहा जाईऐ तह जल पखान ॥
तूं पूरि रहिओ है सभ समान ॥
बेद पुरान सब देखे जोइ ॥
ऊहां तउ जाईऐ जउ ईहां न होइ ॥२॥
सतिगुर मै बलिहारी तोर ॥
जिनि सकल बिकल भ्रम काटे मोर ॥
रामानंद सुआमी रमत ब्रहम ॥
गुर का सबदु काटै कोटि करम ॥३॥१॥

(पृ. ११९५)

करोड़ों कर्मों को काटने वाला गुरु का दिया हुआ शब्द (नाम) है, परंतु ये भी आप साथ में एक ख्याल करो, शब्द (नाम) और शब्दी (परमात्मा) में कभी भेद होता ही नहीं। शब्द शब्दी से अलग नहीं है। आपके मन में, आपके मन को देखने वाला (परमात्मा) बैठा है या नहीं?

मन महि आपि मन अपुने माहि ।। नानक कीमति कहन न जाइ ।।

(पृ. २७६)

वह तो 'दाना बीना साई मैडा' है। वेद भाषा में दृष्टा कहते हैं, अग्नि भाषा में साक्षी कहते हैं। वह बुद्धि को देखने वाला, जानने वाला है। वह तो नित्य, सत, चित्त, आनंद है। उसे 'आत्मा' भी कहते हैं। 'आत्मा' अपने आप को कहते हैं-

जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई ।।
एको अंम्रित बिरखु है फलु अंम्रितु होई ।। (पृ. ४२१)

वह तो अमर हो जाएगा। इसलिए, जो आपकी बुद्धि, वृत्ति को देखता है। एक समय में एक ही वृत्ति (ख्याल) होती है, ये तो निर्णय किया हुआ है। जो आपकी वृत्ति को देखता है, वह भी तो कोई है? वह 'दाना-बीना' है। 'दाना' जानने वाला और 'बीना' देखने वाला है, ये तो ग्रंथकारों का नियम किया हुआ है। उसे दाना-बीना भी कहते हैं, उसे दृष्टा भी कहते हैं, उसे साक्षी भी कहते हैं, परमात्मा भी कहते हैं, आत्मा भी कहते हैं। वह खुद सब का अपना-आप है। परमेश्वर कोई बहरा नहीं (सब कुछ सुनने वाला है)। कई आदमी शंका करते हैं, उनकी शंका गलत होती है। कहते, चीनी-चीनी कहने से मुँह मीठा नहीं होता, तो ईश्वर-ईश्वर कहने से क्या हो जाएगा? शंका करने वालों की यह शंका थी। चीनी-चीनी कहने से, मुँह नहीं मीठा होता, नीम-नीम कहने से, मुँह कड़वा नहीं होता और राम-राम कहने से क्या हो जाएगा? आपका उदाहरण भी ये अनोखा है और आपकी बात भी ये गलत है। आप बताओ भई, नीम तो आपसे अलग वस्तु है, कुदरती (वस्तु) है, परंतु 'आत्मा' तो आपका अपना-आप है। अपने-आप को तुमने कहीं से रोकना नहीं, अपने-आप को देखना है। आपने ये देखना है भई, मेरी वृत्ति का प्रकाश करने वाला, दाना-बीना, कौन है देखने-जानने वाला? पर आपका अपना-आप दाना-बीना के सिवाय, प्रकाशक के सिवाय,

दृष्टा के सिवाय, चेतन के सिवाय, परमेश्वर के सिवाय, नाम से अलग नहीं। वह आपका 'आपा' है। आपने उसे देखना है। वह जो आपकी वृत्ति (ख्याल) का प्रकाशक (प्रकाश करने वाला) है, वह आपको उत्पन्न नहीं करना पड़ेगा। वह तो नित्य है पहले ही। वह तो-

आदि सचु जुगादि सचु ।। है भी सचु नानक होसी भी सचु ।।१।।

(पृ. १)

वह (आत्मा) तो पहले ही सच है, उसे तुमने देखना है। वह आपकी बुद्धि को, वृत्ति को, इंद्रियों को, प्राणों को, शरीर को, सब को देखने-जानने वाला नहीं है? वह जो (देखने-जानने वाला) है, उसे देखना है। उसे देख कर फिर वहाँ से (दृष्टा से) अपनी वृत्ति को कभी हिलाना नहीं है। उसे पक्का निश्चय करना है। उस पक्के निश्चय में रहकर, उसके नाम का अभ्यास करना और नाम नहीं छोड़ना-

संतसगि अंतरि प्रभु डीठा ।।
नामु प्रभू का लागा मीठा ।। (पृ. २६३)

उस 'संत' के 'संग' के साथ, गुरु अर्जुन देव महाराज कहते, श्री गुरु रामदास संत के 'संग' के साथ हमने अपने अंदर, प्रभु को देखा है। वह प्रकट हो गया, वह मिल गया। अब नाम प्रभु का कभी भूलता नहीं और बहुत ही प्यारा लग गया। प्यारी चीज तो कभी भूलती नहीं। अब प्रभु का नाम, मीठा लग गया। इसलिए, जो अहंकार और ममता की मैल है, वह जीव को परमेश्वर से अलग कर देती है, जीव की नौका डुबो देती है। कभी संतों का संग भी (परमेश्वर से अलग करता है)? संत का संग तो (परमेश्वर से) अलग नहीं करता-

बिसटा असत रकतु परेटे चाम ।।
इसु ऊपरि ले राखिओ गुमान ।।३।।
एक वसतु बूझहि ता होवहि पाक ।।
बिनु बूझे तूं सदा नापाक ।।४।। (पृ. ३७४)

इस चीज को समझकर-जानकर, वहाँ मन टिका कर, अपने आप का अनुभव करना है, वहाँ (परमेश्वर के सिवाय) कोई दूसरा तो नहीं है। आप ने जब कोई सेवा करनी है, या मैंने करनी है चाहे किसी को जल पिलाना

है, उस परमेश्वर को ही ध्यान में रखना है। परंतु ऐसी दृष्टि तो नामदेव की लिखी है, भक्त नामदेव के जीवन में। कहते, एक दिन वह बैठे थे, एक कुत्ता आए और रोटी उठा कर ले जाया करे। सारे लोग कहने लगे, भई नामदेव तो भक्त हो गए, इसलिए नामदेव की दृष्टि यहाँ पहुँची हुई थी। वह वहाँ पहुँच चुका था। हम एक जगह बैठे थे, संत हमारे साथ थे। हम रोटी खाने लगे, एक कुत्ता आया। मैंने उसे (एक आदमी को) कहा, 'कुत्ते को हटा दे'। वह मेरे कान में कहता, जी! 'बलिहारी कुदरति वसिआ'। मैंने कहा, ये फिर देखेंगे, अभी तू इसे हटा दे। वह बड़ा पढ़ा-लिखा था। जब इसकी (जीव की) दृष्टि यहाँ चली जाएगी तो इसका अहंकार, ममता खुद ही चले जाएँगे। नहीं तो अहंकार, ममता कभी छोड़ेंगे नहीं। चलिए-

सलोक मः ३ ।।

माइआ ममता मोहणी

तीसरे पातशाह (श्री गुरु अमरदास जी) का जीवन आपको सुनकर पता लगेगा। खत्रियों के घर के थे, भल्ले कुल में से थे। माया एक ऐसी चीज है जो मोह लेती है, मन को मोह लेती है। आपका 'आत्मा' मन को देखता और जानता है। हर एक आदमी जानता है, भई, ये मेरी गलती है, ये मेरी ठीक बात है। असली जो बात होनी है, आत्मा की होनी है। आत्मा ने जब भी कहना है सच ही कहना है, जड़ ने नहीं कहना। एक उदाहरण देते हैं, आपने किसी से तीस (३०) रूपए लेने हैं, वह भूल से आपको पचास (५०) दे गया। वह घर गया, गिने, फिर वापिस आया और तुमने भी देखकर रख लिये। उसने कहा, मैं भूल से पचास (५०) दे गया और बीस (२०) ज्यादा दे गया। आपने कहा, नहीं तीस (३०) ही देकर गया था। तुम मोह में आ गए, लालच में आ गए परंतु अपने अंदर से देखो, क्या आवाज आती है? भई, तूने पचास (५०) लिए हैं, तेरी जेब में हैं, इस जगह पर हैं, रहस्यक सच (आत्मा) ने कभी झूठ नहीं बोला। 'आत्मा' हर समय सही बताएगा। जितनी देर ये बातें करता है, ये जान-बूझ कर करता है। यथार्थ (सच) तो यथार्थ (सच) ही होता है। वह अंदर से आपका (चेतन) सच बताएगा परंतु आपका विश्वास होना चाहिए, भई अंदर वाला जो बताता है, वह सच ही बताता है।

आत्मा ने तो सच ही सच बताना है, झूठा तो मन ही होता है। सारे विकार मन में ही होते हैं। इसलिए ये (ममता) भाई! मन को मोह लेती है। इस ममता से बच कर रहना है। ममता में नहीं फँसना, आपने सिमरन करना है। 'नाम' का मतलब यही है, भई आप नाम को पकड़ो, छोड़ो ना! वाल्मीकि की एक कथा आती है, लंबी-चौड़ी, उसने नाम पकड़कर, छोड़ा तो नहीं? प्रहलाद ने नाम पकड़कर छोड़ा तो नहीं? कबीर ने नाम पकड़कर, छोड़ा तो नहीं? 'नाम' और 'नामी', एक ही होते हैं। आपका ध्यान, नामी के साथ एक होना चाहिए, जब आप नाम जपो। ये नाम और नामी दो नहीं होते। आपकी वृत्ति वहाँ जाएगी तो ये ममता की वृत्तियाँ आपके अंदर से निकल जाएगी। फिर, एक ही वृत्ति रहनी है, जो भी रहनी है-

जिनि विणु दंता जगु खाइआ ।।

ये (माया) सारे संसार को खा गई। सब के अंतःकरण को ये खींच कर अपनी तरफ ले गई। ये जन्म-मरण में ले गई। ये 'आत्मा'तो अज़र (कभी बूढ़ा न होने वाला), अमर (कभी न मरने वाला) था, ये तो नित्य (सदा) था। ऐसे तो नहीं कि भई 'आत्मा' पहले नहीं था, अब नया उत्पन्न (पैदा) करना है, ये तो पहले ही था, इसे तो केवल देखना है। पीपे (भक्त) ने आखिर में साक्षी का उपदेश दिया है। उसने (पीपे भक्त ने) बड़ा ज़ोर लगाया पर उसका (ईश्वर प्राप्ति का) काम नहीं चला। फिर वह संत के पास गया, उसने एक ही उपदेश दिया। उस पीपे (भक्त) का एक ही शब्द है-

काइआ बहु खंड खोजते नव निधि पाई ।।
ना कछु आइबो न कछु जाइबो राम की दुहाई ।।१।।रहाउ।।
जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ।।
पीपा प्रणवै परमततु है सतिगुरु होइ लखावै ।।२।।३।।

(पृ. ६६५)

सतगुरु ने दिखा दिया। पीपा साहिब (का स्थान) समुद्र के किनारे है, बड़ी शांति है। मैं वहाँ रहा हूँ। वहाँ के रहने वाले लोग भी बड़े अच्छे लगे, भक्त हैं। इसलिए भाई, वह तो सदा है 'आत्मा'-

मनमुख खाधे गुरमुखि उबरे

पूछते हैं, क्या (माया) सब को खा जाती है? कहते, नहीं! मनमुखों को खा जाती है। मन के पीछे चलने वालों को खा जाती है। मन की बातों में आने वालों को, मन के कीड़ों को, खा जाती है। गुरुमुख तो बचे हुए हैं, गुरुमुख तो नित्य-मुक्त हैं। वहाँ लिखा भी है गुरु साहिब ने-

सोहं आपु पछाणीऐ सबदि भेदि पतीआइ ।।
गुरमुखि आपु पछाणीऐ अवर कि करे कराइ ।। (पृ. ६०)

जब गुरुमुख (गुरु के सन्मुख शिष्य) ने अपना-आप पहचान लिया तो अब कर्त्तव्य (फ़र्ज) क्या रह गया उसका? इसलिए, भाई! गुरुमुख बचे ही हुए हैं। आप भी गुरुमुख हो जाओ, मन की आवाज़ के साथ ना चलो, आत्मा की आवाज़ के साथ चलो। एक बात हमें याद है। उसको (एक आदमी को) कहते, तेरे ये काम नहीं। वह (आदमी) कहता, मुझे आत्मा की आवाज़ आती है। उसकी आवाज़ बिल्कुल सच्ची है। आत्मा की आवाज़ सही होगी, सूक्ष्म होगी। ये सभी जितने भी 'माइआ ममता मोहणी', काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध ये सभी निकल जाएँगे परंतु आत्मा की आवाज सच्ची होगी। पहले आपको 'आत्मा' की आवाज़ ज़रूर आएगी। आप कभी बुरा काम करने चलो, आवाज़ ज़रूर आएगी, कि ये गलत काम है। परंतु फिर सोचोगे, ऐसे काम होगा, फिर ये फायदा होगा, फिर ऐसा हो- ये सोचेंगे, पता नहीं कितनी बातें सोचेंगे। इसलिए, भाई! ये मनमुखों को तो खा जाती है। गुरुमुख उससे बचे रहते हैं। गुरुमुखों के ये कभी पास नहीं आती-

जिनी सचि नामि चितु लाइआ ।।

गुरुमुख तो पहले ही इससे (माया से) दूर है, जिन्होंने सच्चे नाम के साथ मन लगा दिया। आप खुद देखो, किसी को पूछो मत, जब आपका 'मन', नाम के साथ जुड़ा होगा, एक होगा, आपको किसी तरह का, दुनिया का कोई ख्याल नहीं आएगा। मन तो अब नाम के साथ एक हो गया, तब कोई दुनिया नहीं रहेगी। मन तो जोड़ दिया, अब एक है-

सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे ।। (पृ. ६३८)

जब 'सुरति' (ध्यान) शब्द में लीन हो जाएगी, शब्द-शब्दी का अभेद (एक ही रूप) है। अपने मन को कभी विकारों में न लगने दो, समझ गए?-

राम जपउ जीअ ऐसे ऐसे ।।

ध्रू प्रहिलाद जपिओ हरि जैसे ।। (पृ. ३३७)

फिर आपको यह (माया) कुछ नहीं कहेगी, 'नाम' के साथ जिसका चित्त जुड़ गया, वह गुरुमुख है, वह पूर्ण है, वह लायक है, वह दुनिया को सीख (शिक्षा) देने वाला है-

बिनु नावै जगु कमला फिरै

जितनी देर आपको 'नाम' नहीं प्राप्त हुआ, उतनी देर आप भूल में हो। भूले हुए आदमी को पागल कहते है, ये पागल आदमी है। यदि नाम के साथ आपका चित्त, एक हो जाए-

एक चित्त जिह इक छिन धिआइओ ।। काल फास के बीच न आइओ ।।

(दसम ग्रंथ)

यदि नाम के साथ चित्त जुड़ गया तो सही है काम, समझ गए?

सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ।। अंतरगति तीरथि मलि नाउ ।।

(पृ. ४)

फिर तो आपका 'अंतरगति तीरथि' है, जो 'आत्मा' तीर्थ है, उसमें आपके मन का स्नान होगा, फिर मन शुद्ध होगा। इसलिए भाई! जितनी देर नाम के साथ मन नहीं जुड़ा, उतनी देर सारा संसार काम में, क्रोध में, लोभ में भूला ही फिरता है-

गुरमुखि नदरी आइआ ।।

पर गुरुमुखों को ये बात समझ आई। क्यों? उन्होंने नाम हर श्वास के साथ जपा। उनका चित्त नाम के साथ जुड़ा और नाम-नामी का अभेद है। उनको आत्मा की प्राप्ति अंदर से हो गई। उन्होंने साफ कह दिया-

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा ।। नामु प्रभु का लागा मीठा ।।

(पृ. २६३)

उनको प्रभु का 'नाम', उनको अंदर से परमेश्वर का पता चला गया। 'आत्मा' इसका अपना-आप है, इससे अलग आत्मा नहीं है। आत्मा-परमात्मा दो (२) नहीं, नाम दो (२) हैं, पंरतु (वस्तु) है एक ह-

एकम एकंकारु निराला ।। अमरु अजोनी जाति न जाला ।।

अगम अगोजरु रूपु न रेखिआ ।। खोजत खोजत घटि घटि देखआ ।।

(पृ. ८३८)

वह एका (१) सब के हृदय में बैठा है। वह एका (१) गुरु साहिब १ ओंकार (ੴ) जो लिख कर गए हैं, वह सब का पूज्य देव है-

धंधा करतिआ निहफलु जनमु गवाइआ

परमेश्वर के नाम को भूल कर, जितना भी काम किया, वह सारा बेकार है, वह काम इसका सफल नहीं हुआ। सफल तो तब होगा, जब नाम के साथ मन जुड़ेगा, नामी मिल जाएगा, फिर आप जो करोगे, चाहे जो भी किया है, सब सफल है महापुरुषों का-

सुखदाता मनि न वसाइआ ।।

जो सारे संसार का 'सुखदाता', पैदा करने वाला, पालने वाला, समाप्त करने वाला परमेश्वर, व्यापक है, वह मन में प्रकट नहीं हुआ, साक्षात नहीं हुआ। वह मिला नहीं। जो तुझे नाम मिला है, पंडितों ने कबीर साहिब से पूछा वह क्या है? वह कहता-

ओअंकार आदि मै जाना ।। लिखि अरु मेटै ताहि न माना ।।
ओअंकार लखै जउ कोई ।। सोई लखि मेटणा न होई ।।

(पृ. ३४०)

वह कहता, मैं ओंकार को जानता हूँ। क्या जानता हूँ?

ओअंकार आदि मै जाना ।।

जो संसार का आदि (मूल) कारण है, वह ओंकार है-

लिखि अरू मेटै ताहि न माना ।।

जिस 'ओम' (ॐ) को आप लिखकर मिटा देते हो, मैं उस 'ओम' को नहीं मानता-

ओअंकार लखै जउ कोई ।।

जो कोई उस ओअंकार को लख (देख) ले-

सोई लखि मेटणा न होई ।।

वह अपने आप ही लक्ष्य बन जाएगा। एका (१) लक्ष्य है, निराकार लक्ष्य है, निराकार लक्ष्य ही होता है। वह किसी शब्द में नहीं होता-

नानक नामु तिना कउ मिलिआ जिन कउ धुरि लिख पाइआ ।।

वह परमेश्वर की दरगाह से ही लिखा हुआ मिला है, जो नाम मिला। पिछले जो साधन (कर्म) होते हैं, वह काम करते हैं। वह जो पिछले कर्म होते हैं, वह साथ चलते हैं। आप ये न कहो, जिनका नाम लहणा था, वह (श्री गुरु नानक देव जी के पास) आते ही गुरु अंगद देव बन गए। गुरु साहिबों ने, जो भी उन्होंने साधन करना था (किया), वह ठीक यथार्थ (सच्ची) बातें थीं–

मः ३ ।। घर ही महि अंम्रितु भरपूरु है

तेरे हृदय रूपी घर में 'अंम्रितु' अमर वस्तु भरी पड़ी है, परिपूर्ण है। जो तेरे हृदय में 'दृष्टा' देखने वाला चेतन, आत्मा–परमात्मा है, वह सब में है–

क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्व क्षेत्रेषु भारत ।
क्षेत्र क्षेत्रज्ञ योर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम् । (गीता १३/२)

जो सारे क्षेत्रों (जीवों के हृदयों) को देखने वाला, जानने वाला–

जो इहु जाणहु सो इहु नाहि ।।
जानणहारे कउ बलि जाउ ।। (पृ. ८८५)

जो हमारे जानने में आता है, गुरु साहिब कहते, वह ईश्वर नहीं है। आप देखते हो, अंतःकरण (मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार), वृत्ति और विषय परंतु ये ईश्वर तो नहीं है ये तो त्रिकुटी है। अब हम ये देखते हैं तो इधर त्रिकुटी है, उधर देखते हैं उधर त्रिकुटी है, ये (त्रिकुटी) तो बदलने वाली चीज़ है–

जानणहारे कउ बलि जाउ ।। (पृ. ८८५)

वह जानने वाला नहीं है, जो आपके हृदय में है?

जाननहार प्रभू परबीन ।। बाहरि भेख न काहू भीन ।।

(पृ. २६६)

वह 'जाननहार' प्रभु है, परमेश्वर है। वह बाहरी वेशों से नहीं खुश होगा। वह तो पूरे प्रेम के साथ आपकी वृत्ति,जब नाम के साथ जुड़ेगी, नामी तब आपको प्राप्त होगा–

मनमुखा सादु न पाइआ ।।

मनमुखों को तो ये (परमेश्वर का) स्वाद ही नहीं आया। वृत्ति जुड़े, तो ये स्वाद आए। मनमुखों की वृत्ति तो संसार के साथ जुड़ी है। इसलिए मनमुखों को ये (स्वाद) मिला नहीं। जब तक ये मन के पीछे चलता है, तब तक इसे परमेश्वर नहीं मिला। जब इसका मन, गुरु के शब्द के साथ पिरोया गया, जब पिरोया जाएगा, तो गुरुमुख होगा और परमेश्वर प्राप्त हो जाएगा। परमेश्वर का साक्षात रूप, इसका अपना 'आपा' ही होगा–

जिउ कसतूरी मिरगु न जाणै

दृष्टांत देते हैं, 'कस्तूरी' (एक खुश्बूदार वस्तु) हिरण के अंदर होती है। हम एक जगह गए। वह लोग कहते, जी! कस्तूरी हिरण के अंदर होती है। हमने पूछा, आपको उसकी पहचान क्या है? वह कहते, जी! वह (हिरण) बर्फ पर भागा फिरता है, फिर हमें पता लग जाता है भई, अब (इसमें) कस्तूरी है तो फिर हम उस की नाभि में से निकालते हैं। पर वह क्यों भागा फिरता है? उसे ये नहीं पता भई, कस्तूरी मेरी नाभि में है। हिरण को जिधर से खुश्बू आती है उधर को ही जाता है। जैसे कस्तूरी का हिरण को पता नहीं चलता भई, कस्तूरी मेरी नाभि में है, वैसे जीव (मनमुख) को भी पता नहीं लगा भई, मेरे हृदय में है सबका मालिक परमेश्वर, वह–

घट घट मै हरि जू बसै (पृ. १४२७)

और वह सब में एक है–

काहे रे बन खोजन जाई ।।
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ।।१।।रहाउ।।
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ।।
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घटि ही खोजहु भाई ।।१।।
बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई ।।
जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई ।।२।।१।।

(पृ. ६८४)

वह तो हृदय में है, (१) एका (परमेश्वर)। इसलिए, उसका पता नहीं लगा है–

सुखु दुखु रहित सदा निरलेपी जा कउ कहत गुसाई ।।

सो तुम ही महि बसै निरंतरि नानक दरपनि निआई ॥३॥५॥

(पृ. ६३२)

गुरु साहिब कहते, दुख-सुख से रहित, निर्लेप, शुद्ध (परमेश्वर) तेरे अंदर है, वह कहीं बाहर नहीं है। आपको तो गलतफहमी है, नामी (के कहीं बाहर होने) की। इसलिए, इसे गलतफहमी है-

सरब भूत आपि वरतारा ॥ सरब नैन आपि पेखनहारा ॥
सगल समग्री जा का तना ॥ आपन जसु आप ही सुना ॥
आवन जानु इकु खेलु बनाइआ ॥ आगिआकारी कीनी माइआ ॥
सभ कै मधि अलिपतो रहै ॥ जो किछु कहणा सु आपे कहै ॥
आगिआ आवै आगिआ जाइ ॥ नानक जा भावै ता लए समाइ ॥

(पृ. २६४)

वह तो निर्लेप, सब के 'मधि' (अंदर) हृदय में बैठा है, परंतु उसका पता नहीं लगा। जैसे हिरण को कस्तूरी का पता नहीं लगा भई, कहाँ से खुश्बू आती है? इस जीव को पता नहीं लगा, ढूँढता फिरता है परमेश्वर को। कभी किसी तरफ जाता है, कभी किसी तरफ, कभी देवी-देवता और कभी किसी की तरफ। ये (देवी-देवता) तो सदा ही लूटने वाले हैं परंतु है सब में परमेश्वर ही, परंतु (देवी-देवता) अलग-अलग बताए गए हैं। वहाँ गीता में लिखा है। वह कहते (श्री कृष्ण भगवान), जो पूजा है वह विधि के मुताबिक है। जो मन से विचार करना परमेश्वर का कि जो परमेश्वर साक्षात व्यापक (हर जगह, हर समय, हर वस्तु में हाज़िर), पूर्ण, हर्ता (समाप्त करने वाला), कर्ता (बनाने वाला), उत्पत्ति (पैदा करने वाला), पालना, लय (समाप्त) करने वाला, मालिक है, सब के मन में है। उसकी पूजा, विधि से होती है-

भ्रमदा भरमि भुलाइआ ॥

उस 'भरमि' (गलतफहमी) ने भूला दिया, 'भ्रमदा' (भटकता) ही फिरता है। वह भ्रम में पड़ गया। अब भ्रम के कारण भूला हुआ इसका मन भटकता ही रहता है। आत्मा में कभी भ्रम नहीं आया। वह बात करता था, वह कहता, वह भ्रम में पड़ गया। वह बताते थे, 'आत्मा' में कभी भ्रम नहीं आया। उसका (जीव का) मन भ्रम में भटकता फिरता है, भूला हुआ-

अंम्रितु तजि बिखु संग्रहै

कहते, 'अंम्रितु' (अमृत) अमर वस्तु की अभी इसे प्यास ही नहीं, सारी उम्र 'बिखु' (जहर) ही इकट्ठा किया। जो माया में, जितनी देर फँसे हुए हैं उन्होंने जहर ही इकट्ठा किया, 'माया' कहते 'विष' है। अमृत को त्याग कर उन्होंने खुद जहर ही इकट्ठा किया (क्योंकि) इस माया को जो इकट्ठा किया! परंतु माया का ये मतलब नहीं। उसने (जनक ने) माया इकट्ठी की परंतु वह माया के अधीन नहीं था, वह ब्रह्म ज्ञानी था। इसलिए जो ब्रह्म ज्ञानी है, उसके लिए (माया) 'बिखु' (विष) नहीं, धर्मियों के लिए 'विष' नहीं है, दूसरों के लिए 'विष' है–

करतै आपि खुआइआ ।।

पर कर्ता (परमेश्वर) क्या करे? जो उसकी (जीव की) ममता थी, जो उसके सकाम कर्म थे, जो उसकी करनी थी, फल तो वैसा ही मिलना है। ये (जीव) कर्मों के अनुसार ही भूलता है, कर्ता (परमेश्वर) किसी को भूल में नहीं डालता–

करता आपि अभुलु है न भुलै किसै दा भुलाइआ ।। (पृ.१४५)

वह (कर्ता परमेश्वर) भूल करने वाला नहीं, वह नहीं कभी भूलता–

गुरमुखि विरले सोझी पई

आत्मा की 'सोझी' समझ किसी बिरले को ही हुई है। अपने आप की समझ किसी बिरले को ही हुई है, भई जो मेरा 'आपा' है, वह 'आत्मा' है। जो मन, बुद्धि, चित्त, अंहकार सब में व्यापक है, सब का प्रकाश करने वाला है, दाना-बीना (देखने-जानने वाला) है, वह जो सब में 'घट घट मै हरि जू' है, उसे मैंने देखना है। उसे देख कर फिर कोई चिंता नहीं। परंतु दृढ़ हो जाए, दृढ़ता में कोई फर्क–

तिना अंदरि ब्रहम दिखाइआ ।।

फिर पढ़ पिछली पंक्ति–

गुरमुखि विरले सोझी पई तिना अंदरि ब्रहमु दिखाइआ ।।

क्या सूझ हुई, 'गुरमुखि' बिरलों को क्या समझ आई–

तिना अंदरि ब्रहमु दिखाइआ ।।

अपने अंदर उनको 'ब्रह्म' साक्षात मिल गया–

ववा वैरु न करीअै काहू ।। घट घट अंतरि ब्रहम समाहू ।।

(पृ. २५६)

सब के हृदय में तो व्यापक वस्तु है। आकाश, सारे व्यापक है। वह (ब्रह्म) तो आकाश का भी आकाश है, व्यापक है। परंतु वह कौन-सा हृदय है जिसमें परमेश्वर ना हो? वह तो सब में है। वह व्यापक वस्तु है। पहले इसने 'सच' की पहचान करनी है, बाद में 'चित्त' की करनी है। चेतन है जो, वही ज्ञान है। यदि ज्ञान हो फिर आपको पक्का हो जाएगा, भई व्यापक वस्तु मेरे अंदर है। सत, चित्त, आनंद मेरे अंदर है, ये आपको पता चल जाएगा कि परमेश्वर व्यापक है। यदि आपके हृदय, चित्त में न हो तो (परमेश्वर) व्यापक नहीं रह सकता। इसलिए, व्यापक का यही मतलब है कि सब जगह हाज़िर है, तो हमारे हृदय में भी है। जो सब की वृत्तियों को देखता है, हमारी वृत्ति को भी वही देखता है। वह तो दृष्टा (देखने वाला) है, जो सब की वृत्तियों का साक्षी है, हमारी वृत्ति का भी वही साक्षी है। परंतु वह अपना 'आपा' है-

सभ महि जोति जोति है सोइ ।।
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ।।
गुर साखी जोति परगुट होइ ।। (पृ. १३)

परंतु गुरु के उपदेश से वह 'ज्योत' प्रकट होनी है, ऐसा बताया गया है। वह (ज्योत) तेरे अंदर है, बाहर नहीं। जिसके प्रकाश से सारा संसार प्रकाशित है, वह परमेश्वर है, वह ब्रह्म है, वह व्यापक है। तेरे हृदय में भी वही तेरा अपना आप 'आत्मा' मौजूद है-

तनु मनु सीतलु होइआ

जब इसे पता लग गया, भई मैं ये वस्तु हूँ, (तो) 'तनु मनु सीतलु' हो गया, तन-मन शाँत हो गया, शीतल हो गया, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि चले गए, अब बड़ी शाँति आ गई। जब ये पता लग गया भई, जन्म-मरण में न आने वाला नारायण है परमेश्वर, फिर अपने आप ही शाँति आ जाएगी। पर यहाँ (जीव का निश्चय) पक्का नहीं होता, यहाँ ठहरता नहीं है। ये, शक करता है-

रसना हरि सादु आइआ

कहते, हमें 'रसना' (जिह्वा) के साथ हरि के नाम का स्वाद आ गया, आ गया या नहीं?-

संतसंगि अंतिर प्रभु डीठा ।। नामु प्रभु का लगा मीठा ।।

(पृ. २६३)

अब स्वाद आ गया, अब जिह्वा को स्वाद आ गया। अब रस आ गया, अब कोई कल्पना नहीं रही। हमें पता लग गया भई, परमेश्वर सब के अंदर है, अब तो अपना-आप ही परमेश्वर है। गुरु साहिब कहते, अब तो-

बिसरि गई सभ ताति पराई जब ते साधसंगति मोहि पाई ।।१।। रहाउ ।।
ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ।।१।।
जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ इह सुमति साधू ते पाई ।।२।।
सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै पेखि पेखि नानक बिगसाई ।।३।।८।।

(पृ. १२९९)

बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु !

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

19

पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु ।।
मनु बेधिआ चरनराबिंद दरसनि लगड़ा साहु ।।
ओट गोविंद गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु ।।
बिखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु ।।
जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ।।
करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न विछुड़ीआहु ।।
बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ।।
सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ।।
पोखु सुोहंदा सरब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु ।।११।।

(पृ. १३५)

गोपाल यानि जो सारी सृष्टि (संसार) का मालिक है, 'गोविंद', जो सब का प्रकाशक, जन्म-मरण को काटने वाला, वही मेरा दाता है-

सेवा सुआमी लाहु ।।

मैं उस स्वामी की सेवा में लग गया-

राखा एकु हमारा सुआमी ।। सगल घटा का अंतरजामी ।।

(पृ. ११३६)

अब मैं अपने स्वामी की सेवा में लग गया। वह स्वामी मुझे जो आज्ञा करता है, मैं वही करता हूँ-

बिखिआ पोहि न सकई

अब 'बिखिआ' विषय (शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध) मेरे आनंद में (रुकावट डालने) नहीं आते। मेरे अंतःकरण (मन) में विषय पहुँच नहीं सकते। (पहले) विषय आते थे, जाते थे, (परंतु अब) वह (उस आत्म आनंद में) नहीं पहुँच सकते। अब विषयों का काम नहीं रहा, क्यों? अब मोह तो

रहा नहीं, मोह के साथ ही विषय होते हैं। एक मोह होता है, एक विषय होते हैं। अब मोह तो रहा नहीं है, अब मुझे विषयों के साथ कोई मतलब नहीं रहा–

मिलि साधू गुण गाहु ।।

अब मैं दिन-रात गुण गाया करूँगा। पाँचवें पातशाह कहते, 'मैं' गुरु रामदास के साथ मिलकर परमेश्वर के गुण गाऊँगा। उन्होंने मुझे (परमेश्वर के) गुण गाना बता दिया, ये गुरु साहिब कहते हैं। उन्होंने (श्री गुरु रामदास ने) मेरा, परमेश्वर के साथ मिलाप कर दिया। उन्होंने मेरा ध्यान, परमेश्वर के साथ जोड़ दिया–

जह ते उपजी तह मिली

जहाँ से आया था जीव, वहीं मिल गया। 'जीव' उत्पत्ति का नाम है, 'जीव' सदा नहीं होता। जीव का लक्ष्य, स्वभाव एक नहीं होता, जीव का 'प्रकाशक' (प्रकाश देने वाला), दाना-बीना (देखने-जानने वाला), साक्षी, सदा होता है। उसमें (साक्षी में) कोई विकार नहीं होता, जो विकार होते हैं (वह जीव में होते हैं)। वह जो चिदाभास (चित्त में आभास) पैदा होता है, वह नाश होता है। वह (चिदाभास) तब तक रहता है, जब तक उसने प्रारब्ध का काम करना है, भोगना है। इसलिए अब (माया) नहीं मुझे कुछ कर सकती–

सची प्रीति समाहु ।।

'सची प्रीति' परमेश्वर के साथ लग गई। मेरा मन उसमें समा गया, एक हो गया, मिल गया–

करि गह लीनी पारब्रहमि

परमेश्वर ने मेरी बाजू पकड़ ली। उसने अपने हाथ में मेरी बाजू पकड़ ली, अब मुझे कोई चिंता नहीं है। ये प्रेमा भक्ति है। अब परमेश्वर ने मेरी बाजू पकड़ ली–

बहुड़ि न विछुड़ीआहु ।।

अब कभी (परमेश्वर से) बिछुड़ेंगे नहीं। ब्रह्म ज्ञानी कभी, अज्ञानी नहीं हुआ। अब नहीं बिछुड़ेंगे। अब जो कुछ हो प्रारब्ध के अनुसार हो परंतु अब कभी बिछुड़ेंगे नहीं। अपना 'स्वरूप' नहीं छोड़ेंगे, अपने 'स्वरूप' (को पाने) का लक्ष्य पूरा हो गया–

बारि जाउ लख बेरीआ

मैं उस परमेश्वर पर लाख बार बलिहार जाता हूँ, कुर्बान जाता हूँ–

हरि सजणु अगम अगाहु ।।

वह जो लोक-परलोक का 'सजणु' (सज्जन) है वह अगम, अगाध है, उसका किसी ने अंत नहीं पाया। वह बेअंत है, सत्य है, चित्त है, आनंद है। उसका अंत नहीं किसी ने आज तक पाया–

सरम पई नाराइणै

उसी (नारायण प्रभु) की तू अब चरण-शरण पड़ जा–

नानक दरि पईआहु ।।

मैं (नानक) उसके दरवाजे पर जाकर पड़ गया, उसकी शरण पड़ गया–

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा ।।

(पृ. ५४४)

मैं उस परमेश्वर की शरण पड़ गया, अब मैं कभी अलग नहीं होता। अब मेरा राखा–

राखा एकु हमारा सुआमी ।। सगल घटा का अंतरजामी ।।

(पृ. ११३६)

वह परमेश्वर हमारा राखा हो गया। अब उससे बिछुड़ते नहीं कभी। अब उसके साथ एक हो गए, परमेश्वर के साथ। आगे अब जन्म-मरण नहीं होगा–

पोखु सुहंदा सरब सुखु

पौष के महीने सारे सुख उसे प्राप्त हो जाते हैं। सब सुखों का मूल है 'आत्म सुख'। उसे वह (आत्म-सुख) प्राप्त हो जाता है, जिसमें सुख ही सुख है–

जिसु बखसे वेपरवाहु ।।

जिस को बेपरवाह (परमेश्वर) बख्श दे–

जा कउ अपुनी करै बखसीस ।। ता का लेखा न गनै जगदीस ।।

(पृ. २७७)

अब बख्शे गए, अब कोई लेखा नहीं रहा–

लेखा छोडि अलेखै छूटह (पृ. ७१३)

अब (कर्मों के) लेखे छूट गए और अलेख (लेखे से रहित) हो गया। अब लेखे छूट गए, अब हमारा कोई भी जन्म-मरण नहीं होगा, गुरु साहिब कहते। अब हमारा कोई भी नुकसान नहीं होगा, अब कोई झगड़ा नहीं होगा। अब तो परमेश्वर ने बख्श दिए-

जा कउ अपुनी करै बखसीस ।। ता का लेखा न गनै जगदीस ।।

(पृ. २७७)

अब हमारा लेखा समाप्त हो गया। ये है भाई! परमेश्वर को मिलने का रास्ता-

सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ।।
पोखु सुहंदा सरब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु ।।

बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु !

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

20

कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु ।।
प्रमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ।।
वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ।।
खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ।।
विचु न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज ।।
कीता किछू न होवई लिखिआ धुरि संजोग ।।
वडभागी मेरा प्रभु मिलै तां उतरहि सभि बिओग ।।
नानक कउ प्रभ राखि लेहि मेरे साहिब बंदी मोच ।।
कतिक होवै साधसंगु बिनसहि सभे सोच ।।६।।

(पृ. १३५)

निष्काम (बिना कामना के) सेवा करने से, निष्काम कर्म करने से, इंसान का अंतःकरण (मन) शुद्ध हो जाता है, निर्मल हो जाता है। निष्काम कर्म यहाँ तक पहुँचता है। आपको पता है, गीता में दोनों निष्ठाएँ लिखी हैं। 'निष्काम कर्म' निष्ठा और 'ज्ञान निष्ठा', तीसरी तो लिखी नहीं। कृष्ण भगवान ने जो गीता में किया, (गीता) लिखवाई, कर्म निष्ठा (परिणाम व आसक्ति का त्याग करके केवल गुरु अर्पण कर्म करने) से किया। ज्ञान निष्ठा (प्रकृति के तीनों गुणों व शरीर आदि से ऊपर उठकर अपने स्वरूप में टिकने) को प्रधानता नहीं दी, आप पढ़ के देख लो, परंतु स्वामी शंकराचार्य ने 'ज्ञान निष्ठा' को जाकर प्रधानता दी। उसने अंत में जाकर खत्म किया कि जितने भी आपके परते (विचार), जितने भी आपके ज्ञान, जितने भी आपके ख्याल, जितने भी आपके संकल्प, वह सब ज्ञात (पता) होते हैं। कोई भी जीव का अज्ञात कर्म नहीं होता। इसलिए, गुरु साहिब ने लिखा है, किसी को दोष देना नहीं बनता। यदि आपका कोई संकल्प अज्ञात होता फिर आप (संकल्पों

को) देख नहीं सकते थे। आपके संकल्प आपके सामने से गुजरते हैं, ज्ञात हैं। जो ज्ञाता (जानने वाला) है, वह अज्ञात कैसे हो जाएगा? ये ग्रंथ लिखने वालों ने वेदांत के अंत में जाकर लिखा है, भई! जब कोई 'ज्ञान' अज्ञात नहीं, यहाँ 'ज्ञान' वृत्ति का नाम है, संकल्पों का, ख्यालों का। जो आपको ख्याल आता है, वह आपको पता होते है। यदि ना पता हो तो आपका एक ऐसा ख्याल आ जाए, चलते हुए आप उसी समय वापिस हो जाओ। ना भई, मैं तो ताला लगाना भूल गया, मुझे अभी ख्याल आया है। वह कहता, ये काम फिर कर लेना, अब नहीं, अब चलता जा। तू इधर मुड़ा, वह कहता, भई मेरा ख्याल इधर चला गया। यदि (ख्याल) पता था, तो ही वहाँ से वापिस आया। दुनिया का कोई भी ख्याल, जितने दुनिया के ख्याल हैं, जीव के अंतःकरण में आते हैं, सब पता होते हैं। जिसके सहारे ज्ञात हैं, वह तो हाज़रा हज़ूर है और ज़ाहरा-ज़हूर है, तो आपको जानने वाला कैसे अज्ञात हो गया? अंत में ग्रंथकारों ने लिखा है, जब आपको अपने सारे संकल्प (विचार) ज्ञात हैं, सारी वृत्तियाँ पता हैं और सारे ख्याल अपने पता हैं, तो ख्याली (ख्यालों को देखने वाला) कैसे अज्ञात हो गया? ख्याली तो दाना-बीना ही है। ख्याली तो दृष्टा ही है। ख्याली तो वह है जो आपके अंदर बैठ कर देखता और जानता है। वह है 'दाना बीना साई मैडा', वह परमेश्वर है। यदि वह (ख्याली) जीव हो, तो उसका किया हुआ ख्याल गलत हो जाए। कभी भी ज्ञाता का टाइप किया हुआ ख्याल आज तक अज्ञात नहीं हुआ, ना मिटा है। उस (गलत ख्याल को दूर करने) के उपाय तो लिखें हैं 'प्रायश्चित', भई! तू ये उपाय कर, ये प्रायश्चित कर। ये कोई नहीं कहेगा, मैं इसे काट ही दूँगा। क्यों? टाइप करने वाला ज्ञाता, दाना-बीना है, जो देखता और जानता है, वह कौन है? परमेश्वर! टाइप तो वह कर देगा फिर वह तेरे नज़दीक है, ये भी बात है। तेरा स्वरूप तो वही है, तेरा स्वरूप, ख्याल तो नहीं है। संकल्प और विकल्प का नाम 'मन' है। 'संकल्प विकल्प ही मन' है, जहाँ लक्षण (वृत्ति के द्वारा पहचान) करते हैं, वहाँ संकल्प-विकल्प को 'मन' कहते हैं। मन तो आपके सामने है, आप मन के सामने तो नहीं हो? मन को देखने वाला, जानने वाला आत्मा है। मन तो जड़ है। संकल्प-विकल्प तो जड़ होते हैं। जैसा-जैसा कर्म करोगे, वैसा हो जाएगा और जितना आपने करना है

संकल्प-विकल्प, वह भी जड़ वस्तु का ही है, कोई ख्याल कर लो। कभी चेतन का संकल्प-विकल्प किया आपने? जब आपकी वृत्ति (ख्याल), चेतन के साथ एक हो जाएगी, उस समय संकल्प-विकल्प होता ही नहीं। एकाग्रता में संकल्प-विकल्प नहीं होता, वहाँ तो 'अफुर' (संकल्प-विकल्प रहित) परमेश्वर होता है-

बिनु सतिगुर किनै न पाइओ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ ॥
सतिगुर विचि आपु रखिओनु (पृ. ४६६)

सतगुरु दुनिया में वही बनेगा, जिसमें परमेश्वर 'अपना-आप' रख देगा। दूसरा चाहे कितना पढ़ा लिखा हो, कितनी बातें जानता हो, कितना व्यवहार में समझदार हो, वह सतगुरु तो नहीं बन जाएगा-

नानक अंगद को बपु धरा । धरम प्रचुरि इह जम मो करा ।
(दसम ग्रंथ)

जब गुरु नानक देव जी ने अंगद में अपना-आप रखा तो वे (अंगद देव जी) गुरु बने। पहले ना गुरु बन गए?

सतिगुरु विचि आपु रखिओनु (पृ. ४६६)

परंतु साथ में एक और बात है, सतगुरु एक होता है, वेश (रूप) उसके अनेक होते हैं। गुरुओं का गुरु एक परमेश्वर, अकाल पुरुष, व्यापक, निराकार ही होता है।

नानक करते के केते वेस ॥ (पृ. १३)

जितनी भी उसकी खुशी है, वेश बना ले। दादू का वेश, उसने बनाया। कबीर का वेश, उसने बनाया। नामदेव का वेश, उसने बनाया। बताओ? दस (१०) पातशाहों (गुरुओं) का वेश, उसने बनाया, जो (उसकी) खुशी है, वेश बना ले-

नानक करते के केते वेस ॥ (पृ. १३)

आप ये बात भी नहीं कह सकते, भई कर्ता एक ही गुरु बनेगा परंतु वह तो गुरुओं का गुरु है।-

गुरु गुरु एको वेस अनेक ॥ (पृ. १२)

गुरुओं का गुरु एक ही है, और वेश, उसके स्वरूप अनेक हैं। क्यों? उसने तो हर एक भाषा में और हर एक देश को तारना है और आपकी ये

'पंजाबी' मारवाड़ी तो नहीं समझते थे। दादू वहाँ बोला ही मारवाड़ी आकर। यदि ज्ञान पंजाबी में उसने बोला होता, क्या मारवाड़ियों को पता लग जाता? वहाँ दादू उतरा, वहाँ उसने मारवाड़ी में समझा दिया। गुरु नानक आए खुद। परमेश्वर कभी-कभी खुद भी उतरता है। वह खुद अवतार आता है, ये आप देख लेना फिर भी-

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ ।।
ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ ।। (पृ. १४०८)

ऐसे तो नहीं (कि) वह (श्री गुरु नानक देव जी) आते ही गुरु नहीं बने थे? (बल्कि) उन्होंने तो बाबा बुड्ढा, अजित्ता रंधावा, आपको कितने बताएँ जिनके दीपक पहले ही जगा दिए थे, आते ही, समझ गए? उन्होंने ये नहीं कहा, भई! जो आज प्यासा है उसे अगला गुरु ही पानी पिलाएगा, ये नहीं होता कभी भी। वह गुरु थे। बस! कृपा का हकदार (अधिकारी) होना चाहिए-

बिनु सतिगुर किनै न पाइओ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ ।।
सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणाइआ ।।
(पृ. ४६६)

वह (परमेश्वर) सारे प्रकट है, सतगुरु में वह आपना-आप रखता है। ये सब को कह कर अच्छी तरह समझा दिया है-

सतिगुर मिलिऐ सदा मुकतु है (पृ. ४६६)

ये भी नियम है। जिसे सतगुरु मिला, उसकी मुक्ति नहीं हुई? वह तो 'कौडे राक्षस' की भी मोक्ष कर देता है, वह तो 'सज्जन ठग' की भी मोक्ष कर देता है। परंतु किसकी?-

जिनि विचहु मोहु चुकाइआ ।। (पृ. ४६६)

जिसने अपनी वृत्ति, अंतःकरण में से मोह निकाल दिया तो सतगुरु ने तो दीपक तभी जगा देना है। पर जब तक ये मोह नहीं छोड़ेगा तब तक सतगुरु का क्या कसूर है? सतगुरु का तो इस में कोई दोष नहीं है-

सतिगुर मिलिऐ सदा मुकत है जिन विचहु मोहु चुकाइआ ।।
उतम एहु बीचार है जिनि सचे सिउ चितु लाइआ ।। (पृ. ४६६)

दुनिया में सभी विचारों से एक विचार सबसे अच्छा है, गुरु साहिब कहते। क्या?

जिनि सचे सिउ चितु लाइआ ।। (पृ. ४६६)

ये अब आप खुद देख लो, आपका मन सच्चे के साथ जुड़ा है आज तक? या नहीं जुड़ा? फिर क्या होगा-

जिनि सचे सिउ चितु लाइआ ।। जगजीवनु दाता पाइआ ।।

(पृ. ४६६)

(जिसका मन जुड़ा) उसे परमेश्वर मिल गया। इसलिए, यह है विचार। आप ये बताओ, भई जब परमेश्वर आपके अंदर दाना-बीना (देखने-जानने वाला) के रूप में बैठा है-

मुई सुरति बादु अहंकारु ।। ओहु न मूआ जो देखणहारु ।।

(पृ. १५२)

वह मरने वाला तो कभी है ही नहीं। जो आपके अंदर दाना-बीना है, वह जन्म-मरण वाला तो नहीं? वह तो जन्म-मरण से रहित नारायण है, गुरु साहिब ने लिखा है-

जनमि न मरै न आवै न जाइ ।। नानक का प्रभु रहिओ समाइ ।।

(पृ. ११३६)

नानक का प्रभु तो व्यापक (हर जगह, हर समय, हर वस्तु में हाज़िर) है। नानक, किसी प्रच्छिन्न (एक वस्तु, एक समय, एक जगह से संबंधित) का उपासक तो नहीं है। नानक का परमेश्वर तो व्यापक है। इसलिए, जब वह दाना-बीना (देखने-जानने वाला) है, तो आप ज्ञात हो। आप दाना-बीना नहीं हो? दो चीजें हैं, एक जड़ है, एक चेतन है। वृत्ति से लेकर (सारा संसार) प्रकृति है। वृत्ति के इस तरफ रूहानियत है, चेतन है। अब आप शाँत हो, आप इस (रूहानियत) की तरफ हो। अब आप खुद बताओ, आप दृष्टा हो या दृश्य हो। यदि दृश्य हो तो-

द्रिसटमान है सगल मिथेना ।। (पृ. ४६६)

तब तो आप झूठे हो। नहीं! आप दृष्टा हो। आप अपने ख्यालों को खुद देखते हो, आप फैसला करते हो। यदि आपके ख्याल को, कोई दूसरा कहे, भई तेरा ये ख्याल है, तो कहोगे 'ना' झूठ है, मेरा तो ये ख्याल है। वह (ख्याल) आप देखते भी हो और जानते भी हो। इसलिए-

कतिकि करम कमावणे

कार्तिक का महीना एक बात कहेगा, जीव! तूने कर्म कमाने हैं। किसी ने अच्छे और किसी ने बुरे, किसी ने सकाम (कामना सहित) और किसी ने निष्काम (कामना रहित)। सकाम का फल होगा 'संसार', निष्काम का फल होगा 'अंतःकरण की शुद्धि'। निर्मल (शुद्ध) होकर मोक्ष होगी, ये कबीर गवाही दे गया है-

कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीर ।।
पाछै लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर ।। (पृ. १३६७)

जब मेरा (अंतःकरण का) शीशा साफ हो गया, मुझे परमेश्वर का दर्शन हो गया (पता चल गया)। परमेश्वर को कबीर साहिब कहते, अच्छा! यदि आना है तो आ जा, मैं तो चलता हूँ, समझ गए? इसका मतलब यही है कि जब अंतःकरण (मन) का (शीशा) साफ हो जाए, वह वस्तु खुद ही मिल जाती है। उदाहरण है एक निर्जकामता मानी जाती है। किसी-किसी ने ऐनक भी लगाई होती है। बुजुर्गों ने ऐनक लगाई होती है, उस (शीशे) को आप कपड़े के सामने कर दो, आग लगा देती है, जला देती है। पर इस का मतलब यह है निर्जकामता का भ्रम तो नहीं छूटेगा, उसमें से (ऐनक में से) गुजर कर 'सूरज' (कपड़े) जलाता है। दृष्टांत निर्जकामता की तरह आपका मन शुद्ध हो जाएगा। वह चेतन जो ज्ञान है, खुद (सूरज की तरह) आगे जाकर आपके सारे कर्मों को जला देगा। जब तक आपका अंतःकरण पूरी तरह से शुद्ध नहीं होगा, फिर आपके कर्मों को कौन जलाएगा? शुद्धता होने पर परमेश्वर सारे काम अपने आप कर देता है। इसलिए, कार्तिक के महीने के द्वारा गुरु साहिब जी कहते, आपने भई! कर्म कमाने हैं, जैसी आपकी खुशी है, वैसे। आपके हृदय में रजो, तमो, सतो तीन गुण हैं। आपने गुण के अनुसार चलना है, ऐसे तो आपने चलना नहीं। जब आपके अंदर रजो गुण होगा तो आपका मन पाप जरूर करेगा, पाप के संकल्प करेगा। जब सतो गुण होगा तो समाधियाँ अपने आप आ जाएँगी। जब तमो गुण होगा तो मारना, पीटना, छेड़ना कितने काम करेगा? आपके मन ने, तन के और मन के गुणों के अनुसार चलना है। गुण आने हैं कर्म के अनुसार, ये (कर्मों का फल) तो परमेश्वर के वश है। इसलिए, कार्तिक के महीने द्वारा आपने कर्म कमाने हैं। जैमिनी ने यजुर्वेद पहचाना (व्याख्या की) और (कर्मों की) पूरी मान्यता खत्म

की, कर्म आदि कुछ न किए। इसलिए, कर्मों का प्रसंग है, कार्तिक के महीने द्‌वारा श्री गुरु अर्जुन देव महाराज जी कहते, आपने कर्म कमाने हैं-

दोसु न काहू जोगु ।।

परंतु एक बात समझ लो, किसी को दोष देना अच्छा नहीं। मुझ से उसने करा दिया जी, उसने ऐसे कर दिया जी, उसने वैसे करा दिया जी। तुझे दिखता नहीं था तेरा संकल्प? तेरा ख्याल तुझे दिखता था, तेरे सामने से निकला। दोष तो तभी दो (अगर अपना संकल्प दिखता न हो)-

दोसु देत आगह कउ अंधा ।। (पृ. २५८)

दोष तो अज्ञानी देते हैं। तू तो जानता है सब कुछ। जो तूने कर्म किए हैं, उनको केवल ये कह देना-

जो तुधु भावै साई भली कार ।। तूं सदा सलामति निरंकार ।।

(पृ. ३)

ऐसे तो यदि ईश्वर मिल जाए, तो (गलत काम) हो जाए। यदि आप यहाँ भी कुछ अपनी बुद्‌धि चलाते हो, कर्मों को टालने के लिए, ये कर्म भी गलत है। क्यों? आपके बस में है वो कर्म। फिर दोष न किसी को देना। जो कुछ करो, आप जा कर वहाँ भोगना, दूसरे को कोई दोष न देना। तूने ख्याल किया, तेरे ख्याल के अनुसार कर्म हुआ। तेरे मन ने, तेरे ख्याल के अनुसार चलना है। उसके (दूसरों के) ख्याल के मुताबिक तो नहीं चलना? जिसे दोष देता है। किसी को दोष देना ठीक नहीं। कर्म जैसे-जैसे करेगा, अरे भाई! (परिणाम) खुश होकर भोगना फिर।

चलो जी-

प्रमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ।।

कहते, जी! ये ऐसा क्यों हुआ? कहते, तू परमेश्वर को भूला। यदि तुझे परमेश्वर याद होता, तू (गलत) कर्म क्यों करता? परमेश्वर तो सब में एक ही है-

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ।।
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ।। (पृ. १४२७)

परमेश्वर सारे व्यापक नहीं है? परमेश्वर सब के हृदय में है। यदि तू परमेश्वर को जान लेता, तो तेरे से बुरे काम न होते। कहाँ ज्ञान कांड है और

कहाँ कर्म कांड है? ना-ना तू परमेश्वर को भूल गया, तूने परमेश्वर को याद नहीं रखा, कि भई! कोई नियंता (कंट्रोल करने वाला) है दुनिया का। ये भी आप जानते हो कि भई उत्पत्ति (पैदा), पालना, लय (समाप्त) करने वाला एक ईश्वर है, और तो कोई नहीं है। देवताओं की कल्पना पुराणों ने की, वेद ने नहीं की। वेद तो उत्पत्ति, पालना, लय करने वाला एक ईश्वर को मानता है-

एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूत अंतरात्मा ।
कर्म अध्यक्षः सर्वभूत अधिवासः साक्षी चेता केवलोनिर्गुणश्च ।

(श्वेताश्वेतर उपनिषद अध्याय ६ मंत्र ११)

वेद तो एक 'चेतन' को ही मानता है, वह 'प्रकाश रूपी', 'ज्योति स्वरूप' एक है। समझ गए? ये (देवता) पुराणों की कल्पनाएँ हैं। यदि आप कहो, जी! (देवता) ऐसे है, तो वह कहता, आपकी बुद्धि पुराणों तक है। ये तो नहीं कहता, ईश्वर एक नहीं है। वहाँ रहता था 'अकलानंद'। वह कहता था, तूने यहाँ कल्पना की पुराणों तक। उसे बड़ा याद था, ये देख कहता, पहचान में आया? इसने (पुराण ने) वृत्तियाँ कितनी लिखी हैं? उसने (वेद ने) वृत्ति का कर्म ही जला कर दूर कर दिया। उसे बड़ा याद था शास्त्र। इसलिए, भाई! दोष किसी को नहीं देना। अपना किया खुद भोगो, अपना दोष दूसरे पर मत लगाओ, गुरु साहिब कहते, एक पाप और हो जाएगा, पहले आप जो पाप कर चुके हो, एक और कर दोगे। क्यों? किया तुमने खुद, 'दृष्टा' उसके तुम खुद, और संकल्प, ख्याल आपका और ख्याल करने वाले तुम खुद, फिर देखते नहीं आप? ये (दूसरों पर दोष लगाना) तो एक चालाकी है आपकी। गुरु साहिब कहते, ये झूठ बात है। तेरा ही किया-

जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥ (पृ. १३४)

तेरा ही किया कर्म, तुझे ही भोगना पड़ेगा परंतु बख्शिश ईश्वर के हाथ में है, यदि वह कर दे। बख्शिश ऐसे नहीं होती। बख्शिश तब होगी जब आपका अहंकार खत्म हो जाएगा सारा। आप फिर कहोगे, जी! 'सज्जन ठग' पर क्यों हो गई जी? सज्जन ठग, जिस मौके रोकर पछतावा करके, गुरु के चरणों में गिरा, उस समय उसके अंदर अहंकार नहीं था, वह तो चरणों में गिरा हुआ रो रहा था। भई, मैं बड़ा पापी हूँ, मैं ऐसा हूँ, आप बख्शो, तो बख्शा जाऊँगा। यदि अहंकार समाप्त न होता तो कभी बख्शा ना जाता।

बख्शा तभी जाएगा जब अहंकार समाप्त हो जाएगा इसका। इसकी चालाकी, अहंकार के सहारे है। जब अहंकार ही नहीं है तो बख्शिश तो ईश्वर को करनी पड़ेगी, यहाँ बख्शा जाएगा-

हउमै विचि गावहि बिरथा जाइ ।। (पृ. १५८)

अहंकार में आपके भजन (सिमरन) करने का भी कोई फायदा नहीं, गुरु साहिब कहते। जब आप अहंकार में हो तो भजन करना भी बेकार है। 'हउमै' में गाया हुआ भी बेकार है। जब तक आपकी 'अनात्मा' में 'आत्मा' बुद्धि है। इसका एक ही अर्थ है 'अनात्मा' को 'सच' मानना। जब तक अनात्मा में, दुनिया की चीजों में, सत्ता है कुछ, तब तक आपने ईश्वर को माना नहीं। तू सब कुछ माँग ईश्वर से, तेरा जिम्मेवार ईश्वर है। आपने अपने आपको जीव खुद बनाया है। आप बताओ? जब कोई बच्चा पैदा होता है, किसी को पहले पता होता है? जब देखते हैं तो पता चलता है। ईश्वर को तो पहले ही कर्मों का पता था, जैसे-जैसे कर्म थे, वैसे ही बना दिया। यदि उसका कान नहीं लगाना था तो नहीं लगाया, यदि उसका पैर टेढ़ा करना है तो पहले ही टेढ़ा होगा। वह तो कर्मों के अनुसार चलना है। ये तो 'करमा संदड़ा खेतु' है भाई! संसार कर्मों का खेत है। जैसे-जैसे कर्म तू करेगा गुरु साहिब कहते, तुझे भोगने पड़ेंगे। तू इसमें, कर्म में गलती न करना। यदि तेरे कर्म में गलती आ गई तो अंत तक गलती चलती रहेगी। कर्म शुद्ध कर-

प्रमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ।।

परमेश्वर को भूल कर, ये काम हुआ। यदि परमेश्वर तुझे याद होता, तू परमेश्वर का दास होता, तेरे से कभी बुरा काम नहीं होना था। तेरे बिल्कुल अंदर, परमेश्वर तो बैठा था। आप ये बताओ? एक साधारण बात है, आपने किसी से बीस (२०) रूपए लेने हैं, आपको वह गलती से तीस (३०) दे गया। जब वह पूछने आया, तो आपने कहा, नहीं! बीस (२०) ही देकर गया है परंतु अंदर परमेश्वर क्या कहता है? तीस (३०) हैं, तेरी जेब में पड़े हैं या इस जगह पर तूने रखे हैं। कभी परमेश्वर ने झूठ बोला है? परमेश्वर तो 'रहस्यक सच' (आत्मा) लिखा हुआ है ग्रंथों में। एक सच होता है झूठ वाला सच। कहीं सच बोल गया तो कहेंगे बड़ा सच्चा, कहीं झूठ भी बोल गया तो कहेंगे, ये तो बुरी बात है। एक 'रहस्यक सच' होता है, वह (आत्मा) सच

ही बोलेगा। वह कहेगा, तूने तीस (३०) लिये हैं और वहाँ तूने रखे हैं, लेने तूने बीस (२०) थे, तो ये है सच। और सच-

सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ ।।
नानक वखाणै बेनती जिन सच पलै होइ ।। (पृ. ४६८)

वह सच, जिसके पास है, उससे कभी पाप नहीं होगा, उसने तो सच बोलना है। दुर्योधन, युधिष्ठिर के पास गया। (ये) पूछने के लिए कि भई, मुझे कोई तरीका बता? (जिससे) मैं न मरूँ। कृष्ण भगवान ने देखा। उस (दुर्योधन) को पता लग गया। उसने (दुर्योधन ने) कहा, ले भई, (कृष्ण) कहीं बना बनाया काम ही न बिगाड़ दे सारा। वह जब वापिस आया, कृष्ण सामने आया। वह (श्री कृष्ण) कहता, कहाँ गया था? (दुर्योधन) कहता, युधिष्ठिर के पास गया था। कृष्ण के पास नहीं गया। कृष्ण तो रास्ते में था, उसे (दुर्योधन को) पता नहीं लगा। (दुर्योधन ने सोचा) एक युधिष्ठिर ही सच्चा है, चाहे वह है तो हमारा दुश्मन, पर है सच्चा। वह कहता, जी! युधिष्ठिर के पास गया था। (श्री कृष्ण कहते) क्यों? (दुर्योधन कहता) मैं पूछने गया था भई, मैं मरूँ ना (ऐसा उपाय बता दे)। कहते, क्या बताया? कहता, यह बताया, भई तेरी माता सत्यवती है, उसने आँखों पर पट्टी बाँधी है, उसका पूरा 'सत' कायम है। वह जब आँखें खोले तो तू सामने से गुजर जाना, तेरा वज्र जैसा शरीर हो जाएगा, फिर (तू) नहीं मरेगा। (श्री कृष्ण) कहता, ये बताया? कहता, हाँ जी! ये बताया। ठीक बताया उसने तो। वह (श्री कृष्ण) कहते- दुर्योधन! मैं तो तुझे बड़ा समझदार समझता था। तुझे खुद नीति का पता नहीं? तुझे ताज मिला, तू बादशाह रहा, तू बड़ा समझदार है, तुझे नहीं पता नीति का? कहता, जी! क्या? कहते- पाँच साल की उम्र के बाद माता के सामने बिना कपड़ों के नहीं जाते। हाँ! (दुर्योधन) कहता, बात तो ठीक है जी! उसे (दुर्योधन को) नहीं पता लगा। उसने (कृष्ण ने) कहा, तुझे मिला ताज, तू बादशाह रहा, तू नीति क्यों तोड़ता है? वह (युधिष्ठिर) भोला-भोला आदमी, वह जानता ही कुछ नहीं, तू उसके कहने में आ गया। कहता, जी! आप बताओ। कहते, यहाँ (कमर के नीचे) कपड़ा बाँध लेना। दुर्योधन कहता, ठीक है। (दुर्योधन) यहीं (कमर के नीचे) से मारा गया है, इतनी जगह (कमर

के नीचे) कच्ची रह गई ना। उसने (दुर्योधन ने) कहा, सत्य वचन! वह जब माता के सामने से निकला, ये जगह कच्ची रह गई। उसने (माता ने) इशारा भी किया, भई, तू ये जगह भी न रहने दे। वहाँ से जगह कच्ची रहने के कारण ही मरा, नहीं तो मरना नहीं था। भीम तो मारता-मारता थक गया था। उसने (श्री कृष्ण ने) कहा, (भीम को) इशारा करके, तू यहाँ (कमर के नीचे) तो मार, ऐसे इशारा किया। जब (कमर के नीचे) मारा तो दुर्योधन मरा, परंतु युधिष्ठिर नहीं झूठ बोला। (श्री कृष्ण) अवतार तो इसलिए आया था, द्वापर में, उन (दुष्टों) को खत्म करने के लिए। एक जगह लिखा है, भई अवतार को दोष नहीं होता। अवतार की तो, हर वक्त एक लिव होती है परमेश्वर के साथ। वह तो हुक्म के बाहर कभी हो ही नहीं सकता। परमेश्वर का हुक्म है खत्म करने का। युधिष्ठिर ने तो झूठ नहीं बोला? वह तो सच्चा रहा। इसलिए, सच के साथ जुड़ कर कभी आपको पाप नहीं लगेगा। यदि सच से आपका मन हिल गया तो फिर वह (मन) ना जाने क्या करे? बच्चा आपका भाग जाएगा तो फिर उसका पता नहीं वह कहाँ चला जाए। ये तो मन है, जो पल-पल में बदलता रहता है। इसलिए, किसी को दोष ना देना, अपने कर्मों का आप पछतावा करना। ये इसका मतलब है, अपने कर्मों का पछतावा करना। इसलिए (नाम) जपना, पूछना, इन कर्मों को ठीक करने की कोशिश करना। लोगों को दोष देने लगेगा, एक पाप पहले हुआ है, दूसरा और हो जाएगा। तू लोगों को झूठा दोष देता है। ख्याल तेरा है, तू (दूसरों को) झूठा दोष देता है-

विआपनि सभे रोग ।।

कर्मों का फल क्या हुआ? रोग आपको लगते हैं। ये देखो, हम जितने बैठे हैं, मैं भी, आप भी, रोग लगते हैं या नहीं? कभी अरदासें करते हैं, कभी मन्नत माँगते हैं, कभी पाठ कराते हैं। उसे कहो, जब (पाप कर्म) किए थे, तब तो तुमने ख्याल नहीं किया। बाद में काफी लोग ख्याल करते हैं, कई तो नहीं करते। ये सारे रोग तुझे लगे, तेरे किए हुए हैं, रोग तुझे लगेंगे, वह पाप भाई! तुझे लगेंगे। तू इन (कर्मों के परिणाम के बारे में) ये मत सोचना कि इनको मैं टाल दूँगा। एक ही (ईलाज) है, ईश्वर के आगे प्रार्थना कर, सच्चे दिल से अरदास कर। ईश्वर तो-

जा कउ अपुनी करै बखसीस ।। ता का लेखा न गनै जगदीस ।।

(पृ. २७७)

परमेश्वर बख्श सकता है, दूसरा नहीं कोई बख्श सकता। उसे तू भूल गया है। आप समझते हो परमेश्वर कहीं है ही नहीं-

वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ।।

कहते, क्यों भूला परमेश्वर? कहते-

वेमुख होए राम ते

'राम' नाम है 'रमे हुए' व्यापक का। बताओ, आपकी बुद्धि में वह बैठा नहीं? आपकी बुद्धि की वृत्ति में परमेश्वर बैठा नहीं? अगर ना बैठा हो तो प्रकाश ही न हो। बल्ब में बिजली ना हो तो रोशनी हो कभी? फिर जब बिजली आती है तो रोशनी होती है। यदि वहाँ चेतन न हो, वृत्ति तो जड़ है, इसे (जीव को) ये भी न पता चले कि क्या करना है? किधर जाना है? वह (चेतन) बैठा नहीं वहाँ? परंतु आपका मुँह किधर है? विकारों, विषयों की तरफ या झूठ की तरफ। अब परमेश्वर वहाँ हो कर भी क्या करे? इसतरह, आप बेमुख हो गए। किसने बेमुख कर दिए? दुनिया के प्यार ने बेमुख कर दिया, दुनिया के मोह ने बेमुख कर दिया। दुनिया ने इतना मोह लगाया कि (माया की) दलदल जो थी, उसमें गिर गए। आप बेमुख हो गए 'राम' से, तो आप इधर को चले। चल जी-

लगनि जनम विजोग ।।

कहते, इतना ही न समझ लेना कि भई रोग लग के छूट जाओगे, जन्मों के वियोग (बिछोड़े) लग जाएँगे, यदि आपका मन, परमेश्वर के सन्मुख न हुआ, यदि आपकी वृत्ति परमेश्वर के सन्मुख न हुई। कब होगी? ये तो आपको पता है, परमेश्वर है, जरूर है। ये भी आपको पता है भई, माफ भी कर देता है। गुरु साहिब कहते-

जा कउ अपुनी करै बखसीस ।। ता का लेखा न गनै जगदीस ।।

(पृ. २७७)

असंख खते खिन बखसनहारा ।। नानक साहिब सदा दइआरा ।।

(पृ. २६०)

वह तो अनगिनत पापों को ऐसे फूँक देता है। 'सज्जन ठग' के फूँक दिए,

'वैश्या' (गनका) के फूँके, 'सधने' (कसाई) के फूँके। 'कौडे राक्षस' के फूँके। किसके नहीं फूँके उसने? परंतु सन्मुख हुआ तो फूँके। दूसरी बात यह है, यदि आप सारी उम्र माया के मोह में रहे तो जन्मों के बिछोड़े लग जाएँगे। ये तो गुरु साहिब ने साफ लिखा है-

भई परापति मानुख देहुरीआ ।। गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ।।
अवरि काज तेरै कितै न काम ।। मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ।।
सरंजामि लागु भवजल तरन कै ।। जनमु ब्रिथा जात रंग माइआ कै ।।

(पृ. १२)

यदि आपका माया के साथ प्रेम लग गया, सारा जन्म बेकार चला गया और आगे के लिए बिछोड़ा लग गया-

माइआ मनहु न वीसरै मांगै दंमां दंम
सो प्रभु चिति न आवई नानक नही करंमि ।। (पृ. १४२६)

इतना बड़ा उसका कर्म ही नहीं है, (इसलिए) प्रभु नहीं चित्त में आता। इसलिए, ध्यान रखना तू इस वक्त, इस शरीर में आकर गुरु साहिब कहते, कहीं जन्मों के बिछोड़े ना लगा बैठना, परमेश्वर से बेमुख न हो जाना-

खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ।।

जितने आपने माया के सुख भोगे, दरगाह (परमेश्वर के दरबार) में इनकी कोई कीमत पड़ेगी? उल्टा होगा। जितने भोग थे-

खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ।।

बेकार हो गए, निष्फल चले गए, जन्म-वियोग इन्होंने (संसार के सुखों ने) नहीं हटाना। ये तो जन्म-वियोग लगाने वाले हैं। विषय, वासना, और विकार ये तो मन को वियोग लगाने वाले हैं। जन्म-वियोग भी मन का होना है, आत्मा का नहीं होना। आत्मा तो नित्य (सदा) है, सत्य है, व्यापक है, इसका अपना-आप है। परंतु आत्मा का, इसका अपना आपा होने का फायदा क्या, जब तक (आत्मा का) पता नहीं? ऐसे समझो लकड़ी में अग्नि है पर इसके साथ आप रोटियाँ नहीं पका सकते, प्रकाश नहीं कर सकते। क्यों? जब ये (अग्नि जलाकर) निकाल लोगे तो ये सारा काम करेगी। आपकी वृत्ति में आपका चेतन है, जब तक वृत्ति उसके सन्मुख नहीं करोगे (काम सिद्ध नहीं होगा)। वृत्ति लीन होगी तो आपको उस स्थिर (चेतन) का ज्ञान होगा।-

एक चित्त जिह इक छिन धिआइउ ॥

काल फास के बीच न आइओ ॥ (दसम ग्रंथ)

एक क्षण के लिए (सन्मुख) हो जाए तो भी काम सिद्ध हो जाए–

विचु न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज ॥

कोई है वकालत करने वाला बीच में? 'विचु' है बिचोला। कोई बिचोलगी करने वाला है दुनिया में? कि भई, आप पदार्थो के सुख भी भोगते जाओ और आपके अंदर मोह भी पूरा पड़ा हो और फिर भी आपकी कोई मुक्ति कर दे, है ऐसा कोई? नहीं! कोई नहीं! कोई बिचोलगी करने वाला नहीं। इसके कर्मों को काटने वाला, (सिवाय ईश्वर की कृपा के) कोई पैदा नहीं हुआ–

किस थै रोवहि रोज ॥

अब 'रोज', हर जन्म में, कहाँ कहाँ रोएगा जाकर?–

कई जनम भए कीट पतंगा ॥ कई जनम गज मीन कुरंगा ॥

(पृ. १७६)

रोज रोता नहीं? जिस जन्म में जाएगा, उसके विषय विकार, उसके बुरे कर्म, उसे रूलाएँगे नहीं? नहीं रोएगा? कई कहते भी हैं, क्या करता है? कहता जी, पिछले कर्मों को रोते हैं। कई रोते भी बहुत हैं। वह कहते, महाराज! करते क्या हैं? पिछले कर्मों को रोते हैं, और क्या करते हैं। अब तू कहाँ-कहाँ रोएगा रोज? बेमुख होकर, जीव! तू बचेगा नहीं, तेरे कर्म तुझे भोगने पड़ेंगे, तू परमेश्वर के सन्मुख हो–

कीता किछू न होवई

किसी का किया कुछ नहीं होना। कहीं ऐसे भूल में रह जाए, भई! इसको माथा टेकेंगे, कर्म कट जाएँगे, ऐसे हो जाएगा। किसी का किया कुछ नहीं होना, ये लिखा तो है गुरु साहिब ने। गुरु साहिब की वाणी में तो बिल्कुल–

ओथै सचे ही सचि निबड़ै चुणि वखि कढै जजमालिआ ॥

(पृ. ४६३)

ये गुरुबाणी और क्या है, वही (परमेश्वर) है। 'ओथै सचे ही सचि निबड़ै' किसी का किया कुछ नहीं होना। ऐसे भूल में न रहना, तूने (कर्म) किए हैं, तू ही भोग। अब जिसके घर हम बैठे हैं, इसके कितने बच्चे, पुत्र,

पोते सभी इसके संयोग (पिछले संबंध) के हैं, समझ गए? और संयोग-वियोग (मिलना-बिछुड़ना) पहले से ही हुआ पड़ा है, किसी का किया हुआ होता है? पर जैसे-जैसे तू कर्म करेगा, वह फल कर्मों के अनुसार ही तुझे मिलना है। कर्म ने पुत्र बनना है, कर्म ने बेटी बनना है और कर्म ने ही आकर भैंस बनकर दूध देना है-

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहो बिरदु सुआमी संदा ।।

(पृ. ५४४)

समझ गए?

सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः । (गीता १८/६६)

शरण लो। जब वह (विभीषण) आया। उसने (सुग्रीव ने) कहा, जी! भाई आया है दुश्मन का, कैद कर लें? (श्री राम चंद्र जी) कहते, ना! उसने (श्रीराम चंद्र ने) कहा, आने दो मेरे पास। वह (विभीषण) जब गया, उसने (श्री राम को) माथा टेका। वहाँ जल पड़ा था, उसने (श्री राम ने) जल ले कर तिलक कर दिया, कहते-आ भई लंकेश! वह (दूसरे) कहते, जी, आपने ये क्या कर दिया? वह कहते, बस यही है। (दूसरे) कहते, ये नीति नहीं, (विभीषण) दुश्मन का भाई है-

सखा नीति तुम्ह नीकि बिचारी । मम पन सरनागत भयहारी ।।

(सुंदर काण्ड, रामचरितमानस)

(ये) मन-तन से शरणागत पड़ा हुआ है। राम कहता, तुझे मेरा नहीं पता। मैं शरण में आए हुए का जन्म-मरण काट देता हूँ। तू मेरी नीति नहीं जानता। तू राजनीति जानता है सुग्रीव! तू वजीर रहा है। इसलिए, तुझे राजनीति आती है। मेरा तो प्रण है, शरणागत आने वाले के लिए, कि भई जो शरणागत आए उसका जन्म-मरण काट देता हूँ। एक शरण ही है छुड़वाने वाली। शरण तू तब आएगा जब अंतःकरण के सारे संकल्पों को समाप्त करेगा तू। तब शरण में हो जाएगा, पहले कोई नहीं (होगा)। इसलिए, किसी को दोष न देना, तेरे कर्म तुझे भोगने पड़ेंगे या फिर शरणागति पड़ जा, परमेश्वर की-

लिखिआ धुरि संजोग ।।

ये तो पहले से संजोग लिखा हुआ है, तेरा लिखा हुआ है-

संजोगु विजोगु धुरहु ही हूआ ।। (पृ. १००७)

ये तो संजोग, धुर (परमेश्वर की तरफ) से ही लिखा हुआ है। ये तो होना ही है-

वडभागी मेरा प्रभु मिलै

पर कहते, जी! कोई है ऐसा उपाय, जो इन सभी (कर्मों) को काटने वाला हो? ये है-

वडभागी मेरा प्रभु मिलै

यदि इसके बड़े ऊँचे भाग्य हों, निष्काम (कर्म हों), निष्काम सेवा हो, इसका अंतःकरण शुद्ध हो, तो मेरा प्रभु मिले, गुरु साहिब कहते। मेरा परमेश्वर, फिर मिलेगा, ईश्वर मिलेगा फिर-

तां उतरहि सभि बिओग ।।

सारे बिछोड़े उतर जाएँगे, सारे कर्म कट जाएँगे-

जा कउ अपुनी करै बखसीस ।। ता का लेखा न गनै जगदीस ।।

(पृ. २७७)

ये तो लेखे से बाहर हो जाए। एक ही तरीका है, दूसरा कोई तरीका नहीं है। ईश्वर की शरणागति चले जाओ, बस और तो कोई नहीं है काटने वाला। ऐसे ही, जो आप लोगों को दोष देते हो, इसने करा दिया जी, मैं उसके कहने पर लग गया, ये (मुझे आगे) बढ़ाने वाले हैं। तूने ऐसी ही बातें करनी हैं, मैं क्यों उधर जाने वाला था? कुसंग हो गया। उसे पूछो, कुसंग जबरदस्ती हो गया? तेरी भी सलाह बीच में होगी-

नानक कउ प्रभ राखि लेहि

आप ऐसे कहो सभी। क्या? फिर पढ़-

नानक कउ प्रभ राखि लेहि

गुरु नानक साहिब कहते, आप ऐसे कहो, प्रभु मुझे रख लो। मैं तेरी शरणागति हूँ, मुझे रख ले। मुझ पर कृपा कर, मेहर कर, मुझे जन्म-मरण से बचा ले। नानक कहता, ये बात है। नानक तो बताने वाला है-

मेरे साहिब बंदी मोच ।।

हे मेरे साहिब और मालिक! तू 'बंदी मोच' (बंधन काटने वाला) है। वह

सारे पाप काट देगा। कहते, आपको पता है 'बंदी मोच' का। उसने वैश्या (गनका) को कुछ पूछा? 'सधने' को कुछ पूछा? भीलनी को कुछ पूछा? बताओ किसे पूछा?-

अजामलु पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा ।। (पृ. ६३२)

अजामल को सारे जानते थे पापी है, एक निमख में उसका निस्तारा कर दिया। पूछा पाप-पुण्य कुछ?

जा कउ अपुनी करै बखसीस ।। ता का लेखा न गनै जगदीस ।।

(पृ. २७७)

परंतु ये सन्मुख (सामने) नहीं होता। ये सन्मुख कब होगा आप बताओ? जब सारी अनात्मा का मोह छोड़ दे, तो सन्मुख होगा। मन तो फँसा पड़ा है। आप देखते नहीं? मन की कितनी गाँठें पड़ी हुई हैं? मन की गाँठें हैं- बेटी है, बेटा है, वगैरह-वगैरह। अहंकार भी इसी तरह है, मैं-मैं। मैं, कभी मन बनता है, कभी बुद्धि बनता है, कभी प्राण, कभी शरीर बनता है। ये गाँठें सारी खुलेंगी, तो फिर यह परमेश्वर के सन्मुख होगा। ये गाँठें तो रोज़ ही लगाता जा रहा है। आप देखते नहीं? आप शादी करते हो, एक गाँठ बाँधनी है आपने। पिता उठ के (पल्ले की) गाँठ बाँध देता है, वह देता है न गाँठ? 'चार फेरे' फिर उठ कर हो जाते हैं, एक गाँठ बाँधी। जब बूढ़ा हुआ, पूछो कितनी गाँठें पड़ जाती हैं। पोतों की, पोतियों की, दोहतों की, दोहतियों की, और कई तरह की, गाँठें पड़ जाती हैं। ये गाँठें खुल जाएँगी? ये गाँठें हैं पेचीदा (पेचदार), हैं पक्की, ना खुलने वाली। इसका एक ही ईलाज है, आग में फेंक दो, सारी जल जाएँगी। ज्ञान से सारी फूँकी जाएँगी, ज्ञान फूँक देगा सब को। 'भेद' हो जाएगा ग्रंथि का, जब सारे संशय काटे जाएँगे। जो सब से अलग एक परमेश्वर, जब उसके साथ तेरा मन जुड़ गया, उसके साथ मन लग गया, फिर सारी गाँठें तेरी खुद ही जल जाएँगी। आप सब अपने-अपने मन को देखते हो। मन को तो बैठना नहीं मिलता, मिलता है बैठना इसको? भागा ही फिरता है, कभी यहाँ काम करने जाता है, कभी वहाँ काम करने जाता है। इसलिए, भाई! काम तब चलेगा, जब सारे कर्मों-धर्मों को छोड़कर एक ईश्वर की शरणागति पड़ जाओ-

जिते शरण जैहै । तितिओ राख लैहै ।

बिना शरण ता की नहीं और ओटं ।
लिखे जंत्र केते पड़े मंत्र कोटं।
बचेगा न कोई करे काल चोटं ।
जिते शरण जैहै । तितिओ राख लैहै । (दसम ग्रंथ)

'कबीर' वापिस गया? 'धन्ना' वापिस गया? 'नामदेव' मुड़कर वापिस गया? 'वैश्या' (गनका) वापिस गई? 'ध्रुव' वापिस गया? कोई गया मुड़कर वापिस? सारे परमेश्वर ने रख लिये। अंहकार वालों को परमेश्वर नहीं रखता–

अहंकारीआ निंदका पिठि दे नामदेउ मुखि लाइआ ।। (पृ. ४५१)

उनकी तरफ तो ईश्वर पीठ कर लेता है। इसलिए अंहकार को त्याग कर परमेश्वर की शरण पड़ जाओ।

नानक कउ प्रभ राखि लेहि मेरे साहिब बंदी मोच ।।
कतिक होवै साधसंगु बिनसहि सभे सोच ।।

बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु !

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

21

सोरठि महला ५ ।।
गुरि पूरै चरनी लाइआ ।। हरि संगि सहाई पाइआ ।।
जह जाईऐ तहा सुहेले ।। करि किरपा प्रभि मेले ।।१।।
हरि गुण गावहु सदा सुभाई ।।
मन चिंदे सगले फल पावहु जीअ कै संगि सहाई ।।१।।रहाउ ।।
नाराइण प्राण अधारा ।। हम संत जनां रेनारा ।।
पतित पुनीत करि लीने ।। करि किरपा हरि जसु दीने ।।२।।
पारब्रहमु करे प्रतिपाला ।। सद जीअ संगि रखवाला ।।
हरि दिनु रैनु कीरतनु गाईऐ ।। बहुड़ि न जोनी पाईऐ ।।३।।
जिसु देवै पुरखु बिधाता ।। हरि रसु तिन ही जाता ।।
जमकंकरु नेड़ि न आइआ ।। सुखु नानक सरणी पाइआ ।।४।।

(पृ. ६२३)

सारी संगत किरपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु ! सतिनामु श्री वाहिगुरु !!

तैडी बंदसि मै कोइ न डिठा तू नानक मनि भाणा ।।
घोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले जै मिलि कंतु पछाणा ।।

(पृ. ६६४)

श्री गुरु अर्जुन देव महाराज–

धरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरूपी रहिओ भरि ।।
भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख्य हरि ।।

(पृ. १४०६)

गुरु साहिब जी कथन करते हैं, परमेश्वर जैसा दूसरा कोई नहीं है, वह व्यापक है, अंतर्यामी है, वह 'घट घट मै हर जू' है, सारी सृष्टि का नियंता (कंट्रोल करने वाला) है, कर्मों का फल देने वाला है। पर मैं अपने उस गुरु

को नमस्कार करता हूँ, गुरु रामदास जी को, जिन्होंने मुझे उस परमेश्वर के साथ मिला दिया-

तैडी बंदसि मै कोइ न डिठा तू नानक मनि भाणा ।। (पृ. ६६४)

'तैडी बंदसि' तेरे बराबर का कोई नहीं देखा, तू नानक के मन को प्यारा लग गया-

घोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले जै मिलि कंतु पछाणा ।।

(पृ. ६६४)

वह जो मेरा मित्र, लोक-परलोक का विचोला है, उस पर से मैं कुर्बान जाता हूँ, जिसे मिल कर मैंने अपना-आप पहचाना है, जिस की कृपा से मुझे उस परमेश्वर की प्राप्ति हुई है। इसलिए, गुरु साहिब कहते, जब गुरु को समर्पित हो जाओगे तो शरणागति में आओगे, फिर आपको वह आत्म-सुख प्राप्त होगा। गुरु साहिब परमेश्वर की प्राप्ति का रास्ता बताते हैं कि समर्पण बहुत ही जरूरी है। जब तक यह (जीव) अपने-आप को अर्पण नहीं करता, उतनी देर परमेश्वर की प्राप्ति नहीं होगी। यदि ये अपना-आप सारा अर्पण कर देता, तो ये कर्ता पुरुष (परमेश्वर) के देश में चला जाता। इसे यह पता लग जाता कि ये सारी सृष्टि कर्ता पुरुष की है। इसमें मेरा कुछ नहीं है। ये जो मेरा मन, बुद्धि, शरीर है, ये भी संसार है परंतु इसका साक्षी, चेतन, दृष्टा, आत्मा परमात्मा रूप है। इसलिए, फिर इस पर कृपा हो जाती है, ये परमेश्वर को साक्षात स्वरूप वाला मान लेता है। इसका जन्म-मरण कट जाता है-

न जायते म्रियते वा कदाचिन् नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ।।

(गीता २/२०)

सोरठि महला ५ ।।

सोरठ राग में पंचम पातशाह महाराज कथन करते हैं।

गुरि पूरै चरनी लाइआ ।।

पूर्ण गुरु ने मुझे अपने चरणों में 'लाइआ' (लगाया), जोड़ा-

हरि संगि सहाई पाइआ ।।

जो परमेश्वर मेरे मन, बुद्धि के संग है, साक्षी, चेतन, दृष्टा, वह मैंने

पा लिया। वह व्यापक (हर जगह, हर समय और हर वस्तु में हाज़िर) है, पूर्ण गुरु की कृपा से, मैंने उस परमेश्वर को प्राप्त कर लिया–

जह जाईऐ तहा सुहेले ।।

अब जहाँ भी जाते हैं, सुखी हैं। क्यों? अब परमेश्वर प्राप्त हो गया। अब दुखों की तो जगह ही कोई नहीं है। इसलिए जो अजर (कभी बूढ़ा न होने वाला), अमर (कभी न मरने वाला) परमेश्वर है–

नामु संगी सो मनि न बसाइओ ।। छोडि जाहि वाहू चितु लाइओ ।।

(पृ. ७१५)

नाम संगि जिसका मनु मानिआ ।। नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ।।

(पृ. २८१)

नाम-नामी का अभेद (एक ही रूप) है। जब इसे नाम प्राप्त हो जाए, अंहकार की समाप्ति हो जाएगी, ये हुक्म में खड़ा हो जाएगा–

करि किरपा प्रभि मेले ।।१।।

परमेश्वर ने दरगाह (सचखंड) से कृपा की, गुरु रामदास ने हमें (अपने) साथ मिला लिया–

हरि गुण गावहु सदा सुभाई ।।

हे भाई! हे श्रेष्ठ पुरुष! हरि के गुण गाया कर! गुरु साहिब कहते–

गुण गावत तेरी उतरसि मैलु ।। बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु ।।

(पृ. २८६)

यदि तू परमेश्वर के गुण गाएगा, तो तेरे मन की सारी मैल चली जाएगी–

प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ।। अंम्रितु नामु रिद माहि समाइ ।।

(पृ. २६३)

वह अमर करने वाला नाम और नामी (परमेश्वर) तुझे हृदय में प्राप्त हो जाएगा। नाम-नामी में कोई अंतर नहीं है, जब नाम प्राप्त हो गया तो नामी खुद ही प्राप्त हो गया। जब नामी की प्राप्ति हो गई तो फिर ये अच्छा-बुरा किसे कहेगा–

मंदा किस नो आखीऐ जां तिसु बिनु कोई नाहि ।। (पृ. १३८१)

जब उस (परमेश्वर) के बिना, दूसरी सत्ता है ही नहीं, फिर अच्छा-बुरा किसे कहें? ये तो एक समझ में आने की बात है भाई–

मन चिंदे सगले फल पावहु जीअ कै संगि सहाई ।।१।।रहाउ।।

जो भी आपकी इच्छा होगी मन में, वह सब पूरी हो जाएगी-

नाराइण प्राण अधारा ।। हम संत जनां रेनारा ।।

वह मेरे प्राणों का आसरा है, वह मेरे प्राणों का राखा है। जब लक्ष्य हो गया, ब्रह्म ज्ञान हो गया तो ब्रह्म ज्ञानी बन गया। दो ही चीजें हैं, एक ज्ञात, एक अज्ञात। एक ब्रह्म ज्ञानी, एक संसार। ब्रह्म ज्ञानी के साथ, परमेश्वर ने मिलाना है। परमेश्वर की कृपा से गुरु मिलता है, गुरु की कृपा से परमेश्वर मिलता है-

पतित पुनीत करि लीने ।।

हम बड़े पतित (नीच) थे, पापी थे। जब हमारा मन, नाम के साथ मिल गया, (नामी परमेश्वर के साथ) एक हो गया, हम पवित्र हो गए-

अजामलु पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा ।। (पृ. ६३२)

अजामल पापी था। सारा संसार जानता था, बड़ा पापी है-

करि किरपा हरि जसु दीने ।।२।।

परमेश्वर रूप, गुरु रामदास ने कृपा करके, हमें हरि का यश दिया, कि आप हरि का यश किया करो भाई! हरि यश के बिना अपने मन को और कहीं न लगने दो। कर्ता पुरुष जो परमेश्वर है, वह आपका नियंता (कंट्रोल करने वाला) है, राखा (रक्षा करने वाला) है। आप हरि-यश ही गाया करो। हरि-यश पूर्ण (पूरी) कृपा से प्राप्त होता है। ये ईश्वर का हुक्म होता है-

गुर महि आपु समोइ सबदु वरताइआ ।। (पृ. १२७६)

गुरु में बैठकर परमेश्वर ने हरि का यश बख्श (दे) दिया। पूर्ण कृपा से ही, पूर्ण हरि का यश मिला-

पारब्रहमु करे प्रतिपाला ।। सद जीअ संगि रखवाला ।।

अब तेरी 'प्रतिपाला' (पालना) पारब्रह्म परमेश्वर ही करेगा। तुझे कोई चिंता नहीं है। तुझे चिंता तो तब तक थी, जब तक तुझे नाम प्राप्त नहीं हुआ था। नाम प्राप्त होने से, अहंकार की समाप्ति हो जाती है, ये ब्रह्म ज्ञान है। जब गुरु ने नाम दे दिया, तो अहंकार की समाप्ति हो गई और फिर ये ईश्वर के हुक्म में खड़ा हो जाएगा। इस को पता लग गया, मेरी प्रतिपाला करने

वाला, पूर्ण परमेश्वर है। मेरा राखा पारब्रहम परमेश्वर है, और कोई नहीं। मेरा राखा–

राखा एकु हमारा सुआमी ।। सगल घटा का अंतरजामी ।।

(पृ. ११३६)

वह सब के हृदय का अंतर्यामी, परमेश्वर है। वह मेरी रक्षा करने वाला है–

सद जीअ संगि रखवाला ।।

वह सदा जीव के संग है और रखवाला है। वह, जो इसका साक्षी, चेतन, दृष्टा है, वह सदा इसके अंग-संग है–

हरि दिनु रैनि कीरतनु गाईअै ।।

भाई! जो हरि-यश गुरु से मिला, उस का कीर्तन दिन-रात करो, आठों पहर (हर समय) उसका ही यश गाओ। एक भक्त तुक्काराम हुआ है, वह नदी के किनारे कीर्तन करता था। दुनिया बहुत उसके पास कीर्तन सुनने आती थी। जहाँ उसकी खुशी होती थी, अकेला बैठकर कीर्तन करता था। वह आठों पहर कीर्तन ही करता था। वह कहता, कीर्तन के सिवाय, और कोई अच्छा काम ही नहीं। इसलिए भाई! आठों पहर परमेश्वर का कीर्तन किया करो। दूसरा कोई काम न किया करो–

हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि ।। (पृ. १३७६)

निरंजन के साथ मन को जोड़ कर, उस परमेश्वर का यश किया करो–

बहुड़ि न जोनी पाईअै ।।३।।

फिर जब आपको ज्ञान प्राप्त हो जाए नाम द्वारा, आप जन्म-मरण में नहीं जाओगे, आपकी मुक्ति हो जाएगी, बिना ज्ञान के मुक्ति नहीं। दूसरा कोई रास्ता नहीं परमेश्वर को मिलने का, इसे प्रेमा-भक्ति द्वारा ज्ञान हो जाता है, ये संत बन जाता है। प्रेमा भक्ति से, मैंने परमेश्वर को पा लिया। ये गुरु साहिब कहते–

प्रेम भगति उधरहि से नानक करि किरपा संतु आपि करिओ है ।।

(पृ. १३७७)

प्रेमा-भक्ति द्वारा, ये संत बन जाता है। ये परमेश्वर को प्राप्त कर लेगा, फिर इसे जन्म-मरण में नहीं जाना पड़ता–

जिसु देवै पुरखु बिधाता ।।

परंतु जो (कर्मों का) फल देने वाला है, वह जिसे चाहे नाम दे, ज्ञान दे, प्रेमा-भक्ति दे, वो उसकी खुशी है, परमेश्वर की। वह उसकी बख्शिश है-

हरि रसु तिन ही जाता ।।

हरि का रस उनको ही प्राप्त होगा, हरि का रस उनको ही मिला (जिनको वह दे)-

जम कंकरु नेड़ि न आइआ ।।

यमों के जो 'कंकरु' नौकर (यमदूत) थे, वह किसी ब्रह्म ज्ञानी के पास नहीं आते-

सुखु नानक सरणी पाइआ ।।

मैं अपने गुरु, गुरु रामदास की शरण आया। परमेश्वर की कृपा द्वारा, मुझे उन्होंने अपने चरणों में जगह दी और मैंने आत्म-सुख पा लिया। जब परमेश्वर की दया हुई तो मुझे आत्म-ज्ञान प्राप्त हुआ, कृपा हुई-

जम कंकरु नेड़ि न आइआ ।।
सुखु नानक सरणी पाइआ ।।
जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा ।।

(पृ. ५४४)

ये उसका 'बिरदु' (स्वभाव) है परमेश्वर का, जो उसकी शरण जाएगा, उसे कंठ लगा लेगा, उसे बख्श देगा। 'छीना गुरु का सीना' जब बिधि चंद आया सारा काम कर के, तो गुरु साहिब ने उसे आते ही अपने सीने से लगा लिया और कहा 'छीना गुरु का सीना'। ये (बिधि चंद) गुरु का हृदय है। जो इसने इस वक्त काम किया, ये हमारा रूप है। गुरु तो (कर्मों का) फल देने वाला है, सब जीवों को।

बोलो सतिनामु श्री वाहिगुरु !